अनमोल सन्त चरित्र

परम संत डा० श्यामलाल सक्सेना
उर्फ
परम पूज्य बाबू जी महाराज
गाजियाबाद

अनमोल सन्त चरित्र

परम संत डा० श्यामलाल सक्सेना

उर्फ

परम पूज्य बाबू जी महाराज

गाजियाबाद

अनमोल सन्त चरित्र

परम पूज्य बाबूजी महाराज
उर्फ
परमसंत डा0 श्याम लाल सक्सेना

ॐ

लेखक :–
डा. वी. के. सक्सेना
B-1/ 26, सेक्टर के
अलीगंज, लखनऊ
पिनकोड – 226020

प्रथम संस्करण 1994
© सर्वाधिकार सुरक्षित है।
प्रकाशक : डा0 वी. के. सक्सेना
पता : बी 1/26, सेक्टर 'के' अलीगंज, लखनऊ
मुद्रक : माहेश्वरी एंड संस, नाका हिंडोला, लखनऊ
फोन : 246484, 230087
मूल्य :

समर्पण

परम पूज्य ताऊ जी महाराज
उर्फ
डा. श्री कृष्ण लाल भटनागर
के
जन्म शताब्दी के शुभ अवसर पर
उनके प्रिय
सह अनुज डा. श्यामलाल सक्सेना
उर्फ
पूज्य बाबू जी महाराज का
अनुपम जीवन चरित्र
उनके
पावन चरणों में समर्पित

विजय दशमी 15.10.94

डा. वी. के. सक्सेना
बी 1/26, सेक्टर 'के'
अलीगंज, लखनऊ

अनुक्रम अंक

महापुरूषों के नाम के समक्ष उनके प्रचलित श्रद्धेय नाम, जिन नामों से उनका संबोधन पुस्तक में हुआ है।

1. पूज्यनीय श्री रामचन्द्र जी महाराज

   पूज्य लाला जी महाराज

2. पूज्यनीय श्री रघुबर दयाल जी महाराज

   पूज्य चाचाजी महाराज, कानपुरी ।

3. पूज्यनीय डा. श्याम लाल जी सक्सेना

   पूज्य बाबू जी महाराज, गाजियाबाद

1. डा. आर. के. सक्सेना,

   पूज्य सेठ भाई साहब

2. डा. वी. के. सक्सेना,

   दिन्नू

प्रस्तावना

''ओउम् राम श्री राम, जय राम जय जय राम ।

जय रघुबर जय कृष्ण जय श्याम जय जय श्याम ।।''

भाइयों,

परम पूज्य बाबू जी महाराज के तेरहीं सस्कार दिनांक 10 जनवरी, 1988 को मैंने आपको बचन दिया था कि मैं परम पूज्य बाबू जी महाराज का जीवन चरित्र एक पुस्तक के रूप में उपलब्ध कराऊँगा। उसी संदर्भित दिशा में मैं आज इस शुभ शिवरात्रि मंगलवार दिनांक 16.2.88 के दिन समय रात्रि के 11.00 बजे इस पुनीत एवं पवित्र पुस्तक का आरम्भ कर रहा हूँ ।

सर्वप्रथम मैं संसार के समस्त संतों एवं अपने सिलसिले के सभी बुजुर्गों को नतमस्तक होकर प्रणाम करते हुए प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे शक्ति प्रदान करें तथा आशीर्वाद दें कि मैं उन परम् पावन पूज्य बाबू जी महाराज की महान जीवन लीला को पुस्तक का रूप दे सकूँ ।

वो महान हस्ती परम पूज्य ताऊजी महाराज (परम संत डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज सिकन्द्राबादी) जो मेरे प्रत्येक कार्य के प्रेरक एवं पूरक रहे हैं और भविष्य में भी रहेंगे, जिनके आशीर्वाद के बगैर मैं कुछ भी नहीं कर सकता, उन महापुरूष से मैं हाथ जोड़ कर विनती करता हूं कि सदैव की भाँति इस बार भी वह अपना वही चिर परिचित आशीर्वाद दें कि मैं इस दुर्लभ चरित्र को और इस दुष्कर कार्य को पूरा कर सकूँ। मैं उन्हें सादर नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूँ ।

मैं परम पूज्य बाबू जी महाराज (परम संत डा. श्याम लाल जी) को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके चरणों की वन्दना करता हूँ वे आज हमारे बीच स्थूल रूप में नहीं हैं परन्तु उनकी दया, दिशा दर्शन एवं प्रेरणा, ही हम सब का पथ प्रदर्शन करती है एवं विश्वास है कि उनके चरणों में प्रेम करने वालों को सदैव ही यह आभासित करती रहेगी। मैं उनके दिव्य चरित्र को जिसको मैंने अपने जीवन के 54 वर्षों में बहुत करीब से देखा है व समझने का प्रयास किया है परन्तु इस नतीजे पर पहुँचा कि कुछ समझ न सका। उस स्थूल शरीर तथा मनमोहनी एवं

प्रेम भरी सूरत को देखने एवं स्पर्श करने की एक अजीब सी तड़प हृदय से उठती है। यह केवल मेरे हृदय की दशा नहीं, वरन् समस्त उनके प्रेमियों के हृदय की यही दशा है ।

''जो देखा था वह ख्वाब था ।
जो सुना था वह अफसाना । ।''

यह पुस्तक मैं अपनी श्रद्धेय स्वर्गीय माता जी के चरणों में अर्पित करता हूँ और उनसे यह प्रार्थना करता हूँ कि वो भी मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान करें ।

इस पुस्तक को आपके समक्ष उपस्थित करने से पूर्व मैं अपने पूज्यतम् भाई साहब डा. आर. के. सक्सेना के चरणों में प्रणाम करता हूँ जिन्होंने मुझे इस पुस्तक की रचना की आज्ञा प्रदान की है, प्रोत्साहन दिया है तथा अमूल्य सुझाव दिये हैं । मैं उनके स्नेह–सिक्त समर्थन का हृदय से आभारी हूँ ।

आप सब भाइयों, पाठकों से अनुरोध है कि इस अगम, अलौकिक चरित्र को श्रद्धा भक्ति एवं प्रेम के साथ ही पढ़े तथा इस दिव्य अद्भुत, अलेखनीय आनन्द के स्रोत से लाभ उठाये । यदि कोई त्रुटि जाने अनजाने में कोई भाषा व्याकरण या अन्य दोष रह जाये तो उसे क्षमा करें – उनका प्रेम सब को मिले यही प्रार्थना है ।

''साये में तुम्हारे हैं, किस्मत ये हमारी है ।
कुरबान दिलो जाँ है, क्या शान तुम्हारी है । ।''

विनीत
डा. वी. के. सक्सेना,
बी. 1/26, सेक्टर ''के''
अलीगंज, लखनऊ

श्रद्धांजलि

संसार कभी संतों से खाली नहीं रहता है । भारतवर्ष की तो यह विशेषता है कि वह संतों का उद्धगम स्थान, संतों की भूमि रही है। यह देष प्रत्येक काल में संतों से सुशोभित एवं पल्लवित रहा है ।

संत ही काल के सच्ची विभूति होते हैं । वे ही समाज को दिशा देते हैं। वास्तव में वह महान प्रभु स्वयं ही संतों के रूप में समय–समय पर अवतरित होकर संसार की आध्यात्मिक प्रगति का नियमन करते रहते हैं । महात्माओं का अपना कोई भी उद्देश्य नहीं होता है, उनकी प्रवृत्ति विश्व कल्याण के लिये ही होती है ।

ईश्वर की प्रेरणा से पृथ्वी के आदि काल से ही लेकर आज तक महापुरूषों के जीवन में यही नियम काम करता रहा है। उनकी उज्जवल कीर्ति, अपार करूणा उनकी तत्वनिष्ठा, विलक्षण समता, शान्ति, स्थिरता आदि दिव्य गुण मनुष्य को आकस्मात अपनी ओर खींच लेते हैं । उनके पुण्य दर्शन तपते हृदयों को शान्ति देते हैं। उनकी छत्रछाया, उनका सानिध्य जिनको मिल जाता है, वे वास्तव में धन्य हैं ।

संतों एवं महापुरूषों के निर्वाण के पश्चात् जब वह परदा कर जाते है, उस समय में उनकी महान जीवन गाथा ही उनकी याद को अपने में संजोये रहती हैं। वह कैसे रहते थे, कैसा निर्मल, त्यागपूर्ण उनका जीवन रहा, यह आने वाले प्रेमी पीढ़ी के लिये एक धरोहर है। वह प्रेमी जो उनके (पूज्य बाबू जी महाराज) के साथ रहे, परन्तु साथ रहते हुए भी उनके जीवन को न जान सके यह मेरा विश्वास है क्योंकि उनके पास, उनके सम्मुख जाने पर ही प्रेम की वह बौछार हो जाती थी कि सभी भाई एक अजीब मदहोषी सम्मोहन का अनुभव करने लगते थे कि जैसे विवेक शून्य हो गये हो जैसे बुद्दि ने हथियार डाल दिया हों । अब जब भाई जीवनी को पढेंगे तो अवाक रह जायेंगे। **"ऐसे थे हमारे बाबू जी। हम तो कुछ जान ही नहीं सके और हमसे बिछुड़ गये।"** एक ऐसी तड़प उठेगी जो आज सब को उनके विरह वेदना से ओत प्रोत कर देगी।

सभी भाइयों से प्रार्थना है कि वह उनके जीवन चरित्र को जो वास्तव में अनमोल है प्रेम श्रद्वा के साथ पढ़ें, उसको मनन करें तथा उनके बताये हुए रास्ते पर प्रशस्ति होकर चलें । पूज्य बाबूजी के इच्छा के अनुरूप अपने सदाचार को बनायें। वास्तव में यही सच्ची श्रद्वांजलि है,

यही सच्ची श्रद्धा है, यही प्रेम है, यही पूजा है, तथा यही इस मार्ग की विशेषता है। वे समर्थ हैं, उनकी पवित्र जीवनी आपको लक्ष्य तक पहुॅंचाने में पूर्ण समर्थ होगी, इसका मुझ दास को पूर्ण विष्वास है।

पूज्य बाबू जी महाराज सबको अपना सच्चा प्रेम दें, शक्ति दें तथा सच्ची प्रेरणा दें, यही मेरी सच्ची प्रार्थना है । उनके द्वारा लगाया हुआ ये सत्संग रूपी बाग सदैव निर्झर रूप से हरा भरा रहे, यही उनके पवित्र चरणों में मेरी विनती है ।

गुरूदेव सबका कल्याण करें ।

सेवक
डा. वी. के. सक्सेना
बी. 1/26, सेक्टर ''के''
अलीगंज, लखनऊ

आभार

बहुत प्रतीक्षित यह पुस्तक **"अनमोल सन्त चरित्र"** को प्रस्तुत करते हुए मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है । यह चरित्र एक ऐसा अलौकिक चरित्र है जिसको आप अथाह सागर की भॉति पायेंगे जिसमें जितना जितना डूबे उतने ही अपार निधि आपको प्राप्त होगी। जैसे महासागर का ऊपरी तल केवल जल ही प्रतीत होता है परन्तु उसके थल में नाना प्रकार की अलौकिक निधि भरी रहती है । जो उसमें डूबता है, हर ओर से अपने मन को एकाग्र कर, वह ही देख पाता है उस अपार राशि को। उसी प्रकार पूज्य बाबूजी का चरित्र एवं व्यक्तित्व है। ऊपर से सीधे एकदम सरल, कोई दिखावा नहीं कोई ऐश्वर्य नहीं, कोई विशेषता का विशेषण नहीं परन्तु अन्तर में गहन, भावपूर्ण, ईश्वरीय प्रेम से ओत प्रोत, महान आत्मा परमात्मा से जुड़े हुए, हर व्यक्ति का सम्यक रूप से भला चाहने वाले, प्रेम के समुद्र, दीन का संवारने वाले तथा दुनिया को बनाने वाले, प्रेमियों की छोटी से छोटी सुखों को वरीयता देने वाले, ऐसे एक महान संत की जीवनी है। जिसको आप प्रेम से जितनी बार पढ़ेगें उतना ही वह आपके अन्तर में उतरती जायेगी।

वैसे तो संतों का काम परमेश्वर स्वयं ही पूरा करते हैं वह तो स्वयं सिद्ध होते हैं फिर भी व्यावहारिक रूप से जो लोग इसके माध्यम होते हैं वह भी धन्य हैं और उन्हें परमात्मा अपना प्रेम देता है क्योंकि जो बुजुर्गों का काम करते हैं वास्तव में वह ईश्वर का ही काम करते हैं।

मैं अपने अनुज डा. वी. के. सक्सेना का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने बड़े प्रेम एवं मनोयोग से इस अनमोल पुस्तक को पूरा किया और प्रायः सब प्रेमियों तक पहुँचाया।

मैं अपनी ज्येष्ठ बहन श्रीमती सरोज सक्सेना (बत्ता जिज्जी) का बड़ा आभारी हूँ जिन्होंने मेरे अनुज दीन्नू को पूज्य बाबू जी के परिवार (कटियाँ) आदि के बारे में बहुत कुछ बताया, ईश्वर उन्हें अपना अलौकिक प्रेम दें।

मैं श्री दुलीचन्द्र भाई का भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने पूज्य बाबू जी के हाथ की लिखी हुई उर्दू को हिन्दी में लिखकर हमें कृतार्थ किया है। ईश्वर उन्हें अपना प्रेम दें एवं बुजुर्गान उन पर अपनी दया करें ।

मैं श्री जे.पी. बाजपेई जी का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इससे पूर्व दो पुस्तकों तथा इन महान पुस्तक के प्रकाशन में बहुत सराहनीय सहयोग दिया है। उन्हें पूज्य बाबू जी अपने प्रेम से मालामाल करें ।

मैं फोटोग्राफर अरूण गाजियाबाद का भी आभारी हूँ, जिन्होंने पुस्तक में फोटो देकर पुस्तक की आवश्यकता को पूरा किया है तथा उसको शुभ दर्शनीय बनाया है। ईश्वर उन्हें अपना प्रेम दें ।

अन्त में अपने सभी प्रेमी भाइयों का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक की वैसे ही प्रतीक्षा की है जैसे पपीहा स्वाति के जल का। उनकी उत्कृष्ट उत्कंठा ने उनकी विलक्षण प्रतीक्षा ने पुस्तक को और भी अनमोल बना दिया है। मेरी यही आप सब से विनती है कि आप इस पुस्तक को बार–बार पढ़ें । उनके चरित्र से जीवन की शिक्षा लें। उनका चरित्र ही हमारा दर्शन शास्त्र है। वहीं हमारी जीवन का मार्गदर्शक है वह हम सबमें व्याप्त रहे, हर समय हर घड़ी यही हमारी पूर्णता है। वह सर्वत्र व्याप्त पूज्य बाबू जी महाराज जो अत्यन्त दयालु हैं वह सब पर दया करें। यही उनके चरणों में विनती है ।

''साया फगन है सिर पर मेरे फिर तो फिक्र क्या,

बस याद तेरी चाहिये, फिक्रों का जिक्र क्या ।''

विनीत,
डा. आर. के. सक्सेना
7, रामा कृष्णा कालोनी,
गाजियाबाद ।

दो शब्द

हमारे पूज्य भाई साहब परम संत महात्मा डाक्टर श्याम लाल जी सक्सेना– गुरू भगवान श्रीमान् लाला जी महाराज के वरिष्ठ शिष्य थे, अल्पायु में ही गुरू भगवान के सम्पर्क में आ गये थे और लगभग 16 वर्ष उनकी सेवा तथा घनिष्ट सम्पर्क में रहे। छोटे होने के नाते गुरू परिवार में इनका प्रवेश सरलता से हो गया और श्रीमान् जी के बच्चों के समान ही आपको भी प्यार और सानिध्य मिला।

हमारे गुरू भगवान का अध्यात्म सर्वथा प्रेम पर ही आधारित है जो परिवार में प्रेम और घनिष्ठता हो जाने पर अनायास ही मिल जाता है। इसका लाभ हमारे भाई साहब को पूर्ण रूप से मिला । अवश्य ही ये उनका सौभाग्य था। उन्होंने स्वयं श्रीमान् लालाजी महाराज के विषय में लिखा है कि हम सब बच्चों को मेले में अपने साथ ले जाते थे और पैसे देते कि अपनी पसन्द की वस्तु लेकर खायें। प्यार तथा अपनेपन का यह कैसा उदाहरण है।

गुरू भगवान शारीरिक तथा आर्थिक सेवा किसी से नहीं लेते थे–वरन स्वयं ही सत्संगियों के लिए कुएँ से जल निकाल कर रख देते तथा अपनी थोड़ी आय में से भी सत्संगी भ्राताओं की (स्वयं कष्ट पाकर) भी सेवा कर देते थे। ऐसा उच्चतम आदर्श आपने उनसे सीखा और जीवन में उतारा था ।

सत्संग को हर प्रकार की तन, मन, धन से सेवा करना आपने अपने गुरू भगवान से ही सीखा था और इस आदर्श को अपने जीवन में खूब ही निभाया। इन्हीं गुणों के कारण आप पर गुरू भगवान का अपार स्नेह था।

पूज्य भाई साहब परम संत महात्मा डा. श्रीकृष्ण लाल जी सिकन्दराबाद निवासी से आपका प्रेम कुछ अधिक था और गुरू भगवान की सेवा में भी अधिकतर साथ ही साथ एक दूसरे के पूरक की भाँति सारी निजी–पारिवारिक तथा आध्यात्मिक सेवा में रहते थे । इन दोनों महापुरूषों पर भी गुरू भगवान का अपार स्नेह, आदर तथा विश्वास था। यही कारण है कि इन संतों द्वारा श्रीमान् लालाजी महाराज वे आध्यात्म का इतना अधिक प्रचार व प्रसार हुआ। इससे हमारे सत्संग परिवार के सभी सज्जन भली–भाँति परिचित हैं । (वार्षिक भण्डारों तथा समय–समय पर होते रहने वाले सामूहिक सत्संग के अवसरों पर यह सब प्रत्यक्ष रूप से देखा जा रहा है) ।

पूज्य भाई साहब का सम्पर्क हमारी परम्परा के तो सभी संतों से था ही आत्म ध्यान पद्धति सूफी परम्परा के संतों से भी खूब था । साधना के विषय में आप बतलाते थे कि अन्य संस्थाओं के गुरूजनों द्वारा आपको ऐसा कहा गया किः– **"आप हीरा लिए बैठे हैं और चुपचाप हैं और जिसके पास ऐसे कौड़ी भर हैं अपना ढिढोरा पीटते फिरते हैं"** परम्परा की विशेषता– जिसमें ध्यान की क्रिया नवागन्तुक को अपनी शक्ति द्वारा कराकर ध्यान क्या है– यह समझा देना – अन्य पद्धतियों में देखने को नहीं मिलती। यह विशेष परम्परा हमारे श्रीमान् लाला जी महाराज द्वारा आपमें पूर्ण रूप से हस्तानांतरित की गयी थी । इस परम्परा की यह विशेषता है। फिर ध्यान के द्वारा अग्रसर होने पर भी पग पर शिष्य की संभाल रखना कि दिशा भ्रष्ट न हो जाये तथा सहायता करते रहना– यह सारे विशेष गुण आपमें भरे पड़े थे।

मेरा सम्पर्क श्रीमान भाई साहब के सर्वप्रथम सन् 1926 के वार्षिक भण्डारें पर फतेहगढ़ में हुआ फिर भण्डारों के अतिरिक्त आप ट्रान्सफर आदि के कारण इधर उधर जाते समय कानपुर श्रीमान चाचा जी महाराज के पास भी जाते रहते थे, मैं अधिकतर यहाँ रहता था और आपसे घनिष्ठता बढ़ती ही रही। फिर सन् 1966 में मेरे अवकाश प्राप्त (सेवानिवृत्त) के बाद मुझे गाजियाबाद कुछ वर्ष ही आकर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तब से सम्पर्क और भी बढ़ गया। तब से मैं भी गाजियाबाद लगभग हर वर्ष ही भण्डारों में सम्मिलित होता रहा । अपने अभ्यास में त्रुटियाँ निकाल देने तथा अभ्यास की गति बढ़ाने में आपके द्वारा बहुत सहायता प्राप्त हुई । यह उनकी विशेष कृपा मुझ पर रही है। यह सब कभी भी नहीं भूलने वाली अनुभूति है।

आपके सरल स्वभाव, शान्त प्रकृति तथा मधुर भाषण का प्रभाव किसी पर पड़े बिना नहीं रहता था । इन गुणों तथा गुरू भगवान की निरन्तर बनी रहने वाली दया कृपा के कारण आपमें अद्भुत आकर्षण था जो भी सम्पर्क में आता आकर्षित हुए बिना नहीं रहता था ।

आयु के अंतिम वर्षों में आप कुछ शरीर से अस्वस्थ्य रहने लगे थे– परन्तु गुरू प्रेम में ऐसा मस्त और खोये हुए रहते कि साधारणतया आप कष्टों को कष्ट ही नहीं गिनते और आगन्तुक सत्संग के तथा अन्य महानुमाइन्दों की सेवा में अनवरत रूप से लगे रहते थे।

अपने पहले दोनों ही सुपुत्रों को अपने पूज्य भाई साहब सिकन्दराबाद वालों से ही शिक्षा–दीक्षा दिलवाई तथा गुरू पदवी भी

दिलवाई। अब ये ही महानुभाव उनके द्वारा चलाए सत्संग को गाजियाबाद, तथा अन्य स्थानों पर अध्यात्म सिंचित कर रहे हैं ।

सन्तों के जीवन चरित्र में विशेषता होती ही है । इसलिए कि ये सर्वप्रथम तो प्रभु के अनन्य भक्त होते हैं । फिर उनकी दी हुई शक्ति सामर्थ्य से समाज की इस प्रकार की सेवा करते हैं जो सारी ही सेवाओं में उत्तम है। सर्वसाधारण को भी वे भगवान की ओर अग्रसर करते हैं और जो लगे रहते अथवा जो समर्पण की श्रेणी को पहुॅंचते हैं उन्हें ऊॅंची से ऊॅंची स्थिति (भगवत्प्राप्ति) तक पहुॅंचा देते हैं ।

हमारे पूज्य भाई साहब ने यही सब करके अपने जीवन का अति उच्च आदर्श हम सबके लिए प्रस्तुत किया गुरू भगवान उनकी पवित्र आत्मा को सदा सर्वदा शान्त आनंदमय रखें – यही प्रार्थना है ।

सेवक
हर नारायण सक्सेना
जयपुर
8–2–94

ब्रम्हलीन परमसंत डा0 श्यामलाल सक्सेना

उर्फ

परमपूज्य बाबूजी महाराज

मदद मेरी ऐ मेरे रहमान कर, मेरी सख्त मंजिल को आसान कर
रहूँ यूँ मोहब्बत में साबित कदम, कि गाफिल न हूँ तुझसे मैं एक दम
रहूँ या कि दुनिया से जाऊँ गुजर, न निकलूँ तेरे हुक्म से जर्रा भर।

परिवार ग्रुप फोटो

खड़े हुए – परम पूज्य बाबूजी
दाहिने से बाएँ–1– दिन्नू 2– पूज्य माताजी (श्रीमती प्रकाश)
3 – गोद में लल्ला 4 – बत्ता जिज्जी
5 – सेठ

स्व0 श्रीमती प्रकाशवती

उर्फ

श्रीमती पूर्णिमा देवी (तृतीय पत्नी)

जन्म – नबीगंज
जिला – बदायूँ

निधन – 18.04.1990
गाजियाबाद

परमसंत डा0 श्याम लाल सक्सेना

उर्फ

पूज्य बाबूजी महाराज

''मुझको रोशनी देते हैं, मेरे बुजुर्गों के चिराग़
दुआ है मेरी औलाद, इस रोशनी को कायम रखें''

जन्म– 1 जनवरी 1901
कटिया
जिला– बदायूँ

निर्वाण – 29 दिसम्बर 1987
गाजियाबाद

जीवन परिचय

संसार जन्म मरण का क्रीड़ा स्थल तो है ही परन्तु जब–जब यहाँ धर्म की हानि होती है और संसार में अधर्म बहुत बढ़ जाता है तो देखा गया है, कुछ आत्मायें ईश्वर द्वारा ऐसी भेजी जाती हैं जो मनुष्य मात्र के कल्याण के निमित्त ही आती है। उनका एक ध्येय, एक ही उद्देश्य, एक ही लक्ष्य होता है कि किसी प्रकार उस (मालिके कुल्ल) परम परमेश्वर का प्रेम प्रकाश लोगों तक पहुँच जाये ।

भगवान की लीला विचित्र है वह आवश्यकता होने पर अद्भुत हस्तियाँ पृथ्वी तल पर उतारता है जिसको देख के बुद्धि हतप्रभ रह जाती है। ऐसे महापुरूष संसार के सामने आदर्श प्रस्तुत करते हैं और प्राचीन धर्म को एक नवीन रूप में ढाल के फिर अपने धाम को लौट जाते हैं। ऐसी आत्मायें अपने साथ अन्य शक्तिमान आत्माओं को भी लाती हैं। ऐसे ही एक महान संत श्री रामचन्द्र जी महाराज फतेहगढ़, जिला फर्रूखाबाद उत्तर प्रदेश में अवतरित हुये थे। उनके साथ आदि शक्ति का श्रोत लिये उनके छोटे भाई महात्मा रघुवर दयाल जी उर्फ चच्चा जी साहब श्री बृज मोहन लाल जी साहब, डा. श्रीकृष्ण लाल जी भटनागर सिकन्द्राबादी, श्री चतुर्भुज सहाय जी श्री श्याम लाल जी साहब (गाजियाबाद) श्री रामचन्द्र जी शाहजहाँपुर तथा श्याम बिहारी लाल जी पोस्टमास्टर साहब आये इन पवित्र हस्तियों ने अपने पावन चरित्र से ईश्वर का नाम लाखों हजारों लोगों तक पहुँचाया तथा तमाम लोगों को रूहानी गरमी देकर परमार्थ पथ पर डाल दिया। उनका जीवन एक सुखी था, सबका भला ऊँच–नीच, युवा–वृद्ध, स्त्री–पुरूष, हिन्दू–मुसलमान, गरीब–अमीर, विद्वान–अनपढ़, यहॉ तक कि उनके हर वह मनुष्य जो एक बार सामने से गुजर गया प्रभावित हुये बगैर न रह सका। चमत्कारी चुम्बक शक्ति थी, विलक्षण प्रेम था। जिन्होंने उनका संपर्क उठाया है उन्हें कुछ बताने की आवश्यकता ही नहीं है। यह तो उन लोगों के लिये लिख रहा हूँ जो उनको देख न सके, यदि देख भी सके तो सोहबत न उठा सके, परन्तु उनका सौम्य एवं निरन्तर चिन्तन, उनका जीवन चरित्र उन सब को प्रेम से कृतार्थ कर देगा।

जन्म :–

परम पूज्य बाबूजी का जन्म 1 जनवरी, 1901 दिल मंगलवार समय 11 बजे दिन तिथि एकादशी पौष मासे शुभे शुक्ल पक्ष सम्वत् 1957 शा

जन्म कुण्डली पूज्य बाबू जी महाराज
डा. श्याम लाल सक्सेना गाजियाबाद

स्वरित श्री रामाय नमः

1 जून 1901 ग्राम कटियां (बदायूं)
शुभे शुक्ल पक्षे संवत 1957 शाके 1822
मृग शिरा नक्षत्र
राषि :— वृष लग्न :— मेष

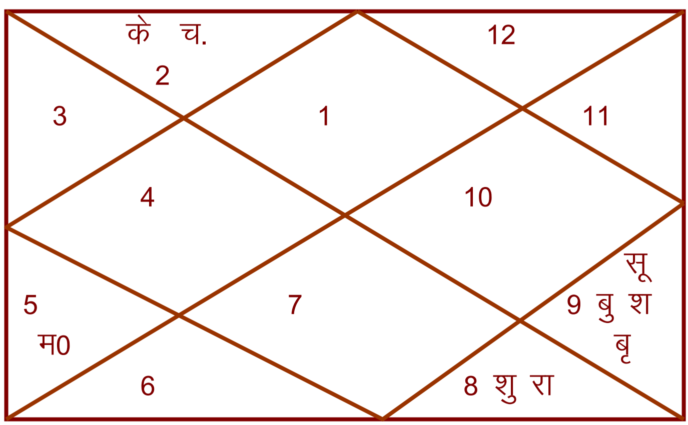

परमपूज्य बाबूजी महाराज का जन्म स्थल

ग्राम– कटिया थाना – अलापुर जिला – बदायूँ

में 1822 मृगशिरा नक्षत्र में एक छोटे से ग्राम कटिया जिला बदायूं में हुआ था। इस ग्राम का प्राचीन नाम कायस्थों की कटिया थी क्योंकि ग्राम के ज्यादातर परिवार कायस्थों के ही थे ।

यह ग्राम कटिया, बदायूं जिले से करीब 12 मील पूरब की ओर स्थित है। इसकी तहसील दातागंज है। कटिया ग्राम प्रसिद्ध कस्बा ककराला से 2 मील की दूरी पर है। उस समय यह गाँव काफी खुशहाल और इज्जतदार गांव था परन्तु बदायूं से गांव पहुंचने का रास्ता बिल्कुल कच्चा और खराब था, अब पक्की सड़क गांव से 2 फर्लांग दूर तक हो गयी है और अब बस की सेवायें भी उपलब्ध हैं ।

वह मुबारिका मकान जिसमें आप ने जन्म लिया था और जहां आपने परवरिश पाई थी और बचपन का अरसा गुजारा था अब भी है, परन्तु बड़े खस्ता हालात में, क्योंकि बदलते जमाने के साथ सभी लोग पढ़ाई या नौकरी के कारण बाहर निकल गये और अब वहां केवल उनके छोटे भाई के तृतीय पुत्र रहते हैं ।

वंश

आप एक कायस्थ कुल के भूषण थे। आपके पूज्य बाबाजी का नाम श्री बलदेव प्रसाद जी था जो कि छिबरामऊ जिला फर्रूखाबाद के रहने वाले थे। श्री बलदेव प्रसाद जी के दो पुत्र हुए। ज्येष्ठ पुत्र का नाम श्री हजारी लाल जी तथा कनिष्ठ पुत्र का नाम श्री प्यारे लाल जी था बहुत ही छोटी उमर में ही इनके पिता श्री बलदेव प्रसाद जी का स्वर्गवास हो गया और दोनों ही बालक मुंशी हजारी लाल जी केवल दो वर्ष तथा छोटे भाई प्यारे लाल जी केवल 3 ही महीने के थे जब अनाथ हो गये। ऐसे समय में उनके मामा जिनका नाम मुंशी द्धन्दी लाल श्री सुखलाल था उन दोनों को अपने साथ ग्राम सरावल बाग (सुकटिया) जिला बदायूं ले आये थे। जिस समय बालकों की उमर लगभग 6 वर्ष की थी उनके मामा सरावल से ग्राम कटिया आ गये और तबसे यह परिवार इसी ग्राम में रहने व पलने फूलने लगा। इस प्रकार आपके पूर्वजों का पालन पोषण ननिहाल में ही हुआ और आपके पूज्य पिता जी व ताऊ जी एक समस्त परिवार अन्त समय तक इसी गांव में रहे। मुंशी हजारी लाल जी के कोई सन्तान न थी परन्तु मुंशी प्यारे लाल जी (ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे) की जात से सात संताने हुयीं चार पुत्र तथा तीन पुत्रियां। आपके सबसे ज्येष्ठ पुत्र डा. श्याम लाल जी साहब हुये । वह माता पिता धन्य है जिन्होंने ऐसे सन्त को जन्म दिया। वह

जिला, गांव जिससे उन्हें बहुत प्यार था, वह घर वह कौम सभी धन्य एवं सराहनीय हैं।

आपके जन्म के बारे में कहा जाता है कि मुंशी प्यारे लाल जी के 10 वर्ष तक कोई संतान पैदा नहीं हुई । उनकी पत्नी, पूज्य बाबू जी साहब की माता का नाम सुश्री डाल कुंवर था। लोगों का मानना था कि उनके ऊपर कुछ जिन्नात का असर था। उसी समय गांव में एक सदा–सुहागिन नाम का सन्त आकर रहने लगे वह सन्त श्री हुनमान जी के उपासक थे। सन्तान के निमित्त श्री मुंशी प्यारे लाल जी उन सन्त के पास जाने लगे। उन सन्त महात्मा ने उन्हें बड़ा ही कड़ा संयम 12 वर्ष तक जमीन पर सोना, पत्तल में खाना खाना, मंगलवार का वृत रहना तथा माघ माह में हनुमान जी का वार्षिक रोट कराना बताया, कहते हैं कि आपने सभी नियमों का बड़े ही संयम से पालन किया था, और उन सन्त ने आशीर्वाद दिया कि तुम्हें कुल का नाम रोशन करने वाला पुत्र प्राप्त होगा परन्तु तुम मेरे मरने के बाद मेरे शव का विमान बना कर गंगा जी में अंतिम संस्कार करवा देना श्री मुंशी प्यारे लाल जी उनको दिये वचन का अक्षरशः पालन किया और उनके शरीर त्यागने पर बड़ी धूमधाम से उनकी यात्रा विमान बनाकर गंगा जी के तट पर की। उन सन्त के शरीर त्यागने के तुरन्त बाद आप की पत्नी श्रीमती डाल कुंवर गर्भवती हुई और परम पूज्य बाबूजी का जन्म मंगलवार को ही हुआ। सन्त सदा सुहागिन की भविष्यवाणी सत्य हुई और आप बचपन से ही ईश्वर–मुखी थे। आप के जन्म ने घर में खुशी भी दी ।

श्री मुंशी प्यारे लाल जी का घराना एक औसत दर्जे का था न ज्यादा रईसी और न ज्यादा गरीबी परन्तु समय के साथ–साथ बहुत अच्छी आर्थिक स्थिति में हो गया। जिसका श्रेय पूज्य बाबू जी की पूज्य माताजी को था। परम पूज्य बाबूजी ने अपनी डायरी से लिखा है – मेरी माता जी बहुत भाग्यशाली थी जिस रोज से आपने इस घर में कदम रखा वालिद साहब का कहना था कि उस रोज से दिन दुगनी रात चौगनी रोज तरक्की होती गई और सभी बड़े खुशो–खुर्रम थे। मेरी माताजी अति दयालु व धर्मात्मा थी परमात्मा की दया का हाथ हमेशा ही आप पर रहा, और देखते देखते मेरे वालिद (पिता) इस गीरदो निवाह (आस–पास) के एक मशहूर और इज्जतदार आदमी बन गये लोग आपको बहुत ही इज्जत की निगाह से देखते थे मेरे तजुरबे में मेरे वालिद बहुत खुशकिस्मत थे । जिस काम को करना चाहा बहुत हिम्मत एवं दूरअंदेशी से किया और मैंने उनको कभी नाकामयाब नहीं देखा। धर्म और खैरात में आपको बहुत दिलचस्पी थी। हालत यह थी कि हर शख्स आपकी खुशकिस्मती की सराहना किया करता था। मुमकिन है कि हमारे माता–पिता की नेक नियति, दान और दया का रिझान ऐसा हुआ कि हम सब में कुछ पैदाइशी अंश परमार्थ का मौजूद था।

पूज्य श्री मुंशी प्यारे लाल जी, उसी जमाने में जिला बदायूं में एक मशहूर मुसलमान फकीर जो कि रेलवे स्टेशन के पास ही रहते थे उनके सम्पर्क में आये। उनके साथ उनके एक मित्र जो कि एक मशहूर सुनार थे वह भी अक्सर जाया करते थे । शरीर त्यागने के कुछ दिन पहले उन फकीर साहबान ने श्री मुंशी प्यारे लाल जी से फरमाया **''फलो फूलो और ईश्वर का नाम लो''** और उनके सुनार साथी से कहा **''खूब कमाओ''** दुआ का असर हुआ और श्री मुंशी प्यारे लाल जी की भक्ति हनुमान जी में बहुत बढ़ गयी। कहते हैं कि उन्हें उनकी सिद्धी भी प्राप्त हो गयी थी, वही उनके ईष्ट थे । आपके औलाद भी हुई और घर जमीन जायदाद, रूपये पैसों से भर गया यह सब उनकी स्वयं की अर्जित सम्पत्ति थी आप का नाम ऊँची हैसियतदारों में लिया जाने लगा। उन फकीर की दया और दुआ के असर ने पूरे घर को खुशहाल बना दिया। उनके सुनार साथी भी बहुत बड़े रईस बन गए और अभी तक उनका परिवार काफी दौलत मंद और प्रसिद्ध है ।

परिवार

पूज्य बाबू जी के पिताजी दो भाई थे । बड़े भाई मुंशी हजारी लाल जी की दो शादियॉ हुयीं थी। पहली पत्नी ने एक कन्या को जन्म दिया और दोनों ही का स्वर्गवास हो गया। उनकी दूसरी पत्नी जिनको पूज्य बाबूजी जिज्जी तथा हम सब अम्मा के नाम से सम्बोधित करते थे वह भी पूज्य बाबूजी से बहुत प्रेम करती थीं। आपकी माता जी की मृत्यु के पश्चात परिवार का समस्त भार उन्होंने खूब सम्भाला, बड़े प्रेम और जिम्मेदारी से परिवार का दायित्व निभाया था ।

मुंशी हजारी लाल जी का स्वर्गवास अगस्त, 1926 में तथा पूज्य अम्मा का स्वर्गवास सन् 1970 में ग्राम कटिया में ही हुआ। इस प्रकार उनके पूज्य ताऊ जी का समस्त वंश समाप्त हो गया ।

पिता

आपके पिता मुंशी प्यारे लाल जी का कद छोटा जिस्म गठीला व रंग सांवला था। आप की बड़ी–बड़ी मूंछे थीं। साधारणतया आप धोती कुर्ता ही पहनते थे। परन्तु जब कभी कहीं बाहर जाते थे तो चूड़ीदार पैजामा, काली अचकन और सर पर सफेद साफा बॉधते थे। यद्यपि शैक्षणिक योग्यता दर्जा पांच तक ही थी, परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से आप एक गंभीर और विवेकशील व्यक्तित्व के थे। जमींदारी तथा कचहरी का काम बखूबी करते थे। आप बहुत बाहिम्मत बात के धनी, दयालु धार्मिक एवं अत्यंत

परिश्रमी व्यक्ति थे आप की घुड़सवारी का बेहद शौक था आप को जानवर पालने का भी बहुत शौक था। बैलों को बड़े प्यार से रखते थे इलाके में लोग उनके बैलों को देखकर कह उठते थे "कि ये मुंशी प्यारे लाल जी के बैल हैं" लोगों की इस सराहना में वह बड़ा गर्व का अनुभव करते थे। उनके समय में हमारे घर में 60– 65 जानवर बैल, घोड़े, गाय, भैंस रहते थे। आप हिसार (पंजाब) से बैलों के छोटे–छोटे बछड़े लाकर उन्हें बड़े प्यार से पालते थे। कहने का मतलब है कि आप बहुत प्रगतिशील विचार के और शौकीन थे ।

पूज्य बाबूजी के पिता जी जिन्हें वह 'लाला' कहा करते थे बड़े ही बात के पक्के थे एक घटना जिसका जिक्र पूज्य बाबूजी अक्सर करते थे और जिसका बयान करते हुये उनका हृदय अपने पिताजी के गुणों पर मुग्ध हो जाया करते था उसको बाबूजी के शब्दों में पाठकों को उनकी हिम्मत और वादा पूरा करने की प्रतिज्ञा को बताना चाहूंगा "सन् 1925 में आपने एक गॉव जिसका नाम महामदगंज था खरीदने का फैसला किया। बात यह तय हुई कि 36 हजार रूपये में पूरा गाँव खरीदा जायेगा। यह बात उनमें और उनके एक परिचित में आपस में तय हुई कि आधा–आधा गाँव खरीद लेंगे और समस्त पैसा साल भर में अदा कर दिया जायेगा। वख्त पर किसी वजह से दूसरे साहबान वादे से मुकर गये और गाँव खरीदने से साफ इनकार कर गये। पर मेरे वालिद (पिता) ने तय कर लिया कि कुछ भी हो वह पूरा गांव खरीदेंगे। मुझे लिखा कि कुछ रूपये हो तो लेकर चले आओ तुम्हारे नाम हम एक गॉव खरीदना चाहते हैं । मेरी केवल 2 वर्ष की नौकरी थी 300/– लेकर बदायूं पहुॅच गये रात को धर्मषाले में कायम किया हमसे पूछा कुछ रूपये लाए हो। मैंने 300/– रूपये हैं बता दिया, उन्होंने जवाब दिया 10/– मेरे पास भी हैं। मैंने अपने वालिद को रात भर समझाया कि 36 हजार रूपये की रकम को साल भर के अन्दर अदा करना बड़ा मुश्किल होगा। घर के सब जेवर बेचने के बाद भी इस पैसे की अदायगी न हो पायेगी आपने जवाब दिया "हम जबान दे चुके हैं" कुछ भी हो हम कल ईश्वर पर भरोसा करके बैनामा करायेंगे इसके लिये तुम्हारा पैसा काफी है। उस रात मुझे नींद नहीं आयी। ईश्वर की दया से उस साल इतनी अच्छी फसल हुई कि सब रूपया अदायगी के बाद भी अनाज पूरे वर्ष के लिए बच गया। परमात्मा ने उनकी इज्जत रख ली । आप बहुत दयालु थे खैरात भी आपका एक शौक था, एक आदत थी। एक बार बहुत बड़ा अकाल पड़ा बाबूजी फरमाया करते थे कि उस अकाल का ख्याल करते ही अब भी दिल में दहशत मालुम होती है उस समय आपके पिताजी ने अपना समस्त अनाज अपने तथा आस–पास के गॉव में बॅटवा दिया था। आपका पार्थिव शरीर 19 मार्च सन् 1950 में परमात्मा में लीन हो गया। आप अंत समय तक पूजा और संतों का सत्संग करते रहे थे अपने गॉव में ही उन्होंने

अपना शरीर छोड़ा। अपनों के बिछोह में मनुष्य को दुःखी होते तो सबने देखा पर उनके निधन पर उनके सच्चे प्रेम को जो उन्हें अपने जानवरों से था, देखने को मिला। उनके बैलों की जोड़ी ने उनके शव को तब तक नहीं उठने दिया जब तक उन पर नहीं रखा गया। ऑखों में अश्रु भरे उस जोड़ी ने तथा उनकी घोड़ी जिस पर वह सवारी करते थे और जिनको अपने खाने में से रोटी का टुकड़ा नित्य देते थे उनके निधन के एक ही सप्ताह में उन तीनों ने भी शरीर छोड़ दिया कैसा अनोखा प्यार था उनका उनके प्रति, मनुष्यों के लिए यह एक चुनौती है सच्चे प्रेम की''।

माँ

आपकी माँ का नाम श्रीमती डाल कुंवर था। उनका शरीर दुबला पतला कद सामान्य तथा रंग गेहुंआ था। आप निहायत सुशील, दयालु और धर्मात्मा थी। ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते और तमाम मन्नत पूजा के बाद जन्म लेने के कारण आप पूज्य बाबूजी को बहुत अधिक प्रेम करती थीं। पूज्य बाबूजी बताते थे कि जब वह फतेहगढ़ अपने छोटे बहनोई के साथ चुपचाप पढ़ने चले गये तब नौकरों से ज्ञात होते ही वह प्रेम विह्वल होकर नंगे पैर एक मील तक भागती चली गयी थीं। जो कभी घर से बाहर नहीं जाती थीं कभी पैदल नहीं चली थीं।

आपका स्वर्गवास 25 मई सन् 1923 में 43 वर्ष की अवस्था में ही हो गया था। यह घटना बड़ी दुःखद थी और पूज्य बाबूजी को झंझोर गयी उन्हीं के शब्दों में लिखकर मैं पाठकों को उनके हृदय की वास्तविक स्थिति का परिचय देना चाहूँगा।

''माँ का साया 25 मई, 1923 को हम लोगों के सर से उठ गया और मेरी बदकिस्मती ऐसी थी कि उसी रोज डाक्टरी पास करके खुशी–खुशी मकान आ रहा था। आप मेरे आने की खुशी में कथा आदि के लिये घर लीप रहीं थीं और सबसे खुश होकर कह रहीं थीं आज मेरा बड़ा आता होगा (घर में बड़ा होने के नाते सब मुझे बड़ा कहकर– पुकारते थे) मेरे मकान पहुंचने से दो तीन घन्टे पहले ही आप को साँप ने काट लिया और आप की इहलीला समाप्त हो गयी। मैं गॉव से जब 2 मील दूर ककराले पहुँचा ही था तभी मुझे यह खौफनायक खबर मिली। यह मेरी जिन्दगी का सबसे बड़ा और पहला सदमा था। जो नाकाबिले बरदाश्त था। वे मुझसे बहुत प्यार करती थीं। छः महीने में भी अगर कोई ऐसी चीज खाने तक की होती थी तो वह उसे मेरे लिये रख लेती थी। जब में इस लायक हुआ कि उनकी खिदमत कर सकता तब ईश्वर ने उन्हें हमसे छीन लिया, उनका साया हम लोगों के सर से उठ गया। मेरे अजीज छोटे भाई बाबूराम व

गंगादीन तथा छोटी बहन चन्दा बहुत ही छोटे थे। उन सब की परवरिश का भार भी हम लोगों पर हो गया। मां की जुदाई का सदमा सभी खानदान पर था लेकिन सबसे ज्यादा असर मेरे वालिद साहब पर हुआ जो उनके स्वर्गवास के बाद बाग में कोठा बनवा कर रहने लगे। और घर में आना बिल्कुल छोड़ दिया। इस सदमें को हम लोगों के दिल से बहुत कम कर देने वाली हमारी धर्म पत्नी थी जिनकी आयु 18–19 वर्ष ही थी पर उन्होंने इसी छोटी उम्र में सब गृहस्थी का भार बहुत अच्छी तरह संभाल लिया, छोटे भाई बहनों और बड़ों की बहुत खिदमत की जिससे सभी लोग उन के रंज गम को भूले तो नहीं पर कम जरूर होता गया।

भाई – बहन

आप चार भाई थे जिसमें आप सबसे ज्येष्ठ थे और तीन बहनें थीं। आपके बाद आपकी छोटी बहन जिनका नाम श्रीमती फूला देवी था, उनका विवाह कासगंज में श्री प्रेम नारायण दलेला जी के साथ हो गया। उन दोनों का काफी दिन पहले स्वर्गवास हो गया। आपके दो पुत्र थे, बड़े पुत्र का रिझान इस सिलसिले की तरफ था और वह पूज्य ताऊ जी से दीक्षित भी थे। उनका भी स्वर्गवास हो गया। दूसरे पुत्र बरोजगार और बऔलाद है।

आपके द्वितीय भाई का नाम श्री मुंशी जानकी प्रसाद था। उनकी शक्ल सूरत आप से बहुत अधिक मिलती थी। वह गॉव पर रह कर जमींदारी का काम देखते थे। आपके तीन लड़के तथा दो लड़कियां हैं। मझले पुत्र सुरेश जी का स्वर्गवास हो चुका है। आपके बड़े पुत्र श्री मदन लाल जी का रिझान इस सिलसिले की तरफ है और वे पूज्य बाबूजी से दीक्षित भी हैं तथा उनसे बहुत प्रेम भी करते हैं पूज्य बाबूजी को भी उनसे विशेष लगाव था बाकी सब लोग भी बरोजगार और बऔलाद है। श्री जानकी प्रसाद जी का स्वर्गवास 59 साल की उम्र में 29 मई सन् 1964 को हो गया।

आपकी दूसरी बहन जिनका नाम श्रीमती कटोरी देवी था इनका विवाह बाबू सेवती प्रसाद मुख्तार साहब कासगंज से हुआ था। जिनको समस्त सत्संगी परिवार पूज्य फूफा जी के नाम से भली भांति जानता है। ये पूज्य लाला जी महाराज से दीक्षित थे और अन्त समय तक उनका काम करते रहे थे। उनका स्वर्गवास 30 अगस्त सन् 1989 में तथा उनकी पत्नी (हमारी बुआ) का स्वर्गवास सन् 1973 में हो गया था। उनके एक पुत्र तीन पुत्रियां हैं सभी बऔलाद और बरोजगार है ।

आपके दूसरे भाई मुंशी बाबूराम जी थे वे ग्राम कटिया में ही रह कर खेती व जमींदारी का काम देखते थे। आप पूज्य बाबूजी से उम्र में 10 वर्ष छोटे थे। अपने सभी भाई बहनों में पूज्य बाबूजी आपको बेहद प्यार

करते थे। आपने अपने श्री मुख से कई बार फरमाया कि इस वख्त दुनिया में चिराग लेकर ढूंढने पर भी बाबू जैसा आदमी नहीं मिलेगा ''अपने पूज्य ताऊजी (सिकन्दराबाद) से दीक्षा ली थी और आपको तालीम की इजाजत भी थी। आप बड़े ही निःस्वार्थ सेवा करने वाले थे । आसपास के जिले तथा बरेली कमिश्नरी में आपके मुकाबले में लाठी चलाने वाला उस समय नहीं था सन् 1936 में जब घर कटिया में डकैती पड़ी तो आपने अकेले ही डाकुओं का मुकाबला किया और डाकू भाग निकले जिससे उनकी घाक इस इलाके में और जम गई। वे बड़े बहादुर व हिम्मत वाले थे तथा लाठी चलाने का बड़ा शौक रखते थे। आपका स्वर्गवास 24 अप्रैल, 1962 में पूज्य बाबूजी के पास हाल वाले कमरे में जहां अब पूज्य बाबू जी की समाधि है रात्रि के आठ बजे दिन मंगलवार को हुआ था। उनके तीन पुत्र तथा तीन पुत्रियां थीं। उनके बड़े पुत्र श्री श्याम बिहारी लाल जी का स्वर्गवास 2 दिसम्बर, 1987 को उझियानी जिला बदायूं में हो गया, बाकी सभी लड़के लड़कियां खुश और खैरियत से हैं। उन्हें घर के बच्चों में सबसे ज्यादा प्रेम सेठ भाई साहब व मुझसे था। अपने निर्वाण के कुछ दिन पहले आपने एक पत्र में लिखा था कि हे प्रभु यदि फिर मेरा जन्म हो तो मुझे भईया जैसा भाई तथा सेठ, दीन्ना जैसी औलाद दें। यह उनका हम लोगों के लिये प्रेम था। उनकी संतान में किसी का रूझान इस सिलसिले की तरफ न हो सका। अपने निर्वाण के कुछ दिन पहले परम पूज्य बाबूजी ने दुःख के साथ फरमाया कि ''मुझसे भाई साहब (पूज्य ताऊ जी) डा. श्रीकृष्ण लाल जी तथा बाबूराम की औलाद बहुत रूहानी फायदा उठा सकती थी लेकिन मुझे दुःख है उनमें से किसी का रिझान इस ओर नहीं है ।

आपके सबसे छोटे भाई श्री गंगादीन सक्सेना जो कि जिला बदायूं में चीफ सेनेटरी इन्सपेक्टर के पद पर कार्य करते थे। पूज्य बाबूजी को आपसे भी बड़ा प्रेम था और उन्हें भी पूज्य बाबू जी से बेहद प्यार था आपने पूज्य ताऊ जी से दीक्षा ली थी और आपको भी तालीम की इजाजत थी। आपको पूज्य बाबूजी ने भी बैत की इजाजत दी थी आपने अपना समस्त जीवन बड़ी ईमानदारी से व्यतीत किया था। आपके पांच पुत्र तथा तीन पुत्रियां हैं। सभी खुश हाल बरोजगार और बऔलाद हैं। आपके प्रारंभ का जीवन क्योंकि पूज्य बाबू जी के पास बीता था इस लिये उनका हम लोगों से विशेष प्रेम रहा। अपने अन्तिम समय में उनका प्रेम इतना बढ़ गया था कि अगर कोई झूंठ से भी पूज्य बाबू जी का नाम ले लेता था तो आप प्रेम विह्वल हो जाते थे और आंसू की झड़ी लग जाती थी। आपका स्वर्गवास 31 मार्च 1986 में बदायूं में हो गया ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें ।

आपकी सबसे छोटी बहन श्रीमती चन्दा देवी थीं उनका विवाह बरेली में श्री जमुना प्रसाद जी से हुआ था। उनके भी सभी संतान अपनी–अपनी जगह बरोजगार और बऔलाद है। उन दोनों का ही स्वर्गवास हो गया है। उनके परिवार में अभी इस ओर किसी की रूचि नहीं है ।

पूज्य बाबूजी अक्सर फरमाते थे कि मैंने ख्याली तौर पर कटिया यानी खानदान के सभी में परमार्थ का बीज डाल दिया है। ईश्वर बेहतर जानता है कि कौन कब किस वक्त इस तरफ झुके ईश्वर दया करें फिर सब वक्त देखते हुए अच्छे हैं ।

बचपन एवं शिक्षा

आपका पालन पोषण बड़े लाड़ प्यार से हुआ था। आपके माता पिता आपसे बहुत प्यार करते थे। एक तो काफी अरसे की प्रतीक्षा के बाद आपका जन्म हुआ था दूसरे आप परिवार के सबसे ज्येष्ठ और खानदान के पहली संतान थे। इस कारण सभी का आपके ऊपर विशेष लगाव व स्नेह था।

पांच वर्ष की अवस्था में आपका दाखिला कटिया गांव के ही प्राइमरी स्कूल में करवा दिया गया। वहां से आपने दर्जा 4 पास किया। गांव का वातावरण बहुत अच्छा पढ़ाई के लिये नहीं था। इसके पश्चात् आपका दाखिला अलापुर मिडिल स्कूल में करा दिया गया जो कि कटिया से करीब 2 मील की दूरी पर था। वहां से अपने मिडिल पास किया। आप बड़े ही कुशाग्र बुद्धि के थे, और पढ़ने में काफी रूचि रखते थे। यद्यपि गांव का वातावरण बड़ा ही दूशित सा था आपने अपने स्कूल के दिनों की सोसाइटी जो कि अच्छी नहीं थी उसके सम्बन्ध में स्वयं लिखा है ।

''यह दस बारह साल की उमर का हिस्सा छोटी सोसाइटी बल्कि बाज बख्त यह कह सकते है कि गलीज सोसाइटी में गुजरा हालांकि जब मैं 8 वर्ष का था तो एक आर्य समाजी विचार के बहुत नेक मास्टर साहब कटिया स्कूल में तशरीफ लाये और उन्होंने सब लड़कों पर ही नहीं बल्कि तमाम गांव के लोगों पर बहुत अच्छा असर डाला और ज्यादातर लोग धार्मिक प्रवृत्ति के एकाएक हो गए। लोग वहां मांसाहारी यानी गोश्तखोर थे। लेकिन इन मास्टर साहब के असर से गांव की ये हालत जाती रही। लोग दिन ब दिन मांस मछली छोड़ते रहे मेरे ऊपर भी इनका असर विशेष पड़ा और सदाचार तथा परमार्थ की पहली किरण उन्हीं के द्वारा 8 वर्ष की अवस्था पर पड़ी ''यह समय वह था जब कायस्थों में विशेष रूप से सभी मांसाहारी हुआ करते थे गांवों में इसका बहुत ही अधिक चलन था ।

सन् 1913 में पूज्य बाबू जी ने वर्नाकुलर मिडिल क्लास की परीक्षा पास की उस जमाने में यह एक बहुत बड़ी सनद मानी जाती थी और कटिया गांव में आप पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इतनी छोटी उम्र में यह परीक्षा पास की थी। आपको आगे अंग्रेजी पढ़ने की बहुत उत्कृष्ट इच्छा थी। परन्तु उनके पिता जी उन्हें कानूनगो की परीक्षा दिलाना चाहते थे। क्योंकि उस समय यह एक बहुत इज्जतदार और दबदबे का ओहदा माना जाता था दूसरे वह उन्हें दूर नहीं भेजना चाहते थे। उनकी इच्छा की पूर्ति के लिये आपने ''**दी सर्वे स्कूल आफ पटवारी**'' से 6 महीने का एक कोर्स किया और सह परीक्षा पास की। परन्तु जैसा कि बाबू जी का इच्छा बहुत थी कि वह आगे पढ़ें इस इच्छा की पूर्ति में उनका बहनोई श्री प्रेम नारायण दलेला जी ने बहुत सहयोग दिया। आपने बढ़पुर जिला फर्रूखाबाद जहॉ वह रहते और पढ़ते थे वहां उन्हें भेजने के लिए उनके पिता जी से भरपूर सिफारिश की आपकी उत्कृष्ट इच्छा देखकर उनके पिता जी ने आगे पढ़ने की इजाजत दे दी। इस प्रकार एक साल आप वहां प्राइवेट पढ़े और वह साल पढ़ाई का ज्यादा अच्छा नहीं गुजरा अगली साल दर्जा 6 में दाखिला ले लिया गया पर कोर्स और विषय ठीक न होने से दोनों ही लोग आप तथा आप के बहनोई स्व. दलेला जी फतेहगढ़ आ गए। यहां मिशन स्कूल में दाखिल हो गए और 1914 में छठी तथा 1915 में सातवीं क्लास में अच्छी तरह पढ़ने लगे ।

सन् 1915 जीवन का यह साल उनके जीवन को पलटने वाला साल था। यही वह मुबारक वर्ष था जब आपका मिलन उस महान हस्ती से हुआ जिन्होंने जीवन की सरिता की दिशा ही बदल दी और एक अनोखा उद्देश्य दे दिया । इस अनुपम मिलन का वर्णन आगे किया जायेगा ।

कक्षा 6 से स्कूल लीविंग तक आप वहीं पढ़े और 1919 में स्कूल लिविंग की परीक्षा अच्छे नम्बरों से पास कर आप घर चले आए। ईश्वर को तो कुछ और मन्जूर था इस लिए कुछ दिन बाद गर्मी के दिन में आपके पिता जी की तबियत खराब हो गयी, उन्हें देखने को डाक्टर बुलाना पड़ा जो डाक्टर उन्हें देखने आए उनका व्यवहार बहुत रूखा और शुष्क था। उसी दिन आपके हृदय को ठेस पहुंची और डाक्टर बनने के लिए आपका हृदय बेचैन हो गया जीवन में पूज्यनीय लालाजी का समावेश हो चुका था और उनसे प्रेम भी बहुत बढ़ गया था। इस कारण अब भविष्य में क्या काम करता है यह पूछने प. लालाजी के पास जाने के लिए उन्होंने अपने पिता जी से 4 रूपये किराये के लिए और फतेहगढ़ रवाना हो गए। ''नहा धोकर जब मैं आपके पास बैठा तो मैंने कहा साहब, मैं इम्तिहान में तो पास हो गया अब जो लाइन आप मेरे लिए मुनासिब समझे उसे ज्वाइन कर लूं

आपने फरमाया कि ''पेशे तो बेटे दो ही अच्छे हैं एक डाक्टरी दूसरी मास्टरी, बाद बाकी तो सभी पेशे पेट भरने के जरिए होते हैं। मेरी इच्छा है कि तुम डाक्टरी पढ़ो, यह लाईन अच्छी है डाक्टर बनने पर गरीबों की सेवा कर सकोगे'' बाबू जी अक्सर बताते थे कि जो उनके मन की इच्छा थी बिल्कुल वही पूज्यनीय लाला जी ने फरमा दिया। उसी समय श्री डाक्टर श्रीकृष्ण लाल जी भटनागर पूज्यनीय ताऊ जी भी आ गए और पूज्यनीय लाला जी ने उनसे मुखातिब होकर कहा ''श्यामलाल आगरा मेडिकल कालेज में डाक्टरी पढ़ने जा रहे हैं तुम भी इनके साथ चले जाओ, ईश्वर अपनी दया करेंगे और तुम दोनों आदमी डाक्टर बन जाओगे'' उस समय बाबू जी की उम्र निर्धारित उम्र से कई महीने ज्यादा थी और पू. बाबू जी बताते थे कि उन्होंने डरते–डरते दबी जबान से इस बात को पू. लाला जी पर प्रकट किया। आपने मोहब्बत में फरमाया ''कौन पूछता है श्रीकृष्ण की उम्र तो चार पांच साल ज्यादा है''। उनकी परम दया से आप दोनो साहबान का दाखिला मेडिकल कालेज में हो गया और सन् 1923 में आप दोनों एल.एम.पी. करके डाक्टर बन गए। सन् 1919 से 1923 तक पू. बाबू जी और पू. ताऊ जी डाक्टर श्रीकृष्ण लाल भटनागर मेडिकल कालेज के हास्टल में बतौर रूप पार्टनर एक ही कमरे में साथ ही साथ रहे ।

व्यक्तित्व

आपका कद पांच फिट छः इंच शरीर गठीला, बहुत चौड़ी पेशानी, लम्बे हाथ, चेहरा गोल तथा रंग काफी सांवला था । बाल घुघंराले तथा बहुत मुलायम थे। बाल सदैव छोटे ही रखते थे । बड़े बाल उन्हें पसंद नहीं थे। बाहें करीब करीब घुटनों को छूती रहती थीं । आपके चेहरे पर एक अजीब मोहकता थी, सौम्य व्यक्तित्व था। आंखों में एक अद्‌भुद आकर्षण था। कोई उनसे आंख मिलाकर बात नहीं कर पाता था साधारणतः तथा आप पूरी आंख खोल कर किसी को नहीं देखते थे। यदि किसी को देख लेते थे तो प्रायः लोग बताते है कि उनके शरीर में बिजली के करंट जैसा लग जाता था। आपका स्वभाव बहुत शांत, मुद्रा गहन और छवि सांवली परन्तु लावण्यमय थी। आप मृदुभाषी थे तथा अपने प्रियजनों के छोटे–छोटे से सुख आराम का पूरा ध्यान रखते थे। यद्यपि आप दीनता की जीती जागती मूर्ति थे परन्तु अपने वसूलों अपने सिद्धान्तों में आप बहुत ही दृढ़ और कट्टर थे। बहुत दूरदृष्टि रखते थे। किसी के बारे में बड़ी गम्भीरता से राय बनाते थे। परन्तु एक बार राय बनाने के बाद कभी बदलते नहीं थे। सामने परखने वालों को भी आश्चर्य हो उठता था, आप कभी किसी की बात कभी किसी दूसरे को नहीं बताते थे कम बोलते थे और जो कुछ

कहते धीमी आवाज में बोलते थे। ऊंचे स्वर में जोर से बोलना उन्हें पसंद नहीं था। शांतिप्रिय स्वभाव के थे आप अपने उम्र से बड़ों का पूरा आदर करते थे, तथा छोटे बच्चों से आप बहुत प्रेम करते थे उनकी सुलभ बाल क्रीड़ाओं को देखकर बहुत ही हंसते थे एवं प्रसन्न रहते थे घर के सभी छोटे बड़ों का पूरा ध्यान रखते थे ।

आप अपनी युवा अवस्था में छोटी–छोटी मूंछे रखते थे परन्तु बाद में क्लीन शेव भी रहे। आंखों पर चश्मा लगाते थे। आप औसत चाल से चलते थे और उनकी निगाह अधिकतर नीची रहती थी। ऐसा भी हो जाता था कि यदि उनकी बगल से कोई निकल जाए तो उन्हें पता भी नहीं चलता था। व्यक्तित्व में अजीव सी मादकता थी कि लोगों का सर अपने आप झुक जाता था कोई भी कठिनाई हो आपके वह प्यार भरे शब्द ''बेटे कोई परेशानी तो नहीं है'' जैसे सारी कठिनाइयों का दुखों का हरण मंत्र था। इसका अनुभव उनके प्रेमी जनों को खूब है थकान पीड़ा सभी उनके दर्शन मात्र से दूर हो जाती थी। लोगों को ललक रहती कि कब हमसे बोलें ऐसा व्यक्तित्व था उनका।

पहनावा

आपका पहनावा वातावरण के अनुकूल था यद्यपि आप बहुत महंगे कपड़े नहीं पहनते थे परन्तु बहुत साफ कपड़े पहनते थे। आप आफिस में बहुत अच्छी वेषभूषा में जाते थे। पैन्ट पूरी बांह की शर्ट, फैल्ट हैट अधिकतर ब्राउन जूता तथा आस्तीनदार बनियान पहनते थे। आप घर के सिले हुए जॉघियों का प्रयोग करते थे। जाड़ों में गरम सूट टाई स्वेटर आदि का प्रयोग करते थे। सर में भूरे रंग की ऊन की गोल टोपी लगाते थे । कभी कभी दस्ताने तथा मफलर भी प्रयोग में लाते थे। गर्मी के दिनों में भी बाहर आने जाने में भी पैंट शर्ट का ही प्रयोग करते थे। घर पर आप धोती कमीज पहनते थे। अधिकतर धोती परन्तु कभी–कभी तहमद भी बांध लेते थे। पहले आप कुर्ता नहीं पहनते थे। परन्तु सन् 1972 के बाद आप कुर्ते का भी प्रयोग करने लगे, परन्तु हम लोगों ने आप को पैजामा पहने कभी नहीं देखा। आपको हल्के या सफेद रंग के कपड़ें ही पसन्द थे ।

रूचि एवं शौक

आप सरसों का तेल शरीर में तथा बालों में भी प्रयोग करते थे। बाल में तिल्ली का तेल सन् 1981 की बीमारी से लाल तेल जवां कुसुम का प्रयोग करने लगे थे। अधिक खुशबूदार तेल से आपको नफरत थी। नहाने के लिए आपको पीयर्स साबुन ही पसन्द था और हाथ धोने के लिए

लाइफब्वाय का प्रयोग करते थे । पाउडर क्रीम का प्रयोग नहीं करते थे। सेन्ट या अधिक खुशबुदार चीज पसन्द नहीं थी। फूलों का बहुत शौक था। सफेद बेला के फूल की खुशबू आपको पसन्द थी । कहते थे मोहब्बत से दिये गये फूल जल्दी नहीं मुरझाते हैं ।

यद्यपि आप स्वंय एलोपैथिक डाक्टर थे। परन्तु दवाओं का प्रयोग बहुत कम करते थें देशी दवाओं का आपको अच्छा ज्ञान था और उसे आप स्वंय भी प्रयोग करते थे। यूनानी तथा आयुर्वेदिक दवाओं पर आपको बहुत विश्वास था। उनका प्रयोग भी आप करते थे। खान–पान के द्वारा उपचार पर भी आपको विश्वास था। जैसे बादाम, काली मिर्च का मिश्रण, आवलें का मुरब्बा, च्यवनप्राश आदि को आप पसन्द करते थे ।

बचपन में आपको घुड़सवारी का तथा गदा चलाने का बेहद शौक था। परन्तु डाक्टरी पढ़ने जाने पर ये शौक कम हो गया और शिकार का बहुत शौक हो गया। आपका निशाना प्रायः अचूक होता था। जब पीलीभीत में पदस्थापित थे तो वहां जंगलों में शिकार खेलने जाया करते थे। आपने बारह सींघा हिरन तथा नील गाय का बहुत शिकार किया। गांव कटिया में अभी तक आपके द्वारा शिकार की हुई बारहसींघा की सींग रखी है। लोग दवाई के तौर पर उसका प्रयोग करते हैं। सिकन्दराबाद तथा गाजियाबाद घर पर जो मृग छालायें हैं वह आपके ही शिकार द्वारा निकाली गयी है ।

एक समय पूज्यनीय बाबू जी हम लोगों को लेकर जंगल में शिकार खेलने गये। एक हिरन का जोड़ा जो झील में पानी पी रहा था। आपने उसे निशाना बनाया और हिरन मर गया। उसको कार पर बॉध लिया गया। हिरनी आपके कार के पीछे–पीछे दौड़ती हुई आबादी के पास तक चली आयी इस घटना ने पूज्य बाबूजी के हृदय पर गहरी चोट डाली और उन्होंने 1938 से 1943 तक बन्दूक को हाथ तक नहीं लगायी। शिकार से जी उचट गया।

पुनः एक बार गाजीपुर थे। तो आपकी बड़ी पुत्री श्रीमती सरोज को एक बंगाली मास्टर संगीत सिखाने आते थे। वह हमारे घर के सामने पीपल के पेड़ पर बैठे हरियलों का शिकार कर रहे थे। परन्तु कई बार प्रयत्न करने पर भी एक भी हरियल ना मार पाये। अचानक आपने बन्दूक ले लिया और दो फायर किये और हरियल मार गिराया एक हरियल हमारे घर के चारों तरफ घूमता रहा। क्योंकि उसका जोड़ा बिछड़ गया। जानवरों को भी बिछड़ने का इतना दुख होता हैं। यह देखकर आपको उस दिन बहुत ही दुख हुआ। और उसके बाद आप जब तक रहे कभी बन्दूक हाथ नहीं लगायी । यह आपकी बारह बोर की बन्दूक जो आपने अपने बहनोई श्री

प्रेम नारायण दलेला जी से 75/— रूपये में खरीदी थी। बहैसियत निशानी अब भी घर में मौजूद है। बाबूजी कहते थे कि जानवरों को भी बिछड़ने का इतना दुख होता है ।

खान—पान

आप खान—पान पर विशेष जोर देते थे । स्वयं दर्जे एक एहतिहात बरतते थे, कभी होटलों और बाजार में खाना नहीं खाते थे और हम बस को एहतिहात बरतने को कहते थे। उन्होंने स्वयं भी इस बारे में अपनी डायरी में लिखा है "मेरा अपना जातीय तजुर्बा यह है कि बुरी कमाई और गलत आदमियों के घर और अधर्म की कमाई और गन्दे विचार वालों के हाथ का पका खाना बहुत ज्यादा नुकसानदेह होता है। वाक्या यह है कि वाइफ के मृत्यु के बाद जब मैं आंवला में रहता था तो हर महीने तनख्वाह लेने बरेली जाया करता था। वहां स्टेशन पर ही एक वर्मा होटल में खाना खा लिया, खाना खाया ही था कि बड़े ही वाहियात ख्याल परेशान करने लगे दो तीन वक्त के फाकें के बाद हालात सुधरी, पर कुछ समझ ना पाया। अगले माह फिर वहीं खाना खाया, इस बार फिर वही हालत हुई, फिर भी समझ में कुछ खास नहीं आया। तीसरी बार जब खाने के लिए बैठा ही था और थाली आई ही थी कि तबियत में गिरावट मालूम हुई। तब मैंने खाने का पूरा पैसा अदा कर दिया और खाने को हाथ भी नहीं लगाया। बाद में दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि होटल का मालिक, नौकर सभी व्यभिचारी थे। ये वाक्या बताते भी थे और कहते भी थे कि जैसा खाना खाओगे वैसा ही विचार बनेगा। भ्रष्टाचार की कमाई का खाना कम से कम तीन पुस्तों को तबाह कर देता है। यह कहते थे परमार्थ के लिए तो ये जरूरी है कि —

1. खाना बड़ी हक और हलाल और मेहनत की कमाई का हो ।
2. खाना बनाने वाले व्यक्ति के विचार बड़े शुद्ध और पवित्र हो।
3. खाना खाने का स्थान साफ सुथरा और पवित्र हो ।
4. खाना बहुत स्वादिष्ट और बहुत जायकेदार न हो।
5. खाना ईश्वर के ध्यान से खाना चाहिये। खाना खाने से पहले ये प्रार्थना जरूर कर लें कि हे प्रभु संसार के समस्त लोगों को भोजन मिल गया है और ग्रहण कर लिया है। मैं जो भोजन ग्रहण कर रहा हूं उसमें ईश्वर का प्रकाश ही प्रकाश है और इससे मेरे विचार शुद्ध हो"। कभी गुस्सा मन में हो तो उस समय खाना न खाये। आपको इनका बहुत दृढ़ता से पालन करते थे (घर पर भी तथा जब आप नौकरी में थे दौरे पर भी

जाया करते थे) आप किसी प्रकार के भी नशे के बहुत खिलाफ थे। आप कभी सिगरेट, न तम्बाकू, न पान ही खाते थे। एक बार एक्सीडेंट में आप बतौर दवा हुक्का पीने लगे थे। परन्तु उसको भी छोड़ दिया।

आपकी खुराक बहुत कम थी। आम तौर पर बहुत छोटी–छोटी दो या तीन रोटियां दाल सब्जी आप दोपहर के खाने में तथा रात को रोटी सब्जी ही खाते थे । आपको नमक अजवायन की पूरी, कचौड़ी तथा अरवी की सब्जी काफी पसन्द थी। मूंग की दाल के मुगौडे भी आपको रूचिकर थे। सब्जी में आप टमाटर और खट्टी चीजें नहीं पसन्द करते थे। चाट आदि का भी आपको शौक नहीं था। फल आपको बहुत तो पसन्द था। वैसे अंगूर, सेब, चीकू और पपीता आदि को चाव से खाते थे। आपको मेवे में बादाम और किसमिस पसंद था, साधारणतया पांच बादाम भिगोकर मिश्री के साथ खाते थे। बादाम के लड्डू भी बनवा कर आप एक सुबह दूध के साथ ले लिया करते थे। सुबह नाश्ता नहीं करते थे। गरमी में मोरब्बा भी आपको बहुत पसंद था। आप डबलरोटी, फ्रूट केक, बिस्कुट भी खा लेते थे। दही आप अधिक प्रयोग नहीं करते थे पर कभी–कभी दिन में मीठा दही चीनी डाल कर खा लेते थे। खाना खाने के बाद आप थोड़ा सा गुड़ भी खाया करते थे। जाड़े में कभी–कभी मक्का या बाजरे की रोटी का टुकड़ा लेकर बड़े चाव से खाते थे। वैसे तो सभी दालें खाते थे, परन्तु उड़द की दाल उन्हें विशेष पसंद थी। बाद के दिनों और बीमारी में मूंग की छिकलें वाली दाल बहुत पसंद करने लगे थे। मिठाई आदि का कोई ज्यादा शौक नहीं था। वैसे खानें में आप सब चीजें खा लेते थे और हम लोगों को भी हमेशा यही जोर दिया करते थे कि सभी चीजें खाने का आदी होना चाहिए पता नहीं किस समय कैसा बख्त पड़ जाये। शादी, ब्याह या दूसरी जगह भी खाने में जहां तक हो परहेज करते थे। आप दावतों में खाने के पक्ष में नहीं थे। शिष्टाचार के नाते जाते थे कभी–कभी हम लोगों से सख्त शब्दों में कहते थे ''बेटे एक बख्त न खाने से कोई भूखा नहीं मर जायेगा पर एक बख्त गैर जिन्स के खाने से दो–तीन दिन की पूजा साफ हो जाती है।'' सबके सामने खाना आपको पसंद नहीं था। जब तक आपका स्वास्थ्य ठीक था आप चौके में ही बैठ कर खाना खाते थे । खाना खाने का समय दोपहर में प्रायः 12.00 बजे या 1.00 बजे के बीच और रात में 9 बजे से 10 बजे तक ही था। दूध आपका प्रिय आहार था। आप कहते थे – ''दूध से अच्छा कोई डाइट नहीं । परमार्थ के लिए दूध से अच्छी कोई चीज नहीं''। आप गरम गाढ़ा मलाईदार दूध चीनी मिलाकर पिया करते थे। लगभग एक किलो दूध पी लेते थे। इस रूचि के फलस्वरूप आप जब तक स्वस्थ थे हमेशा गाय, भैंस पालते थे। मांसाहारी भोजन का जीवन में कभी प्रयोग नहीं किया। खाने में आपको दिखावा पसंद नहीं था परन्तु आपका यह दृढ़ और बहुत अडिग वसूल था कि घर से कोई भूखा न जाये। हमारी माता

जी को यह सख्त हिदायत थी कि चाहे रोटी और एक सब्जी हो पर खाना जरूर खिला दो। घर पर आये सत्संगी भाई तथा मेहमानों को वह बड़ी आग्रह के साथ भोजन कराते थे। बार–बार पूछते थे कि ठीक से खा लिया स्वयं घूम फिर कर दें लेते तब तसल्ली करते थे। बहुत से प्रेमीजनों को (जो धन्य हैं) खुद अपने हाथ से परस–परस कर गरम–गरम रोटियां खिलाते थे जिसको बताते हुए उनके प्रेम से वह बहुत विह्वल होकर अश्रुपात करते देखे गये हैं। वैसे उनके सम्पर्क में आये सभी भाई इसको जानते हैं। अपनी गम्भीर बीमारी के दौरान मोहन नगर अस्पताल में होश आने पर अपने प्रेमियों को देखते ही उनकी पहली चेष्टा यही जानने की थी कि सबने खाना खा लिया है या नहीं। किसी को कोई तकलीफ न हो और यही हिदायत हमारी माता जी को भी दी गयी थी जिसका उन्होंने उस समय और उनको परदा करने के बाद अपने अल्प जीवन जो कि बहुत कम समय सवा दो वर्ष का ही रहा था, मैं अक्षरशः शत–प्रतिशत पालन किया। वह अनन्य प्रेमी थे, एक उदाहरण, एक मिसाल थे जिन्हें जीवन और मृत्यु से युद्ध के बीच भी अपने सत्संगी प्रेमी भाइयों का ध्यान था। स्त्रियों के लिए उनका यहीं कहना था कि घर से कोई उपासा न जाये, यही तुम्हारी पहली उपासना है और यही पूजा है कि शांति और प्रेम बनाये रखो ।

विवाह एवं सन्तान

उस समय के प्रचलन के अनुसार आपका प्रथम विवाह 9 जून 1916 में केवल 15 वर्ष की अवस्था में हो गया था। आपकी पत्नी जिनकी उम्र उस समय लगभग 11 वर्ष की ही थी जो बहुत ही सुंदर और सुशील थी। उनका नाम श्रीमती सुशीला देवी था। बहुत ही कोमल होने के कारण उनका नाम फूलकटोरी पड़ गया। कहते है गांव कटिया में और इस खानदान में उनके जैसी सुन्दर बहू नहीं उतरी। उनका कद बहुत अच्छा, दुबला–पतला शरीर रंग बहुत गोरा मुखाकृति बहुत आकर्षक थी। रूप के साथ–साथ आप बड़ी गुणवती भी थी, बड़ी कुशल गृहणी थीं और थोड़े ही समय में सबकी प्रिय हो गयी। उनके सास–ससुर (हमारे बाबा–दादी) उन्हें बहुत अधिक चाहते थे। कहते थे अधिकतर लाड़ प्यार के कारण उन्हें वह (दादी) अपने साथ सुलाती थीं।

आपका यह विवाह बड़ी धूमधाम के साथ ग्राम जगत जो कटिया गांव से 3 मील की दूरी पर था, वहां के एक प्रतिष्ठित जमींदार घराने में हुआ था। बारात बड़ी शानदार थी। बारात का पहला हाथी जगत में और अन्तिम बैलगाड़ी कटिया में थी। यह घराना बहुत ही सम्पन्न था। बदायूं में

स्टेशन के पास अभी भी एक जगत प्याऊ तथा जगत धर्मशाला है जिसमें उन लोगों ने पूज्य बाबूजी के पिताजी के लिए एक कमरा बनवाया था। कहने का अर्थ है कि उस समय वह परिवार बड़े दबदबे वाला था। आस–पास में उनकी धाक थी।

उस जमाने में जमींदार परिवारों में और खासकर कायस्थ परिवार की शादियों में नाच–गाने के लिए रंडियां ले जाने का चलन था। यद्यपि आपकी उम्र शादी के समय केवल 15 वर्ष की ही थी परन्तु आपने बड़ी सख्ती से विरोध किया और अपने पिताजी को अपनी बात मानने के लिए मजबूर कर दिया और रंडी की जगह मथुरा की तीन रास मंडलियां ले जायी गयीं ।

यह समय आपकी (पू. बाबूजी) पढ़ाई का था। इस कारण उनकी पत्नी (हमारी माता जी) अधिकतर गांव कटिया में ही रहा करती थीं। आपके माता जी के परदा करने के बाद छोटी सी 18 वर्ष की उम्र में आपके ऊपर पूरे परिवार की देखभाल का भार आ गया। जिसके कारण भी आपका अधिक समय गांव कटिया में ही व्यतीत हुआ । यद्यपि आप विवाह के पश्चात् 18 वर्ष तक जीवित रहीं पर वह सारा समय केवल सेवा ही में बीता और पू. बाबू जी कहते थे कि ''मैं उन्हें कुछ आराम न दे पाया''।

स्व0 श्रीमती सुशीला देवी

उर्फ

श्रीमती फूल कटोरी देवी (प्रथम पत्नी)

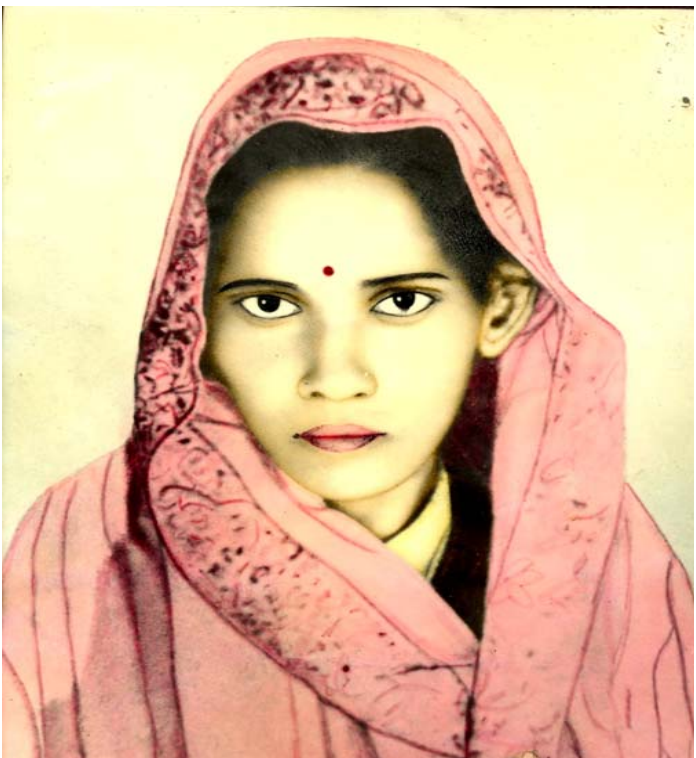

ग्राम– जगत
जिला – बदायूँ

निधन – 28 मई 1934
सिकन्दराबाद

स्व0 श्रीमती शीला देवी
(द्वितीय पत्नी)

जन्म .... निधन – 22.12.1938

बुलन्दशहर पीलीभीत

आपकी पहली सन्तान 2 फरवरी, 1925 को कटिया में ही हुआ। वह पुत्ररत्न घर भर के लिए बहुत खुशी ले के आया। उसका नाम कृष्णानन्द रखा गया। पू. बाबू जी बताते थे कि उनके पिताजी उसे बहुत प्यार करते थे। 28 अप्रैल, 1927 में अचानक थोड़ी सी बीमारी में (इन्फेन्टाइल लीवर) इस बच्चे की मृत्यु दिलदार नगर जिला गाजीपुर में हो गई। बच्चे की अचानक मृत्यु और वह भी पहले बच्चे की घर से दूर परदेश में, आपके तथा आपकी पत्नी के लिए नाकाबिले बरदाश्त सदमा था। इसका असर उन पर इतना हुआ कि उनके शरीर में घुन लग गया और तंदुरूस्ती पर बहुत असर पड़ा। यद्यपि उसके बाद दो (बच्चों) पुत्रों को उन्होंने जन्म दिया परंतु पहले बच्चे का गम वह भूली नहीं ।

25 अगस्त, 1926 दिन बुधवार को उनकी पहली पुत्री का जन्म हुआ। जिनको सारा सत्संग समाज बत्ता जिज्जी के नाम से जानता है। आपका नाम सरोज रखा गया। जिनको पूज्य बाबूजी बहुत प्रेम करते थे।

3 जुलाई 1931 को सुबह 4 बजे उनके दूसरे पुत्र का जन्म बुलंदशहर के शिवपुरी के मकान में हुआ आपको प्यार से घर में सेठ कहते हैं। परन्तु उनका पूरा नाम डा. राजेन्द्र कुमार सक्सेना है। पूज्य बाबू जी आपसे अत्याधिक प्रेम करते थे। जन्माष्टमी वाले दिन 23 अगस्त, 1933 सुबह 3 बजे उनके तृतीय पुत्र का जन्म सिकन्दराबाद (जि. बुलन्दशहर) के बड़े महल में जो कि पू. ताऊ जी (डा. श्रीकृष्ण लाल भटनागर) का पुश्तैनी मकान था, में हुआ। घर में उन्हें दीन्नू, दीन्ना के नाम से पुकारा जाता है और मुझ सेवक का नाम डा. वीरेन्द्र कुमार सक्सेना रखा गया। उस दौरान में पू. बाबू जी सिकन्दराबाद में (हमारी मां) अपनी धर्म पत्नी के इलाज के सिलसिले में मकान लेकर रह रहे थे। उनका इलाज दिल्ली में डा. अन्सारी जो कि लग्स एण्ड चेस्ट डिज़ीज के मशहूर डाक्टर थे, उनसे चल रहा था। सिकन्दराबाद से कार द्वारा हर माह दिल्ली ले जाकर दिखाने में आसानी होती थी, क्योंकि उन्हें टी.बी. रोग, स्व. प्रेम नारायण दलेला (पूज्य बाबू जी के बहनोई) की सेवा करने में लग गया था। उस जमाने में इस रोग की कोई दवाईया इतनी अच्छी नहीं थी। आपकी हालत दिन पर दिन गिरती गई और साफ लगने लगा कि अब आप न बच सकेंगी। पूज्य बाबू जी काफी परेशान थे और गिड़गिड़ाकर पूज्य लाला जी महाराज से दुआ

करने लगे कि किसी तरह उनकी जिन्दगी का कुछ हिस्सा उनकी पत्नी को ट्रान्सफर हो जाये, क्योंकि उन्होंने बड़ी खिदमत की थी और बच्चे बहुत छोटे थे। मैं यहां पूज्य बाबू जी के शब्दों में वाक्य लिख कर आपको इस समय की वस्तु स्थिति तथा उनकी मनःस्थिति से अवगत कराने का प्रयत्न कर रहा हूं। यह सिलसिला जिन्दगी का चलता रहा वह प्रेम और खिदमत की मूर्ति थीं और जिस रोज से ब्याह कर आयी थीं सबका यह कहना था, दिन ब दिन घर तरक्की करता ही चला गया। मैंने पूज्य लाला जी से उनकी जिंदगी के जानिब दुआ मांगी । यह दुआ मांगते–मांगते ही नींद आ गयी, और ख्वाब में देखा कि पूज्य लाला जी साहब एक और बुजुर्ग शायद ख्वाज़ा शेख अहमद साहिब के साथ तशरीफ लाये और फरमाया इनके दिन पूरे हो गये है। वक्त आखिर आ गया उन बुजुर्ग के हाथ में एक लोहे की मोटी सलाख थी" उन्होंने मुझसे कहा– तुम्हारा तालुक इस सिलसिले के बुजुर्गों से इतना ही मजबूत है जितना यह लोहे की सलाख और एक साहब की शक्ल सामने आयी और फरमाया इनकी बहन से शादी कर लेना मैं उन बुजुर्ग की शक्ल को कभी न भूल पाया। गो मैं अपने ख्यालात को छिपाता रहा लेकिन जिस्म और जान टूटते से मालूम पड़ने लगे। रात के ख्वाब के बाद जब मैंने सुबह उठ कर उनकी चरपाई नहीं छोड़ी तो हम दोनों सारा दिन रोते रहे कि अब एक–दूसरे से जुदा होने वाले हैं। सो मैंने उनकी बीमारी वाले ख्वाब के हिस्से को ही उनसे कहा उन्होंने हिम्मत तोड़ दी क्योंकि बत्ता सेठ दीन्नू बहुत ही छोटे थे। मैंने ढांढस बंधाने की कोशिश की और कहा कि मैं कसम खा कर यह वादा करता हूं कि मैं तुम्हारे बच्चों को कभी कोई तकलीफ न होने दूंगा। मुझको कितनी ही तकलीफ हो, मैं वादा कर सकता हूं कि न शादी करूँगा, न उसका ख्याल करूँगा। वाइफ की हालत दिन पर दिन गिरने लगी। आखिर वह बदकिस्मती दिन आ ही गया और सिकन्दराबाद में 28 मई, 1934 को वह मेरा साथ छोड़ कर दुनिया से रवाना हो गई हम एक–दूसरे से हमेशा–हमेशा के लिए जुदा हो गए । दुनियादारी के मुताबिक उनका कारज किया। 28 मई को जब रंज का पहाड़ टूटा उसी रोज कटिया में मेरी छोटी बहिन चन्दा की शादी थी दुनिया खूब है, मैं बत्ता, सेठ, दीन्नू को उनकी नानी के पास छोड़कर फिर मुलाजमत पर वापिस आ गया। इस सदमें ने मुझे कहीं का नहीं रखा यह जबरदस्त सदमा इस जवान उम्र में नाकाबिले बरदाश्त था। मेरे ऊपर एक लड़की, दो लड़कों के परवरिश का भार पड़ गया ।

आपकी पत्नी, पूज्य ताऊ जी डा. श्रीकृष्ण लाल जी से दीक्षित थीं यह उनकी प्रथम दीक्षा थी। उनसे मिलकर उन्होंने यह तय किया कि दूसरी शादी न करना बड़ी गलती होगी । इसके कुछ दिन बाद बरेली

रहने लगे। आप बरेली में फरवरी, 1935 में बसंत पंचमी के दिन परम पूज्य ताऊ जी के बहुत इसरार करने पर और अपने ख्वाब की पुश्तगी के ख्याल से दूसरी शादी की ।

यह शादी बहुत सादे तरीके से बहुत साधारण रूप से सम्पन्न हो गयी। इसके कुछ ही महीने बाद (पूज्य बाबू जी) आपका तबादला पीलीभीत हो गया और वहां पहुंच कर एक बार फिर सब परिवार खुशी से रहने लगा। आपकी इन पत्नी का नाम सुशीला था वह बहुत गुणवती और सूझ–बूझ वाली स्त्री थी। उनकी छवि सुन्दर और रंग गोरा था कद कुछ छोटा पर शरीर सुडौल था। जुलाई 1936 में उनके प्रथम पुत्र ने जन्म लिया, दुर्भाग्यवश छोटी सी बीमारी में कटिया गॉव में वह चल बसा, उस समय (पूज्य बाबू जी) आप किसी कोर्स को करने गये हुए थे। उस बच्चे के जाने का सदमा उनको बहुत लगा पर जल्दी ही दूसरे पुत्र बसंत (उर्फ ब्रजेन्द्र कुमार) के जन्म ने उनके घाव को भर दिया। 5 फरवरी सन् 1938 में बसंत के दिन इस पुत्र का जन्म हुआ और उसको बसंत के नाम से पुकारा जाने लगा। आप बहुत कम समय ही जीवित रहीं केवल 3 साल 10 महीने ही आप रहीं। परन्तु इतने कम समय में ही आप सबके दिल पर छा गयीं वह बड़ी ही सेवा भाव वाली स्त्री थी हम सबको भी उनकी प्यार व स्नेह अब तक याद है। यद्यपि हम सब काफी छोटे थे पर उनकी धुँधली स्नेहिल छवि अभी तक याद है पूज्य बाबू जी तो इस अचानक दुख से एकदम टूट गए थे वह 22 दिसम्बर 1938, पीलीभीत में एकाएक दिल के दौरे के बन्द हो जाने से अचानक चल बसीं। उस समय बसंत केवल साढ़े दस महीने का ही था। इस आये हुए दुख का पूज्य बाबू जी ने अपनी डायरी में इस प्रकार लिखा है ''एका एक और सड़न शाक (अकस्मात आघात) होने के वजह से अब तक मेरा बॉया हिस्सा उसी हालत में आ जाता है जिस हालत में उस वक्त हो गया था। सारी नर्वस सिस्टम शैटर (छिन्न–भिन्न) हो गयीं मैं पीलीभीत से सब सामान लेकर मय बच्चों के फिर मकान आया। और फिर वहीं तकलीफ और मुसीबत के दिन शुरू हो गए बसंत की परवरिश का बहुत बड़ा सवाल पैदा हो गया। परमात्मा सबकी खुद निगाहदाश्त करता है और हमारी ताई ने इसकी परवरिश का भार अपने ऊपर ले लिया और बच्चे भी वहीं रहने लगे इस तरह उम्र के अड़तीसवें वर्ष में मेरी दोनों पत्नियों ने मेरे ऊपर चार बच्चों का भार छोड़ कर चल बसी'' गरज यह है कि चार साल का हिस्सा ज्यादातर कशमकश का गुजरा वालिद साहब की मौजदूगी थी फिलहाल बच्चें वहीं रहने लगे। मैंने चार माह की रूखसत ले ली क्योंकि जिस रोज बसंत की मां डेथ हुयी उसी रोज हरदोई के तबादले का आर्डर आ गया और तनख्वाह का स्केल भी बदल गया जिससे करीब 100 रूपये माहवार की तनख्वाह कम मिलेगी।

मसल मशहूर है बदकिस्मती कभी अकेले नहीं आती पर सब कुछ बरदाश्त करना था और उनका कारज कर के मुसीबत का वक्त काटने व जी बहलाने के लिए इधर उधर घूमने मकान से उठ खड़ा हुआ घूमता फिरता अपने एक मित्र के यहाँ ठहरा हुआ था। कि एक रात को जब मैं सो रहा था 3 बजे ऑख खुल गयी अजीब कैफियत महसूस हुयी ऐसी हालत कई मिनट गुजरी। यह कैफियत थी कि लोग प्रचार कहते हैं यह क्या मुश्किल चीज है जरा सा सर इधर उधर घुमा दूँ तो शहर का शहर पलट सकता हूं और प्रचार तो सेकेण्डों का काम है। बेकार लोग इसमें वक्त खराब करते हैं ऐसी ताकत अपने अन्दर मालूम हुयी मुझको अब तक उसका ख्याल बाकी है दो तीन रोज बाद फिर वही हालत अभ्यास में गुजरी बहरहाल कुछ रहा हो हालत काबिले तारीफ थी। यह हालतें लिखने में आ नहीं सकतीं। इसको कोई अनुभव ही कर सकता है। तकलीफ का वक्त गुजार का फिर मैं बच्चों को देखने वापिस मकान गया।

आपके वालिद साहब आपकी परेशानी, बच्चों की उम्र और आपकी उम्र देखकर पुनः शादी के लिए जिद करने लगे आप शादी के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। आपने अपनी डायरी में लिखा है कि "सब ही कहते थे कि दोबारा फिर शादी कर लीजिये लेकिन अगर कोई लब्ज़ शादी का जिक्र भी कर देता था तो मुझको दिली दुख होता था और मैं अपने दिल में यह कहता था कि इस दुख को वहीं जान सकता है जिस पर कभी खुद बीती होगी, घर आने पर वालिद साहब ने कहा कि हमने तुम्हारी शादी तय कर दी है। और 19 अप्रैल 1939 की तारीख मुकर्रर कर दी है मैं खुद उनके सामने ज्यादा बोलता भी नहीं था मैंने बिरादरे अजीज़ान बाबूराम व गंगादीन से कहलवाया कि यह मेरी तबियत के खिलाफ है मेरे बार–बार मना करने पर भी नहीं माने और कहा कि अभी तो हम बैठे हैं और हम जबान दे चुके हैं हमारी क्या बात रहेगी और लोग हमको क्या कहेंगे इनको शादी करनी ही पड़ेगी इन सब बातों की वजह से दूसरे मैंने कभी उनकी हुकुमदली नहीं की थी और मैं मुंह खोलकर कभी उनके सामने बोलता भी नहीं था। गर्ज के मुझको खामोश होना पड़ा और जिस रोज लगन आयी ख्याल फिर आया कि अब भी यह बात टल जाती तो अच्छा होता और यही सोचता हुआ घूमने चला गया कि किसी तरह टाल जाऊं लेकिन जो विधि का लिखा है वह बिना हुए नहीं रहता लगन भी हो गयी और शादी भी । इन मौजूदा वाइफ से 19 अप्रैल 1939 को हो गई। शादी के बाद कुछ दिन फिर अजीबों गरीब परेशानी मसलन कभी तंदरूस्ती, कभी घर की मौजूद रही ।

5 मई 1939 को मैं अपने बाग से आ रहा था कि मुझको यह मालूम हुआ कि मैं गिर जाऊँगा उसी समय किसी ने खबर दी कि एक मकान में आग लग गयी है वहॉ एक बच्चा अन्दर फंस गया है । तमाम मुश्किल हम कई शख्सों ने मिल कर उस बच्चे को आग से बाहर निकाला अभी वहां से फारिग ही हुये थे कि किसी ने खबर दी कि डाकू गांव से दो फर्लांग पर ठहरे हैं और अपने घर पर ही डकैती डालने का इरादा रखते हैं । मैं और अजीज़ बाबू राम दोनों बन्दूक भर कर छत पर मुकाबले के लिये बैठ गये और औरतों से कह दिया कि घर खाली छोड़ दो। इससे पहले सन् 1938 में भी जब घर पर डकैती पड़ी थी तो डाकुओं को बड़ी जबरदस्त मुकाबला करना पड़ा था। शायद वे हम लोगों की बाखबरी का पूरा पता चल जाने से या इससे पहले वाली डकैती का हाल सुन चुकने से वापिस चले गये । बहरहाल इन दोनों वाक्यात और दो–दो मौत (वाइफ) ने मेरे जिस्म की ताकत पर बड़ा असर किया और मुझे मालूम होने लगा कि मुझको हार्ट अटैक हो गया है और अब मेरा बचना मुहाल है। चुनान्चे मैंने अपने छोटे भाई बाबूराम से यह कहा कि जिस तरह हो जल्द से जल्द बदायूं पहुॅंचाओ ताकि मैं सिविल सर्जन से मशवरा कर सकूं । उन्होंने उसी वक्त इंतजाम किया और जब मैं बदायूं पहुॅंचा तो हालत फिर संभली रास्ते में जो ठंडी हवा मिली तो जिस्म में ताकत भी मालूम हुई बदायूं आकर सिविल सर्जन और दूसरे डाक्टरों से मशवरा किया सब की राय हुई कि मैं फौरन लखनऊ चला जाऊं क्योंकि हालत बहुत खराब है। वहां पर जाकर डाक्टरों की राय ली सबने कहा कि केस बिल्कुल होपलेस है और जितनी जल्दी मुमकिन हो आप अपने घर पहुंचने का इंतजाम करें। मैंने गांव में मेडिकल हेल्प न मिल सकेगी यह सोच कर यह ख्याल किया कि मुझको ऐसी जगह रहना मुनासिब है जहां से मैं दिल्ली से मदद ले सकूं। चुनान्चे मैंने यह ख्याल ठीक समझा कि सिकन्दराबाद चलूं क्योंकि यह दिल्ली में नजदीक भी है रहने में सस्ता रहेगा और जब जरूरत होगी दिल्ली चले जाया करेंगे सो सिकन्दराबाद ठहर गया और अपना इलाज कराने लगा कई महीना बीमार रहा लेकिन कोई इजाफा की सूरत नजर नहीं आयी आखिर यह तय किया कि कलकत्ते में एक हार्ट स्पेश्लिस्ट को दिखाया जाय । इस इरादा से दिल्ली को रवाना हुये जिन सज्जन के यहां हम दिल्ली में रूके उन्होंने डरविन हास्पिटल के एक बड़े फिजीशियन डा. अन्सारी की बहुत तारीफ की और कहा कि कलकत्ता जाने से पहले एक मर्तबा उनको दिखाना बहुत मुनासिब होगा। मरता क्या नहीं करता मसल मशहूर है चुनान्चे उनको उन्हीं सज्जन के घर बुलाया गया उन्होंने मुझे बहुत गौर से देखने के बाद यह फरमाया कि हार्ट आपका बिल्कुल ठीक और नार्मल है और

हार्ट की तरफ से कोई फिक्र की बात नहीं है। अलबत्ता नर्वस सिस्टम पर बहुत असर है और आप 15 रोज ट्रायल देना मुनासिब समझा और मैं अस्पताल में दाखिला हो गया। परमात्मा को अब अपना रहम मंजूर था । बख्त अच्छे होने का आ गया था। मैं बहुत जल्द अच्छा होने लगा और करीब 3 हफ्ते में उन्होंने मुझे अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया और फिटनेस का सार्टीफिकेट भी दे दिया चुनान्चे नौकरी पर चला गया। यह सन् 1929 से लेकर सन् 1939 तक का वक्त हर तरह की मुसीबत और दिक्कतों में कटा कोई दुनिया की ऐसी मुसीबत नहीं थी जो मेरे ऊपर न पड़ी हो और एक–एक पैसे को तबाह हो गया गोकि मेरे पास काफी पैसा था लेकिन नवम्बर सन् 1939 में यह हालत हो गयी थी कि मैं दस बीस रूपये को भी अपने पास होना बहुत गनीमत समझने लगा कहां हजारों की परवाह नहीं करता था। 6 माह फिर अकेले गुजारे ताकि मैं तन्दुरूस्त हो जाऊं और खर्चा भी पूरा हो निकले । उसके बाद फिर मैंने सब बच्चों को अपने पास बुला लिया और फिर हम सब लोग इकट्ठे हो गये और गाजीपुर तैनाती हो गयी ।

इस तरह बहुत जिद्द करके 19 अप्रैल 1939 में नबीगंज जिला– बदायूं से उनका तीसरा विवाह कर दिया गया। नबीगंज कटिया से 5 मील की दूरी पर है। इनका नाम प्रेमा देवी था आपका एवं पूज्य बाबू जी का 48 वर्ष का साथ रहा और समस्त सत्संगी परिवार आप के स्नेह व बेमिसाल सेवा को जानता है उनके जीवन काल में तथा आपके विशाल के बाद भी जो अल्प जीवन आपके पास था उसमें वह सभी भाइयों का तथा उनके परिवार के खाने पीने ठहरने का बहुत ध्यान रखती थी और सबसे मातृत्व स्नेह करती थीं । आपका स्वभाव काफी हसमुख था। पूज्यनीय बाबू जी आपके सेवा में पूर्ण संतुष्ट थे और अपने महानिर्वाण पर आपका ख्याल रखने की पूरी हिदायत की थी। आपके बारे में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपको सभी सतसंगी भाई अच्छी तरह जानते हैं। आप भी हम सबको छोड़ 18 अप्रैल 1990 को सात बजे सुबह गाजियाबाद में परमात्मा में विलीन हो गयी। यद्यपि आप अपनी अल्प बीमारी के दौरान बुलन्दशहर में पूज्य सेठ भाईसाहब को पास थी। परन्तु आपने गाजियाबाद के अन्दर के बरामदे में जहां वह अपने जीवन काल में ही बहुत रहती थी । वहीं पर अपना शरीर छोड़ दिया। आपके वतन से चार लड़के तथा एक पुत्री है। उनके प्रथम पुत्र सुरेन्द्र कुमार जिन्हें घर में लल्ला कहते है का जन्म 29 सितम्बर 1940 को हुआ था। वह बरोजगार व बऔलाद है। उनके दूसरे

पुत्र रविन्द्र कुमार जिन्हें घर में नन्हूं कहते हैं उनका जन्म 17 सितम्बर 1944 में हुआ था। वह गाजियाबाद में वही वकालत करते हैं । इन दोनों भाईयों का जन्म गाजीपुर में हुआ । इनकी पुत्री कुसुम जिन्हें प्यार से मुन्नी कहते हैं का जन्म 27 जुलाई 1947 को बुलन्दशहर में हुआ था। वह अपने परिवार से सुख से हैं । आपके तीसरे पुत्र ज्ञानेन्द्र जिन्हें घर में बब्बू कहते हैं का जन्म 10 अगस्त 1941 को खुर्जा में हुआ था। वह गाजियाबाद में ही रहते हैं । उनके चौथे व सबसे छोटे पुत्र नरेन्द्र जिनको घर में प्यार से भईया कहते हैं का जन्म 8 मार्च 1955 को गाजियाबाद में हुआ था। इस तरह आपके जानिब से सात पुत्र और दो पुत्रियां जीवित है। इस समय आपके आठ पोते तथा आठ पोतियां है। सात नाती एवं दो नातिनें है। इस प्रकार यह आपकी वैवाहिक जीवन तथा सन्तानों की दुनियावी जिन्दगी की कहानी है ।

व्यवसाय

सन् 1923 में आगरा मेडिकल कालेज से एल.एम.पी. (डाक्टरी) की परीक्षा पास करने के पश्चात आप अपने गांव कटिया से दो मील की दूरी पर अलापुर जिला बदायूं में प्राइवेट प्रेक्टिस करने लगे। आप घोड़े से आया जाया करते थे। आपको प्रेक्टिस बहुत कम समय में बहुत अच्छी चल निकली और आपका नाम और यश भी इलाके में छः महीने के अन्दर काफी फैल गया था। पूज्यनीय बाबूजी ने स्वयं लिखा है ''जब में प्राइवेट प्रेक्टिस करता था तो आमदनी का अच्छा औसत पड़ता था और आराम था''। एक मर्तवा आप पूज्य लाला जी महाराज के दर्शन करने को फतेहगढ़ गये । तब आपने पूछा ''तुम्हारी प्रेक्टिस कैसी चल रही है'' ''आपने बताया 6, 7 सौ रूपये तक की हो जाती है'' । आपने फरमाया तुम बहुत भाग्यशाली हो कि ईश्वर तुम्हें दो वक्त की रोटी बड़े आराम से दे रहा है। श्रीकृष्ण को तो एक वक्त की रोटी भी मिलना मुश्किल हो रहा है। फिर पूज्यनीय लालाजी महाराज ने कुछ यों फरमाया कि प्राइवेट प्रेक्टिस में आदमी एक जगह का हो कर रह जाता है। वह आपसे कुछ परमार्थ का कार्य करवाना चाहते थे । और कुछ ऐसी इच्छा प्रकट की थी कि आप प्राइवेट प्रेक्टिस छोड़ कर नौकरी शुरू कर लें। जब यह बात उनके वालिद को पता चली तो उनको यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं आयी क्योंकि एक तो वह पूज्य बाबूजी को अपने से दूर नहीं भेजना चाहते थे दूसरे उस समय सरकारी नौकरी में डाक्टरों को कुल 120 रूपये माहवार प्रारम्भ में मिलता था। परन्तु यह जानकर

कि यह पूज्य लालाजी साहब का ही हुक्म है और पूज्य बाबूजी की उत्कृष्ट इच्छा को देख कर इच्छा न करते हुए भी आपने नौकरी की इजाजत दे दी। इस प्रकार आपने जुलाई सन् 1923 में सरकारी नौकरी ज्वाइन कर ली । आपकी प्रथम पदस्थापना जिला अस्पताल रायबरेली में हुई और आप वहां जुलाई 1923 से दिसम्बर 1923 तक कार्यरत रहे । जनवरी 1924 से 1925 तक जिला गोण्डा में ट्रेवेलिंग डिस्पेन्सरी में एपैडमिक आफिसर के पद पर कार्यरत रहे । जनवरी 1925 से 4 महीने लखनऊ में आप एपेडिमिक ड्यूटी पर तथा दो माह हरिद्वार कुम्भ मेले की ड्यूटी पर रहे। सन् 1925 से 1928 तक ट्रवेलिंग डिस्पेन्सरी दिलदार नगर जिला गाजीपुर में रहे। 1928 से 1929 तक नौ महीने का एल.पी. एच.पी.जी. कोर्स पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स लखनऊ में किया । इसके पश्चात आपकी पदस्थापना जिला बुलन्दशहर में सहायक स्वास्थ्य चिकित्सा अधिकारी (ए.एम.ओ.एच.) के पद पर हो गयी। सन् 1932 से 1936 तक आप इसी पर जिला बरेली में कार्यरत रहे और इसके पश्चात 1936 से 1938 तक पीलीभीत में तैनात रहे । और इसके पश्चात 1939 से 1946 तक आप पुनः गाजीपुर में पदस्थापित रहे। परम पूज्यनीय लाला जी की भविष्यवाणी 'कि तुमसे परमार्थ का काम लेना है' का आरम्भ यही से हुआ। आप अक्सर बताते थे कि गाजीपुर की पोस्टिंग में वह दोबारा किसी कदर नहीं जाना चाहते थे और कोशिश तमाम कि न जाना पड़े छुट्टी भी ली परन्तु तबादला किसी कदर न रूका उसी दौरान एक रात में आपने यह ख्वाब देखा कि पू. लाला जी साहब कह रहे हैं कि उनकी इच्छा है कि वह उनके काम के लिये गाजीपुर चले आये। तत्काल आप गाजीपुर चले गये और वहीं से सिलसिला परमार्थ के कार्य का चल निकला । सन् 1947 में आपने नगरपालिका सेवायें स्वीकार कर लीं और सन् 1947 से 1949 तक नगर महापालिका बुलन्दशहर में हेल्थ आफीसर के पद पर रहे सन् 1950 से 1953 तक खुर्जा तथा 1953 से 1956 में आप रिटायर हुये परन्तु सराहनीय कार्य के कारण आपको शासन ने सम्मानित करते हुये दो वर्ष की बढ़ोत्तरी दिया और आप 1957 से 1959 तक हापुड़ में कार्यरत रहे और वहीं से पूर्ण रूप से रिटायर हुये ।

आप एक बहुत ईमानदार, परिश्रमी कुशल तथा सख्त आफीसर थे। स्वास्थ्य विभाग में अपने समय के चुने अधिकारियों में आपका नाम लिया जाता था। आपको कई बार शासन द्वारा पुरस्कृत किया गया था। गाजीपुर में अपने कार्यकाल में अपने बेहद परिश्रम से आपने हैजा व प्लेग जैसी महामारी नहीं फैलने दिया जो कि उधर अधिकतर फैलती

थी। इस सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश के गवर्नर द्वारा आपको एक गोल्ड मैडेल प्रदान किया गया था। आप 20 से 25 मील तक साईकिल से दौरा करते थे क्योंकि इतने अन्दरूनी इलाके में जाने के लिये उस समय कोई दूसरी सवारी उपलब्ध नहीं थी । जहां आप दौरा करते थे वहां के गांवों के चप्पे–चप्पे से वाकिफ थे। जब कभी उधर का कोई सत्संगी भाई आते तो आप उनके वहां के बारे में पूछते और बताते थे तो लोग दंग रह जाते कि आपको इलाके का कितना वृहद ज्ञान है । आप दफ्तर के समय बहुत सख्त रहते थे। हम लोगों की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि कोई बात काम के दौरान दफ्तर में कह सकें। पूज्य ताऊ जी (डा. श्रीकृष्ण लाल) जी हॅसी में कभी–कभी कहते थे दफ्तर में मत जाना वहां श्यामलाल पूरा अफसर रहता है। परन्तु आपका व्यवहार अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से बहुत मृदु एवं सौहार्दपूर्ण था । यद्यपि काम के क्षेत्र में वे काफी सख्ती बरतते थे परन्तु दिल से सबके सुख दुख का भी ख्याल जाती तौर पर रखते थे। आपने अपने जीवन में छत्तीस वर्ष सरकारी नौकरी में गुजारा तथा अट्ठारह वर्ष पेन्शन ली। यह आपका व्यवसायिक जीवन था। गाजियाबाद में अपने इस निजी घर में आपने कुछ दिन मुफ्त इलाज लोगों का किया । परन्तु जल्दी ही जीवन का सारा समय पूर्णतया परमार्थ में डाल दिया था। आये हुये प्रेमियों की आध्यात्मिक सेवायें आप अपने अंतिम क्षण तक करते रहे ।

दिन चर्या

आपका जीवन पूर्णरूपेण परमार्थ को अर्पण था। जीवन बड़ा संयमी और सरल था। सरकारी नौकरी के दौरान आप सुबह गश्त पर तथा आफिस बहुत समय की पाबंदी से जाते थे। सरकारी काम भी बड़ी मेहनत लगन और ईमानदारी से करते थे। सेवानिवृत्त होने के पश्चात् आपने अपने जीवन को पूरी तरह ईश्वर के भजन और भाइयों की सेवा में लगा दिया था। जहाँ तक बातिन का सवाल है वह एक भी क्षण ईश्वर की याद से खाली नहीं था। 24 घण्टे उसी में महब थे। हॉ जाहिरी तौर पर आप रात्रि में अंतिम पहर 2 या 3 बजे से 5 से 6 बजे तक अभ्यास करते थे और फिर थोड़ी देर सो जाते। साढ़े 6 बजे तक उठ जाते थे और नित्य क्रियाओं के पश्चात् आप एक चाय का प्याला ले लेते थे और 8 बजे तक पुनः पूजा से फारिग होकर नाश्ता प्रायः नहीं लेते थे नित्य में एक गिलास दूध या कोई हल्की सी चीज बिस्कुट जैसी ले लेते। यदि कोई सत्संगी भाई है जो प्रायः रहते थे उनके नाश्ते आदि का प्रबन्ध स्वयं देखते थे और फिर परमार्थ की बात करते या कभी–कभी किताब भी पढ़वाते थे। आये हुये भाइयों को भोजन कराने के पश्चात ही आप करीब 12 से 1 बजे के बीच स्नान आदि के बाद भोजन करते। भोजन के पश्चात् आप एक डेढ़ घंटा आराम करते थे 3 बजे उठ जाते थे या तो स्वयं किताब पढ़ते या कुछ लिखते थे या आये हुये भाइयों की सेवा करते थे। शाम को पुनः आराम एवं अन्य बातों का बहुत ख्याल करते थे। रात में 10–11 तक आप स्वस्थ थे शाम को घूमने जाते थे। यही आपकी दिनचर्या थी। जब तक आप स्वस्थ थे शाम को घूमने जाते थे । आये हुये भाई भी साथ चले जाते थे। कभी–कभी सब्जी वगैरह भी घर के लिये पहले ले आते थे। जब कोई भाई जाते थे तो उन्हें प्रेमवश सड़क तक छोड़ने जाते थे । कभी–कभी स्टेशन तक छोड़ने चले जाते थे। वह पवित्र हस्ती थे उनकी दिनचर्या प्रभुमयी थी। एक दम सरल, कोई दिखावा नहीं। सच्चाई की मूर्ति थे। हर आने वाले का बड़े ही प्रेम से स्वागत करना उनका दिनचर्या का एक अंग था।

परमसंत महात्मा राम चन्द्र जी महाराज

उर्फ

पूज्य लाला जी महाराज

जन्म – 4 फरवरी 1873 निर्वाण– 14 अगस्त 1931

फर्रूखाबाद फतेहगढ़

''निकले जब यह दम साका,
और निजा ने आकर घेरा हो।
तो मुझ बेकस के सर पर,
ऐ मेरे रहबर हाथ तेरा हो ।''

lRlxh Hkkb;k dk xqi QkVk

o"k & 1921] Qrgx<

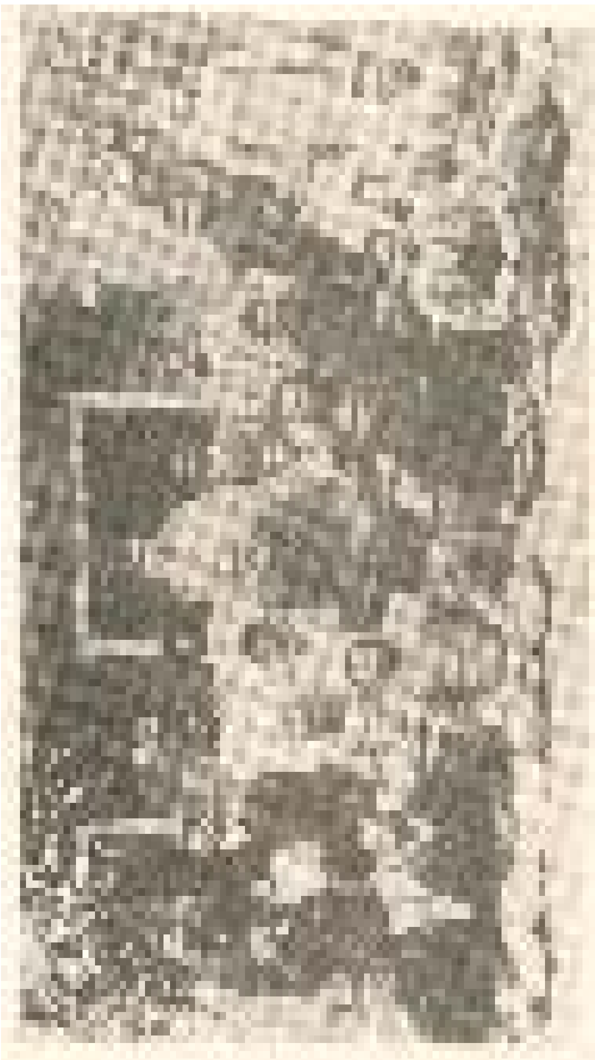

बैठे हुए – परम पूज्य, लालाजी महाराज, परम पूज्य चाचाजी महाराज डा. चतुर्भुज सहायजी तथा अन्य सत्संगी भाई

खड़े हुए – पूज्य ताऊजी, पूज्य बाबूजी, पं0 माता चरणजी तथा अन्य प्रेमी जन

आध्यात्मिक जीवन

परम पूज्य लाला जी महाराज से प्रथम भेंट तथा आध्यात्मिक शिक्षा एवं उनका प्रेम

यों तो आपके जीवन का जब विश्लेषण करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि आप का जन्म एक विशेष उद्देश्य से ही हुआ था। आप का जन्म जैसा कि आप लोग पढ़ चुके हैं एक सदा सुहागिन नाम के संत के आशीर्वाद से बड़ी तपस्या के बाद हुआ था और परमात्मा ने दया करके उन्हें एक पवित्र आत्मा वाली माँ की कोख से जन्म दिया जो अत्यन्त सुशील तथा ईश्वर परायण थी और ऐसे पिता की साया भी मिली जो बहुत नेक, दानी तथा हनुमान जी के परम उपासक थे । इस प्रकार जन्म से उनको परमात्मा के प्रेम की किरण ने हरारत दी। जब आप आठ वर्ष के थे तो परमात्मा ने दया करके एक आर्यसमाजी मास्टर साहब को गांव कटिया में भेज दिया जिन्होंने आप को सदाचारी तथा ईश्वर प्रेमी बना दिया। वैसे तो उनका असर सब पर था पर पूज्य बाबू जी पर विशेष पड़ा। 14 वर्ष की आयु में उस मालिके कुल्ल ने उन पर ऐसी दया की और उनको जीवन को परमार्थ के पथ पर डाल दिया और अंत तक उनमें समाये रहे । यह शुभ वर्ष 1915 का था जब आप परम पूज्य लाला जी महाराज से मिले। यह वह मुबारक भेंट थी जिसने पूज्य बाबूजी की जिन्दगी को पलट दिया। एक महान हस्ती के सुरक्षित शरण में डाल दिया जिसने हर प्रकार से उन्हें जीवन के कठिनाइयों को झेलते–झेलते परमात्मा के दर्शन करा दिये, जिसनें अपने प्रथम भेंट में ही अकस्मात ही कह दिया कि "तुम पूजा करने आये हो"? बता दिया कि तुम्हारे जीवन का उद्देश्य क्या हैं । संतो के साथ कई आत्मायें आती हैं। जिनको देखते ही वह पहचान जाते हैं। यही बात पूज्य बाबूजी के साथ भी हुई । आपके प्रथम मिलन को पूज्य बाबूजी के शब्दों में लिखकर मैं उस प्रेम की हरारत आप सब तक पहुँचाना चाहता हूँ :–

"मैं और मेरे बहनोई छठी क्लास में साथ–साथ रहने लगे और मैं 1915 में सातवीं क्लास में पढ़ता था और यह जिन्दगी का पलटने वाला साल था । तबारीख यानी हिस्ट्री का घंटा था उसमें हिस्ट्री पढ़ाया जा रहा था प्रसंग था कि राजा जनक विदेह थे। मास्टर साहब ने बिदेह शब्द के माने समझाने की कोशिश की लेकिन लड़को के समझ में नहीं

आया। खशुसन मेरे जहननशीन वह माने नहीं हुये और समझ में नहीं आया । हमारी क्लास में एक साथी पं0 माताचरण जी पढ़ते थे। वे कहने लगे कि अगर इजाजत हो तो मैं लफ्ज **'विदेह'** के मायने इनको समझा दूँ। मास्टर साहब हॅंसे और बखुशी तमाम इजाजत दे दी । उसी साल अंग्रेजी जुबान के बजाय बर्नाकुलर (माध्यम) सातवी जमात में हुआ था । इसलिये बहुत से शब्द समझ में भी मुश्किल से आते थे। पं0 माता चरण जी, परमात्मा उनकी आत्मा को शांति दें, मुझ को इस तरह समझाने लगे – **बिदेह उसको कहते हैं जो देह धारी तो हो और दुनियाँ का सब काम करता हुआ निहायत खूबी के साथ उनको अंजाम दे और फिर भी एक सेकेन्ड के लिये भी परमात्मा की याद से खाली ने हो। हर लम्हा 'क्षण' परमात्मा की याद में महव (लय) रहे और दुनियां के काम भी खराब न होने पाये।** मैं जैसा कि बयान कर चुका हूँ आर्यसमाजी ख्यालात रखता था फौरन ही यह आलोचना करने लगा कि ऐसा हरगिज मुमकिन नही कि दुनियाँ के काम भी खराब न हो और परमात्मा की याद भी हर वक्त बनी रहे। एक वक्त में एक ही काम हो सकता है । पं. माता चरण जी साहब ने ज्यादा बहस न करते हुये कहा कि साहब हम और ज्यादा तो कुछ जानते नही यहां भी एक साहब इसी तरह के रहते है जो सरकारी मुलाजमत भी करते है और परमात्मा की याद से भी खाली नहीं है। आप चाहे तो उनको देख लें और मुमकिन है तब आप मेरे जवाब से मुतमईन (संतुष्ट) हो जाये। मैनें उत्साह जाहिर किया और वादा किया कि जरूर शाम को वादा के मुताबिक उनकी खिदमत में हाजिर हो जाऊॅंगा। हस्ब वादा शाम को गया लेकिन जिस मकान में आप तशरीफ रखते थे उस मकान के मालिक मुन्शी वहीद साहब के यहॉ मुशायरा था जिसमें आप भी बुलाये गये थे ।

उस रोज दूर से ही प. माता चरण जी ने दिखला दिया कि वो साहब हैं । चूंकि मुशायरा में देर थी मजबूरन मैं घर वापिस चला आया और अगले रोज फिर शाम को उनके कदमों के दर्शन के लिये वहॉ पहुॅंचा। पं0 माता चरण जी ने कहा कि ये हमारी क्लास सातवीं दर्जा में पढ़ते हैं। फौरन ही आपने पूछा **"क्या पूजा करने आये हो"** वे ऐसे प्रेम भरे अलफाज थे कि मुझे सिर्फ ये कहते बना कि आपकी दया मुझको आप के यहां ले आई, वरना मैं इस काबिल कहॉं। पहले ही रोज प्रेम का सौदा हो गया और अब बराबर रोजाना सत्संग में शामिल होने लगा। वो आपका वही बख्त था जब आपने इस मिशन को फतेहगढ़ में ही शुरू

किया था। उस बख्त हम दो चार ही आदमी थे । यह वाक्या (घटना) अक्टूबर सन 1915 का है। इस दरमियान मैं जब रोज आने जाने लगा तो मेरे छोटे बहनोई बाबू प्रेम नारायण जी ने मुझे सवाल किया कि तुम रोज शाम को कहॉ जाते हो दो एक रोज तो मैं खामोश रहा आखिर मुझे अपनी सफाई में बताना पड़ा कि मैं यहां मोहल्ला तलैय्यालेन में एक महात्मा जी है और गृहस्थ है उनके यहॉ पूजा करने शाम को जाया करता हूँ । आपने भी फौरन जाने का इरादा कर लिया और अब हम लोग अक्सर शाम को दोनो साथ ही साथ जाने लगे क्योंकि मेरा क्लास में अच्छे लड़कों में शुमार था दो एक और साहब भी अच्छे थे बख्याल कम्पटीशन उनसे दोस्ती बढ़ने लगी चुनांचे हमारे एक अति प्रिय मित्र हो गये थे बाबू जगदम्बिका प्रसाद, आप जिला हरदोई के रहने वाले थे और निहायत ही सज्जन थे । हम लोग करीब चार साल तक बोर्डिंग में साथ रहे । वे भी हमारे साथ ही साथ पूजा करने लगे थे और जनाब के पास **आने जाने भी लगे थे, हमारा उनका सम्बन्ध इतना घनिष्ठ था कि बोर्डिंग** के सब लड़के और यहां तक कि बोर्डिंग के सुपरिटेन्डेन्ट भी यही समझते थे कि हम हकीकी (सगे) भाई हैं । अगर एक धोती हम लोगों पर होती तो उसमें दो टुकड़े कर के एक वह पहनते थे और एक मैं । दो तीन वाक्यात आप के और मेरे साथ गुजरे वे काबिल बयान है। एक रोज जब मैं और बाबू जगदम्बिका प्रसाद हजरत किबला लाला जी महाराज के दरबार में जा रहे थे। रास्ते में आपने मुझसे कहा कि यहां नजदीक ही हमारे रिश्ते के एक चाचा जी रहते है । आप इजाजत दे तो मैं उनके यहां होता हुआ लाला जी महाराज के पास पहुँचता हूँ, और आप सीधे लाला जी के पास पहॅुचें। आपने यह भी कहा कि जिस कदर जल्द मुमकिन हो सकेगा उतना ही जल्द पहॅुचूँगा। हम लोग पूजा को बैठ चुके थे कि आप भी पहॅुच गये। काफी देर तक पूजा होती रही। आपका कतई पूजा में मन नहीं लगा और आप हजरत किबला लालाजी महाराज से इस असर की शाकी हुए कि आज काफी कोशिश करने पर भी मेरा मन पूजा में नहीं लगा। आपने पंडित माता चरण से इशारा किया कि तुम इन को पूजा कराओ और आप अन्दर चले गये थोड़ी देर के बाद आप अन्दर से वापिस तशरीफ लाये और पॅूछा के अब तबियत पूजा में लगी। कहा– हॉ अब तबियत शान्त है। मन भी एकाग्र हुआ। आप ने फरमाया हर जगह खाना नहीं खाते हैं। आज तुमने कहॉ और खाना खाया था क्या ? आपने कहा हॉ अभी एक गैर जगह कुछ नाश्ता किया

था। फिर कहा हर जगह खाना न खाया करो । इसका बुरा असर होता है। वहॉ से हम लोग रवाना हो गये रास्ते में मैंने हॅसी में कहा कि तुम हमको छोड़कर खाना खा आये और अच्छा हुआ कि मैं नहीं गया वरना मेरी भी यही हालत होती। उस वक्त बाबू जगदम्बिका प्रसाद जी ने फरमाया कि मेरे चाचा के यहॉ एक जनानी नौकर है और वह अच्छे आचरण की नही है। वह कहीं से काफी मिठाई लाई थी और उसको मैंने खाया था। उसका ही यह असर हुआ है कि मेरा मन बहुत चलायमान हो गया है। ख्याल फरमाइये कि हजरत किबला लाला जी महाराज का कश्फ कितना ऊँचा था कि सामने आते ही अपने जॉच कर ली कि खाना धोखे का था।

दूसरा वाक्या (घटना) इसी दरम्यान में गुजरा सन 1918 में इन्फलुयून्जा फैला। हम लोगों की स्कूल की छुट्टी हो गयी और मैं अपने घर चला गया और वे अपने घर चले गये। सन 1918 में इन्फलुयून्जा में बहुत (डेथ) मौत अमावत हुई। चुनांचे मेरे गॉव में भी बहुत मौत हुई मैं अभी 17 साल का ही था फिर भी शुरू से ही निडर होने के कारण हमेशा अकेला छत पर सोया और पढ़ा करता था। शाम को जब मैं छत पर पढ़ने गया बस बैठा ही था एकाएक इस जोर से रूबास (रोना) आई कि मैं पागल सा हो गया और चीखे तक निकल गयी। मॉ दौड़ती हुई छत पर गई और यह समझी कि मैं डर गया हूॅ । बहुत पुचकारा और पूॅछा कि क्या बात हो गई मेरे मुंह से कोई बात नहीं निकलती थी और धाड़–धाड़ रो रहा था माँ ने पिताजी को बुलवाया और एक तरफ मॉ ने अपनी चरपाई डलवायी और एक तरफ पिताजी ने और करीब 12 बजे तब सब जागते रहे और बराबर पुचकारते रहे। बाद को मैं बेखबर सो गया। रोने की वजह मेरी समझ में कुछ नहीं आई । दो चार रोज बाद स्कूल खुलने की तारीख आ गई और मैं फतेहगढ़ चला गया। वहॉ जाने पर पता चला कि बाबू जगदम्बिका प्रसाद खुद इन्फ्लुयून्जा में बहुत सख्त बीमार हो गये हैं। मेरा तीसरा साथी जो कमरे का था उससे मैंने कहा कि हम अभी चलेंगे ओर उनको देखकर कल सुबह आ जायेंगे। चुनान्चें दोनों फौरन ही रवाना हो गये और 12 मील पैदल चल कर वहॉ पहुंचे । हमें देखकर वह बहुत खुश हुये और सब हाल बयान किया कि मैं फलाने तारीख को बहुत सख्त बीमार हो गया था और जमीन पर करीब–करीब लेने की तैयारी हो गयी थी उस बख्त मैंने तुम्हारा सोने का छल्ला अपने भाई को देकर कहा कि अब तक मैंने इसको उनकी तरफ

(श्याम लाल जी) से यह पहना और अब यह उनको वापस कर के कह देना कि अब वह मेरा समझ कर मेरी याद में पहनते रहे। मुझे सख्त अफसोस है कि मैं इस बख्त उनसे न मिल सका। यह वही तारीख और समय था जब कि मुझे रूलास (रोना) आई थी । ख्याल फरमाइये आत्मा और ख्याल की पुख्तगी आत्मा को ख्याली हालत में पहुँचने में फासला या दूरी कोई रूकावट नहीं डालती । जब दुनियाबी प्रेम में यह हालत वाकई हो सकती है तो रूहानी प्रेम के लिए क्या कहा जा सकता है। वाक्या यह था कि मेरी शादी सन 1916 जून में हो चुकी थी और शादी में एक अँगूठी और एक छल्ला सोने का मिला था । मैंने उनसे कहा कि एक तुम पहनो और एक हम। छल्ला जरा बड़ा था और उनके ज्यादा अच्छी तरह से आ गया था इस लिये उन्हें छल्ला पहना दिया था और यह वही छल्ला था जिस की वापसी आपको मन्जूर थी। यह हमारा उनका प्रेम था । सभी लोग यह समझते थे कि हम हकीकी भाई हैं। जब मैं स्कूल लीविंग इम्तहान पास कर चुका और फतेहगढ़ छोड़ने लगा तो मैं (Good Character) अच्छे चरित्र का प्रमाण पत्र लेने गया तो सुपरिन्टेन्डेन्ट बोर्डिंग ने मुझसे कहा कि तुम अपने भाई का भी सार्टीफिकेट लेते जाओ। इस वख्त मैंने उनको बताया कि हम लोग दोस्त हैं वे श्रीवास्तव हैं हम सक्सेना। वे सकते में आ गये और भौचक्के से रह गये।

यह सिलसिला पूजा और पढ़ाई का फतेहगढ़ शरीफ में सन् 1915 से 1919 तक चलता रहा। इस दरमियान में एक मर्तबा बाबू जगदम्बिका प्रसाद जी को बहुत तेज बुखार चढ़ गया और सुबह इम्तहान था। उन्होंने मुझ से कहा कि तुम जनाब लाला जी साहब के पास जाओ और मेरी हालत बयान कर दो। मैं आप जनाब के पास फौरन गया और बड़ी आजिजी से उनका हाल कहा, दिल में ख्वाहिश थी कि आप दया कर दें। आपने पानी पढ़ कर दे दिया । पानी दो खुराक देते ही बुखार फौरन उतर गया। इन सालों में हालत यह थी कि हम लोग आप को (लाला जी महाराज) पिता तथा (पूज्या जिज्जी) माता जी को मॉ का दर्जा दे चुके थे। ऐसा लगता था कि ये ही हमारे सब हैं, इनके बराबर कोई नहीं। आप भी हम सब लोगों से बड़ी शफक्कत से पेश आते हैं और जहां कहीं मेला बगैरह होता था तो आप हम सबको ले जाते थे और दो–दो पैसा मेले में कुछ चीज खाने को देते थे। ऐसी शफक्कत का बख्त खुश किस्मती से ही मिल सकता था या तो हमारे कुछ पुराने

संस्कार ऐसे थे जिसने हमें ऐसे बुजुर्ग के कदमों में हाजिर कर दिया था। आज भी आपकी शफक्कत, दया, कृपा से सराबोर हूँ। न जाने वह कौन सी चीज है जिस को देख कर आप इस नाचीज पर इतने मेहरबान हैं ।

सन् 1919 का एक वाक्या है कि मैं ढाई के मेले में जो कि जिला शाहजहांपुर में है, गया था चूंकि फतेहगढ़ को शमशाबाद होकर रास्ता था और नजदीक था मैं ढाई के मेले में सीधा पैदल चल दिया शमशाबाद के स्टेशन तक पहुॅचने पर उस धूप की गर्मी से मुझे इस कदर खून के दस्त होने लगे और मेरी हालत अजीब हो गयी । दस्तों की वजह से मुझे बहुत ज्यादा कमजोरी हो गयी ओर होश नहीं रहा। सारे कपड़े दस्तों से खराब हो गये। जब फतेहगढ़ स्टेशन पहुँचा तो यह ख्याल हुआ कि आपके पास नापाक कपड़ों से किस तरह जाऊं हालांकि हालत अजीब थी और कमजोरी अजहद थी फिर भी हिम्मत करके नहाया और कपड़े बदले ताकि वे नापाक कपड़े मेरे जिस्म पर न रहें और आहिस्ता–आहिस्ता स्टेषन से आप के मकान पर पहुंचा पैरों का छूना था कि यह मालूम हुआ कि मुझमें तो मालूम नहीं कितनी ताकत है और मुझे कोई तकलीफ नहीं । मुझ से पूॅछा कि इस धूप में किस तरह ढाई से पैदल चल कर शमशाबाद स्टेशन तक पहुॅचे मैंने सर नीचा कर लिया और कुछ न बोला। एक अजब प्रेम का दरिया बहता था जब कभी आप बोल भी देते थे। प्रेम से भरी बातें अब कहां वह प्रेम की मुजुस्सिम मुर्ती अब कहां जो देखा था सो ख्वाब था जो सुना सो अफसाना।

फतेहगढ़ में सन् 1915 से 1919 तक सत्संग बहुत जोर पकड़ गया था। इधर हजरत किबला लाला जी महाराज का प्रेम उधर हजरत किबला चाचा जी महाराज की बख्शीश और रहमत हम सब के ऊपर अजीब असर कर रही थी। शाम के सत्संग में अक्सर हजरत किबला चाचा जी महाराज का आना जाना उस बख्त काफी था वो जमाना आपका वो था जब प्रभु के प्रेम में विरह की आग में आप जलते थे और तनबदन का होश नहीं रहता था। रातों सोहबत का असर रहता और अक्सर सारी रात महफिल जमीं रहती थी। अजीब राम रघुबर की जोड़ी थी। सिर्फ इतना ही लिखना काफी है कि जिसने वह बख्त देखा है आसानी से दूसरी सोहबत का कबूल नहीं कर सकता। सिवाय परमात्मा के नाम के जिक्र के और उसी ख्याल में सत्संग तथा सत्संगियों का आपस में एक दूसरे के लिये प्रेम देखकर लोग दंग रह जाते थे और

ऐसा क्यों न होता। हजरत किबला लाला जी महाराज और हजरत किबला चाचा जी महाराज दोनों खुद प्रेम की सच्ची मूर्ति थे। अदब की किताब थे। बख्शीश का दरिया हर बख्त खुला हुआ था। लुत्फ यह था कि दीन और दुनिया दोनों ही लुटा रहे थे। अगर दुनियाबी जरूरत होती तो गायबाना मदद बख्शते और कहते भाई तुम्हारे हालात वाकई ऐसे हैं कि तुम्हारी मदद की जाये। तुम को इसकी जरूरत है, परमात्मा तुम्हारी मदद करें। ईश्वर की दया और उनकी रहमत हो ही जाया करती थी । हर शख्स खुश और प्रभु के प्रेम में मग्न था। आप अक्सर फरमाया करते थे कि मेरी यह छोटी सी जमात बड़ी से बड़ी जमात का मुकाबला कर सकती है। यहां तीन रोज का बैठा हुआ सत्संगी दूसरे नये सत्संगी का कल्ब जाकिर करा सकता है। आप अक्सर किसी एक से कह दिया करते थे कि तुम आज फलाँ को सत्संग कराओ और उसको उसकी हिम्मत की सदा दिया करते थे कहा करते थे कि तुम मेरी हिम्मत पर क्यों काम नहीं करते समझ लिया करो तुम नहीं मैं तुम्हारी जगह काम करता हूँ। माता जी का प्रेम हर तरह से सराहनीय रहा सब को बच्चों की तरह रखती और जरा सी भी चीज होती तो सब में बराबर–बराबर बांट देती । हम सब लोग जो उस समय दस बीस आदमी थे इस ताक में रहते थे कि आप क्या चाहते हैं किस चीज की आप की जरूरत है। खिदमत को फिकर लगी रहती और दिल में एक गरज थी कि किसी तरह कुछ खिदमत कर सकूँ। वजह नाकाबिले बयान हैं। इसी दरमियान में आप की दो लड़कियों की शादी हुई। सब काम हमी लोगों के सुपुर्द था। वह जमाना आपके तंगदस्ती का था फिर भी ईश्वर पर पूरा भरोसा करते हुए हर काम बड़ी अच्छी तरह से हो गया। आप फरमाया करते थे कि मुझसे ज्यादा मेरी लड़कियों के लिये वर की तलाश की फिक्र मेरे पीराने उज्जाम को है फरमाइये कितना विश्वास अपनी पीर–उज्जाम पर था। यह बख्त आसानी और मोहब्बत से गुजारने के बाद जनाब के हुकुम से मैं और श्रीमान भाई साहब डा0 श्रीकृष्ण लाल जी आगरा डाक्टरी की पढ़ाई करने चले गये। हम लोगों के बराबर जिक्र करने से डा. महेश्वर सहाय और तीन चार साहबान और भी आगरा से फतेहगढ़ हजरत की खिदमत में जाने लगे और सत्संगियों की तादाद भी कुछ ज्यादा हो गयी। आपका ऐसा ख्याल हुआ कि हर साल एक जलसा रखा जाय और ऐसी छुट्टी में रखा जाय जब न हिन्दुओं का त्योहार हो न मुसलमानों का क्योंकि दोनों जमात के लोग उनके शैदाई थे । चुनांचे सन् 1921 में

ईस्टर की छुट्टी में फतेहगढ़ में जलसा होने लगा और हर साल बड़ी धूमधाम से मनाया जाने लगा। इंतजाम के लिये हम चार पॉच लड़के खास तौर पर रहते थे। कोई पानी भरता कोई चौके में कुछ मदद करता गरज सब मिलकर काम चलता रहा। हम कई लोग बिना किसी ख्याल के कि पढ़ाई का हर्जा होगा ऐसे प्रेम में मस्त थे कि जितना मौका मिल जाता हाजिरे खिदमत रहते। एक मर्तबा श्रीमान भाई साहब डा. श्रीकृष्ण लाल जी ने मुझसे फरमाया कि भाई तुममें प्रेम का माद्दा कम है और प्रेम तरक्की के लिये बहुत जरूरी है। दोबारा जब मैं फतेहगढ़ हाजिर खिदमत हुआ तो यह ख्याल हुआ कि वह कौन सी चीज है जो आप के लिये मैं कुरबान नहीं कर सकता और प्रेम की क्या निशानी है । मैंने तो पहले ही दिन जिस रोज सन् 1915 में कदमों में हाजिर हुआ था, उसी रोज अपना सबकुछ निछावर कर दिया था। बाकी और प्रेम क्या होता है मैं नहीं जानता। यह सब अपने दिल में सोच–सोच कर ऑसू भर लाया। आप उस समय कुछ लिख रहे थे फौरन उठे और मेरा हाथ पकड़ कर अपने गोद में बिठा लिया। यह उस प्रेम के ऑसुओं के एवज का बदला था जिसने मुझको अपने प्रेम से सराबोर कर दिया था। जब मैं नवीं क्लास में पढ़ रहा था तो एक मर्तबा आपने इशारा किया था कि तुमको सत्संग में आते आते, 2 या 3 साल हो गये अब खास तरीके से तुम्हारा ख्याल रखा जायेगा और जब तुम सुबह आओगे तो बतलायेंगे। मैं सुबह इस उम्मीद में गया कि आज कुछ इरशाद होगा। लेकिन न मैंने कुछ पूॅछा न उन्होंने ही कुछ कहा, वापिस हो गया । सन् 1921 में आपने एक रोज बुलाकर फरमाया आओ बेटे, पांच पैसे के बताशे ले आओ मैं ले आया आनहबाब ने हजरत किबला मौलवी फजल अहमद खॉ साहब रहमत उल्लाह का वसीला देकर अपने हाथ पर बैत किया । लब्ज़ बैत से मतलब यह कि जिसको बैंत करते हैं जहां तक उसकी यानी शिष्य की इस्तदाद (योग्यता) देखते हैं उसको अपनी रूहानी (परमार्थी) कुब्वत (शक्ति) अता कर के अपने से ऊपर के बुजुर्गों से ताल्लुक निस्वतः या कनेक्शन (संबंध) अपनी कुव्वत इरादी यानी Will Power से सिलसिले के बुजुर्गों में करा देते हैं। इस सिलसिले में मैंने यह खास खुशूसियत और खास नज़ाकत देखी कि अपनी ताकत से जितना हो सके (शिष्य) उसमें परमात्मा का प्रेम भर दिया और ऐसा प्रेम कि जिसका जन्म–जन्मान्तर तक बीज कभी खत्म न होने पाये। मुरीद (शिष्य) को ख्याल भी नहीं कि क्या हो रहा है । सन् 1923 मई में जब हमारी माता जी का सांप काटने

से अचानक स्वर्गवास हो गया, घबराकर आप को तहरीर किया कि मैं बहुत परेशान हूँ, उस पर आपने बहुत शान्तिबख़्श खत लिखा जिससे मेरे दिल को बहुत सुकून मिला। एक बार मैंने आपको लिखा कि अगर हुक्म हो तो में भी कस्बा भोंगाँव जो हजरत की जान सकूनत किसी बख्त था, वहॉ किबला हजरत मौलवी अब्दुलगनी साहब, रहमत उल्लाह सकूनत अजीज के उर्स में शामिल होऊं । आपने माता जी से कहा कि वहॉ ज्यादातर मुसलमान होंगे ये क्या करेंगे । माता जी ने कहा आपका साथ तो है हर्ज क्या है। आपने लिखा ऐसे मौकों पर काफी रूहानी फायदा हो जाता है। अगर मुमकिन हो चले आना। मैं बखुशी वहॉ पहुॅंच गया और उर्स शुरू हुआ। इत्फाक वहॉ एक बावर्ची के पैर पर गर्म डेगची चावलों का उल्ट गया। वह बहुत परेशान था। मैंने एक दवा लगा दी उसको एकदम आराम आ गया। वहॉ लोगों ने इसका जिक्र भरे मजमें में किया आप मुस्कराये और बड़ी मोहब्बत से मुझको देखा और यह वहीं उर्स था जिसमें जनाब किबला लाला जी महाराज ने ''अवतार'' समझाया था और लोग कह उठे थे कि न मालूम हमारे किबला मौलवी फजल अहमद खाँ–रहमत उल्लाह ने आप में क्या भर दिया है। उस उर्स में कई बहुत उच्च कोटि के अभ्यासी भी आये थे। मेरी शिरकत के लिए इजाजत दे देना उनकी मोहब्बत और रहमत थी ।

एक मर्तबा सालाना जलसे में आदमी और औरतें बहुत ज्यादा हो गये, नौकर भी नहीं मिलें । हम तीन चार लड़के काम में चिपट पड़े। सबको नहलाया, धुलाया, पानी भरा, माता जी और बहनों से कहा तुम दाल बगैरह बनाओं हम आटा गूथ देते हैं और आटा गूँथने लगे, इतने में आप अन्दर आये। माता जी ने हॅंसकर कहा आज आटा डाक्टरी तरीके से गुथ रहा है। आपने उसके तुरन्त बाद मुझे अपने पास बुलाया। खैरो आफियत पूछते रहे और कहा कि तुमने हमको लिखा था कि तुमको प्लेग के केसेज देखने पड़ते हैं और तुम्हें उस बख्त बड़ा डर लगता है। फरमाया जाते बख्त मुझसे ताबीज लिखवा लेना। मजमा बहुत था और इतना बक्त भी नहीं था कि इसका जिक्र करूँ । सुबह सत्संग के बाद जनाब ने पढ़ना शुरू किया और सब पर निहायत महवियत का आलम जारी था। एक और भाई उठे जिन्हें 9 बजे गाड़ी से जाना था, उसी गाड़ी से मुझे भी जाना था। आपने फरमाया देखो। उनका यह देखो कहना था कि मैं सहम कर बैठ गया कि कुछ इस वक्त हमारे जाने को

न जाने मुनासिब समझा कि नहीं । इरशाद हुआ कि देखो जब तुम प्लेग के मरीजों को देखने जाओ तो समझ लिया करो कि वहाँ तुम नहीं हो और न तुम्हारी हस्ती ही काम कर रही है जो हस्ती तुम्हारी जगह काम कर रही है उसको कोई इस तरह की तकलीफ नहीं हो सकती । इशारा यह था कि तुम अपने को मुझमें फना कर दिया करो । उस समय फनाइयत की हालत में जो तुम काम करोगे उससे तुम्हारे ऊपर कोई असर न होगा । इसके एक रोज पहले आपने दारूद शरीफ का जाप करने के लिए हुक्म दिया था और अपने दस्ते मुबारिक से कुल हिन्दी में लिख कर दिया था । यह पहला शगल था जो जनाब ने फरमाया था वरना कुछ नसीहतों के लिए दिल में एक तड़प सी रहती थी और आप जनाब प्रेम ही प्रेम देते थे, कोई शगल नहीं, कुछ नहीं ।

एक मर्तबा आप जनाब जौनपुर अपने एक अजीज की शादी में तशरीफ ले गये। मुझको लिखा मैं तुम्हारे पास दिलदार नगर आऊँगा। मैं होली के मौके पर मकान जाने को था। जनाब की आमद का जब खत मिला वह मसर्रत का वायस हुआ। मैंने अपने घर जाने का प्रोग्राम तब्दील कर दिया और आपको तार दिया कि मैं दिलदार नगर ही मिलूँगा। जो तारीख आने की थी उस पर मैं 2 बजे रात को गाड़ी पर देखने गया आप तशरीफ नहीं लाए। अगले रोज फिर देखने गया फिर नहीं आए । मुझे यह ख्याल हुआ कि जनाब ने प्रोग्राम तब्दील कर दिया होगा। तीसरे रोज मैं गाड़ी पर नहीं गया। तीसरे रोज आप दो बजे रात की गाड़ी से उतर कर सीधे मकान पर पहुँचे। पहली आवाज पर मैं न जाग सका पर दूसरी आवाज पर मैंने कहा– आया। मैंने दरवाजा खोला, पैर छू कर और उन्हें बिठा कर मैं फौरन अन्दर चला गया। मेरा जिस्म उस समय नापाक था उस वक्त यही मुनासिब समझा कि दरवाजा फौरन खोल दूं और पैर छू कर अपना जिस्म साफ करूँ । ऐसा ही करके फिर मैं उनके पास बैठा। कुछ रात के जागे थे उनकी भी ऑख लग गई जब आंखें खोली मैंने पूछा कि सर्दी के दिन, रात के दो बजे और इस गाड़ी से दिलदार नगर की सवारी भी ज्यादा नहीं उतरती है आपको मकान मिलने में बड़ी तकलीफ हुई होगी। इरशाद फरमाया मैंने पहली आवाज इसी दरवाजे पर आकर दी है और न रास्ता ही किसी से पूँछा। सीधा चला आया ऐसा मालुम होता था कि मैं यहाँ कई मर्तबा आया हूँ कोई नई जगह मेरे लिये नहीं थी ।

नोट :–

मुमकिन है कि साहेबान को इस के समझने में कुछ दिक्कत पड़े । बात इतनी कठिन नहीं । जिस घर में प्रभु का जिक्र हो, प्रभु की दया वहां न हो– ऐसा मुमकिन नहीं हो सकता । चूंकि रोजाना ही उनका वहां जिक्र होता था। वहॉ उनकी खुशबू बस गई थी । फिर संत सतगुरू त्रिकालदर्शी खुद होते हैं । यह बात उनके लिए मामूली सी बात थी। इस सिलसिले के बुजुर्गों में इस किस्म के कश्फ की नजाकत और खशूसियत हमेशा ही से रही है। आप अक्सर फरमाया करते कि हमारे पीर मुर्शिद मौलाना फजल अहमद खाँ साहब, रहमत उल्लाह जब कभी किसी जगह जाते थे तो जमीन देख कर कह दिया करते थे कि फलॉ जगह बैठकर फलॉ साहिब अभ्यास करते रहे होंगे। गौर कीजिए किस आला दर्जे का कश्फ था। ''आपने बड़ी दया करके दो रोज कयाम फरमाया जिस बारात में आप तशरीफ ले गये थे कुछ खाने पीने की तकलीफ सी रही थी। आपने कहा रोटियाँ बहुत मोटी–मोटी थी और मेरा हाजमा कमजोर हो गया है। मैं भी घबराया कि कहीं मेरे यहाँ की रोटियाँ आपको तकलीफ न दें । मैंने अपनी धर्मपत्नी से कहा कि जितना बेहतर से बेहतर और सूक्ष्म भोजन बना सकती हो बनाना। अव्वल तो वह वैसे ही बहुत अच्छा खाना पकाती थीं फिर खसुसियत के साथ ख्याल करके खाना बनाया। जब खाना परोसा गया, मैं फिर घबराया। आपने फरमाया कि ''ऐसा खाना अगर हमको मिलता रहे तो हमारा पेट बहुत ठीक रहे'' मुझे बड़ी खुशी हुई कि जनाब को खाना आपके तबियत के मुताबिक मिल गया । ''दौरे कयाम फरमाया अभी यहां कोई भी इस विद्या का अधिकारी दिखाई नहीं देता, मैं नाम का असर जमीन में भर दे रहा हूं''। ईश्वर की दया है कि उसी दिलदार नगर में आज कई साहबान इस सत्संग में शामिल हैं । यह उनका उस जमीन पर ठहरने और बोलने का असर था उसी दौरान एक और वाक्या है जो उन्ही (पूज्य बाबू जी) के शब्दों में प्रेषित हैं :–

''मैं दिलदार नगर स्टेशन पर कुछ काम से गया था । उसी डाक से (पूज्य लाला जी) आपका खत आया था कि लड़की की शादी फलां तारीख को है। स्टेशन पर ही यह ख्याल आया कि हम तो आराम से रह रहें हैं और आप (पूज्य लाला जी) पर रूपये नहीं हैं । दस्तावेज लेकर रूपये लेना पड़ेगा । हमारी नौकरी बेकार है जो आपकी कुछ खिदमत न कर पाये। ख्याल में इतनी पुख्तगी आई कि स्टेशन से सीधा

घर आया पासबुक लेकर 1 या 2 रूपया किताब में छोड़ा, बाकी उसी बख्त जनाब को रवाना कर दिया। आपका बहुत–बहुत मोहब्बत से भरा खत उसके जबाव में आया जो मैंने आज तक बतौर यादगार अमानत रख रखा है। आपने बताया है कि इस रास्ते में अक्सर खतरात आते रहते हैं । इस किस्म का खतरा **'खतराए रहमानी'** होता है । अगर उस वक्त यह ख्याल पैदा हो जाता है कि इस बख्त न भेजे बाद में भेज देंगे या कुछ और ख्याल बगैरह बगैरह तो यह **'खतराए शैतानी'** कहलाता है।

मैं गाजीपुर से जुलाई सन् 28 में लखनऊ आ गया था। बीमारी की वजह से बहुत कमजोर था। इत्तेफाक ऐसा हुआ कि हमारे छोटे बहनोई को तपेदिक हो गयी और मैंने आपको बहुत परेशानी से सब हालत लिखी। आप खुद बीमार थे लेकिन उसी बीमारी की हालत में आप बाबू प्रेम नारायण दलेला जी को देखने के लिये तशरीफ लाए। उस रोज सुबह से ही मुझको दस्त व कय शुरू हो गये और जो हमारे तीन साथी और डा. थे उन्होंने कहा कि यह तो हैजा सा मालूम होता है मैंने बहुत हिम्मत बॉधी और कहा कि मुझको यह कुछ नहीं हुआ है आप लोग घबरायें नही । मैं ठीक हो जाऊँगा । इतने में क्या देखते हैं कि आप (लाला श्री महाराज) खुद फतेहगढ़ से तशरीफ ले आये और आवाज दी। डा. लालता प्रसाद जी फतेहगढ़ के थे उन्होंने आपको रिसिव किया, स्वागत किया। मैं तो उठ नहीं सका इस हद की कमजोरी थी । डाक्टर लालता प्रसाद ने पूॅछा कि आपको मकान ढ़ूॅढने में बहुत तकलीफ हुयी होगी, आपको फरमाया कि मकान पर आकर आवाज दी जैसे मेरा कई मर्तबा को देखा हुआ हो। यह दूसरी मर्तबा ऐसा वाकया हुआ है। एक बार दिलदार नगर में ऐसा ही हुआ जिसका जिक्र पहले किया गया हो ।

आप मेरे पास तशरीफ लाए और बड़ी शफक्कत से फरमाया कि देखने के लिए तो हम बाबू प्रेम नारायण को आए थे तुम भी बीमार निकले, मैं उसी बख्त से बिल्कुल ठीक हो गया और खूब चलने फिरने लगा। लोगों को ताज्जुब हुआ कि 10 मिनट पहले तो तुम इस कदर बीमार थे कि उठ नहीं सकते थे। अब तुम्हारी बीमारी कहॉ गयी। शाम को जब आप टहलने जाने लगे तो मैं भी साथ हो लिया। फरमाया तुम बहुत कमजोर हो हम क्योंकि टब–बाथ (Tub Bath) का इलाज करते हैं इस वजह से बहुत तेज चलेंगे। तुम इतना तेज नहीं चल सकोगे इसलिए तुम वापिस मकान पर चले जाओ । जब शाम को टहल कर वापिस तशरीफ लाए तो एक साहब बाबू बटकनाथ को जो उस समय ''लॉ''

(Law) में स्टूडेन्ट थे और श्रीमान डा. चतुर्भुज सहाय से ताल्लुक रखते थे । जब मैंने उनसे जनाब की आमद का जिक्र किया चरणों के दर्शन को आए । मैं शर्म की वजह से (पू. लाला जी) कुछ नहीं कर सका था बाबू बटकनाथ जी से कहा कि आप हजरत किबला से अर्ज कर दें कि सुबह से कुछ खाया नहीं है। कुछ फल खा लें। फल सुबह ही मैंने अमीनाबाद से मंगवा लिए थे। बाबू बटुकनाथ जी ने दो – तीन मर्तबे कहा फरमाने लगे थोड़ी देर में खा लेंगे जब वे चले गये तो मैंने हिम्मत की और कहा कि आपने सुबह से कुछ नहीं खाया, परहेजी खाना जैसा आप खाते हैं तैयार हो रहा है यानी बिना छने आटे की रोटी बिना मसाले का साग बगैरह । आपने फौरन फल खाना शुरू कर दिया और फरमाया कि ये फल तो तुमने ही मॅंगवाये थे। मैंने अर्ज किया– जी हॉ। मुस्कराये और बोले मैं तो पहले ही समझ गया था। शाम हुई डाक्टर छोटे लाल जी जो मेरे दूसरे साथी थे आ गये। कुछ देर बाद जब सब हट गये फरमाया– हेल्थ आफीसरी के इम्तहान में तो सब लड़के पास हो ही जाते होंगे। मैंने अर्ज किया पिछली साल तो रेजल्ट फिफ्टी परसेन्ट भी नहीं था। फरमाया कुन्द जहन या बेवकूफ फेल होते होंगे। आपके फरमाने की गरज यह थी कि तुम पास जरूर हो जाओगे। सुबह हुयी तो श्रीमान भाई साहब बाबू लाल बहादुर साहब जो मोहकमा कोर्टस आफ वाईस में मुलाजिम थे और जो शाम से ही आ गये थे कहने लगे और इसरार किया कि आप मेरे मकान पर तशरीफ ले चलें क्योंकि डाक्टर श्यामलाल तो कालेज चले जायेंगे । मैंने कहा– नहीं, आज मैं कालिज नहीं जाऊंगा। मेरी तबियत कल काफी खराब थी और मैं बहुत कमजोरी फील (महसूस) कर रहा हूॅं । आप बोले अच्छा वहीं चलते हैं। मैं टांगा ले आया और रवाना होने लगे तो मैंने अर्ज किया कि तब तक मैं भी कालेज चला चलूॅं हाजिरी ही हो जायेगी। कहा– अच्छा ठीक है। भाई साहब लाल बहादुर साहब ने फरमाया – अभी तो तुम कह रहे थे कि कालेज नहीं जाऊॅंगा । बजाये इसके कि मैं जवाब देता आप ने वही कह दिया जो मेरे दिल में था कि मेरे रूकने की वजह से रूक रहे थे। अब हम लोग वहां चल रहे हैं तो वे कालिज हो आवेंगे – हाजरी दे आवेंगे भाई साहब इस मोहब्बताना रवैया को देखकर हॅंसे। सब रवाना हुये और जहां भाई साहब रहते थे वहॉ उन को पहुॅंचाकर मैं कालिज चला गया और हाजरी दे कर फिर आप की खिदमत में शाम को पहुॅंच गया। रात को वहां से चला आया । सुबह को फिर अन्धेरे वहीं पहुॅंच गया। फासला करीब 2.5 मील था । भाई साहब अभी उठकर दाढ़ी बना रहे थे । आपने फरमाया कि तुम 2.5 मील पैदल चल कर आ गये, और जो हमको अपने घर ठहराये हैं, वे अभी तक तैयार नहीं हैं । खैर फिर वे मुझे देख कर जल्दी से तैयार

हुए। थोड़ी देर तक आन्तरिक सत्संग होता रहा । बाद को आप ने फरमाया कि अब हम वापिस फतेहगढ़ आज ही जायेंगे। मैं और हजरत किबला दोनों वहां से स्टेशन को रवाना हुए । जैसे ही घर से निकले फलों की ढेरियां लगी हुयी थी । फरमाया– ये साहिब कल से यही कह रहे थे कि यहॉ फल नहीं मिलते हैं, अमीनाबाद जाना पड़ता है। यहॉ तो फल बहुतेरे मिलते हैं। यह चीज मुझको दिल में बड़ी तकलीफ दे गयी और बड़ी फील हुई कि जब उनकी खुराक फल ही थे वो उस रोज उन को नहीं मिले। मैंने अमीनाबाद आकर काफी फल और परवल, जो सब्जी में इस्तेमाल होते हैं खरीद कर आपके साथ रख दिये। जब आप गाड़ी पर सवार हुए मेरा जी भर आया आपने आशीर्वाद दिया। गाड़ी रवाना हो गयी। कुछ देर सन्नाटा सा हो गया तबियत कहीं नहीं लग रही थी। खैर।

सन् 1928 गुजरा और सन् 1929 शुरू हुआ। मेरा जिस्म बहुत गिर गया था क्योंकि बीमारी की ही हालत में मैं पढ़ने गया था । उधर पढ़ाई में भी बड़ी मेहनत पड़ी। अप्रैल में भंडारा पड़ा। चार अप्रैल को मैं भन्डारे में शिरकत कर रहा था। रात को 11 बजे गाड़ी लखनऊ को मिलती थी जो सुबह लखनऊ पहॅुचाती थी । मैं और भाई साहब, बाबू लाल बहादुर साहब ने आप से इजाजत चाही और मेरे लिए भी इजाजत मांगी । फरमाया– तुम भी जा रहे हो जिस प्रेम की नजर से आपने मुझे देखा वह आज तक मेरे जहन पर तारी हो जाता है। मैं खामोश रहा, कुछ न बोला गया। बाबू लाल बहादुर साहब ने ही कहा कि इनका परसों सुबह फाइनल इम्तेहान है। फरमाया– परसों ? मैंने सिर हिलाकर हॉ कर दी । हुकुम हुआ – जाओ। पैर छू कर हम लोग रवाना हुये। रास्ते भर आपकी वही आवाज ''तुम भी जा रहे हो'' गूंजती रही। यहां 5 अप्रैल की सुबह को जब पहॅुचे तो लड़कों ने बहुत मजाक उड़ाया। कहा– कल सुबह इम्तहान है और आज जनाब तशरीफ लाये हैं और मेरा नाम तो फेल वाले लड़कों में समझ लिया गया । इम्तहान दो हिस्सों में होता था। पहले हिस्से में जो पास हो जाता था। वही दूसरे में बैठ सकता था वरना नहीं। ईश्वर की दया और आपकी मेहरबानी से मैं पहले हिस्से में बहुत अच्छे नम्बरों से पास हो गया। लड़कों को बड़ा ताज्जुब हुआ। मैंने खुश होकर फौरन आपको इत्तलाई खत लिखा– मैं पहले हिस्से में पास हो गया हूँ, दूसरे पार्ट का इम्तहान दो तीन रोज में शुरू होगा। जवाब आया– ईश्वर तुमको दूसरे पार्ट में भी पास कर दे। ईश्वर ने ऐसा दया कि 22 में से सिर्फ 9 लड़के जो पास हुए उनमें में भी था और मेरी चौथी पोजीशन थी। यह सब आपके ही आशीर्वाद का नेक फल था । हेल्थ आफीसरी का इम्तिहान पास करके मैं फिर गाजीपुर वापस चला गया । इसी अरसे में सेठ के मामा बद्री प्रसाद की शादी हुई।

गालिबान मई 1929 थी। मैं गाजीपुर से ही बारात में शामिल होने के लिए आया था। सफर का आगाज ही बड़ी नहूसत से हुआ। बमुश्किल– तमाम जगत पहॅुचा और वहॉ से सब लोग बारात में साथ–साथ गये। मेरे पास काफी कपड़े और सामान अपना था। बारात का जेवर और रूपये भी मेरे पास ही था। गरज वहॉ के लोगों ने ताड़ लिया कि बारात में ये खास आदमी हैं। दो, चार चौकीदार एक सब–इन्सपेक्टर और दो सिपाही उसी गॉव में खास तौर पर बारात की निगहबानी के लिए तैनात थे लेकिन रात को चोरों ने मेरा सब टेन्ट इस होशियारी से काट दिया और पन्द्रह मिनट के अन्दर सारा सामान चोरी चला गया, सुबह जब आकर बिरादर अजीज गंगादीन गजल ख्वानी के लिये मेरी किताब मांगने लगे तो मैंने उनसे कहा कि मेरी किताब मेरे बक्स में हैं उन्होंने कहा बक्से में है ही नहीं । मैं भड़भड़ाकर उठा और देखा कि कोई सामान मेरा बाकी नहीं है। सब चोर ले गये। मैं सिर्फ एक बनियान और पुरानी धोती पहने रह गया । बहुत बड़ा शॉक लगा । यह ख्याल हुआ कि जितने लोग पूजा–पाठ करने वाले होते हैं हमेशा दुखी रहते हैं और पूजा पाठ मामूली दुनियादार के लिए कोई कार आमद शै नहीं हैं। गो मैं वापसी फतेहगढ़ होता हुआ गुरूदेव के दर्शन करता हुआ वापिस गाजीपुर गया था लेकिन यह ख्याल बहुत जोर पकड़ता गया और इतनी मजबूती से जड़ पकड़ी कि इसका निकलना मुश्किल हो गया यह गालिबान जून या जुलाई का माह था । पूजा से बराबर तबियत हट रही थी। दुनियाँ का रूझान बहुत था। और इसके साथ साथ बहुत ही बद ख्याली होने लगी। इसी अरसे में मेरा तबादला बहैसियत हेल्थ आफीसर बुलन्दशहर हो गया। ख्यालात वही रहे बल्कि बदख्याली और काम के ख्यालात बहुत होने लगे। हालत दिन–ब–दिन गड़बड़ाती रही। घबड़ा–घबड़ा कर बराबर खत लिखता रहा। एक रोज तो ऐसा इत्तेफाक हुआ कि मैंने खत लिखा और दूसरे रोज फतेहगढ़ को रवाना हो गया। रात के दो बजे गाड़ी फतेहगढ़ पहॅुची। मैं बाहर ही बरामदें में, मारे शर्म के, जो तख्त पड़ा था उस पर बैठ गया। ॲधेरे में मैं देख न पाया उस पर बहुत मिट्टी पड़ी थी क्योंकि घर में कुछ बन रहा था । आप आहट पा कर फौरन उठे पूछा –''कौन है?'' मैंने कहा– ''मैं श्याम लाल'' फरमाया– तुम बाहर क्यों बैठ गये। यहां चले आओ और आराम से सो जाओ। हम जाग रहे हैं। तुम्हारा खत भी आज हमको मिल गया था। सुबह उठ कर जो मैंने सड़क पर देखा तो मेरे खत को इस तरह से फाड़ा था कि कोई लाख कोशिश जोड़ने

की करे तो जुड़ नहीं सकता था। आप कभी एक की बात या भेद को दूसरे से जिक्र भी नहीं किया करते थे, आप ने कभी एक अभ्यासी की बावत दूसरे अभ्यासी से कोई जिक्र ही नहीं किया चाहे वह कितने ही दोस्त क्यों न हो। दो तीन रोज रह कर चला आया। हालत वहॉ रहने पर कुछ सकून पर आई लेकिन वहॉ से हटने पर ख्यालात कि पूजा पाठ करने वालों पर मुसीबत आती है फिर परेशान करने लगे। ख्यालात दिन ब दिन दुनियाबी होते जा रहे थे और काम शक्ति जो कभी इस वेग से नहीं उभरी थी वह उभर रही थी, और हर वक्त यह हालत थी कि या तो दुनिया साथ थी या काम शक्ति। दुःखी हो कर मैंने बहुत नम्रता से फिर खत लिखा कि मेरी हालत यह है और जब में बिल्कुल डूब गया तो आपकी मदद पहुॅची भी तो क्या होगा मैं तो फिर डूब ही जाऊॅगा । आपने हजरत किबला चाचा जी महाराज से फरमाया कि तुम जाओ और पन्द्रह रोज श्यामलाल के पास ठहरो ताकि उसकी हालत संभले । तुरन्त इमदाद पहुॅची और मैं संभल गया वह उनकी दया थी ।

इसी बीच में एक रोज मैं दौरे में था । शाम को बख्त पूजा में बैठा अजीबो गरीब हालत थी । शाम से बैठा हुआ रात को सर्दी के दिनों में दो बज गये, कोई खबर तक नहीं रही और डर की वजह से नौकर ने भी नहीं जगाया। इस बेखबरी के हालत में क्या देखता हूॅ कि पहले हजरत किबला मौलवी फजल अहमत खां साहब रहमत उल्ला ने वहीं पर फिर हजरत किबला मौलवी अहमद अली खां साहिब रहमत उल्ला ने अपने–अपने हाथ पर बैत फरमाई। मैं चौक कर उठ बैठा और सोचने लगा कि मैं तो पहले ही से बैत हूॅ और खुद हजरत किबला लाला जी महाराज ने मुझको अपने दस्त मुबारिक पर बैत किया है। यह बैत कैसी। दो चार दोस्तों और श्रीमान भाई साहब डा. श्रीकृष्ण लाल जी साहब थे, जिन को कुछ मजीद वाकफियत थी, दरयाफ्त किया तो मालूम हुआ कि पीराने उज्जाम हमेशा ही हाथ पकड़ लेते हैं और असली बैत भी यही है। मैं खामोश हो गया । मेरा तजुरबा खुद भी बाद को यह हुआ कि पीराने उज्जाम हर बख्त साया की तरह अपने शिष्यों के साथ घूमते हैं और हर जगह मदद करते हैं। आपने भी मुझको एक खत में यही लिखा है। खत मिल गया तो उसकी असल नकल इस में शामिल कर दूॅगा। फरमाया कि यह माया का जबरदस्त हमला था और अगर पीराने उज्जाम से बकायदा निस्वत न होती तो मामला बिगड़ जाता और परेशानी में पड़ जाते ।

बुलन्दशहर में हम दो चार आदमी आपस में मिलते जुलते रहे। अच्छा वख्त गुजरने लगा। प्रेम और उत्साह के साथ परमार्थ का काम चलता रहा।

सन् 1930 में आपको जिगर की तकलीफ रहने लगी । ऑखों में हल्का पीलापन रहने लगा था भूख वगैरह कम लगने लगी थी मेरा ख्याल है कि यह तकलीफ सन् 1928 से ही चल रही थी शुरू में पता नहीं चला। आपको अंग्रेजी इलाज पर एतकाद नहीं था, बल्कि यूनानी और आयुर्वेदिक और उसके बाद नेचुरोपैथी और होम्योपैथी पर ज्यादा भरोसा था । एक मर्तबा मैंने कुछ यूनानी किताबें पढ़ने के लिए मॅगवायी क्योंकि मुझको खुद यूनानी इलाज ज्यादा माफिक पड़ता था। मैं यूनानी किताबों को पढ़ना भी ज्यादा पसंद करता था। आपको मैंने वह किताबें दिखाई बहुत खुश हुए। फरमाया कितना अच्छा मजमून हर बीमारी पर लिखा है । दवाईयॉ यूनानी इलाज में अकसीर है इसमें प्राकृतिक गुण हैं जैसे मिसाल के तौर पर इस्तेमाल मुनक्का। यह मुनक्का दवा की दवा और खुराक की खुराक दूसरी पैथी में इलाज तो बहुत अच्छा है और नयी तहकीकात भी बहुत हुयी हैं। अगर उसमें भी यह चीज होती या शामिल कर ली जाती तो एलोपैथी उससे भी ज्यादा अच्छी साबित होती और मुफीद वाज अवकात पड़ जाती ।

गालिबन 1930 था जब आ जनाब को ब–सिलसिला बीमारी हमषीरा अज़ीजा कमला जी के सिकन्दराबाद रहना पड़ा। ऐसा इत्तेफाक हुआ कि हमषीरा प्रेमा जी की लड़की भी बीमार हो गयी । प्रेमा जी की लड़की को मेरे पास बुलन्दषहर छोड़ा और हमषीरा कमला जी को सिकन्दराबाद रखा और खुद भी मय माता जी के सिकन्दराबाद इलाज और तीमारदारी के लिये रहे। एक दो साहबान और भी आपके साथ थे ।

इसी दौरान में मैं एक रोज सुबह ही उठकर गुलावटी (जिला बुलन्दशहर) दौरे पर जाने के लिये घर से निकला। बुलन्दशहर से 7 बजे गाड़ी गुलावटी जाती थी । खाना वगैरह लेकर मय अपने अर्दली के जा रहा था तभी रास्ते में हमारे डी.एम.ओ.एच. डाक्टर गोमती प्रसाद सक्सेना साहब खड़े हुये थे बोले श्यामलाल तुम कहॉ जा रहे हो। मैंने अर्ज किया मैं तो गुलावटी दौरे पर जा रहा हूॅ । कहने लगे आप न जाइये, मेरी लड़की को रात में बड़ी तकलीफ रही है । मैं उस को किसी अच्छे होम्योपैथ डाक्टर को दिखलाना चाहता हूॅ हम उसको लेकर देहली चल दिये। जब सिकन्दराबाद आया तो मैंने डाक्टर साहब से कहा कि मैं

चाहता हूँ कि सिकन्दराबाद के सेनेटरी इंस्पैक्टर को भी साथ ले लें । मैं अभी जाकर उनको ले आता हूँ । दूसरे मैं एक और साहब से दो चार होम्योपैथ देहली वालों के नाम भी दरयाफ्त कर लूँगा ताकि लड़की को दिखलाने में मदद मिले क्योंकि मैं खुद किसी होम्योपैथ को नहीं जानता हूँ। इस तरह मैं उनकी मोटर से उतर कर श्रीमान भाई साहब डाक्टर श्रीकृष्ण लाल जी साहब के यहाँ गया। मालुम हुआ कि कल रात से हमशीरा कमला जी बहुत बीमार हैं और हालत बहुत खराब हैं। मै फौरन उनको देखने ऊपर छत पर गया। माता जी ने ऑसू भरे लब्जों में कहा "कमला– तुम कहती थी कि श्यामलाल भैया नहीं आये देखो वे भी आ गये। हालत नाजुक थी पर वो होश हवाश में थी नमस्ते हुई । यह ऐसा समय था कि जनाब की तबियत का रूझान जिस बात पर होता था वह हो ही जाता था। आपको मन्जूर हुआ कि मैं अजीजा कमला जी के आखिरी बख्त पर उनके पास रहूँ और मैं पहुँच गया। कहॉ दौरा जा रहा था दूसरी तरफ कहॉ पहुँचा सिकन्दराबाद और वह भी कुदरत ने सवारी का और सवारी भी दूसरों पर एहसान के साथ मिल गयी। मैंने डाक्टर गोमती प्रसाद जी से सारा वाक्या अर्ज किया और कहा कि ऐसी हालत में मेरा देहली जाना न हो सकेगा। आप सेनेटरी इन्सपैक्टर को लेकर चले जाये। उन्होंने भी बा–खुशी इजाजत दे दी। इत्तेफाक ऐसा हुआ कि कमला जी न रहीं और उनकी डेथ (मृत्यु) के बाद आप तथा घर के सब लोग फतेहगढ़ वापिस चले गये। दौरान इसी कयाम के एक रोज सिकन्दराबाद में आपने फरमाया तुम्हारा कुछ ताल्लुक सिकन्दराबाद की म्युनिसपैलिटी में भी है। मैं समझा नहीं। मैंने कह दिया नाम के लिए ताल्लुक है वैसे कोई खास कन्ट्रोल नहीं है। फरमाया यह मेहतर की लड़की जो सड़क पर काम करती है यहॉ से तब्दील हो जावे तो अच्छा है। यह इस कदर काम शक्ति से भरी है कि सड़क पर झाड़ू देती है लेकिन ख्यालात यहॉ तक फेकती है। तुम लोग जवान लड़के हो किसी बख्त भी धोखा हो सकता है। मैंने कहा यह कोई मुश्किल काम नहीं है। मैं सेनेटरी इन्सपैक्टर से कह दूँगा तबादला हो जायेगा। हमशीरा कमला जी की मृत्यु वगैरह से यह बात ख्याल से उतर गयी। तीन ही चार रोज बाद उस लड़की ने भाई साहब डाक्टर श्रीकृष्ण लाल जी साहब की दुकान पर हर तरह का फसाद किया। बमुश्किल तमाम वह झगड़ा निबटा। दो बातें खास है। पहला आप का कश्फ कितना जबरदस्त था कि हवा के ख्याल को देखते थे। दूसरा किस कदर एहतियात आप को

पसन्द था । जरा भी मौका होता तो हमेशा खतरात से आगाह कर देते थे और हर किस्म के एहतियात का लिहाज मन्जूर था। ऐसी ही एक घटना का जिक्र यहॉ मैं करना चाहता हूॅं। जो कि पूज्य बाबूजी के साथ गुजरी। पूज्य ताऊ जी (डा. श्रीकृष्ण लाल जी) के दूसरे पुत्र श्री राधेकृष्ण जी की शादी खुर्जा में एक लड़की से तय हो गयी । उसी दौरान पूज्य बाबू जी बाहर बैठे हुये थे। उसी बख्त वह लड़की उनके सामने से सड़क पर निकली। पूज्य बाबू जी ने उसको देखते ही वहॉ से सिकन्दराबाद रवाना हुए । आपने पूज्य ताऊ जी से कहा कि यह शादी ठीक नहीं है क्योंकि वह लड़की बड़ी व्यभिचारिणी लग रही है और उसका भविष्य (Future) भी बहुत (Dark) अन्धकारमय लग रहा है । गो कि लड़की देखने सुनने में काफी अच्छी लग रही थी शादी रद्द कर दी गयी । बाद को ऐसा ही हुआ और आपकी बात शत प्रतिशत ठीक निकली। आपका कश्फ भी बहुत जबरदस्त था। कई और भी वाक्यात ऐसे हुए है जिसमें आपने ऐसी मोहब्बत से बचा लिया और कुछ न कहा ऐसी एक घटना और है वह इस प्रकार है:–

''पूज्य लाला जी महाराज के पास यह सब लोग छोटी–छोटी उमर के तो थे ही । आपके सुपुत्र श्री जगमोहन नारायण जी आठवीं कक्षा में पढ़ते थे। उनके स्कूल के मास्टर साहब उनकी शिकायत लेकर पूज्य लाला जी के पास आये पूज्य लाला जी साहब ने बड़ी नम्रता से कहा कि देखेंगे कि वह ज्यादा मन लगाकर पढ़े। मास्टर साहब ने कहा 'अगर आपने देखा होता तो शिकायत करने ही क्यों आना पड़ता। पू. बाबू जी से जगदम्बिका प्रसाद जी ने कहा कि मास्टर साहब इतनी बेरूखी से जनाब लाला जी साहब से पेश आये हैं आज अभी चलो इनको इसका मजा चखाया जाय और मारा जाये । पूज्य लाला जी साहब ने मास्टर साहब से कहा कि आप इतनी तकलीफ उठा के उनके बेटे की बेहत्तरी की बाबत आये हैं चलिये, मैं आपको पहुॅचा दूँ। पू. लाला के साथ जाने से आप लोग कुछ न कर सके। जब आप लोग शाम को उनकी खिदमत में गए तो आपने संकेत में कहा भाई जब अपने हित के लिये कोई सच्ची बात कहे तो सच को बरदाश्त करना चाहिये क्योंकि किसी के लिए बदख्याली अच्छी बात नहीं अपनी बुराई बताने वालों का बहुत मान करना चाहिये । शायद इसी भावना से कहा गया है :–

''निंदक नियरे राखिये, ऑंगन कुटी छवाय'' ।

सदाचार और बहुत नम्र बने रहना सिखाना आपका सदा विषेष प्रयास रहा।

नोटः– पूज्य बाबूजी के डायरी के अंश से उन्हीं के शब्दों में सीधे वर्णन कर रहा हूं क्योंकि जो फोर्स (शक्ति) उसमें है वह कहॉ मिल सकती है। उनके आध्यात्मिक प्रेम बन्धन की छोटी–छोटी घटनाओं को उनके ही शब्दों में लिखकर आप तक पहुॅचा कर पाठक के हृदय की प्यास बुझाने का प्रयत्न कर रहा हूॅ । यह समय पूज्य लाला जी के बीमारी का था । पूज्य बाबू जी ने लिखा है :–

''धीरे–धीरे जिगर की तकलीफ बढ़ती गई, बहुत इलाज कराया और देहली से भी इलाज की मदद ली । इसके लिये यह तय हुआ कि दस बीस रोज सिकन्दराबाद रह कर देहली इलाज करावें । चुनांचे आप सिकन्दराबाद आये। इस दौरान मैं भी मय बच्चों के सिकन्दराबाद ही ठहर गया । देहली के डाक्टरों का इलाज रहा । आप को दिखलाने के लिये यह मुनासिब समझा कि किसी की कार मॉग लें और उस पर आप को दिखलाकर वापिस देहली से तीसरे चौथे ले आया करेंगे। चुनांचे एक रोज शाम को बाबू जतन स्वरूप जी रईस सिकन्दराबाद से जो खुद आपके मुतकद थे, और हम लोगों से भी अच्छे संबंध थे, हम लोगों ने कार मॉगी । उस बख्त उन्होंने कह दिया आप सुबह कार ले जाइयेगा पर जब सुबह कार लेने पहुॅचे तो उन्होंने इनकार कर दिया कि आज कार न मिल सकेगी । मुझे यह बात सख्त नागवार गुजरी और उनके मकान पर बैठे–बैठे मैंने यह तय कर लिया, अब बुलन्दशहर तब जावेंगे जब नई कार खरीदेंगे, और उसी पर आप जनाब को देहली ले जायेंगे। अब किसी से मांगेगे नहीं। चुनांचे वहॉ से लौट कर जनाब से इजाजत मॉगी कि आप अगर इजाजत दे दें तो हम भी अभी जाकर देहली से कार खरीद लावें। आपने पूछा–रूपये वगैरह का कैसे इन्तजाम करोगे। मैंने कहा यह सवाल देहली जाकर तय होगा। आप की सिर्फ इजाजत चाहिये। ख्याल कीजिये कि मैं आपके सामने मुॅह नहीं खोल सकता था पर उस समय सब बातें कह गया। आपने फरमाया ले आओ । मैंने कहा कि बीमारी ऐसी है कि न मालुम कहॉ–कहां जाना पड़े लिहाजा वह कार जब तक आपको तकलीफ है वह आपके इस्तेमाल (प्रयोग) में रहेगी । आपसे इजाजत मिलने पर मैं अपने एक दोस्त जो, सिकन्दराबाद में ही थे, के पास गया उनसे सब बातें खुलासा कहीं और अपना पक्का इरादा कार खरीदने का भी बताया और कहा कि अगर आप कुछ रूपया इस वख्त दे देते तो बेहतर हो। उन्होंने रूपया दे दिया हम लोग उसको लेकर कार खरीदने दिल्ली चले गये और शाम को कार खरीद लाये।

आप देखकर बहुत खुश हुये और हम लोग उन्हें दूसरे दिन और फिर कई मर्तबा डाक्टरों, वैद्यों को दिखाने उनको उसी कार में ले गये। परमात्मा की दया और कृपा ने इन दोस्तों का रूपया भी बहुत हॅसी–खुशी से बहुत जल्दी निपटवा दिया। अभी तक मैं सिकन्दराबाद ब–सिलसिला दौरे में रूका था। वहॉ से वाइफ, बच्चे तीन चार दिन बाद बुलन्दशहर चले गये थे। जब उन्होंने कार देखी तो विश्वास नहीं हुआ और बहुत ताज्जुब किया क्योंकि कोई जिक्र इस किस्म का घर में इससे पहले हुआ नहीं था। दौराने कयाम सिकन्दराबाद श्रीमान भाई साहब (डा. श्रीकृष्ण लाल जी) से अक्सर गुफ्तगू इस अमर पर हुआ करती थी कि आप का रोग बहुत सख्त है। आप जनाब श्रीमान् भाई साहब इस वजह से काफी परेशान रहा करते थे। मैं कहा करता था कि हजरत किबला चाचा जी महाराज ने फरमाया कि पहले वापसी उनकी होगी उसके बाद हजरत किबला लाला जी महाराज की। मैं इसी धोखे में था, मालूम ऐसा होता है कि सन् 1921 में जब हजरत किबला चाचा जी महाराज बहुत सख्त बीमार हो गए थे और कोई उम्मीद जिन्दगी की बाकी न रह गयी थी और उम्र चूंकि जनाब की जवानी की थी । घर का हर शख्स परेशान था और आप जनाब लाला जी साहब खुद भी । जब सब तरफ से सब लोग मायूस हो गए और जिन्दगी की तवक्कों न रही आपने आदेश में फरमाया नन्हें की बहू आप चाचा जी साहब को प्रेम से नन्हें कह कर पुकारते थे इस लिए उनकी पत्नी को नन्हें की बहू कह कर पुकारा और कहा बोल बेटी तू किसका इलाज कराना चाहती है उसी का इलाज कराऊंगा और ईश्वर की दया से जरूर फायदा होगा। उस बख्त जो लोग वहॉ मौजूद थे उन्होंने बताया और तकरीबन सबका यह ख्याल है कि जिन्दगी का कुछ हिस्सा जनाब चाचा जी साहब को ट्रान्सफर कर दिया था। इसी से आपकी वापसी जनाब चाचा जी से पहले हुई ।

यह समय जनाब की वापसी का था । आप बीमारी की हालत में सिकन्दराबाद ठहरे थे। एक शाम को आप पेशाब को गए। मैं पानी लेकर खड़ा हो गया कि आप हाथ धो लें मैंने जब पानी पेश किया फरमाया ''हमने जिस्म को हाथ नहीं लगाया था लेकिन चूंकि तुम पानी लाए हो'' एहतियातन हाथ धोये लेते हैं। किस कदर साफ दिली और साफ जबान थी बच्चों की तरह सादा बोली जैसी बात थी सादा बोली से उसी तरह कह दी।

दौरान उसी कयाम आपने फरमाया बुलन्दशहर में कोई अच्छे होम्योपैथ हैं। मैंने कहा दो–एक होम्योपैथ हैं जरूर पर बहुत अच्छे नही हैं। इस पर आपने इच्छा जाहिर किया कि उन्हें ही दिखा दिया जाये, मैंने खुशकिस्मती समझी और दिल में खुश हुआ कि इसी बहाने आप दो एक रोज बुलन्दशहर ठहर लेंगे। उधर आपने श्रीमान भाई साहब डा. श्रीकृष्ण लाल जी से कहा हम चाहते हैं कि दो–एक रोज उसके पास बुलन्दशहर ठहर लें। जब आप बुलन्दशहर कयाम फरमा रहे थे और सेठ पेट में थे तो माता जी ने इस तरह का जिक्र किया कि श्याम लाल के दो बच्चे जाते रहे और इस वख्त सिर्फ एक लड़की बत्ता हैं और कोई लड़का नही है। उसके बाद ही यह दोनों भाई सेठ और दिन्नू हुए। एक मर्तबा इस किस्म का आशीर्वाद श्रीमान् भाई साहब डा. चतुर्भुज सहाय जी के लिए भी हुआ था जब आप गाजीपुर तशरीफ लाये थे उनके भी एक दो बच्चे जाते रहे थे। दो– चार रोज आपने कयाम किया। दिन जो जनाब की सोहबत में बीतते थे उनका पता ही नही चलता था लगता था जैसे कि दुनिया में नही, कहीं और रह रहा हूँ। बड़ी शान्ति खुशी और एक अजब मदहोशी का वख्त रहा करता था। गो कि आप को काफी तकलीफ थी पर मैं तो धोखे में ही था कि आपकी वापसी तो जनाब किबला चाचा जी महाराज के बाद ही होगी लेकिन जब आप बुलन्दशहर से रवाना हुए और कार में बैठने लगे तो जो साहबान भी उस बख्त मौजूद थे फरदन–फरदन (अलग–अलग) हर सख्श को गले लगा–लगा कर मिले । मैं अलग खड़ा रहा और आखिर में आजनाब ने जब मुझको भी गले लगाया उस बख्त मुझसे बरदाश्त नहीं हुआ और मैं वही जमीन पर बैठ गया । ऐसा लगा जैसे कलेजा खींच गया, दिल निकला जा रहा है और जैसे यह आखिरी मुलाकात हो। आप बुलन्दशहर से एटा होते हुए फतेहगढ़ वापस चले गये। यह जून का महीना था हम लोग फिकर में रहते थे कि न मालूम कैसी तबियत होगी। वहॉं फलों की बड़ी दिक्कत पड़ती होगी। यह सोच कर मैंने देहली से इन्तजाम फलों का कर दिया। हर हफ्ते फतेहपुरी देहली पर एक फलों का डीलर था जो उनको फल भेज दिया करता था और मैं हर माह जाकर उसका हिसाब कर दिया करता था। जब मैं दुबारा आपसे मिलने गया आपने फरमाया तुम्हारा इतना पैसा भी खर्च होता है और फल यहॉं तक पहुॅंचते–पहुॅंचते खराब हो निकलते हैं लिहाजा खजूर का इन्तजाम रक्खो, बाकी फलों को भेजना बन्द कर दो और ऐसा ही किया गया ।

एक रोज खत आया कि कार लेकर फौरन चले आओ, लखनऊ इलाज के सिलसिले में जायेंगे। हम और श्रीमान भाई साहब (डा. श्रीकृष्ण लाल साहब) फौरन कार लेकर रवाना हुए हालांकि सेठ की मॉं अकेली थी,

और कुछ घरेलू दिक्कतें भी थीं। लेकिन इन सबको बलाये ताक रखकर फतेहगढ़ पहुँच गये। फतेहगढ़ से लखनऊ को रवाना हुए। हम लोग फतेहगढ़ से कानपुर तक आये तो मौसम गनीमत था। कानपुर से लखनऊ को जब हम लोग रवाना हुए मौसत बरसात का था और जगह–जगह पर सड़क बन रही थी । मैं मोटर चलाने में बिल्कुल नया था लेकिन मुझ पर ड्राइविंग लाइसेन्स था। एक ट्क से दौड़ हो गई। मैंने बिना किसी लिहाज के 40–50 की रफ्तार से कार चलाई और ट्रक को काफी पीछे छोड़ दिया कुछ अर्से बाद मैंने मोटर भाई साहब को चलाने को दे दी। गो कि आपका लाइसेन्स नही था पर चलाते खूब थे। आप जनाब कुछ गा रहे थे क्योंकि लखनऊ नजदीक आ गया था इसलिए फिर मैंने मोटर भाईसाहब से लेकर खुद चलाने लगा एकाएक पूछा मोटर क्यों ले ली, मैने अहिस्ता से कहा (क्योंकि मैं जानता था कि जब आप कुछ गाते रहते थे या गाने में महव होते थे तो यकायक बदलाव पर कुछ चेहरे पर सिकन आ जाती थी) कि लखनऊ अब करीब है और क्योंकि लाइसेंस मेरे नाम पर है मुमकिन है पुलिस हैं कुछ पूँछ बैठे। फरमाया क्या मोटर तुम दोनो चला रहे थे? फिर कहा ठीक है। जब अमीनाबाद पहुँचे एक तरफ मोटर और एक तरफ बैलगाड़ी और एक दूसरी तरफ तांगा और सामने खम्भा। मैं बहुत घबरा गया चारों तरफ से घिर गया था एक्सीडेंट बहुत ही स्योर (जरूरी) मालूम हुआ, बचने की कोई उम्मीद नही देख कर मेरे तो होश बिलकुल गायब थे उसी समय आपने फरमाया अरे! आंय। इस लब्ज़ का कहना था कि ये मालूम हुआ कि मोटर न मालूम किस तरह बिल्कुल बचके सही सलामत खम्बे के पार निकल गई। इतने बड़े शहर और इस भीड़ से मोटर का ऐसे साफ निकलना आप की शान का एक करिश्मा था। आपने पूछा ठीक है मैंने जवाब दिया जी हॉ और आहिस्ता–आहिस्ता चल कर पं0 छोटे लाल जी के यहॉ पहुँचे। वहॉ पं0 छोटेलाल जी साहब जो ब्रजमोहन लाल जी साहब और हजरत किबला चाचा जी महाराज के यहॉ आते जाते थे, कयाम फरमाया। जगह उनके पास बहुत कम थी, आपने एक कमरा हजरत किबला लाला जी महाराज को दे दिया और बहुत कम जगह में खुद गुजर की। कई रोज इस तरह से काटे। मैं और श्रीमान भाई साहब कार ही में लेटते बैठते थे। माता जी, पं0 माता चरण जी, और शीला बहन उस छोटे से कमरे में रहती थीं। इसी बीच में एक दिन बारिस हो गई। कुछ हम लोगों के तकलीफ का ख्याल कर या कुछ वजह से आप किसी धर्मशाला या किसी मकान में चलना चाहते थे।

इसके बाद मेरे एक रिश्तेदार वहॉ थे उनके जरिये एक धर्मशाले में दो कमरे ले लिए गये। यह धर्मशाला चौक से नजदीक था यह जगह ऊॅची

और खुली थी आपने बहुत पसंद किया। हम लोग पहले की तरफ मोटर ही में रहे। दो ख्याल थे एक तो मोटर की रखवाली का, दूसरे आपको तकलीफ दर्द भी बहुत होती थी, यह उन्ही की हिम्मत थी कि बिना दवा के उस दर्द को बरदाश्त करते थे। हम लोगों को तो उनका दुःख बरदास्त नहीं होता था। इस समय की घटना का जिक्र महात्मा प्रभुदयाल जी पेशकार साहब ने भी बड़े प्रेम के साथ इस प्रकार किया है ।

जनाब पूज्य लाला जी साहब के बीमारी के दौरान जनाब किबला चाचा जी साहब भी फतेहगढ़ में मौजूद थे यह मशविरा तय पाया गया कि रेल से सफर में तकलीफ होगी लिहाजा डा. श्यामलाल साहब हेल्थ आफीसर बुलन्दशहर की मोटर तलब की जाये, चुनान्चे मैने बहुक्म जनाब किबला चाचा जी साहब, खत लिख दिया और एक तार भी दे दिया लेकिन इसकी इत्तला श्रीमान लाला जी महाराज साहब से नहीं की गई कि कहीं आप मना न फरमा दें, क्योंकि अपने ऊपर हर किस्म की तकलीफ बरदाश्त करना पसंद फरमाते और दूसरों को किसी किस्म की जरा भी तकलीफ न देना चाहते थे। रवानगी तारीख आ गई और सामान सफर सब तैयार हो गया। हम लोग बड़ी बेसब्री से डा0 श्याम लाल जी की मोटरकार का इंतजार कर रहे थे लेकिन मोटर नहीं आई। अब यह जरूरी ख्याल किया गया आपसे इस मामले की इत्तला कर दी जावे, किसी की हिम्मत नही पड़ती थी कि आपसे अर्ज कर दे। मैं निहायत दर्जे परेशान और खौफजदा था, आखिर मैंने हिम्मत बॉध कर अर्ज किया आपने फरमाया कि जब उनसे मोटर मगवाई है तो उनका इन्तजार करना भी जरूरी है वे जरूर आयेंगे और उस गाड़ी से जाना मुल्तवी कर दिया। जरा भी सिकन आपके चेहरे पर, इस तरह एकाएक सब इन्तजाम मुल्तवी हो जाने की वजह से, नही आई। सवारी गाड़ी का वक्त निकल गया। मोटर नही आई आपने चाचा जी साहब से दरियाफ्त किया कि उस पर पता सही लिखा था क्योंकि तुम तो हर वख्त बदहोश रहते हो, मुमकिन है कि उस पर बमुतला जनाब किबला बगैरह लिखकर कार्ड खत्म कर दिया हो और बुलन्दशहर ही लिखना भूल गए हो। इस पर सभी को हॅसी आ गई। जनाब चाचा जी ने अर्ज किया कि पेशकार साहब ने खत लिखा है हमने तसदीक किया, आप इतिमिनान में थे। शुक्र खुदा का कि मोटर शाम को आ गई । वजह देर में आने की यह नही थी कि उस मोटर में कुछ खराबी हो गई थी, वजह यह थी कि आपकी तबियत का हाल सुनकर जनाब डा0 श्रीकृष्ण लाल साहब भी उस मोटर से सिकन्दराबाद का हाल तशरीफ लाए लेकिन खौफ की वजह से सामने नही पड़ रहे थे, इसकी वजह यह थी कि आप कई दफा दौरान बीमारी में तशरीफ ला चुके थे, इससे आपके डाक्टरी की दुकान का

नुकसान और मरीजों के तकलीफ का ख्याल करके महात्मा जी ने डाक्टर साहब को आने को मना कर दिया था लेकिन जोशो–मोहब्बत में आप चले आये। शाम के वक्त आप खुद ही डाक्टर साहब के सामने आ गये और मोहब्बत से भरकर फरमाया कि मैंने नाराजगी की वजह से नही, बल्कि दुकान के नुकसान के ख्याल से तुमको आने को मना कर दिया था। इस तरह पर आपका खौफ रफा हुआ।

डा0 श्यामलाल साहब की मौजूदगी में डा0 श्रीकृष्ण लाल साहब को अपने पास बैठाकर रात में आपने मुरीद और मुराद के बारे में उपदेश फरमाया गो कि मैं वहॉ था पर ज्यों का त्यों मुझे याद नहीं है लेकिन खुलासा उसका यह समझ में आया था ।

''दो तरह के शागिर्द होते हैं। एक मुरीद जो अपनी रियाजत और मुहब्बत वगैरह–वगैरह से गुरू को खुश करते है। दूसरा मुराद जो संस्कारी होते है और उनको ज्यादा मेहनत नही करनी पड़ती बल्कि प्रेम के जरिये सब कुछ हासिल कर लेते है या यो कहे कि मुरीद वह है जो गुरू से खुद प्रेम पैदा करते है, और मुराद वह है जिससे गुरू प्रेम करता है। लेकिन बाजवक्त ऐसा होता है कि गुरू चाहे जितना प्रेम मुराद को हमेशा नियाज 'दीनता' में रहना चाहिये, क्योंकि अहंकार चाहे जितना सूक्ष्म हो इस रास्ते में कातिल है।

****

डा0 साहबान मौसूफ के हमराह आप कानपुर होते हुए लखनऊ तशरीफ ले गये दौरान क्याम लखनऊ आपने डा0 श्रीकृष्ण लाल साहब से फरमाया बेटे! तुमको दुकान छोड़े बहुत दिन हो गये है, अब तुम वापिस चले जाओ इस पर डाक्टर साहब ने फरमाया कि क्या और कोई वख्त भी आपकी खिदमत का मिलेगा। मर्ज की हालत अब बहुत बढ़ चुकी थी, उसको डाक्टर साहब जानते थे इसलिए जोश मोहब्बत में मुँह से निकल गया । आप खामोश हो गये।

उद्धत द्वारा "श्री प्रभुवर सन्देश" पृष्ठ नं0 70–71

श्रीमान प्रभुदयाल जी जो कि श्रीमान लाला जी महाराज के शिष्य थे तथा श्रीमान चाचा जी साहब के बहुत अजीज थे। दोनों बुजुर्गान आप पर बड़े मेहरबान थे। यहां पर उनकी डायरी द्वारा लिखा हुआ यह दृष्टांत लिखकर आप सबको यह दर्शाने का साहस कर रहा हूँ। कि कितना विश्वास था उनको पूज्य बाबू जी पर कि अगर उन्हें खबर दी गई है तो वह जरूर आयेंगे और कितना ख्याल था उन्हें अपने प्रियजनों का कि इतनी तकलीफ में भी आप पूज्य ताऊ जी की दुकान के नुकसान का सोच रहे थे

के उनकी वजह से उनका नुकसान हो रहा है। और यही सोच कर उन्हें जाने के लिए कह रहे थे। इसी का नाम निःस्वार्थ प्रेम है। वह प्रेम जो दुनिया में कहीं ढूढ़ने पर भी नहीं मिल पाता है, तरसते हैं जमाने में उसी दीदार के खातिर वहीं वह प्रेम था जिसको आप (पूज्य बाबू जी साहब) पूज्य लाला जी महाराज एवं चाचा जी साहब के परदा कर जाने के बाद भी 56 वर्ष तक दिल से लगाये बैठे थे । कोई एक लम्हा भी तो नहीं ऐसा गुजरा जिसमें उनकी याद न बसी हो जो उनकी याद से खाली रहा हो। प्रेम की उत्कृष्ट दशा और पराकाष्ठा इसी को कहते हैं ।

"प्रीतम छवि नयनन बसी, पर छवि कहां समाय,
रहिमन भरी सराय लखि, आप पथिक फिर जाय ।

' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' '

बस इन आंखों में खिंचा रहा है नक्शा राम का
दिल में उल्फत राम की, सर पे सौदा राम का ।
रात दिन जपता हूं माला, मैं उन्ही के नाम की
राम से उल्फत है मुझको, मैं हूं प्यारा राम का ।
उस रूखे तांबा की है तस्वीर दिल में जलवागर
है मेरी आंखों में बस, प्यार, प्यारा राम का ।

प्रेम में कोई नियम नहीं उसमें कोई कानून नहीं, वह तो स्वयं ही नियम है स्वयं ही कानून ।

"हू कैन गिव ए ला टू लव
ए ग्रेटर ला इस लव इनटू इटसेल्फ" ।

Who can give a law to love
A greater law is love into itself

जिस धर्मशाला में कयाम था उसका पानी अच्छा नहीं था। जहाँ तक मुझे याद है पानी खारा था या हो सकता हो कोई और खराबी रही हो । बहरहाल श्रीमान भाई साहब डा. श्रीकृष्ण लाल जी और मैं करीब चार फर्लांग की दूरी पर से एक नवाबी वक्त का कुंआ था उसमें से पानी भर कर रोज सुबह जनाब के नहाने के लिए सर पर रख कर लाते थे। कई रोज यही प्रोग्राम रहा एक रोज अचानक आपने कहा कि अब कानपुर चल कर इलाज करायेंगे । फौरन ही तैयारी हो गयी आपको पिछली

सीट पर लिटा दिया गया। उस रोज कुछ दर्द थी, तकलीफ ज्यादा थी। मैंने गाड़ी 40–50 की रफ्तार से चलाना शुरू किया और आपने गाना शुरू कर दिया। मुश्किल से डेढ़ घण्टा लगा होगा कानपुर पहुँच गये। कहने लगे बड़ी जल्दी आ गये। मैंने पूछा झटके तो नहीं लगे आपको हिलने से तकलीफ हुई होगी। फरमाया कत्तई तकलीफ नहीं हुयी। इस वक्त तबियत बिल्कुल ठीक है । करीब 15 रोज हो चुके थे कुछ तो छुट्टी का और कुछ सेठ की मां का ख्याल इससे भी ज्यादा भाई साहब के बहनोई सख्त बीमार थे उनको भी देखना था। उधर उनको छोड़ने की तबियत नहीं चाहती थी। पहले श्रीमान भाई साहब ने इजाजत मांगी पूछा 'तुम भी जा रहे हो' मैंने कहा ख्याल ऐसा है । आपने कहा 'अच्छा जाओ' यह आपके आखरी अलफाज थे हम लोगों से और यह आखिरी दर्शन। गालिबन यह 7 या 8 अगस्त 1931 थी। अब भी वह अलफाज़ व आखिरी दर्शन मेरे ख्याल में पूरी तरह समाये हुए हैं । वहां से मैं रवाना होकर बुलन्दशहर पहुँचा। 14 अगस्त को करीब 2 बजे दिन को श्रीमान बृजमोहन लाल जी भाई साहब का तार मिला कि जनाब की हालत अब काबिले इतमिनान नहीं है बल्कि सख्त खराब है। इतना वक्त नहीं था कि बुलन्दशहर से रवाना हो सके । कार से खुर्जा जंक्शन पहुँचे, वहां बमुश्किल गाड़ी पकड़ सके और रात को करीब 2 बजे फतेहगढ़ मकान पर पहुंचे । आपका शरीर करीब 1 बजे रात को ही पूरा हो चुका था । उस वक्त आपकी उम्र 59 साल बतलायी जाती थी । ठीक याद नहीं है। जो लोग वहां मौजूद थे उम्र में बुजुर्ग थे वह यह जिक्र कर रहे थे कि जनाब के गुरूदेव भी इसी उम्र में वापिस निजधाम को हुए थे । आखिरी दिनों आप करीब–करीब रोज ही यह शेर दोहराया करते थे :–

'दमे वापसी बरसरे रहा है,
अज़ीज़ों, अब अल्लाह ही अल्लाह हैं ।

' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' '   ' ' '

'वादे वस्ल चूं सोज नजदीक,
आतिशे शौक तेज तरगदद'

ज्यों–ज्यों प्रीतम से मिलने के दिन नजदीक आ रहे हैं, त्यों–त्यों विरह की आग और भी तेज होती जा रही है। वक्त आखिरी है मेरे प्यारों मेरे हमराह अब अल्ला ही अल्लाह ही है ।

''जमाले , हम नशीं दर मर असर कर्द

बगरना मन हुमां खाकम न हस्तम'' ।

अर्थ :– मेरे प्रीतम के जमाल ने मुझमें यह असर कर दिया वरना मैं तो वही खाक का पुतला जो पहले था वह अब भी हूँ ।

करीब–करीब सब सत्संगी भाई साहबान जो आपके खास–खास अज़ीज थे सुबह 8 बजे तक फतेहगढ़ पहुँच गये थे और शरीक कारज हुये वापिस होने पर एक अजीब सा सन्नाटा चारों तरफ छा गया ।

पूज्य लाला जी साहब की यही तालीम थी, यही उनकी प्रथम और अन्तिम भेंट थी, यही उनकी शिक्षा थी और यही उनका प्रेम था । यही आध्यात्मिक जीवन का उपवन था जो उन्होंने लगाया था । माली चला गया परन्तु बगिया की देखभाल को अपने छोटे भाई जनाब चच्चा जी साहब को सुपुर्द कर दिया कि वह उनके उन सब दरख्तों को जो उन्होंने बड़े जतन और प्रेम से लगाए हैं जब तक वह पुख्तगी को न पहुँचे हर आंधी तूफान से बचायें और वह जनाब खुद गायबानां निगहबानी करते रहेंगे । गो आप शरीर से पर्दा कर गए थे पर आपकी मोहब्बत, मदद में कोई कभी नहीं हुयी और साये की तरह हर वक्त मदद को रहते हैं । यह पूज्य बाबू जी का व्यक्तिगत दावा था और इसको उन्होंने सभी से कहा । आपने सम्पूर्ण जीवन से उनकी कही हुई हर बात को याद रखा । पूज्य लाला जी से पूज्य बाबू जी का साथ करीब 15 –16 वर्ष का रहा लेकिन उनकी मौजूदगी को वह 56 वर्ष तक महसूस करते रहे बल्कि एक क्षण भी नहीं भूले । उनकी याद दिनों–दिन बढ़ती ही रही । कभी आप ख्याल में भी नहीं समझते थे कि आप नहीं है। हम लोगों को यह जब कोई फतेहगढ़ जाता था तो यही कहते थे । जनाब पूज्य लाला जी साहब को हमारा सलाम पेश कर देना । कितना मजबूत ख्याल था कितनी मजबूत निस्बत और कितना ऊँचा प्रेम कैसी सच्ची प्रीत थी यह सोचने और समझने का विषय है ।

पूज्य लाला जी महाराज के पूज्य बाबू जी के नाम दो पत्र (वैसे तो कई हैं) परन्तु जिनका जिक्र पूज्य बाबू जी ने अपनी डायरी में खास किया है उन्हें यहां लिखकर मैं उस अनोखे प्रेम को पारिभाषित करके पाठकों के सामने रखने का प्रयास कर रहा हूँ । वैसे तो उसे पूर्ण रूप से प्रगट करना असम्भव है क्योंकि वह तो अनुभूति है दिल की अमूल्य

वस्तु है तो मन वाणी से परे है। फिर भी उसकी गरमी, हरारत तो महसूस होगी ही । पूज्य बाबू जी को यह पत्र सन् 1929 में आपने (पूज्य लाला जी) अपने दस्ते–मुबारिक से लिखा था उसको आपने बतौर यादगार जिन्दगी भर अपने पास रखा और अपनी डायरी में आपने लिखा है कि मैंने यह खत अपनी जान से भी ज्यादा जान कर रखा है । उस असल प्रेम से भरे खत की नकल लिख रहा हूं ।

पत्र नं – 1

सन् 1929
फतेहगढ़

अज़ीजम, दुआ

तुम्हारा खत मुझको मिला । यह फिकरा कि मैं सख्त दिल हूँ मुझको बहुत अच्छा मालूम हुआ और एक खास किस्म का लुत्फ हासिल हुआ । यह एक प्यार से भरा हुआ जुमला था। बिना प्यार के ऐसी बात कोई किसी से नहीं कह सकता । दिल से दिल की राह है मैं तुमको प्यार करता हूँ और तुम मुझको प्यार करते हों जरा सी बात में खफा हो गए । तुम यही समझ लो कि यह मेरी एक अदा थी। मैं तुम्हारी तरफ से मुँह फेर लेता हूँ जब तुम मेरी तरफ देखते हो और जब तुमको देखता हूँ तो, तुम भाग जाते हो। अपने दिल से पूछ लेना कि अगर मैं तुमसे बेपरवाही करूँ तो क्या तुम मुझको छोड़ दोगे । मैं श्रीकृष्ण से कभी बात भी नहीं करता हूं और न कभी उसकी तरफ मुंतबज्जो ही होता हूँ । न उनको खत ही लिखता हूँ । तुमसे (श्याम लाल जी) कभी बात नही करता, मैं जानता हूँ कि यह लोग ऐसे हैं जो मुझको कभी नहीं छोड़ेंगे । उनसे कुदरतन ऐसा ही बर्ताव होता है। जगमोहन (आपके पुत्र) को मैंने कसदन आज तक तालीम ही नहीं दी है। तुम्हारा काम है कि जबरदस्ती मेरे पास जो कुछ है, छीन लो । मगर चन्द लोग ऐसे हैं कि मुझे हर बख्त खौफ रहता है कि वे कहीं भाग न जायें, मैं खुद चाहता हूँ कि वे मेरे तरफ आयें, और वे नहीं चाहते इसलिए ख्वामखाह उनकी दिलजोई रखना होता है । अगर जरा सी बेपरवाही उनमें दिखलाई जावे, वे भाग जायेंगे और तुमको धक्का देकर भी निकाला जाये तो न जाओगे ।

मैं आजकल एक अजीब कशमकश में हूँ लड़की की रूखसत 13 अप्रैल को होगी अजीज बृज मोहन लाल की शादी 11 मई को होगी । अब यह नहीं मालूम कि ये काम क्यों कर और किस तरह होंगे । सब परमात्मा के हाथ है । जो मेरी याद करते रहते हो उनको सलाम व दुआ, और जो भूल गए हों या भूल रहे हों, उनको भी सलाम व दुआ ।

"मैं हूँ तुम्हारी आँखों का देखने वाला"

राम चन्द्र फतेहगढ़

पत्र नं – 2

अज़ फतेहगढ़

30–8–29

अजीज मन दुआ

पहला खत और आज दूसरा खत मिला। हालात मालूम हुए । परमात्मा की बड़ी कृपा और दया हुई जो फज़ल हो गया और बुजुर्गों का तुफैल (साया) था जिसने इमदाद (मदद) की और डूब जाने से बचा लिया। यह बड़ा सख्त हमला था, जिससे बचना मुहाल था। अगर निस्बत सिलसिला न होता तो गालिबन बुजुर्गों की रूहानियत से इमदाद न मिलती । यह उन्हीं की इमदाद है। खैर शुक्र है। इसकी वजह कि क्यों ऐसा हुआ और क्यों गिरावट हो गयी वक्त मुलाकात बयान करूँगा । जगमोहन की दुल्हन आज कल एटा में हैं और कुछ हालत अच्छी है मगर काबिले इतमीनान नहीं है। अजीज गंगादीन एक रोज आए थे । मेरे दर्द की शिकायत हो जाती है बराज इलाज बाथ करता हूँ और सब खैरियत है। अज़ीज राम नारायण गौड़ और बच्चों को दुआ ।

राम चन्द्र

यह पत्र उनके सच्चे प्रेम की धरोहर हैं आने वाली पीढ़ी के लिए एक आदर्श हैं एक गर्व करने की वस्तु है कि हमारे बुजुर्ग कैसे थे, क्या थे। हम ऐसे बुजुर्ग की संतान है । उनके प्रेम का एक उदाहरण है। बुजुर्ग किसी का उधार नहीं रखते यह पूज्य बाबू जी कई बार सब अपने प्रेमियों से कहा करते थे हम अपने बुजुर्गों से जरा सा प्रेम करते हैं वो हमें अपनी गोद में लेने को तैयार बैठे हैं । उनकी शान यह है कि वो हमारा ही नहीं व्यक्ति विशेष का नहीं परन्तु उसके पूरे परिवार, उसके सभी चाहने वालों का भला कर देते हैं जैसे श्री राम ने अपने से प्रेम करने वाले केवट के सारे परिवार यहां तक कि पीढ़ियों तक को तार दिया उसी प्रकार बुजुर्ग भी सबको जो भी उस प्रेमी से सम्बन्धित रहते हैं उनको अपना सहज प्रेम देकर कल्याण कर देते हैं। पूज्य बाबू जी कहते थे :–

चन्दा तुझे चाहूं ,
तेरे चाहने वालों को मैं चाहूं
तुझे क्यों न चाहूं
तू मेरे प्यारे का प्यारा है ।

इस संदर्भ में घटना इस प्रकार है – शायद सन् 31 की मार्च थी पूज्य लाला जी साहब गोकि बीमार थे पर परमार्थ का काम जोरों पर था। उसी दौरान आप श्री फत्तेलाल जी मुख्तार साहब को दीक्षा दे रहे थे । बाबू बृज मोहन लाल जी साहब मस्ती भरे बाहर बैठे थे उसी समय (हमारे फूफा) श्री सेवती प्रसाद मुख्तार जो आपको (बाबू जी) छोटे बहनोई थे पूज्य बाबू जी को ढूँढते हुए वहाँ आ गए आपके बारे में दरियाफ्त किया उस पर बाबू बृज मोहन लाल साहब जी ने कहा– 'मियां शमां गुल होने वाली है बताशे लेकर अन्दर घुस जाओ'। श्री सेवती प्रसाद जी ने यह समझा कि शायद बताशे लेकर जाने की रीति होगी। इसलिए बताशे लेकर अन्दर जनाब पूज्य लाला जी साब के पास गये। पूज्य लाला जी साहब भी उनको नहीं जानते थे इसलिए उन्होंने कहा कि मैंने तो आपको नहीं बुलाया, आप कैसे आ गए इस पर बाबू बृज मोहन साहब जी अर्ज किया 'आप श्याम लाल के बहनोई हैं' इतना सुनते ही आपने कहा ''आइये–आइये'' जब आप श्याम लाल के बहनोई हैं तो हमारे भी अजीज हुए । जब आप आ ही गए है और श्यामलाल के बहनोई हैं तो यहां से खाली हाथ कैसे जायेंगे पर आपका हिस्सा मेरे पास नहीं है यह विद्या आपकी उन्हीं के हाथो फले फूलेगी'' और उसी समय बैत कर दिया क्या शान मोहब्बत की थी आप उनके बहनोई हैं तो हमारे भी अजीज हुए । कितना अटूट और गहरा सम्बन्ध है कितने मोहब्बत से भरे हुए अलफाज़ हैं । श्री सेवती प्रसाद मुख्तार जी (ईश्वर उनकी आत्मा को शांति बख्शे) इन सब से बिल्कुल अनभिज्ञ थे और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में एक सक्रिय कार्यकर्ता ही नहीं बहुत अग्रणी नेता भी थे। परमार्थ की ओर उनका कोई रिझान भी उस समय नहीं था। परन्तु सन् 1947 में जब महात्मा गांधी की हत्या हुई उनके नाम वांरट कट गया और पुलिस उनके पीछे पड़ गयी उस वख्त पूज्य बाबू जी ने उन्हें अपने पास बुला लिया क्योंकि पूज्य बाबू जी सरकारी अफसर थे और वहां के पुलिस के उनकी तलाश में आने की सम्भावना कम थी इस जगह की सुरक्षित जान कर यहां आ गए और 3 महीने पूज्य बाबू जी के घर में बुलन्दशहर में रहे। उस दौरान सिकन्दराबाद आना जाना खूब रहा और पूज्य ताऊ जी (डा. श्रीकृष्ण लाल जी) एवं आपका (पूज्य बाबू जी) का साया रहा और उनकी वृत्ति एकदम बदल गयी । पूज्य ताऊ जी ने कहा कि आप एक को चुन लें या तो परमात्मा की राह पर चलें तो संघ आदि का चक्कर छोड़ दें । आपने उसी दिन से संघ छोड़

दिया और सारा जीवन जब तक जीवित रहे बुजुर्गों की याद में ही जीवन व्यतीत किया । आप फतेहगढ़ भंडारे पर अन्तिम समय तक जाते रहे उनसे सत्संग परिवार के प्रायः सभी लोग परिचित हैं । पूज्य बाबू जी को इतना दृढ़ विश्वास था कि पूज्य लाला जी की कही हुयी भविष्यवाणी जो उन्होंने सहज में कह दिया वह शत प्रतिशत सत्य होकर ही रहती थी। श्री पूज्य सेवती प्रसाद जी मुख्तार साहब अक्सर कहते थे :–

"तेरा ही जलवा है दो जहां में,
अयां भी देखा निहां भी देखा ।
एक जात तेरी फकत है बाकी,
तुझी में सारा जहां भी देखा ।

देखिये सन् 1931 में एक नजर डाली और उस नजर ने असर 16 वर्ष बाद दिखाया । यह उनकी मेहरबानी का फल था ।

(पूज्य लाला जी) आपकी समाधि फतेहगढ़ में कानुपर जाने वाली सड़क नवदिया में बनी है। अपने अंतिम समय में कुछ पहले आपने इच्छा जाहिर की कि कुछ दिनों नवदिया हमारा ख्याल रहने का है अगर एक नौकर और दूध का इंतजाम हो जावे तो खुली हवा में ज्यादा आराम रहेगा । पूज्य बाबू जी ने कहा जन्दी इंतजाम हो जायेगा। इस तरह आप शरीर छोड़ने से पहले कुछ समय वहीं रहे। उनका चलाया हुआ इस्टर की छुट्टी का भंडारा आज तक बहुत शान और मोहब्बत से मनाया जाता है। हजारों की संख्या में श्रद्धालु जन समूह उमड़ कर अपने दादा गुरू को अपने श्रद्धा सुमन भेंट करते हैं और उनके उज्जवल फैज़ से फैजयाब होते हैं । फैज की बारिश से आप वहां आने वाले सबको एक रूहानियत ताकत प्रदान करते हैं । वैसे तो भंडारे सदा होते रहे थे और लोग भी जाते रहे थे पर लोगों का उत्सव में भाग लेना कुछ संकुचित था। सन् 1973 में जब जनाब पूज्य लाला जी साहब की मुबारिक जन्म शताब्दी के अवसर पर पूज्य बाबू जी ने उनके पौत्र श्री स्व. अखिलेश जी (परमात्मा उनकी आत्मा को शांति दे) जो उस समय सख्त बीमार थे हिलना डुलना मुश्किल था, करीब–करीब मृत्यु शैया पर थे उनसे कहा बेटे हिम्मत करो तुम तो उनकी औलाद हो और जिन लोगों ने देखा है वह जानते हैं कि उस अवसर पर कितनी भीड़ हुयी थी और क्या फिज़ा थी। इंतजाम ऐसा था कि कुछ नहीं के बराबर था पर उनकी दया ऐसी बरस रही थी कि किसी को तन बदन का होश नहीं था। उस साल

मुबारिक से हर साल लोगों की तादाद बढ़ती जा रही है। लोग प्रतीक्षा करते हैं फतेहगढ़ भंडारे की। पूज्य बाबू जी ने अपने को पोशीदा करके अपने बुजुर्गों के नाम को रोशन करने में अपना पूरा प्रयास लगा दिया। पहले रायपुर तथा कुबेरपुर की समाधियों पर बहुत कम लोग जाते थे और इसी कारण वह कुछ उपेक्षित थी परंतु आपने सबको हिदायत दी कि बड़े अदब से इन पवित्र हस्तियों की मजार पर जायें और सलाम पेश करें जिसका फल यह हुआ कि सभी लोग अपने बुजुर्गों के चरणों में सिर झुकाने लगे और उन्होंने भी सबको आशीर्वाद दिया। आज वहां सभी जगहों से भारी तादाद में लोग आने लगे हैं। रास्ता अच्छा हो गया है बस वहां तक जाने लगी और समाधियों पर श्रद्धा के फूल चढ़ने लगे यह दोनों ही (समाधियां) मजार पहले कच्ची और बड़ी जर्जर अवस्था में थी और लोग जानते भी नहीं थे। 1973 में हम लोगों को कुबेर पुर की मजार बहुत ढूंढ़नी पड़ी परन्तु लोगों के जाने से यह अब पक्की और बहुत अच्छी हो गयी है। खासकर रायपुर में आपके नवासे जनाब मन्जूर अहमद साहब आने वालों का बहुत मोहब्बत से स्वागत और अतिथ्य करते हैं। गांव के लोग भी अब वहां काफी श्रद्धा रखते हैं और उत्साह सा हो गया है। सन् 1983 में जब पूज्य बाबू जी सख्त बीमार थे उस समय आपकी शारीरिक स्थिति बिल्कुल ऐसी नहीं थी कि आप इतना लम्बा सफर तय कर सकें और खुद आपने यह निर्णय ले लिया कि वह खुद नहीं जायेंगे और पूज्य भाई साहब को निर्देश दिये कि ''तुम अपनी मां और सब सत्संगी भाइयों को लेकर फतेहगढ़ चले जाना मेरा जाना सम्भव नहीं है'' परन्तु भंडारे के सात या आठ दिन पहले आपने ख्वाब देखा कि मौलवी अहमद अली खां साहब आपके पास तशरीफ लाये हैं बहुत खुश है और कह रहे है कि श्याम लाल तुमको जिस्मानी तकलीफ तो बहुत है लेकिन इस साल तुम फतेहगढ़ और हमारी मजार पर जरूर जरूर आना हम तुम्हें अपनी पीठ पर लाद कर ले चलेंगे ''ख्वाब का असर यह हुआ कि आपने पक्का इरादा कर लिया कि आप फतेहगढ़ जायेंगे एक तो वृद्धावस्था दूसरे बीमारी से इतने कमजोर कि बार–बार बेहोश हो जाते थे बेहद कमजोरी । पहले तो पूज्य भाई साहब ने आपको उनकी बीमारी का एहसास दिलाया पर फिर भी जब वह नहीं माने तो मुझको लिखा कि तुम पूज्य बाबू जी को जाने की मनाही लिख दो क्योंकि उनकी अवस्था ऐसी नहीं है कि वह इतना स्ट्रेन सफर का बर्दाश्त कर सकेंगे । सेवक ने पूज्य बाबू जी को एक प्रार्थना भरा पत्र लिखा कि आपको बहुत तकलीफ होगी और इतने लम्बे सफर में खतरा भी है आपने जवाब में लिखा कि

बुजुर्गान सिलसिले का हुक्म है इसलिए इस हालत में फतेहगढ़, रायपुर व कुबेरपुर (कायमगंज) जरूर जाऊंगा आपने पूज्य सेठ भाई सहाब को बुलाकर कहा ''मेरा अपना इरादा फतेहगढ़ जाने का बिल्कुल पक्का है। ज्यादा से ज्यादा क्या होगा ? यह हो सकता है रास्ते में मेरी मृत्यु हो जाये उसकी क्या चिन्ता तुम्हारी मां साथ है तुम चार भाई (सेठ भाई साहब सेवक बब्बू व भैया) तथा तमाम सत्संगी प्रेमी भाई साथ है अगर ऐसा हो जाये तो मेरा अन्तिम संस्कार फतेहगढ़ गंगा के किनारे कर देना'' ख्याल की इतनी मजबूती और बुजुर्गों के ख्वाब में दिये हुए आदेश का इतना अक्षरशः पालन करना सच्ची मोहब्बत, दृढ़ विश्वास और अटूट श्रद्धा का परिचायक है। ऐसी ही स्थिति में बस की आगे वाली सीट पर गद्दा बिछा कर आपको लिटा दिया गया और उसी अचेत अवस्था में आप वहां रायपुर पहुंचे तो एक इक्का खुद बखुद आ गया (उस बख्त पर आमतौर पर सवारी नहीं मिलती थी और पैदल ही जाना पड़ता था) वह आपको मजार तक ले गया जो कि टीले पर थी और इस तरह आप पूर्ण रूप से फैजयाब होकर कुबेरपुर की समाधि पर गये। वहां लखनऊ के एक सत्संगी भाई ठाकुर छेदी सिंह ने आपको पीठ पर लाद कर मजार जो कि सड़क से करीब 500 गज दूरी पर है वहां बिना किसी तकलीफ के पहुंचा दिया (जैसा कि आपने ख्वाब में देखा था) ऐसा था आपका पुख्ता इरादा, अपने बुजुर्गों पर पक्का एतकाद, यकीन सच्ची मोहब्बत। बुजुर्गान सिलसिले के आपसे बहुत खुश थे और उन पर बड़ी रहम और करम की बारिश कर रहे थे । वहां से बाबूजी उसी स्थिति में फतेहगढ़ जनाब पूज्य लाला जी की समाधि पर आये और कोठरी में लेटे ही रहे । चलने वाले दिन बामुश्किल उन्हें उठाकर समाधि पर ले जाया गया और उन्होंने पूज्य लाला जी महाराज के चरणों में अपना सर झुकाया। पूज्य बाबूजी बताते थे कि पूज्य लाला जी साहब तथा सिलसिले के बुजुर्गों ने न मालूम किस बात से खुश होकर इतनी दया की है। पूज्य लाला जी साहब ने आपके द्वारा पेश किए गए सभी लोगों को बड़े प्रेम से कबूल किया और कहा कि अगर तुम चाहते हो तो औरों को भी मैं कबूल कर लूंगा । आप इस बात को जब कहते तो उनकी आंखे प्रेम के जल से भर जाती थीं और वह कह उठते थे, ''आपके ऐसी दया के हम काबिल तो न थे'' फतेहगढ़ भंडारा जो कि 1921 में आरम्भ हुआ था उसमें आप आप सदा ही जाते रहे थे। सन् 1921 से 1984 तक बराबर आप उसमें शिरकत करते रहे। जीवन के अन्तिम तीन वर्ष आप अपनी वृद्धावस्था होने के कारण नहीं जा सके परन्तु सभी प्रेमी भाइयों को सख्त हिदायत थी कि फतेहगढ़ जो कि हमारी जड़ है वहां जरूर जाकर उस महान हस्ती को सलाम करें और यह भी हिदायत दी थी कि तुम्हारा काम वहां सिर्फ पूज्य लाला जी

महाराज को नतमस्तक होकर उनके चरणों में सिर झुकाना तथा जितना वहां के काम में मदद दे सको, मदद देना है वहां के और किसी भी बात में दखल न दें, हमारा काम यह नहीं है कि हम वहां की कमियों को देखें हमें तो बस वहां पर जाकर उनकी दया का पात्र बनना है।

सिलसिले के बुजुर्गों के प्रति जितना आदर पूज्य बाबूजी ने व्यक्त किया उतना पहले किसी ने नहीं किया था पहले अपने गुरू तक तो लोग सीमित रहते थे परन्तु आपने सिलसिले के सभी बुजुर्गों को अपनी श्रद्धा पेश की। आप गाजियाबाद से आते समय भोगांव के जनाब मौलवी अब्दुल गनी साहब को सलाम पेश करते थे। आज हम लोग भी जब बस द्वारा फतेहगढ़ जाते हैं तो पूज्य चाचा जी साहब को कानपुर में उनकी समाधि पर श्रद्धापूर्वक नतमस्तक होकर प्रणाम करते हुए जाते हैं और उनका आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता है। आप जब लखनऊ आयें तो सदैव ही पूज्य बाबू ब्रज मोहन लाल जी साहब के समाधि पर तो तिलकनगर ऐशबाग में स्थिति है गये और उन्हें सलाम किया। लखनऊ स्थिति जनाब मुरादुल्लाहशाह साहब जो नक्शबंदिया खानदान से ताल्लुक रखते हैं कि मजार पर 1981 में गये और एक तरह से एकदम उपेक्षित मजार पर फिर रौनक आ गयी और उसी वर्ष से वहां उर्स होने लगा और हम लोगों को वह बड़ी मोहब्बत से बुलाते हैं और हम लोग हर साल वहां उर्स में शामिल होकर फैजायाब होते हैं । बुजुर्ग तो खद मुख्तार है मालिक हैं और अपनी दया देने को तैयार हैं । मगर वह भी तलाशते हैं टूटने वाला दिल जो उनकी तरफ खास अदब और मोहब्बत से रागिब हो। वह खुद सब इंतजाम कर लेने में सक्षम हैं। इस तरह आप (पूज्य बाबूजी) ने अपने सभी बुजुर्गों को जो अपने सिलसिले में थे या उससे ताल्लुक रखते थे बड़ा आदर दिया इसी का पुण्य फल है कि आपको अपने बुजुर्गों ने तो अपनी दया से मालामाल करके साये की तरह निगहबानी की ही दूसरे बुजुर्गों ने जैसे कबीर साहब, पल्टू साहब, कलियार साहब, रामकृष्ण परमहंस जी, महात्मा गांधी तथा अन्य ने उनको अपनी दया का पात्र बनाया और फैज की बारिश की । स्वयं पूज्य बाबू जी ने लिखा है कि जब आप गाजीपुर से पूज्य ब्रज मोहन लाल जी साहब के साथ बनारस में महात्मा कबीर साहब की समाधि पर गये तो ऐसी फैज् की बारिस हुयी की उनसे बर्दाश्त नहीं हो पा रहा था लग रहा था कि पैर के तलबे से जान खींची जा रही है। आपने लिखा है कि तबियत ऐसी चाहती थी कि कोई पैर के तलवे सहला दे। रूह जिस्म से निकल कर बाहर खड़ी थी। ऐसा ही आपने एक बार बताया कि "मैं दिल्ली गया था दफ्तर के काम से इससे पहले गांधी जी पर मेरा ऐसा ख्याल न था गो कि पूज्य लाला जी साहब ने एक बार बातों में जिक्र किया था कि "गांधी जी का लेक्चर हो

रहा था पंडाल ठसाठस भरा था मैंने देखा कि वर्षों बाद इतनी महान आत्मा आई है । सारा पांडाल प्रकाश से भरा था । मैंने सोचा चलूं राजघाट महात्मा गांधी की समाधि पर हो लूं। वहां पहुंच कर जैसे ही मैंने दुआ के लिए हाथ जोड़े क्या देखता हूं कि गांधी जी समाधि से निकल पड़े और उनको एक तरफ से पूज्य लाला जी तथा एक तरफ पूज्य चाचा जी सहारा दिए हुए हैं। उस दिन से मेरी उन पर बड़ी श्रद्धा हो गयी है हो सकता है उनका किसी जन्म से इस सिलसिले से ताल्लुक हो। बहरहाल जो कुछ भी हालत बहुत अच्छी थी और वह एक संत जरूर थे ।

आप (पूज्य बाबूजी) पूज्य लाला जी साहब से संबंधित कई वाक्यातों का वर्णन बार–बार करते थे। पुराने सभी भाई इन सब घटनाओं को कई कई बार उनके मुखारबिन्दु से सुन चुके हैं जिसे वह बड़ी प्रेम से सुनाया करते थे। अपने गुरूदेव का और बुजुर्गों का जिकर उनका नित्य साधन था। मैं यहां उनके द्वारा बताई हुयी कुछ घटनाओं का जिनका सम्बन्ध पूज्य लाला जी साहब तथा उनके गुरू महाराज जनाब फजल अहमद साहब तथा कायमगंज वाले मौलवी साहब अहमद साहब तथा कायमगंज वाले मौलवी साहब अहमद अली खां से रहा था लिखकर नये प्रेमियों को उनकी उच्चकोटिता को बताना चाहूंगा। ''एक मर्तबा भाई साहब प्रभु दयाल जी साहब को दिल का दौरा पड़ा मैं भी वहां फतेहगढ़ आया हुआ था, कहने लगे जल्दी चलो उनका सब इन्तजाम करना है जब कानुपर पहुंचे तो उनको बहुत तकलीफ थी। मुझसे कहने लगे तुम यहीं ठहरो और उनको वाच करते रहो। मैं दूसरे डाक्टर को बुलाकर लाता हूँ वह पुराने आदमी हैं और इनके मिजाज से वाकिफ हैं । बड़ी गहरी मुद्रा में वहीं उनके पास तक बैठे रहे जब तक उनकी हालत ठीक नहीं हुयी और उनका तमाम इंतजाम किया।

आपकी एक खास मिसाल जो हम लोगों के साथ गुजरी वह यह कि एक लड़का जिसका नाम मुन्ना था जिसको आप हर दिल अज़ीज कहा करते थे। सख्त बीमार हुआ । हम तीन–चार डाक्टर उस दिन वहां आये हुये थे और फरूखाबाद उसको देखने गये। दवा आदि का इंतजाम देखकर मैंने पूछा तुम्हारी तो इतनी आमदनी नहीं है दवा का खर्चा बगैरह किस तरह चल रहा है उसने कहा– 'भाई साहब लाला जी महाराज कल ही इलाज के लिए 50/– (जो उस समय एक बड़ी रकम थी) दे गये हैं। घर जाने पर पूज्य जिज्जी (माता जी) से पता चला कि बड़ी पैसों की दिक्कत चल रही थी पर उसी में से अपने पास से उसे रूपये दिए थे कितना ऊंचा आदर्श था अपने घर में पैसे नहीं पर दूसरे की जरूरत को पूरा करना यह एक बड़ी बात है। आप कहा करते थे कि अगर तुम्हारे पास रूपया है और दोस्त को जरूरत है और तुमको उस रूपये की जरूरत सुबह को है तो ईश्वर पर भरोसा करके उसको दे दो ईश्वर तुमको सबेरे बहुत देगा। दोस्त का काम उस वक्त

निकाल दो, केवल कहते नहीं थे जो कहते थे वह करके दिखा देते थे। यह उनका इख़्लाक़ था।

आये दिन कुछ न कुछ ऐसी अद्‌भुत बातें होती कि हर आदमी मायूस हो जाता। बहनों में से एक बहन (पूज्य लाला जी कि किसी बेटी) की शादी थी। हम ही सब लोग मुन्तजिम थे (इंतजाम करने वाले) ऐसा लगा कि खाने का कुछ सामान कम पड़ जाएगा। उनसे इत्तला की गयी। फरमाया सब खाने पर चादर डाल दो और ईश्वर का नाम लेकर खिलाते जाओ परेशान न हो। पूरी बारात सब घर के लोग यहां तक कि काम करने वाले नौकर चाकरों ने भी खाना खा लिया लेकिन सामान फिर भी बाकी बच गया। यह आपकी अपने बुजुर्गों पर दृढ़ विश्वास का प्रतीक है कि हमारी लाज तो उनके हाथ है जो बहुत मजबूत है क्या हुआ कि हम कमजोर है। आप (पूज्य लाला जी साहब) फरमाया करते थे कि चौबीस घन्टे में एक या दो मरतबे अपने सब प्रेमियों के पास घूम लेता हूं जैसे कि उनके गुरूदेव साये की तरह अपने प्रेमियों की देखभाल करते थे। एक मरतबा मैं पहले फतेहगढ़ जनाब के पास गया था। मैंने देखा कि सुबह से ही आप काफी परेशान थे। कुछ देर बाद सहूलियत से अभ्यास में बैठ गये। मैं परेशानी का सबब पूछना चाहता था पर हिम्मत नहीं हुयी क्योंकि सुबह के बख्त अगर जनाब से कोई बात करना चाहता था तो टाल जाते थे। दूसरे दिन सुबह जब श्रीमान भाई साहब डा. श्रीकृष्ण लाल जी साहब आये और उन्हें बीमार देखकर मैंने हाल पूछा तो अपने बताया सुबह सिकन्दराबाद से चले थे और षिकोहाबाद आते–आते हैजा से सख्त बीमार हो गये और रेल के कर्मचारियों ने उतार कर अस्पताल में भरती करा दिया और तब कही आप आ पाए सुबह उनके आने पर आपके पहुंचते ही पूछा तबियत अब कैसी है कहा कि अब बेहतर हूं। मैंने श्रीमान भाई साहब से कहा कि जनाब पूज्य लाला जी साहब कल सुबह बहुत परेशान थे। वजह आपकी बीमारी ही थी। इस तरह हम लोगों को यह विश्वास हो गया कि आप हर दम साये की तरह साथ रहते हैं। आपको (पूज्य लाला जी साहब) शराब और जुआ से सख्त नफरत थी। एक बार दीवाली के दिनों में आप किसी भाई के यहां गये। वहां पहुंचने पर देखा अपने सत्संगी भाई भी अपने रिश्तेदारों की वजह से उसमें शामिल थे। सुबह जब मैं (पूज्य बाबू जी) उनके पास पहुंचा तो देखा मुंह ढापें लेटे हैं मैं घबरा गया कि कही तबियत तो नासाज नहीं हो गई। माता जी से पूछने पर पता चला कि रात से ही सुस्त–सुस्त और रंजीदा है कुछ खाया पिया नहीं है कह रहे थे कि हमारी सोहबत का कोई अच्छा असर उन साहब पर नहीं पड़ा और उनकी यह सोसायटी छूटी नहीं। जब उन साहब को पता चला तो वे काफी दुखी हुए और फिर कभी शराब और जुआ नहीं छुआ।

एक मर्तबा हम सब लोग उनके पास बैठे थे। आप काफी खुश थे तभी एक चपरासी डिप्टी कलेक्टर का जिसके अधीन आप खुद काम कर रहे थे गाने के लिए बुलाने आया। आपने कहा कि ''मैं गवैया थोड़े ही हूं, मैं तो इस ख्याल से दो बार चला गया था कि आप परमार्थी ख्याल के मालूम हो रहे थे, वरना मैं कोई रोज महफिल की हाजरी थोड़े ही देता हूँ'' ।

पूज्य बाबू जी बताते थे कि आपका गाना बहुत ही आकर्षक था। आवाज बड़ी सुरीली और मनमोहक थी जो आपका गाना एक बार सुन लेता था उसे फिर किसी का गाना अच्छा नहीं लगता था। आपके गाने की एक बार इतनी शोहरत हो गयी थी कि किसी थियेटर कम्पनी ने उन्हें 200/– माहवार देने का इसरार किया परन्तु आपने इन्कार कर दिया और कहा कि मेरा गाना रूहानी है –

आज उन संत की बदौलत जहां तक सेवक का अन्दाजा है 5–6 लाख आदमी आपके मिशन में हैं चाहे वह आपके किसी भी शिष्य से सम्बन्ध रखते हों। आप एक बहुत महान हस्ती थे। सन् 1973 में जब आपकी जन्म शताब्दी मनाई गई उस समय ऐसा लग रहा था जैसे जन समूह उमड़ रहा हो। पूज्य बाबूजी ने उस अवसर पर जो प्रवचन किया था वह क्या था, कि वह कैसे रहते थे किस प्रकार का प्रेम करते थे उनके जीवन की छोटी–छोटी घटनायें बताई थी जयपुर के पूज्य हर नारायण सक्सेना चाचा जी ने उसको एक छोटी सी पुस्तक के रूप में संकलित कर दिया है जो हिन्दी में भी है और इंगलिश में भी है जिसका नाम है ''**संक्षिप्त जीवनी**'' पूज्य लाला जी महाराज फतेहगढ़ शताब्दी का भाषण क्योंकि प्रकाशित हो चुका है यहां नहीं लिख रहा हूं ।

महात्मा रघुवर दयाल जी
उर्फ
पूज्य चच्चाजी महाराज

जन्म– 7 अक्तूबर 1875
फर्रूखाबाद

निर्वाण– 7 जून 1947
कानपुर

"खुदी को कर बुलन्द इतना कि, हर तकदीर से पहले
खुदा खुद बन्दे से पूछे, बता तेरी रजा क्या है ।"

पूज्य बृजमोहन लालजी महाराज

जन्म– 14 अप्रैल 1898 निर्वाण–14 जनवरी1955
स्थान– फतेहगढ़ स्थान– बम्बई

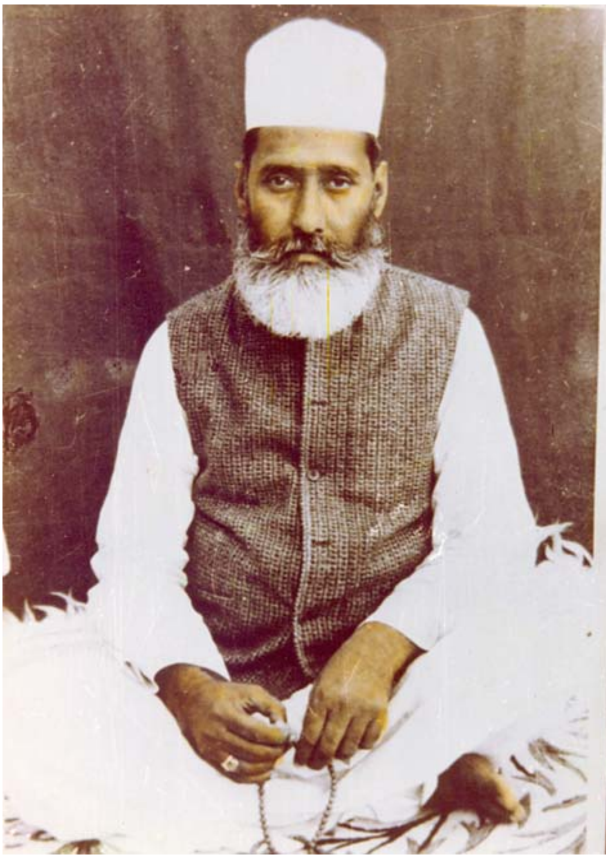

जाँ अपनी मिटा चाहे, दिल प्यार किया चाहे
हर एक सुहागिन है, किस किस को पिया चाहे
प्रियतम की पुजारिन हूँ, उस दर की भिखारिन हूँ
जब ऐसी सुहागिन हूँ, क्यों कर न पिया चाहे

पूज्य बाबू जी के जीवन में परम सन्त महात्मा रघुवर दयाल जी उर्फ श्रीमान चच्चा जी महाराज का प्रभाव तथा समावेश ।

पूज्य बाबू जी जब 1914 में पूज्य लाला जी महाराज से प्रथम बार मिले थे उसी के कुछ दिन बाद आपने इन महापुरूष के दर्शन किए जब वे अपने बड़े भाई से मिलने के लिए फतेहगढ़ आए थे। पूज्य चाचा जी महाराज पूज्य लाला जी के लाडले लघु भ्राता थे। आपका पूरा जीवन उनको समर्पित था। वो दीन बनाने, संवारने वाले तथा दुनिया लुटाने वाले महापुरूष थे। उनका व्यक्तित्व चुम्बकीय और बहुत ही विनोद प्रिय था, पूज्य बाबू जी तो सदा कहते थे कि वो ऐसी आज्ञा की भट्टी थे जिसकी हरारत से कोई इन्सान खाली नहीं रहता था जो उनके पास से निकल जाता था वह उनका हो के रह जाता। एक मुजस्सिम हस्ती थे जो परमार्थ लुटा रहे थे । आओ, आओ कहकर आवाहन कर रहे थे कि, आओ अपनी सारी समस्याओं सारे झंझट मुझे दे जाओ और ले जाओ ईश्वर का प्रेम उनकी मोहब्बत जो कि छलक–छलक जाती थी ।

"देता है सदा घर घर यह इश्क का मतवाला
दिल वालों जरा सुन लो आवाज फकीराना ।

पूज्य बाबू जी ने अपनी डायरी में इस प्रकार लिखा है कि वैसे तो इन महान हस्तियों के बारे में लिख पाना बहुत मुश्किल है क्योंकि यह तो जिसने उनकी सोहबत उठाई है वही जान सकता है जो उनकी सोहबत एक बार उठा लेता था उसको आसानी से कभी भूल नहीं पाया। बाबू जी के शब्दों में :–

फतेहगढ़ में सन् 1915 से लेकर 1919 तक सत्संग बहुत जोर पकड़ गया इधर पूज्य लाला जी महाराज का प्रेम उधर हजरत किबला चाचा जी साहब की बख्शीशें और रहमत लोगों पर अजीब असर कर रही थी। लोगों को जैसे दुनिया का होश न रहा हो एक अजीब जोशो खरोश था रात रात भर महफिलें गर्म रहती थी वो भी एक जमाना था । चिलमें भरी जाती हैं किस्से कहानियां चलती और आप उसी दौरान अपने कुब्बत से लोगों में ईश्वर का प्रेम भर देते थे सत्संग में एक अजीब कशिश थी।

वह जमाना आपका वह था जब प्रभु के प्रेम में और विरह की आग में आप जलते थे और होश नहीं रहता था। आप उस समय अलीगढ़ जो फतेहगढ़ में तहसील थी उसमें वसी का नवीसी का काम करते थे और जब तबियत में उबाल आता और हजरत किबला लाला जी को देखने की तबियत चाहती तो आ जाते थे । रातो सोहबत का असर रहता। अजीब राम रघुवर की जोड़ी थी दोनों प्रेम की मूर्ति थे। प्रेम का दरिया बह रहा था। और बक्शीश का दरबार हर वक्त खुला हुआ था।

सन् 1919 के बाद भी आपका यही सिलसिला चलता रहा था। जब पूज्य बाबू जी हेल्थ आफीसरी की ट्रेनिंग करने लखनऊ आए तो पूज्य लाला जी से मिलने का सिलसिला बहुत बढ़ गया जैसा कि उन्होंने लिखा है कि "चूंकि कानपुर नजदीक था। मैं हर शनिवार की शाम को लखनऊ से रवाना होकर कानपुर पहुँच जाता था और हजरत किबला चाचा जी महाराज बड़ी शफक्कत से पेश आते थे और यह सिलसिला बराबर चलता रहा। क्योंकि फतेहगढ़ पहुँचने मे टाईम बहुत लगता था इस वजह से मैं शनिवार को कानपुर ही चला जाता था। उधर सन् 1925 से 1928 तक जब तक गाजीपुर रहा एक मर्तबा जरूर जाता था और कानपुर होता हुआ फतेहगढ़ एक मर्तबा एक माह में पहुंचता था हर तरह का जोखिम उठाकर चाहे पैसा हो या न हो ।

हर तरह से दुनियाबी और रूहानी शफाक्कत आपने दी। गरज वह जमाना सत्संग और दुनियाबी ताल्लुक बढ़ाने के लिए बेहतर था और एक अच्छा जमाना गुजरा । जनाब हजरत किबला चाचा जी साहब, पूज्य चाची जी साहब तथा तीनों ही भाई काफी मेहरबान और मोहब्बत करते थे। इत्तफाकन एक रोज मिसराईन जो कानपुर में खाना पकाती थी । पूज्य चाचा जी साहब से कहने लगी, यह लड़का आपकी बहुत खिदमत हर तरह से करता है। आपने फरमाया ये हमारे ही तो बच्चे हैं जैसे बिरजू, मुंशी ज्योति वैसे ये है, गरज उनकी मेहरबानियां ही मेहरबानियां रही। अब तक जिस्म न होने पर वही हालत शफक्कत की है । हेल्थ आफीसरी का इम्तहान पास कर बाबू जी वापस गाजीपुर चले गए थे और इसी बार वह पहली बार अपने पास परिवार को लाए थे । 28 अप्रैल, 1927 को अचानक थोड़ी सी बीमारी में उनके सबसे प्रथम सन्तान की मृत्यु हो गई जिसका बेहद सदमा आपके दिल पर पड़ा था और आप काफी परेशान हो उठे थे बाबू जी ने आपको कानपुर तार दिया। बाबू जी ने इस घटना के बारे में लिखा है कि, "मैं इस सदमें को बरदाश्त न कर सका और मैंने जनाब

को कानपुर तार दे दिया आप फौरन ही रवाना हो गए और उस वक्त कुछ ऐसा बख्त आपका था कि बहुत तंगदस्ती से गुजरती थी चुनान्चे आप सिर्फ टिकट लेकर ही सवार हो गए। जिस्म के कपड़े भी बड़ी खस्ता हालत में थे । जिस समय आप पहुँचे थे बहुत सख्त बीमार थे। दस्त हो रहे थे और सारे कपड़े खराब थे । उनकी हालत देखकर मैं अपने गम को भूल गया। कई दिन कयाम किया । मैंने बड़ी अजीजी (दीनता) से कहा आपने बड़ी तकलीफ की ऐसे हालत में तशरीफ लाए आप कुछ देर खामोश रहे फिर जवाब दिया तुम्हारा दुख मेरी तकलीफ से ज्यादा था और फिर मैं तुम्हें दुखी कैसे देख सकता था कई रोज में तबियत जनाब की ठीक हुई और गम खत्म करने के ख्याल से बक्सर बगैर ले गए। कैसा अद्भुत प्रेम था। आपने तन बदन का होश नहीं ऐसी बीमारी की। हालत में भी आपने प्रेमी का दुख (.......तड़प उठती है शमा) के निवारण के लिए चल दिये। यह क्या नंगे पैर धाए को चित्रांश नहीं करती है। पूज्य बाबूजी कहा करते थे कि आपके चार पांच दिन के रूकने में उनकी हालत काफी सावधान हो गई और ऐसा लगा कि उनके दिल से गम काफी कम हो गया तब आप वापस गए यह सब उनका विलक्षण प्रेम था, बेलौस मोहब्बत जो कि देखने को नहीं मिलती है। जिनको मिल गया वह वास्तव में धन्य है ।

तड़प उठती है शमां
जलता था परवाना कोई
यह उनका प्रेम ही था
जिसका दीवाना था हर कोई ।

यह तो एक दुनियाबी तकलीफ का वाक्या था बाबू जी बताते थे गालिबन सन् 1929 में जब आप अपने साले श्री बद्री प्रसाद की शादी में जगत (जिला बदायूं) गए हुए थे। और उसी बारात में जब आपकी चोरी हो गई थी उसी समय एक ऐसी हालत हो गयी थी कि सब पूजापाठ बेकार है। ख्यालात में जबरदस्त बदइख्लाखी आ गई थी और दुनिया भी पूरे रूप से हमलावर हो गयी थी । लाख चाहने पर भी ख्यालात पीछा नहीं छोड़ते थे। उसी बीच आपका तबादला गाजीपुर से बुलन्दशहर हो गया था। पर ख्यालात वो ही रहे । बल्कि बदख्याली के साथ–साथ ख्याल और भी गन्दे हो गए और हालत दिन पर दिन बिगड़ती ही रही ।

घबरा कर पूज्य बाबू जी ने सब बातें पूज्य लाला जी साहब को लिख दी थीं। कुछ ही दिन बाद श्रीमान् चाचा जी महाराज बुलन्दशहर तशरीफ लाये और करीब–करीब पन्द्रह दिन वहाँ रूके। पूज्य बाबू जी बताते थे कि उनकी तबज्जो का यह असर हुआ कि हालत एकदम सुधर गई और फिर वही श्रद्धा और विश्वास लौट आया और साथ ही साथ तबियत पूजा की तरफ बहुत तेजी से झुक गयी। गुजरे वक्त पर दुख होने लगा। श्रीमान् चाचा जी महाराज ने चलते वक्त बाबू जी से कहा 'यह छठी जगह है जो मैं इसी काम के लिए भेजा गया हूं।' इससे पहले भी पांच जगहों पर जा चुका हूं। इस मुकाम पर आकर अक्सर अभ्यार्थियों की यह हालत हुई है और अभ्यासियों को इस मुकाम पर पहुंचने पर बड़ी एहतियात लाजिम है और गुरू की शरण बड़ी श्रद्धा और विश्वास के साथ लेने पर ही यह मुकाम तय होता बरना अभ्यासी यही गिर जाते हैं। कुछ ही दिन बाद उसी साल फतेहगढ़ के कोई प्रसाद की शादी थी और उसमें पूज्य चाचा जी महाराज देहली तशरीफ लाए थे। आपने बाबू बृज मोहन लाल जी साहब को खत लिखा कि तुम बुलन्दशहर से होते हुए आना और श्यामलाल जी को भी साथ लेते आना बरना वह टाल जायेंगे उस शादी में जब पूज्य बाबू जी पूज्य चाचा जी साहब से मिले तो आपने फरमाया देखो बेटे यह माया का बहुत जबरदस्त हमला था और अगर पीराने उज्जाम से बाकायदा निस्बत न होती तो मामला बिगड़ जाता और परेशानी में पड़ जाते। आपने पूज्य बाबूजी को उसी दौरान में अपने बुलन्दशहर आने से पहले एक मोहब्बत से भरा खत लिखा। जिसमें लिखा कि तुमको इजाजत तालीम बिरासत है और शायद दूसरे लोगों से भी कह दिया क्योंकि पंडित राम नरायन जी गौड़ और मास्टर पुत्तू लाल करीब डेढ़ मील से रोजना आने लगे चाहे आंधी हो या बारिश आठ नौ बजे रात तक वापस चले जाते थे इस तरह रोज सत्संग होने लगा और आपस में प्रेम बहुत बढ़ गया। उस पत्र की कुछ लाइनें जो इस वाक्यात से सम्बन्ध रखती है वह नीचे लिखा जा रहा है पूज्य चाचाजी साहब का खत पूज्य बाबू जी के नाम

जनाबे मन

तस्लीम

यहां पर सब खैरियत है और खैर अनबाब दरगाहे इलाही हमेशा नेकोख्वाहा खत देखकर खुशी हुई कि आप साफ दिल हैं। धक्कों का

वरदास्त करना मर्दों का काम है। खुदा तुम्हारी आववत बेहतर करे और दुनिया व दीन दोनों अनहबाब को मुबारिक होवे। अनहवाब को शर्तिया सत्संग कराने की इजाजत ईश्वर की तरफ से है ईश्वर कृपा से अच्छा ही फायदा होगा। बेहतर होवेगा कि अनहवाब बिला किसी किस्म की तकलीफ बरदाश्त किए हुए आ सके तो अच्छा है।

और ज्यादा क्या तहरीर करूं बाकी सब तरह से यहां पर बामदद खुदाबन्द करीम खैरियत है।

राकिम बन्दा
रघुवर दयाल
गुलाम खादिम

दीन और दुनिया दोनों में इतनी मदद, इतनी उदारता से खोज खबर करने वाला ऐसा कौन होगा इस संसार में। बाबू जी बताते थे कि बावक्त बैत जबजनाब लाला जी साहब ने सजरा शरीफ खुद लिखकर दिया था और इर्शाद फरमाया था कि इसको रोज पढ़ लिया करो और जब तरीका दरूर शरीफ पढ़ने का फरमाया तो उन्होंने कहा कि हजरत चाचा जी महाराज ने यह उनको पिछले साल ही बताया था तो बहुत खुश हुए सुना और कुछ उर्दू लब्जों में गलती हुई थी उसको खुद उन्होंने अपने मुबारक हाथों से लिखकर दिया था। कहने का अर्थ है कि पूज्यनीय जनाब चाचा जी महाराज पूज्य बाबू जी से बहुत दिली मोहब्बत करते थे और पूज्य बाबू जी भी अपने पूरे जीवन में उनकी मोहब्बत अपने दिल से लगाए रहे। कभी ऐसा नहीं हुआ कि आप इधर आए हो और पूज्य चाचा जी की समाधि पर अपनी श्रद्धांजलि चढ़ाने न गए हो ऐसा कभी नहीं हुआ। पूज्य बाबू जी बताते थे कि जिन्दगी में कभी ऐसा नहीं हुआ कि जब आप उनके समाधि पर गए हों और खाली हाथ आये हों। हमेशा उनकी रहमत बरसती रही थी। एक बार वे समाधि पर अपने एक पुत्र के साथ गए वो पहला अवसर था जब वह रागिब नहीं हुए। यह बात कोई 1969 या 1970 की थी लगभग उसी समय की थी। पूज्य बाबू जी को बहुत दुख हुआ कि ऐसा कौन सा गुनाह हो गया जिनसे वे उनकी दया से महरूम रह गये। उसी दौरान सन् 1972 में स्व0 पूज्य गंगादीन चाचा जी के लड़के दिनेश की शादी 5 जून को ही थी और उसी दिन मुझे सेवक के बड़े साले अरूण की शादी भी वहीं कानपुर में

आर्य नगर के श्री रघुवीर प्रसाद जी के यहाँ थी हम लोग इन्ही दोनों शादी में शरीक होने के लिए कानपुर पहुँच गए। पूज्य बाबू जी ने मुझ सेवक को अलग बुला कर कहा कि "बेटे" यह सब दुनियादारी तो हो गयी तुम कार लाए हो, मैंने कहा हाँ कार लाया हूँ आपने कहा कि किसी को भी पता न चले तुम एकदम सुबह आ जाना और मैं और तुम पूज्य चाचाजी की समाधि पर चलेंगे क्योंकि मैं उन्हें सलाम पेश करना चाहता हूँ और यह भी बताया कि न मालूम क्यों दो वर्ष पहले यह पहली बार था कि मैं समाधि पर गया और वह बिलकुल मुखातिब नहीं हुए ऐसा कभी नहीं हुआ। शायद इसी लिए वो किसी को साथ नहीं ले जाना चाह रहे थे। पूरी एइतियात बरतने पर भी चलते समय स्व. श्री गंगा दीन (चाचा जी) श्री नन्द जी सिंह एवं श्री राम नारायन जी, अजय और कोई एक दो अन्य साहब साथ हो लिए। आपकी समाधि पर फैज की यह हालत थी कि फैज बरस रहा था आंख खोलने को जी नही चाह रहा था कोई और लोग पहले से बैठे थे वह भी उस फैज की बारिश में नहा गये। वही शफक्कत का आलम था। क्योंकि पूज्य बाबू जी पहले वाली घटना से काफी भयभीत थे परन्तु उनका फैज देखकर बड़ी खुशी का अनुभव करने लगे और कहने लगे कि आना सार्थक हो गया। मैने भी अनुभव किया और अन्य लोगों को भी उस फैज का बहुत असर रहा। पूज्य बाबू जी बताते थे कि उनको यह ख्याल हुआ कि ऐसी कौन सी बात थी, उस वक्त जो आपने ऐसी बेरूखी अख्तियार कर ली थी। जब उन्होनें अपने पुत्र से पूछा कि उस वक्त उनको क्या ख्याल हुआ जब वे पूज्य चाचा जी साहब की समाधि पर गये थे। उन्होनें बताया कि उनके दिमाग में उस वक्त यह ख्याल आया कि समाधि की पूजा करना कब्र परस्ती है पूज्य बाबूजी हमेशा कहते थे कि हमारे बुजुर्ग बड़े ही संवेदनशील है जरा से ख्याल का यह असर हुआ। वह कहते थे कि समाधि पर बहुत अदब श्रद्धा और विश्वास के साथ जाना चाहिए। बहुत अजीजी और नम्रता से पेश आना चाहिए वरना बड़ी बेअदवी है। बाजवक्त बुजुर्ग माफ कर देते हैं।

बाजवक्त इसकी सजा भी मिलती है। सन् 1972 में ही जब पूज्य बाबू जी आपकी समाधि पर गये थे उसी वक्त देखा कि पूज्य चाचा जी महाराज ने बाबू दयानन्द श्रीवास्तव श्री सतीश बाबू (के.बी.सक्सेना) डा. विश्वम्भर नाथ (आपके बड़े दामाद) तीनों ही व्यक्ति जो कि पूज्य ताऊ जी से दीक्षित थे तीनों ही लोगों के गले में फूल की माला डाल दी और

बड़े खुश हुए आश्चर्य की बात यह है कि यह तीनों ही लोग वहां पर मौजूद नहीं थे। पूज्य बाबू जी ने इन तीनों साहबान को इजाजत तालीम दी थी और कहते थे कि जब बुजुर्ग इतने खुश हैं तो हम क्यों तंग दिली अख्तियार करें इन तीनों की इजाजतें लिखकर मुझ सेवक को दी थी और मैंने उन लोगों को दे दिया था उन्होने आशीर्वाद दिया तो मेरा भी आशीर्वाद है। यह बुजुगों की उदारचितत्ता है कि जो वहां है भी नहीं उनके ख्याल से ही उनको फायदा हो रहा है। पूज्य बाबू जी सदैव जब भी मौका मिलता उनके जीवन काल में तो उनके पास जाते ही थे। बाद में भी समाधि पर जाते रहे पूज्य लाला जी महाराज साहब के विसाल के बाद पूज्य चाचा जी महाराज ही वक्त के बुजुर्ग रह गए थे और कानपुर में तशरीफ रखते थे और लाला जी के जीवन काल से ही सबसे बड़ी मोहब्बत करते थे, सबसे प्रेम करते थे, ज्यादातर लोग सब उधर को ही रागिब हो गए और उन जनाब ने भी बड़ी मोहब्बत से तालीम का काम पूरा किया।

1981 में पूज्य बाबू जी लखनऊ मुझ सेवक के घर रीवर बैंक कालोनी में तशरीफ लाए और कई दिनों तक रूके। पटना, बनारस, गाजियाबाद तथा गोरखपुर आदि जगह से प्रेमी जन कुछ उनके साथ और कुछ उनसे मिलने की गरज से आए थे। सत्संग खूब अच्छा रहा। आठ– दस दिन पलक मारते गुजर गए पूज्य बाबू जी सब लोगों के साथ जिसमें बाहर से आए हुए तथा लखनऊ के समस्त प्रेमी भी थे। पूज्य चाचा जी महाराज की समाधि पर बस द्वारा गए और अपनी श्रद्धांजली अर्पण की। बड़ी बरक्कत थी गो कि बाबू जी उस समय भीषण खांसी से पीड़ित थे पर बहुत खुश थे हलुआ का प्रसाद चढ़ाया गया समाधि पर बहुत देर ध्यान में सभी लोग बैठे रहे और बड़ी ही फैज की बारिश थी। समाधि परिसर के बाहर दोपहर का भोजन प्रेमी जनों ने किया और फिर वहां से सभी को लेकर पूज्य चाचा जी साहब के मकान आर्यनगर गए और उनके प्रेमी शिष्य गांधी जी से मिले जिन्होनें बड़ा सत्कार किया और मोहब्बत से मिले। सन् 1986 में पुनः जब आप बहुत कमजोर थे और चलने फिरने में भी कठिनाई अनुभव कर रहे थे उस समय आप दया करके मुझ अंकिचन सेवक के इसी मकान बी–1/26 सेक्टर के. अलीगंज के गृहप्रवेश में आए थे। यह उनका प्रेम मेरी जानिब था जो कि ऐसी अवस्था में भी तशरीफ लाए परन्तु दूसरे ही दिन सुबह आपने कहा बेटा अब सब दुनियादारी हो गई अब पूज्य चाचा जी साहब

को सलाम कर आए। उस अवसर पर भी बहुत सारे प्रेमी बनारस, गोरखपुर, लखीमपुर, हापुड़, और कई जगहों से आए हुए थे। जयपुर के श्री ओ.पी.कौशिक जी जो उस वक्त वहीं लखनऊ तैनात थे और नई मारूति कार खरीदी थी। वह आपको अपनी कार से कानपुर ले गये थे। पूज्य बाबू जी बताते थे कि उस बक्त उनकी मोहब्बत का यह आलम था कि अन्दर गेट से घुसते ही हालत एकदम बदल गयी थी और समाधि पर क्या देखते हैं कि वहां खुद श्रीमान चच्चा जी साहब और दोनों भाई श्रीमान मुंशी भाई साहब और श्रीमान ज्योति बाबू जी स्वागत को समाधि से निकल आए है। यह पूज्य बाबू जी का उनके जीवन का अन्तिम प्रणाम था।

आज भी जब भी हम लोग आपके समाधि पर जाते हैं आपके फैज की वही दशा रहती है। तबियत आंख खोलने को नहीं चाहती। वहां से हटने को नहीं चाहती। जो कोई भी वहां पूज्य बाबू जी का वसीला लेकर जाता है यहां तक की जो कोई भी पूज्य बाबू जी से सम्बन्धित वहां अब भी जाता है, उनकी रहमत का अनुभव करता है उनसे सम्बन्ध रखने वाले हर व्यक्ति को आप अपने प्रेम की बारिश से सराबोर कर देते है। जिसका पुराने तथा नये सभी भाइयों को अनुभव हो जाता है। हम लोग तो उनकी दया के सदा ऋणी हैं। यही दुआ करते है कि वह हम सब पर ऐसे मेहरबान रहें और हम लोगों से कोई ऐसा काम न हो जाए कि जिससे आप को दुख पहुंचे। हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो यही आपका महामन्त्र था। कौन ऐसा सन्त होगा जिसने बिना किसी परिश्रम के अपने प्रेमियों को दीन से मालामाल कर दिया। और दुनिया बक्श दी आप कहते थे "मियां **दुनिया आखीरत की खेती है जैसा बोओगे वैसा काटोगे"।**

उनके मोहब्बत और उनके हिम्मत, बेगरजाना सेवा की बहुत सी बातें पूज्य बाबू जी साहब के मुखारबिन्दु से सुनी है। प्रेमियों के पास उनके जानिबे हजारों याद रखने योग्य है। एक घटना का जिक्र पूज्य बाबू जी ने किया है। उन्ही के शब्दों में लिख रहा हूँ:–

"मुझको 1 जुलाई सन् 1932 में फिर ट्रैवलिंग डिस्पेन्सरी में जाने का डर आ गया। मैने 4 माह की रूखसत ले ली क्योंकि वहां तनख्वाह आधी थी उसी दौरान मैं, हजरत किबला चाचा जी महाराज शिरकत शादी पं. कांशी नाथ जी के आए थे। शादी पानीपत में थी। चूनान्चे पूज्य

चाचा जी महाराज, भाईसाहब डा श्रीकृष्ण लाल जी और मेरे छोटे भाई गंगादीन पं. काशी नाथ की बारात में अपनी मोटर कार से गए। 1 जुलाई को रवाना हुए और 3 जुलाई को वापस पानीपत से आ रहे थे और देहली से करीब 8 मील की दूरी पर थे। मोटर भाई साहब डा. श्रीकृष्ण लाल जी चला रहे थे। वे खूब चला लेते थे। रास्ता भी साफ मालूम होता था इत्तफाक की बात कि 8 मील की दूरी रह गयी थी। तभी बांई तरफ से एकाएक अनाज से लदे हुए कई गधे बड़ी नियाड़े से ऊपर को चढ़ कर सड़क पार कर रहे थे। तकरीबन सब गधे सड़क पार कर गए थे। तभी इत्तफाक से एक गधा मोटर की आवाज सुनकर घूमा, गंधे के मालिक ने उसको पीछे से मारना चाहा इतने में मोटर नजदीक पहुंच गयी भाई साहब ने एकाएक बचाना चाहा और बाई तरफ जिधर को बचाया उधर सड़क पर मरम्मत हो रही थी और बड़े–बड़े कंकड़ पड़े थे मोटर उन पर चढ़कर एकाएक उलट गयी और हम सब दब गये। मैने बड़ी हिम्मत की और मोटर का स्विच बन्द किया कि कहीं आग न जग जाए। फिर सामने से किसी कदर निकला और तीनों साहबान को आहिस्ता–आहिस्ता निकाला। बिरादरे अजीज गंगा दीन और भाई साहब को कोई चोट नहीं आई थी। हजरत किबला चाचा जी महाराज की हाथ को दोनों हड्डियां टूट गयी थी। मुझे होश नहीं था मैं औरों से पूछ रहा था कि इतना खून किसके निकल रहा है। मैने जब गौर से देखा तो करीब दो इंच का गहरा घाव मेरे ही पैर में था और खून मेरे ही पैर से जारी था, चूंकि मैं जल्दी में सामने से कूदा था और मोटर के टूटे हुए शीशे से पैर जख्मी हो गया। पूज्य चाचा जी महाराज जिनको काफी तकलीफ थी उनके टूटे हुए हाथ को लकड़ी से बांधा गया जिससे उन्हें कुछ आराम मिल सके। फिर अपने पैर की फिक्र की क्योकि खून रूक नहीं रहा था इसको देखकर जनाब चाचा जी महाराज और भाई साहब बहुत घबरा गए और कहने लगे कि इतना खून बहेगा तो मेरा बचना मुश्किल हो जाएगा। वो लोग बैलगाड़ी वालो से बात कर रहे थे कि इन्हे दिल्ली पहुंचा दो पर ख्याल किया कि बेलगाड़ी से 8 मील पहुंचते – पहुंचते तो इनकी जान ही निकल जावेगी उसी वक्त परमात्मा की मदद् पहुंची गाड़ी सीधी करने पर बिल्कुल वर्किंग आर्डर (चलने की हालत) में थे। मैने कहा कि मैं बाएं पैर से गाड़ी चलाकर ले चलुंगा लेकिन तभी जहां तक मुझे याद है फ्रेन्च कम्पनी का मैनेजर अपनी कार से लाहौर की तरफ से आ रहा था उसने हम लोगो को अपनी गाड़ी में बैठा लिया

उसी समय और दया हुई एक बस आ गई उसमें किसी डाक्टर का लड़का बैठा था उसने फौरन हमारी मोटर ले ली और हम लोग आसानी से फ्रेन्च कम्पनी के मैनेजर की गाड़ी, और हमारी कार और बस तीनों साथ–साथ देहली पहुंच गए उस भले मैनेजर ने पन्द्रह मिनट में देहली के इरबिन हास्पीटल में हम सब को पहुंचा दिया। परमात्मा की दया से वहां एक हम लोगों का क्लासफेलो डाक्टर सामने खड़ा था। उसने पूछा तुम कैसे मैने सब वाकया बयान किया वह फौरन ही इमरजेन्सी के डाक्टर को बुला लाया और उसने मेरे पैर में टांके लगा दिये जिससे खुन रूक गया मुतवातिर खून निकलने से मैं बहुत कमजोर हो गया बिरादर अजीज गंगा दीन को तो अस्पताल में मेरे खून को देख कर बुरी तरह गशी आ गयी घबराकर बेहोश हो गये हजरत किबला चाचा जी महाराज को क्लोरोफार्म सुंघा कर फ्रेक्चर ठीक किया गया और प्लास्टर हुआ। वह दिन भी जिन्दगी के दिनों में अजीब दिन गुजरा हम दोनों अस्पताल के जनरल वार्ड में पड़े थे (बुरी तरह) मुझको मारे शर्म के पेशाब भी नहीं हो रहा था आखिर को तय हुआ कि एक साहब जो अपने सत्संगी थे उनके यहां सुबह चार बजे उठ चले। चूनान्चे एक कार करके वहां पहुंचे एक रोज रहे और दूसरे रोज सिकन्दराबाद चले गये। होश में होते ही पूज्य चाचा जी साहब ने कहा कि फौरन तार देकर श्रीमान प्रभु दयाल पेशकार साहब को बुलाया जाये क्योकि कही ऐसा न हो कि मेरा वक्त आखिर आ जाये और में जनबा किबला लाला जी महाराज का हुक्म पूरा न कर सकूं। आप ने इन जनाब को तालीम मेरे ऊपर छोड़ी थी और कहा था कि इन्हें इजाजत दे दीजियेगा। अगर ऐसा हो गया तो मैं गुनाहगार रहूंगा। हुक्मउदूली में कैसे कर सकता हूं श्री प्रभू दयाल पेशकार जी को तार देकर बुलाया गया। आपने जब तक पूज्य लाला जी महाराज का हुक्म पूरा नहीं कर दिया तब तक उन्हें बस एक ही फ्रिक थी न अपने चोट की न अपनी जान की बस यही फिक्र थी कि कहीं ऐसा न हो कि जनाब लाला जी का हुक्म न पूरा कर सकूं। प्रसाद मंगाया गया और उन्हे इजाजत देकर फरमाया अब मौत हो जाये तो कोई गम नहीं श्री मान भाई साहब का हुक्म पूरा हो गया आपका ऐसा ऊँचा दास भाव था। जिन्दगी का कुछ सोच नहीं सोच है तो बस यही कि उनकी इच्छा पूर्ण हो।

उसी दौरान किसी प्रेमी भाई ने वहीं सिकन्दराबाद में यह कह दिया कि सभी लोग आपको देखने आयें पर पंडित हरबन्स लाल त्रिपाठी जी नहीं आये जहां तक मेरा ख्याल है शायद वह उस समय तंगदस्ती के कारण न आ सके थे ठीक ज्ञात नहीं है। हालांकि किसी शिकायत की गरज से उन भाई ने नहीं कहा था परन्तु फिर भी आपको अच्छा नहीं लगा कि उनके किसी प्रेमी पर कोई आरोप लगे उन्होंने फौरन जवाब दिया वह कहां गये थे कि नहीं आये अर्थात वह तो जब से ऐक्सीडेन्ट हुआ है मेरे पास ही हैं वह हर दम तो यही थे। कहकर प्रेमियों का मान रखते थे।

पूज्य बाबू जी तथा पूज्य चाचा जी साहब दिल्ली से सिकन्दराबाद चले आये पूज्य बाबू जी लिखते हैं कि क्यों कि मै तो पैर की वजह से पेशाब पखाना भी नहीं जा सकता था इसलिये अजीज गंगादीन को सेठ की मां को लेने के लिए भेजा। अभी अजीज गंगा दीन बदायूं के रास्ते में ही होंगे कि सेठ की मां का तार आया कि तुम फौरन चले आओ इधर मेरी हालत खुद बहुत खराब थी इधर सेठ की बीमारी का तार आया बहुत घबरा गया। हजरत किबला चाचा जी ने मुझे देखा और दो तीन मिनट को आंखे बन्द कर दी। उसके बाद आंखें खोलकर कहा बेटे घबराओ नही बच्चा तुम्हारा अच्छा है और वे लोग बखैरियत कल पहुंच जायेंगे। बहुत कुछ तसल्ली हो गयी। दूसरे दिन सुबह अजीज गंगादीन मय अपनी भावज के और सेठ के सिकन्दराबाद पहुंच गये। अजीज सेठ का इलाज हुआ और वह तीन चार रोज़ मे बिल्कुल ठीक हो गये। सिकंदराबाद में मेरी और पूज्य चाचा जी महाराज की हालत को मालूम होकर करीब सभी सत्संगी लोग एक के बाद एक आते गये। कानपुर से पूज्य चाची जी साहिबा और सब बिरादरान व वहां के सत्संगी साहबान, फतेहगढ़ से पूज्य माता जी भाई साहब जगमोहन नरायण जी वगैरह सभी पहुंच गये। तीन चार माह में ठीक हुआ। जनाब चाचा जी महाराज इस दौरान काफी मेहरबान रहे और उनकी मेहरबानियां क्या लिखा जा सकता है।

पूज्य बाबू जी कहा करते थे कि बच्चों जैसा प्यार वह हम से करते थे और हंसी हंसी में ईश्वर का प्रेम भर देते थे हालांकि उनकी स्वयं की रियाजत बहुत जबरदस्त थी घंटों घंटों रातो रातों ध्यान में मस्त

रहते थे। एक बार पूज्य बाबू जी के ख्याल में यह आया कि यह कैसे हो सकता है कि पूज्य चाचा जी साहब छः महीने से न सोये हों क्यों कि वह डाक्टर थे इसलिए ऐसा ख्याल कर रहे थे कि ऐसा सम्भव नहीं हो सकता क्योंकि अगर कोई छः महीने न सोये तो नर्वस ब्रेक डाऊन जरूर हो जायेगा उसी समय की घटना इस प्रकार है उसी दौरान हम लोग उनके पास पहुंचे आपने खुश होकर कहा आओ। शायद घर में कुछ खाने को नहीं था। हम लोंग ढ़ाई दिन तक बैठे ही रह गये न टट्‌टी और न पेशाब न भूख और न प्यास। और परम पूज्य लाला जी के तशरीफ लाने पर जब उनकी आंख खुली तो हम लोगों को कुछ थकावट का भी अनुभव नहीं था। परन्तु इस घटना को देखकर पूज्य लाला जी साहब ने आपसे कहा कि नन्हें यह चिड़िया मैने बड़े प्यार से दाना देकर पाली है कही ऐसा न हो तुम्हारी रियाजत देखकर सब भाग जाये। आपने उसी समय कहा 'श्रीमान जी गल्ती हो गयी'। और उसी दिन से अपनी तालीम का तरीका ही बिल्कुल बदल डाला। और जब मैं वापिस जाने लगा तो पूंछा तुमको इन दो दिनों में कोई थकावट या परेशानी तो नहीं मालूम हुई मैंने जवाब दिया (बिल्कुल नही) आपने फरमाया जब दो दिन हो सकता है वैसे छः महीने भी इस प्रकार हो सकता है, मेरा भ्रम दूर हो गया। उसी दौरान की एक और घटना जो पूज्य बाबू जी ने लिखी है यहां लिख रहा हूॅ जिससे पाठक उनकी मोहब्बत और विनोदप्रियता से परिचित हों।

''एक रोज मैं हजरत किबला चाचा जी महाराज की पीठ सहला रहा था रीढ़ की हड्‌डी के बराबर में आपके एक गुत्थी सी थी। मैने पूंछा कि यह गुत्थी कैसी है। फरमाया क्यों मियां तुम्हारे यह अभी नहीं है। अब तो तुम्हारे भी होना चाहिये हर चीज को बड़े प्रेम से समझाया। मेरा (पूज्य बाबू जी का) ख्याल है कि अभ्यासियों के कुछ मुकामात जाग्रत हो जाते हैं और वाज औकात एक गुत्थी सी उसी मुकाम पर ऊपर हो जाती है।''

ऐसा निराला ढंग ऐसी मस्ती अब कहां है न साज ही रहा न बजाने वाला अब तो सिर्फ आवाज ही आवाज है। वह हस्तियां छुप गयीं पर आवाज की बुलंदियां बाकी है वहीं आवाज याद दिलाती है कि हमें क्या करना है। उसी की नकल करना है।

“छिप गए वह साजे हस्ती छोड़कर,
अब तो बस आवाज ही आवाज है,
फिर गनीमत है कि उस आवाज में,
सुनने वालों के लिए बस प्यार का अन्दाज है।

पूज्य बाबू जी अक्सर भंडारे के दौरान और ऐसी भी हम लोगों से कहा करते थे कि पूज्य लाला जी महाराज और पूज्य चाचा जी महाराज पैदाइशी फकीर थे वे बड़ी ऊंची हस्ती थे। जिसने उनका वह सच्चा प्रेम प्राप्त कर लिया वह दुनिया में आसानी से नहीं फंस सकता था क्योंकि उनके हाथ बड़ी – मजबूत निस्बत वाले थे यह दोनों भाई परमार्थ के भण्डार थे परमात्मा के द्वारा खास तौर पर भेजे गए थे कि दीन दुखियों और राह से भटके हुए लोगों को राहे रास्ते पर लायें और ईश्वर का प्रेम सबको बांटे जिससे उनका जीवन सफल हो। गृहस्थी मे रहते हुए गृहस्थ सन्तों की वह परम्परा जो कि प्रायः लुप्त सी हो गई थी उसको पुनः स्थापित करने वाले ये दोनों हस्तियां महान सन्त थे। पूज्य बाबू जी ही नहीं वरन् उनके सब शिष्य जैसे डा. श्रीकृष्ण लाल जी साहब, डा. चतुर्भुज सहाय जी साहब, पूज्य बाबू बृज मोहन लाल जी साहब, मदन मोहन लाल जी साहब, श्री श्याम बिहारी लाल जी, पेशकार साहब महात्मा प्रभू दयाल जी साहब अन्य कई साहबान सभी यही कहते हैं या सबने यही लिखा है कि उन्हें तो जमाने में इन दोनों से ऊंचा कोई सन्त ही नहीं मिले जो केंवल परमार्थ ही नही समूचे व्यक्तित्व पर छा गये हैं। जो नित्य प्रति के जीवन में उतर गये हैं। जीवन की हर सुख व दुख में ऐसे साथी रहे जैसे माता पिता, बन्धु, सखा, सच्चा गुरू सब कुछ थे। परमार्थ और लौकिक जीवन को संवारने वाले यह दोनों अनूठे सन्त थे।

गुरू भाइयों का अद्भुत प्रेम और अनोखा आदर

गृहस्थ सन्तों की परम्परा में इन दोनों पूज्य लाला जी साहब एवं पूज्य चाचा जी साहब महान सन्तों ने सत्संग को एक परिवार का रूप दे दिया था। सबके दुख सुख में शिरकत करना, सबके घर पर शादी व्याह के अवसर पर आना जाना, यह सब एक रीति सी बना दी थी। एक शहर या एक जगह रहने वाले सत्संगी भाई आपस में मिलते जुलते रहे और परस्पर प्रेम करें यह उनकी सच्ची सीख थी। अगर कोई खत भी लिखता और दूसरे की खैरियत नहीं लिखता था तो उन्हें दुख होता था कि एक जगह रहते हुये आपस में प्रेम नहीं है कोई भी गुरू जी शब्द का प्रयोग नहीं करता था कोई लाला जी, चाचा जी, बाबा जी और आपस में भी उम्र के ख्याल से भाई साहब कहने का ही प्रचलन था। बच्चे भी ताऊ जी, चाचा जी, माता जी, भाभी जी, जिज्जा जी जैसा रिश्ते बनता था वैसा कहते थे। इसका अपना एक अलग महत्व है, रिश्ते का नाम देने से व्यवहार में एक प्रेम का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। बहन कहने से बहन की तरह स्नेह पनप उठता है। व्यवहार बन जाता है। कहने का अर्थ है कि दोनों सन्तों ने सच्चे प्रेम की शिक्षा दी जिससे उनके जीवन काल में लोगों में आपस में बहुत प्रेम था। वह प्रेम बहुत दिनों तक उसी प्रकार चलता रहा जब तक पूज्य चाचा जी महाराज के ज्येष्ठ पुत्र बाबू जी बृजमोहन लाल जी साहब रहे। उनके परदा कर जाने से कुछ रिक्तता अवश्य आ गई। या तो यह हो गया कि सब लोग अपनी अपनी जगह सीमित हो गये या फिर सभी लोग अपने तक ही केन्द्रित हो गये। उसके पहले उत्तर प्रदेश में फतेहगढ़, कानपुर, सिकन्दराबाद, मथुरा, एटा तथा जयपुर में भी भण्डारे के तौर पर सत्संग का कार्यक्रम रहता था और सभी लोग उदाहरणार्थ बाबू बृज मोहन लाल जी, मदन मोहन लाल जी, श्याम बिहारी लाल जी, तथा डा. चतुर्भुज सहाय जी आदि तथा इनसे सम्बन्धित सत्संगी जो कि खर्चा बरदाश्त कर सकते थे वह सिकन्दराबाद श्रीमान डा. श्रीकृष्ण लाल जी साहब के यहां तशरीफ लाते थे। और पूज्य ताऊ जी (डा. श्रीकृष्ण जी साहब) तथा पुज्य बाबू जी (डा. श्याम लाल जी साहब) भी इन भण्डारों में पूज्य सेठ भाई साहब और मैं सेवक भी कई जगह जैसे एटा, मथुरा, फतेहगढ़, टूण्डला, आदि जगहों पर जाया करते थे। परन्तु धीरे धीरे इन बुजुर्गों ने परदा कर लिया और फिर सब सेन्टर के लोगों का मिलना जुलना संकुचित हो गया। परन्तु सन् 1973

में पूज्य लाला जी के जन्म शताब्दी पर पुनः जोश खरोश के साथ सभी सेण्टर के लोगों ने इस पवित्र समाधि स्थल पर पुनः एक बार एकत्रित होकर उनके पावन चरणों में प्रेम के अश्रु बहाते हुए देखे गये। जो लोग बुजुर्ग थे उन्हें पूज्य लाला जी तथा पूज्य चाचाजी साहब का जमाना याद आ गया और लोग भाव विभोर हो उठे थे। फिर से फतेहगढ़ में सब लोगों का मिलन हुआ परमात्मा से प्रार्थना है कि वह हम लोगों के दिलों से संकुचन हटा दें और सच्चा प्रेम करना सिखा दें जहां न कोई द्वेष हो न कोई ईर्ष्या बस प्रेम हो और त्याग हो।

पूज्य बाबू जी तथा पूज्य बाबू बृजमोहन लाल जी साहब

पूज्य बाबू बृजमोहन लाला जी साहब पूज्य चाचा जी महाराज के ज्येष्ठ पुत्र थे और एक पैदायशी फकीर थे। कहा जाता है कि आप पूज्य फजल अहमद साहब की दया से पैदा हुये और अपने पूज्य लाला जी साहब को खासकर यह ताकीद की थी इनका वह खास ख्याल रखें और इसी कारण पूज्य लाला जी साहब ने उन्हें शुरू से अपने पास रखा उनकी खास तौर से परवरिश की। एक समय जब हुजूर महाराज जनाब फजल अहमद साहब श्री बृजमोहन लाल जी को गोद में लेकर खिला रहे थे तो उसी समय उन्होंने पूज्य लाला जी साहब को आदेश दिया 'देखो मियाँ इस बच्चे की परवरिश व तालीम वगैरह आपके खास जिम्मे है'। ईन्शा अल्लाह यह मेरा खलीफा होगा मालिक जब पूछेगा कि दुनियां से क्या लाये हो तुमको और इस अजीज को तोहफे के रूप में पेश करूंगा। कहा जाता है कि जनाब फजल अहमद साहब की दुआ से जन्मे इन महापुरूष को उनके गुरू भाई सन्त अब्दुल गनी साहब भी बहुत करते थे। और उन्होंने इन्हें पूज्य बाबू बृजमोहन लाल जी को सन् 1928 के अक्टूबर के महीने में दशहरे की छुट्टियों में उनके पास जब उर्स शरीफ हो रहा था उसी समय इजाजत खलीफा अव्वलीन अता फरमाई और उस सयम उनकी तवज्जों में आपकी हालत ऐसी हो गयी थी कि आप होश में नहीं थे आंखो की पुतलियां टंग गई थी और लगता था कि रूह जिसम छोड़ देगी। वहां मौजूद लोग एकदम घबरा गए पूज्य लाला जी साहब ने उन्हें गोद में लेकर सम्भाला तो हजरत किबला मौलाना अब्दुल गनी साहब फरमाने लगे ईंशाअल्लाह यह तो आलम मुनव्वर करेगा,

इसकी इजाजत वहबी (ईश्वरीय) है और आपको खलीफा अव्वलीन का खिताब अता फरमा कर अन्दर चले गये।

इसके बाद सन् 1928 में ही 31 जनवरी को पूज्य लाला जी साहब ने आपको पूर्ण अधिकार की इजाजत अता फरमाई और चार बातों का बहुत ख्याल रखने की हिदायत दी, स्वामी बनने की कभी कोशिश न करना, सदा सेवक बनकर काम करना, दावा किसी बात का कभी न करना कि इतने समय में यहॉ कुछ हासिल करा दिया जायेगा। परन्तु खिदमतगार बनकर जो सेवा बन पड़े अवश्य करते रहना। आपने फरमाया इस आसीपुर नआसी बन्दे को कबीरपन्थी, नानकपन्थी, कई मुसलमान सन्तो से भी जो निस्बते इजाजते, प्राप्त हुई है। वह भी अपने तजुरबात सहित तुमको दी जाती है।

पूज्य चच्चा जी साहब ने भी 14 जुलाई 1921 को आपको निहायत जजबे में आकर पूर्ण इजाजत अता फरमाया बड़े मियां जब बड़ों – बड़ों ने सब कुछ दिया है तो यह फकीर किसमें है, इसे भी जो कुछ अपने बुजुर्गो से मिला है या जो मालिक की दया व कृपा से तजुरबा वगैरह प्राप्त हुआ है वह सब तुम्हारे लिए है और तुम्हें सौपा जाता है। उम्मीद है कि ईश्वर की कृपा से तुम इन सारे भारों और जिम्मेदारियों को उठा सकोगे। हजरत पीर मुर्शिदान ने यह तौफीक तुमको पहले से ही अता कर रखी है। उसकी दया व कृपा से इस हकीर फकीर को सिलसिला भी आ अजीज की जात से कायम रहेगा यहां पर पूज्य बृज मोहन लाल जी साहब के सम्बन्ध में इतना लिख देने का आशय मेरा यह है कि बहुत से आने वाली नई पीढ़ी के पाठक जब महान हस्ती पूज्य बाबू जी के जीवन चरित्र पढ़ें तो उन बुजुर्गो से भी थोड़ा बहुत वाकिफ हो जाये जिन बुजुर्गो ने पूज्य बाबू जी साहब के जीवन में बहुत बड़ा महत्व रखा था और जिनको वह बहुत ही आदर और प्रेम करते थे जिनकी दया व सच्चे प्रेम की गर्मी को सदा अपने जीवन में अनुभव करते रहे थे अपने डायरी में आपने स्थान स्थान पर इन महापुरूषों के अनुपम दया का वर्णन किया है जिसको पढ़ कर उन लोगों के परस्पर प्रेम की एक अनोखी मिसाल उपलब्ध होती है।

सन् 1963 – 64 से पूज्य बाबू जी फरमाते थे कि आपको बहुत बड़ी दया उनके ऊपर बराबर रहती है और सदा ही उनका वह आभार प्रकट करते रहे। जब कभी आप लखनऊ तशरीफ लाते थे अवश्य ही आपकी समाधि जो तिलकनगर में स्थिति है वहां स्वयं भी जाते थे और सबको भी ले जाते और अपना श्रद्धा सुमन भेंट करते थे। आप पूज्य बाबू बृजमोहन लाल जी के अपने प्रति प्रेम और उनके व्यवहार की बहुत सराहना करते थे। पूज्य बाबू जी ने लिखा है कि आरम्भ से ही आप पूज्य बाबू बृज मोहन लाल जी का प्रेम और झुकाव उनकी तरफ था जिसके दृष्टान्त स्वरूप एक दो घटनाएं जो मुख्य हैं लिख रहा हूँ:–

यह गालिबन जून और जुलाई का माह था। पूजा की तरफ से बराबर तबियत हट रही थी और दुनिया का रूझान बहुत था। इसी अर्सा में हजरत किबला भाई साहब बाबू बृज मोहन लाल जी साहब दिलदारनगर तशरीफ लाए। उनका खत दो तीन दिन पहले ही पहुंच चुका था जो जहां मैं रहता था वहां से स्टेशन मुश्किल से 100 गज के फासले पर ही था लेकिन तबियत यही चाहती थी कि उनको स्टेशन पर रिसीव करने तक न जाऊँ बेकार पूजापाठ में वक्त खराब होगा। और परेशानी भी फिर मन को समझाया कि भाई तुम तो इनके यहां महीने में एक मर्तवा तो जरूर जाते हो और ज्यादा भी जाते हो और कितनी शफाक्कत से पेश आते हैं। आखिर दुनियाबी ताल्लुक भी तो कोई चीज है। फिर अपने घर मेहमान आए और इस बेरूखी से पेश आवें यह दुनियादारी का भी तकाजा नहीं है। गरज काफी जद्दोजहद ख्यालात में रहा और आखिर यह ख्याल दुनियादारी के लिहाज से मन में तय पाया कि स्टेशन जाना जरूरी है चूनान्चे ऐन गाड़ी के वक्त स्टेशन पर आपको लेने पहुंचा। उन्होने इसका एहसास भी किया कि यहां मुआवला दीगर गूं है लेकिन चूंकि उनको मुझसे दिली मोहब्बत थी और फरमाया कि चलो कबीर साहब की समाधि पर बनारस हो आवे। मैं तैयार हो गया क्योकि बहुत उत्साह नहीं था। वहां पहुचने पर जब समाधि के ऊपर ध्यान में बैठे, तो मुझको यह मालुम हुआ कि मेरी रूह निकल कर जिस्म छोड़ना जल्दी ही चाहती है। यह देखकर एक चीख बड़ी जोर से निकलने को थी कि एकाएक वह हालत दूर हो गयी लेकिन बहुत आनन्द था, अति आनन्द था जिसका मैं लब्जों में बयान नही कर सकता हूँ। वहां उस वक्त यह तबियत चाह रही थी कि कोई आहिस्ता – आहिस्ता पैर के

तलुओं को सहलाये, लेकिन यह ख्याल शर्म से मैने कभी किसी से नहीं कहा और ऐसे वक्त होश होता नही कि जबान से कोई कुछ कह सके मेरा खयाल है कि शिष्यों में से अगर कोई चतुर अक्लमंद हो तो उस वक्त बिना पूछे तलुओं को सहलाना शुरू कर देता ताकि रूह फिर नीचे की तरफ को रागिब हो जावे और जिस्म को ऊपर से नीचे की तरफ आहिस्ता – आहिस्ता मालिश कर दें, वरना बाज औकात ऐसे वाक्यात हुए है कि रूह हमेशा को जिस्म छोड़ गई।

कई मर्तवा मेरे साथ फिर ऐसा हुआ। एक बार ववख्त सत्संग हापुड़ में शायद 1963 दिसम्बर का महीना था। फिर सन् 1964 में बनारस के सत्संग में पहले ही रोज 25 जनवरी को यह मालूम हुआ कि रूह जिस्म को छोड़ गई है और फिर वापस आना ही नही चाहती। सबसे पहले यह हालत 1921 में कबीर साहब की समाधि पर पूज्य भाई साहब बाबू बृजमोहन लाल जी साहब की सोहबत में हुयी थी और दूसरे, तीसरे बार भी जब ऐसी हालत हुई थी तो जनाब पूज्य लाला जी साहब, पूज्य किबला चाचा जी साहब और आप पूज्य भाई साहब बृजमोहन जी की साफ प्रजेन्स (उपस्थिति) व दया थी।

उनके प्रेम और दया का एक और उदाहरण यहां देकर आप सब को उस प्रेम का परिचय देना चाहता हूं उन्ही के सीधे सच्चे सरल शब्दों मे जिनमें इतनी शक्ति है कि वह शब्द शीघ्र हृदय तक पहुँच जाते हैं दूँ उन्होने स्वयं अपने पवित्र हाथों द्वारा अपनी पवित्र भावनाओं को अपनी डायरी में लिखा है।

गाजीपुर में सत्संग का बहुत अच्छा मौका (अवसर) रहा। एक मरतवा श्रीमान भाई साहब बाबू बृजमोहन लाल साहब औढीयार भाई साहब बाबू लखपत राय जी के यहां पधारे मैं तो आपसे मिलने गया और मिला ही और जो सत्संगी मेरे जरिये से औढीयार में थे वे सब भी मिले। वे बड़ी शफक्कत से पेश जाए और जब एकान्त हुआ तो मोहब्बत से फरमाया कि गो मैं मद्धों यानी बुलाया हुआ तो बाबू लखपत राय जी का हूं लेकिन जबसे आया हूँ मैं सिर्फ तुम्हारी तरफ मुखातिब हूं और मेरा खिचाव जितना है वह सब तुम्हारी तरफ है। मैं मशकुर हुआ और मोहब्बत से सर नीचा कर लिया। उनकी मोहब्बत का मैं हमेशा ही मशकुर रहूंगा आप फिर दो बार तशरीफ गाजीपुर खुद अकेले लाये। इत्तफाक से मैं दौरे पर था क्योंकि बाबत आने की कोई खबर नहीं थी।

आपकी निस्बत हजरत किबला लाला जी महाराज से बहुत मजबूत थी। मैं जब सुबह उठा उसी वख्त से हालत बहुत अच्छी थी। बावक्त पूजा हजरत किबला लाला जी महाराज की हजूरी थी और बराबर तबियत जल्दी ही गाजीपुर जाने को चाहती थी। आने को तो उस रोज मैं था ही और एक या दो घन्टे पहले चल दिया। यहां आकर देखा कि आप तशरीफ फरमा रहे है। बड़ी खुशी हुई और जो हालत सुबह थी बयान किया। बहुत खुश हुए मैने पूछा कि लड़के आपको पहचानते नहीं होंगे तकलीफ हुई होगी। फरमाया – नहीं लड़को ने भी पहचान लिया फिर मेरे लिए तो घर ही था आपको शफक्कत भरा हाथ हमेशा मेरे सिर पर रहा जिसका एहसास मुझे पूरी जिन्दगी रहा है।

पूज्य बाबू जी साहब तथा पूज्य डा. चतुर्भुज साहब जी का आपसी प्रेम एवम सम्बन्ध

पूज्य डा. चतुर्भुज साहब हजरत किबला लाला जी की महाराज के ही शिष्य थे। आपका पूरा जीवन परमार्थ को ही समर्पित था अपने पूज्य लाला जी महाराज के आदेशानुसार उनका मिशन जन जन तक पहुंचाने का भरसक प्रयास किया उनके द्वारा रचित, एवम प्रकाशित पुस्तकें परमार्थ जगत में एक अनूठा स्थान रखती है। यद्यपि आपकी जबान उर्दू थी पर पूज्य लाला जी साहब के आदेश होने के कारण आपने उनके मिशन के सिद्धान्तों का हिन्दी भाषा में हिन्दी रूपान्तर करते हुए बहुत अच्छा समन्वय प्रस्तुत किया है। पूज्य बाबू जी से आप छोटे भाई की तरह ही प्रेम करते थे क्योंकि उम्र में आप उनसे काफी बड़े थे। इसलिए पूज्य बाबू जी उनकी बड़ी इज्जत भी करते थें। आप पहले एटा रहते थे वहां उनके स्थान पर स्वयं पूज्य साहब कई बार तशरीफ ले गए थे। आप स्वयं बड़े सिद्धान्त तथा पहले कट्टर आर्य समाजी भी थे इसी कारण उनमें संगठन की बड़ी अद्भुत शक्ति थी और बड़े अच्छे आर्गनाइजर (संगठनकर्ता) थे। आप पूज्य बाबू जी को प्रेम तो करते ही थे उसके साथ साथ उनसे प्रभावित भी बहुत थे इसी कारण अन्सारी साहब को सन् 1943 में आपने पूज्य बाबू जी के पास यह कहकर भेजा था जब आपके पास ही गाजीपुर में एक साहब बैठे है तो आप इतनी दूर मेरे पास क्यों आते है। पूज्य बाबू जी ने पूज्य अन्सारी साहब को बड़े प्रेम से कबूल किया और कहते थे कि उनके साथ बड़ी मेहनत भी की थी और उन्हें पूर्ण अधिकार भी दिए।

गालिबन सन् 1956 में जब आगरे में पूज्यनीय माता जी (पत्नी) पूज्य डा. चतुर्भुज सहाय जी मेडिकल कालेज में भर्ती थे। पूज्य बाबू जी ने मुझ सेवक को लिखा कि आप बीमार हैं और तुम रोज वहां जाकर जो भी सेवा कर सको उनकी करना, क्योंकि तुम वहीं मेडिकल कालेज में हो तो हर तरह की मदद जो जरूरत हो उनके लिए करना। मैं उनके आदेशानुसार वहां नित्य जाता रहा था। यद्यपि कोई सेवा करने का अवसर मुझे नही मिला तथापि मैं रोज उनके चरण स्पर्श करके और हाल पूछकर लौट आता था। उस दौरान आपने स्वयं मेरे कमरे (होस्टल) में आने की इच्छा जाहिर की। मैं बहुत डर गया और किसी तरह यह चाहने

लगा कि वह न आयें क्योंकि कहीं कमरा गन्दा आदि देखकर आप नाराज न हो जायें परन्तु आप कमरे में तशरीफ लाए और बड़ी मोहब्बत से पेश आए और उनका यह प्रेम केवल पूज्य बाबू जी के कारण ही था। सन् 1957 में जब पूज्य बाबू जी साहब गाजियाबाद में थे एक रात आपने ख्वाब देखा कि एक काली एम्बेस्डर कार आकर उनके दरवाजे पर रूकी उसमें से परम् पूज्य लाला जी साहब तथा कई अन्य बुजुर्ग जिसमें दोनों मौलवी साहब भी शामिल थे और डा. चतुर्भुज साहब भी उस गाड़ी से उतरकर पूज्य बाबू जी के घर तशरीफ लाए। उन्होने पूज्य लाला जी साहब से कहा कि आपके लिए दूध ला रहा हूं और घर में चले गये और दूध ले आए। पूज्य लाला जी साहब ने बहुत खुश होकर दूध ले लिया और आशीर्वाद दिया और उसी समय परम पूज्य डा. चतुर्भुज साहब जी को पूज्य लाला जी साहब तथा अन्य बुजुर्ग ने इस्तकबाल के साथ अपने साथ कार में बैठाया। जाते समय पूज्य डा. चतुर्भुज सहाय साहब ने पूज्य बाबू जी साहब से कहा कि मैं तुमसे मिलने और डा. बृजेन्द्र को तुम्हारे सुपुर्द करने आया था और उन्होने उनका हाथ पूज्य बाबू जी के हाथ में दे दिया और कार चल दी और वह लोग चले गये। पहले तो पूज्य बाबू जी ने इस ख्वाब को पूज्य लाला जी साहब की दया व प्रेम समझा परन्तु उसी दिन पता चला कि आप इस धाम को छोड़कर परमधाम को सिधार गये थे। यह आपका परस्पर स्नेह वह आत्मिक प्रेम था इस ख्वाब के अनुसार ही आपके परस्पर स्नेह व आत्मिक प्रेम था इस ख्वाब के अनुसार ही आपके ज्येष्ठ पुत्र डा. बृजेन्द्र कुमार जी गाजियाबाद में दो वर्ष रहे इस दौरान में आप कुछ दिन घर पर ही रहे थे उसके बाद भी जब भी समय मिलता था तो उनके पास नित्य आते थे तथा वह सबसे कहते थे कि मेरी परमार्थिक विद्या की पूर्णता तो पूज्य श्याम लाल जी ने ही की है और बहुत ही आदर और प्रेम हम सब लोगों से था।

जब मैं पूज्य ताऊ जी महाराज साहब की जीवनी लिख रहा था। उस समय मैने बहुत प्रत्यक्ष आपको देखा और उन दो पंक्तियों को भी जो पुस्तक में आपकी आदरणीय चित्र के नीचे लिखा है। आपकी दया कई दिनों तक रही। मैने अपने ख्वाब को पत्र द्वारा पूज्य बाबू जी साहब के सामने निवेदन किया आपने मुझे पत्र द्वारा जवाब दिया यह तुम्हारी उस सेवा के एवज में उनकी दया है जो तुमने आगरा में बीमारी के दौरान की थी और आज कल ऐसी ही दया उनकी विशेष मुझ पर भी है वह बहुत खुश हैं उस तरह तुम उनका फोटो किताब में जरूर डाल दो

और उनका शुक्रगुजार रहे कि उन्होने इतनी दया की है इस तरह मेरे ख्वाब की तसदीक कर दी पूज्य बाबू जी बताते थे कि जब आप एटा में सत्संग रखते थे तब आप और पूज्य ताऊ जी साहब वहां तशरीफ ले जाते थे और वह भी सदा सिकन्दराबाद भंडारे में तशरीफ लाते थे। आप पूज्य बाबू जी के पास तो गाजीपुर और दिलदारनगर दोनो ही जगह तशरीफ लाए थे जब पूज्य बाबू जी बुलन्दशहर मे थे तब भी आप तशरीफ लाए थे और बड़ी ही मोहब्बत से पेश आते थे लिखने का मतलब यह है कि एटा ही नहीं मथुरा जब आप आ गये थे तब भी पूज्य बाबू जी से आपका अच्छा मिलना जुलना रहा और उनकी दया हम सब पर भी रही और अब भी है।

इन सब के अतिरिक्त पूज्य बाबू जी का सभी लोगों से प्रेम व स्नेह बहुत घनिष्ठ था इसका कारण उनका सबके प्रति आदर सुन्दर व्यवहार और सच्चा स्नेह ही था। आप सदाचारी एवं व्यवहारकुशल थे। कभी किसी से कोई सेवा और आदर करवाने की कोई इच्छा नही, सही अर्थो में निःस्वार्थ सेवा और ईश्वर प्रेम के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहते थे। किसी को भी दुख न पहुंचे इसका भी बहुत ध्यान रखते थे। आपके पास सभी लोगों के शिष्य जैसे पूज्य डा. श्रीकृष्ण स्वरूप जी जयपुर वालो के या पूज्य श्याम बिहारी लाल जी साहब के या और किन्ही साहब के हो जब कभी आ जाते उनसे बड़ी मोहब्बत से पेश आते थे। और बहुत खुश होते थे और उनकी जो भी परिमार्थिक सेवा कर सकते थे अवश्य करते थे।

पूज्य हरनायाण जी साहब जयपुर वाले जब कभी आए उनसे बड़ी मोहब्बत और अपनत्व रखते थे और हम दोनों से भी कहते थे। प्रिय दिनेष फतेहगढ़ वाले या प्रिय विनय या उस परिवार के सभी का वह बहुत ध्यान रखते और उनकी हर तरह से सेवा करते थे जिसको सभी सत्संगी भाईयों ने खूब देखा है। सभी लोग पूज्य बाबूजी के व्यवहार की और पारिमार्थिक सेवा की सराहना करते और कहते थे आजकल के जमाने मे पूज्य बाबू जी साहब के जैसा सादगी विनम्रता और विलक्षण सदाचार बेमिसाल है। आपका स्वभाव आरम्भ से ऐसा ही था कि सभी आपसे बहुत स्नेह व प्रेम करते थे। पूज्य बाबू जी ने अपनी डायरी में एक दृष्टान्त लिखा है। उसे यहां लिखकर मैं पाठकों को उनकी सर्वप्रियता का उदाहरण दे रहा हूं।

कुछ अरसा बाद श्रीमान भाई साहब डा. चतुर्भुज सहाय साहब, डा. श्रीकृष्ण लाल जी भाई साहब गाजीपुर तषरीफ ले गए और कई रोज सत्संग रहा, जो सत्संगी उस गिरद निवाह में मेरी वजह से थे सब आप दोनो साहबान के कदमों में हाजिर हुए। वहां से वापसी पर डा. चतुर्भुज सहाय साहब लखनऊ चले गए। मैं और डा. श्रीकृष्ण लाल साहब कानपुर हजरत किबला चाचा जी महराज के कदमों में हाजिर हुए। एक सज्जन ने कानपुर पर मुझसे यह सवाल किया कि ताजुब है कि आपके यहां सब लोग यानी बाबू बृज मोहन लाला साहब, डा. चतुर्भुज सहाय साहब व डा. श्रीकृष्ण लाल साहब जाते है और आपसे सबको मोहब्बत भी है और आप भी उनकी बड़ी इज्जत करते है और आप खुद भी हमेषा पूज्य चाचा जी महराज के कदमों में हाजिर होते हैं। यह क्या राज है ? मैंने अर्ज कि हजरत किबला चाचा जी महराज बक्त के बुजुर्ग है और आप तीनों साहबान मेरे बड़े भाई हैं और मुझसे हर हालत में बड़े हैं और मेरे लिए काबिले ताजीम है। चुनान्चे मेरा फर्ज है कि मैं सब साहबान की इज्जत करके हमेषा ही खैर मक्दम करूँ वे बहुत खुष हुए और खामोष हो गए पर मेरी तरफ बड़ी मोहब्बत भरी नजर से देखा।

पूज्य डा. चतुर्भुज सहाय जी

जन्म– 3 नवम्बर 1883
एटा

निर्वाण– 23 सितम्बर 1957
मथुरा

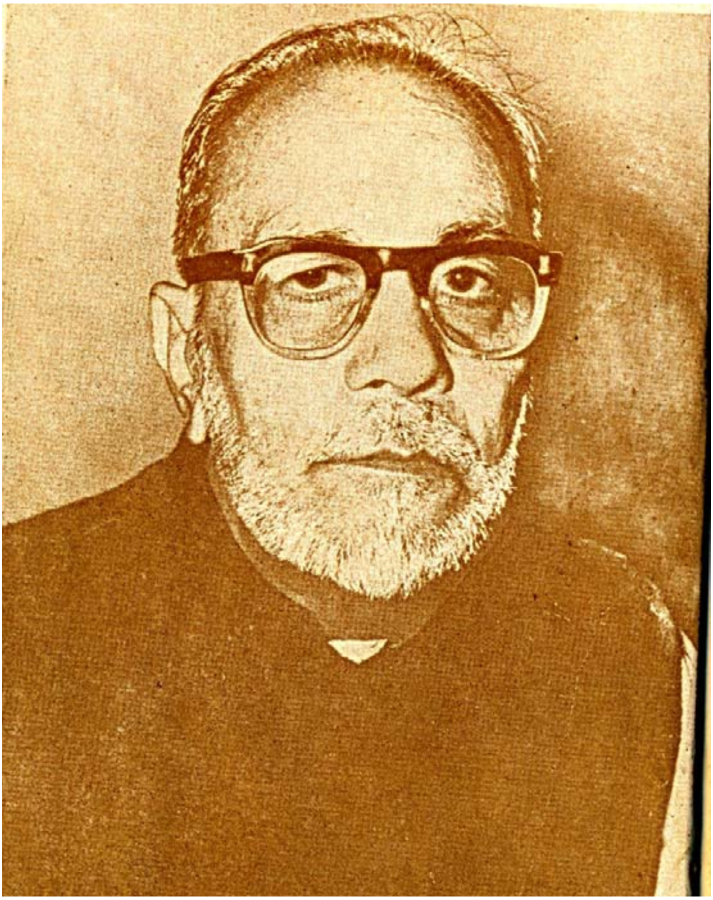

''करूँ नाम रौशन व दुनियां में अपने पीर का ।
यही मेरी आरजू है, यही मेरी इल्तजा है ।''

डा. श्रीकृष्ण लाल भटनागर
उर्फ
पूज्य ताऊजी महाराज

जन्म– 15 अक्टूबर 1864
सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर)

निर्वाण– 18 मई 1970
सिकन्दराबाद

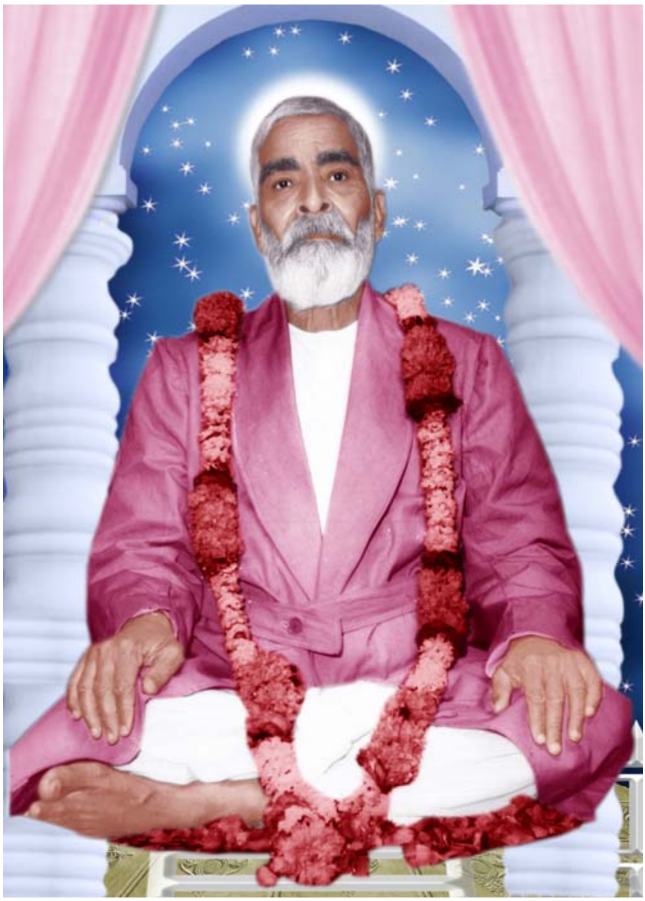

''कहते है तुम हो दया के सागर।
फिर क्यों खाली मेरी गागर ।''

परम पूज्य ताऊ जी महाराज तथा पूज्य बाबू जी महाराज का अतुलनीय अदभुत प्रेम

पूज्य ताऊ जी का प्रेम हमारे पूज्य बाबू जी के जीवन में एक अद्भूत धरोहर थी ऐसा ही पूज्य ताऊ जी के साथ भी था। पूज्य ताऊ जी केवल पूज्य बाबू जी के लिए नही वरन हमारे परिवार के लिए एक अद्भुत शक्ति श्रोत है। एक ऐसे व्यक्तित्व है एक ऐसे साकार प्रेम है जिसकी व्याख्या इस तुच्छ सेवक से नही की जा सकती है। उनका और पूज्य बाबू जी के सम्बन्ध को पूर्ण रूप से प्रगट कर पाना असम्भव है। वह प्रेम सरोवर के दो किनारे थे जिन्होंने सरोवर को सजीवता दी थी जब आप उन दोनों के प्रेम के बारे में पाठकों को अवगत कराने के लिए बैठा हूँ तो लग रहा है कि कलेजा चाक हुआ जा रहा है और जैसे दोनों हस्तियां मूर्तिमान होकर खड़ी हों और मेरे नेत्र उनके प्रेम के आँसुओं से भरे जा रहे हैं। क्या लिखू कहाँ से आरम्भ करूँ समझ नहीं पा रहा हूँ। उनके प्रेम को वर्णन कर पाना मेरे लिए बहुत कठिन है जबसे संसार में आंखे खोली हैं तबसे उन महान हस्ती के बरद्हस्त एवं प्रेम की बौछार ने हम लोगों को संचित किया है। पूज्य बाबू जी एवं ताऊ जी को यदि एक जान दो कालिब कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यदि आप दोनों के सम्बन्धों और प्रेम को लिखूँ तो वह स्वयं में एक पुस्तक हो जाएगी। परन्तु यहां पर मैं कुछ घटनाओं को लिखना उन पाठकों के लिए आवश्यक समझता हूँ जिन्होंने इन दोनों महापुरूषों को देखा नहीं यदि देखा भी है तो उनकी निकटता का अवसर नहीं पा सके, जिन लोगों को इन दोनों के अटूट प्रेम को देखने का सौभाग्य मिला वह तो स्वयं परिचित है कि कैसा अनोखा प्रेम था कैसी अनोखी जोड़ी थी और कैसी विलक्षण परमार्थिक शक्ति वाले महापुरूष थे दोनों, जिन्होंने देखा है वह कैसे भूल सकते हैं।

पूज्य ताऊ जी महाराज तथा पूज्य बाबू जी महाराज दोनों ही लोग पूज्यपाद लाला जी महाराज की सेवा में लगभग साथ ही साथ 1914 में आए हो सकता है कि कुछ महीनों की अन्तर रहा हो। आप दोनों की मुलाकात उन्ही महान सन्त के दर पर प्रथम बार हुई। यद्यपि पूज्य ताऊ जी आपसे उमर में केवल साढ़े पाँच वर्ष बड़े थे परन्तु पूज्य बाबू जी आपका ऐसा आदर करते थे जैसे वह बहुत बड़े हों। आपने उनको हमेशा बड़े भाई की तरह इज्जत दी। हम लोगों ने देखा है कि जब तक पूज्य ताऊ जी करवट बदल कर लेट नही जाते थे तब तक

आप कभी चारपाई पर नहीं लेटते थे। आप दोनों में ख्यालात की इतनी तारतम्यता रहती थी कि जो बात आप कहते थे पूज्य ताऊ जी उसको पूरी तरह डिट्टो करते थे। हम लोग आप दोनों को डुप्लीकेट कापी कहा करते थे। लगभग 1915 से 1919 तक आप दोनों की पूज्य पाद लाला जी महाराज के वहां साथ ही साथ प्रायः नित्य मिलते थे और प्रेम भी एक दूसरे से हो गया था। सन् 1919 में जब आप दोनों ही उनके आदेश से आगरा मेडिकल कालेज में पढ़ने गए तो वहां कालेज में बहैसियत रूम – पार्टनर 1919 से 1923 तक रहे। उस दौरान में आप दोनों का प्रेम बहुत बढ़ गया। वहां से साथ फतेहगढ़ जाना माह में एक बार अवश्य होता था। हालांकि पूज्य ताऊ जी के आप क्लासफेलो थे तथा रूम पार्टनर रहे थे आपने उन्हे हमेशा बड़े भाई की तरह आदर और मान दिया हम लोगों को अर्थात बच्चों को तो यही नही मालूम था कि पूज्य ताऊ जी पूज्य बाबू जी सगे भाई नही है। जब मैं और पूज्य भाई साहब 9 वीं कक्षा में थे तो एक दिन पूज्य ताऊ जी सिकन्दराबाद से बुलन्दशहर तशरीफ ला रहे थे। क्लास का तीसरा घन्टा चह रहा था। सेवक ने तथा पूज्य भाई साहब ने स्कूल के मास्टर साहब से आगे के घन्टों के लिए छुट्टी मांगी और कारण बताया कि हमारे ताऊ जी आ रहे हैं। मास्टर साहब ने हम लोगों का उत्साह देखकर यह समझा कि शायद वह विदेश से आ रहे है। परन्तु जब उन्होंने यह जान पाया कि वह सिकन्दराबाद से आ रहे हैं और उनका नाम डा. श्रीकृष्ण लाल भटनागर हैं तो उन्होने पूछा कि यह कैसे हो सकता है कि तुम लोग सक्सेना और वह भटनागर हैं। क्या तुम्हारे परिवार में अंर्तजातीय विवाह हुआ है। हम लोग कुछ उत्तर न दे सके और अनभिज्ञता जाहिर की और छुट्टी लेकर घर आ गए। आकर देखा शिवपुरी वाले मकान में आप बैठक के कमरे में तशरीफ रखे हुए थे। खुशी से दौड़कर पैर छुए आपकी वही ममता भरी आंखें प्रेम से भर आई और आपने हम दोनों को बहुत आशीर्वाद दिया मैं क्योंकि उनके प्रेम के बाहुल्य के कारण उनके मुँह लग गया था और हर किस्म की आजादी थी इस कारण मास्टर साहब वाला सवाल उनके सामने तुरन्त रख दिया कि ताऊ जी आप भटनागर हैं और बाबू जी सक्सेना है फिर आप लोग भाई–भाई कैसे हुए आप बहुत जोर से हँसे और पूछा यह बेहूदा सवाल तुमसे किसने पूछा मैने आपसे बता दिया कि स्कूल के मास्टर साहब ने उस रोज उन्होंने बताया कि दरअसल मैं और तुम्हारे बाप अच्छे मित्र है और क्लासफेलो तथा

गुरू भाई हैं। यहां यह लिखने का अर्थ केवल एक ही है कि उन लोगों का आपस में प्रेम इतना अधिक था कि हम लोग इस उमर तक यह नही जानते थे कि पूज्य बाबू जी ताऊ जी के सगे भाई नही है। हमारे घर में हमेशा उन्हें यही दर्जा दिया गया था। यहां तक कि हमारी बडी बहन पूज्य बत्ता जिज्जी की शादी हुई तो सबने यहां तक कि पूज्य जीजा जी तक ने परम पूज्य ताई जी को ही अपनी सास समझा था। पूज्य जिज्जी तथा हम दोनों को उन्होंने मातृत्व स्नेह दिया था हम वह प्यार, वात्सल्य जिंदगी में कभी नहीं भूलेंगे। अटूट प्रेम का सम्बन्ध आप दोनों में था। इसी तरह का प्रेम पूज्य लाला जी साहब आपस में चाहते थे।

मेडिकल कालेज से पास होने के बाद पूज्य ताऊ जी सिकन्दराबाद में प्रेक्टिस करने लगे थे और पूज्य बाबू जी नौकरी परन्तु मिलना जुलना खूब रहता। पूज्य ताऊ जी गाजीपुर, दिलदारनगर हर जगह तशरीफ ले गए। मालिक की दया हुई। सन् 1929 तक पूज्य बाबू जी बुलन्दशहर रहे उस समय सिकन्दराबाद पास रहने के कारण शनीचर इतवार खूब मिलना जुलना रहा। सन् 1932–33 में पूज्य बाबू जी का ट्रान्सफर बरेली हो गया तो सिकन्दराबाद में ही एक बहुत बड़ा मकान जिसको महल कहा जाता था और जो पूज्य ताऊ जी का पुश्तैनी मकान था इसी मकान में पूज्य बाबू जी का परिवार रहने लगा। इसी मकान में मुझ सेवक की पैदाईश हुई और यही हमारी पूज्य माता जी का स्वर्गवास हुआ। यही इसी मकान में पूज्य ताऊ जी ने पूज्य बाबू जी के प्रेम के आवेश में हमारी माता जी को जो मौत से लड़ रही थी उस समय दीक्षा दी थी। यह आपकी सर्वप्रथम दीक्षा थी। वह प्रथम शिष्या थी। उसी समय उनकी बीमारी की शोचनीय दशा को देखकर और उनका हम बच्चों की चिन्ता को देखकर आपने वचन दिया था कि मैं तुम्हारे बच्चों का आकबत तक ध्यान रखूँगा इन्हें कोई तकलीफ न होने दूंगा। यह भी शायद एक वजह हो सकती है कि आपको हम दोनो भाईयों और जिज्जी से बहुत प्रेम था ऐसा प्रेम जिसको मैं व्यक्त करने में असमर्थ हूँ। ऐसा अलौकिक प्यार उन्होने हम सबको दिया था वह दुनिया में कोई नहीं दे पाया जिसको दूसरे लोग नहीं समझ सकते हैं।

सन् 1939 में जब पूज्य बाबू जी साहब अपने तीसरे विवाह के बाद बहुत सख्त बीमार हो गए थे तब आपको उपचार के लिए हृदय रोग विशेषज्ञ डा. भाटिया को लखनऊ मेडिकल कालेज में दिखाया गया और वहीं भर्ती करके उपचार प्रारम्भ कर दिया गया परन्तु कोई फायदा नही

हुआ। कमजोरी बहुत बढ़ गई और आप काफी कमजोर हो गए। आखिर कार डा. भाटिया ने उन्हे दिल्ली ले जाने की सलाह दी और निर्देश दिया कि यह काफी कमजोर हैं इन्हें झटका न लगे। बड़े एहतियात से ले जाया गया उस समय एम्बुलेन्स भी न मिल पायी शायद ऐसी सुविधा नही थी और भी कोई सवारी की सुविधा नहीं थी सिवाय इक्के और तांगे के। ऐसी दशा में पूज्य ताऊ जी, पूज्य बाबू जी को अपनी पीठ पर लादकर मेडिकल कालेज से चारबाग स्टेशन तक लाए जिससे उन्हे झटका न लगे और तकलीफ न हो कौन कर सकता है आज ऐसा। देखने वालों ने पूछा कि क्यों यह आपके बेटे है आपने प्रेम से भर कहा नहीं यह मेरे भाई है। ऐसा था इन दोनों बुजुर्गो का प्रेम। देहली में डा. अन्सारी ने बताया कि हृदय रोग नहीं है परन्तु दांत उखाड़ने की सलाह दी। दांतों में पायरिया हो गया था परन्तु दांत काफी मजबूत थे। पूज्य ताऊ जी के जब दांत उखाड़ते तो पूज्य बाबू जी के बहुत तकलीफ होती थी और बहुत चिल्लाते थे। पूज्य ताऊ जी भी कमरे मे आकर रोते थे और प्रार्थना करते थे कि प्रभु उनके कष्टों को दूर करिये। जब कभी हम लोगों ने उनको रोते देख लिया और रोने का कारण पूंछा तो उन्होंने कहा कि दांत बहुत मजबूत है बड़ा जोर लगाना पड़ता हैं जिससे मेरे हाथों में दर्द हो जाता है। जबकि वास्तविकता यह थी कि वह पूज्य बाबूजी के दुख के कारण ही रोया करते थें। ऐसा था उनका स्नेह।

जून 1939 मे पूज्य बाबू जी की बीमारी की परेशानी चल रही थी कि उधर आपकी दूसरी पुत्री श्रीमती शान्ती देवी का विवाह तय हो गया था। उस समय आपके पास पैसे की बहुत तंगी थी और बहुत कोशिश करने पर भी कहीं से इन्तजाम नहीं हुआ था। आप काफी परेशान थे। पूज्य बाबू जी ने आपसे इस उदासी का कारण पूछा और उनके दुखी होने के कारण को जानना चाहा। पूज्य ताऊ जी अपना दुख जज्ब न कर सके और कहने लगे भाई श्याल लाल शादी इतनी करीब आ गई है बहुत भाग दौड़ की पर पैसा का इन्तजाम न हो सका। मेरी शरम उसके हाथ है। पूज्य बाबू जी ने फौरन कहा भाई साहब मेरे पास बक्से में चांदी रखी है जो कि इनकी माँ ने बत्ता की शादी के लिए रख छोड़ी थी आप ले लें और बेचकर शादी का बन्दोबस्त करें। पूज्य ताऊजी फूट–फूट कर रोने लगे। और कहने लगे कि भाई श्याम लाल एक तो तुम्हारी बीमारी की हालत, यह छोटे बच्चे और तुम्हारी नई शादी हुई है को देखकर मेरी हिम्मत नहीं होती कि ऐसा कर सकूं। परन्तु पूज्य बाबू जी ने इन बातों

को कुछ न ख्याल करते हुए उस बक्से की चाभी आपको दे दी और कहा कि अगर मुझे कुछ हो भी जाता है तो आप तो हैं कौन कर सकता है ऐसा त्याग बिना सच्चे प्रेम के। यह दृष्टान्त लिखते समय हृदय रोमांचित हो उठता है। उसका आशय यहां लिखने का यही है कि पाठकों को उन दोनों महात्माओं के परस्पर प्रेम को अवगत करा सकूँ।

सन् 1945 में कुछ ऐसी परिस्थितियां हो गईं कि पूज्य ताऊ जी पर बहुत कर्जा चढ़ गया उस कर्जे की अदायगी की केवल दो ही सूरतें रह गयी थीं या तो मकान को गिरवी रखकर कर्जा निपटाया जाये या पूज्य ताई जी के जेवर बेंच दिये जायें । पूज्य ताऊ जी ने पूज्या ताई जी से जेवर बेचने के लिए कहा परन्तु वह इसके पक्ष में नही थी। गो कि घर के हर महत्वपूर्ण एवं अमहत्वपूर्ण बातें आप दोनों की परस्पर रायमशविरा से ही होती थी इसलिए जब पूज्य बाबू जी से राय ली गई तो पूज्य बाबू जी ने भी यही बेहतर समझा कि जेवर ही बेच दिए जाएं पर मकान गिरवी न रखा जाय। पूज्य बाबूजी ने पूज्या ताई जी को यह बात समझाई और पूज्या ताई जी ने चुपचाप अपने सारे जेवरों की पोटली लाकर पूज्य बाबू जी के हाथ में रख दी और कहा कि मुझे पक्का यकीन है कि जो तुम करोगे, वह ठीक होगा। ऐसा भरोसा था आपको पूज्य बाबू जी पर पूज्य जिज्जी बताती है पूज्य ताई जी ने ही उन्हे हर तरह का घर का काम जैसे पराठे सब्जी आदि बनाना सिखाया था सीना पिरोना भी। अर्थात उन्होने ही बचपन में हम दोनों भाईयों और जिज्जी को मॉ का प्यार दिया।

सन् 1950 में पूज्या ताई जी के स्वर्गवास के बाद पूज्य ताऊ जी को बहुत बड़ा सदमा हुआ और चारों तरफ से दुखों ने आकर घेर लिया आपने घबराकर पूज्य बाबू जी को चिट्ठी लिखकर बुलाया उस समय आप दो महीने छुटटी लेकर आपके साथ रहे जिससे आपको सहारा मिल जाय और उस दो महीने आप साये की तरह उनके साथ रहे उसी दौरान में पूज्य बाबू जी ने हुक्का छोड़ा क्योंकि पूज्य ताऊ जी के सामने अदब के कारण पी नहीं सकते थें। इस तरह आप दोनों का बहुत साथ रहा और जहां भी सत्संग में जाते दोनों लोग साथ–साथ जाते उस वक्त के बारे में पूज्य बाबू जी ने लिखा है वह लिखकर उनकी भाषा में उस समय के वातावरण और पूज्य बाबू जी की भावनाओं को आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मैं और श्री मान भाई साहब (डा. श्रीकृष्ण लाल जी साहब) एटा सत्संग में गये लौटते वक्त इरादा किया कि बदायूं जाये। क्योकि उनकी छोटी लड़की बदायूं में व्याही है तो उससे मिल लेंगे और कटिया गांव से कुछ लोग बदायू आ जायेंगे। वह लोग श्रीमान भाई साहब से मिल लेंगे। यह बक्त आपका बहुत अच्छा था। जब हम लोग एटा से कासगंज स्टेशन पर पहुंचे तो क्या देखता हूँ कि बिहारी जी 40–50 आदमी लेकर बदायूं चलने को तैयार होकर आये हैं कि 3–4 दिन सत्संग रहेगा। मैं स्टेशन पर बहुत घबराया कि 30–40 आदमी कासगंज से ही मेरे साथ हो लिए। उधर कुछ कटिया से आने वाले हैं मुझे ख्याल भी न था कि इतने आदमी हो जावेंगे। रास्ते भर सोचता रहा कि गाड़ी साढ़े आठ बजे पहुंचेगी। सर्दी के दिन हैं घर में कुछ इन्तजाम भी नहीं है बाजार भी बन्द हो जावेगा। खैर घबराया हुआ मकान साढ़े आठ बजे राम जी को पहुंचा। परमात्मा ने दया की थी और बिरादरे अजीज बाबू राम जी जो कि बहुत दूरन्देश थे। गांव से आलू और आटा पिसवा कर ले आये थे कुछ आलू उबाल भी लिए थे क्योंकि वह यह समझ गए थे कि 20–25 लोग तो जरूर होंगे। फौरन ही उन अजीज ने खाने का इन्तजाम करवाया, एक शब्जी या दो बनवाया। मेरी जान में जान आई। धीरे–धीरे करीब सौ आदमी हो गये। खूब सत्संग रहा, बड़ा आनन्द आया। इस कदर आनन्द था कि बयान के काबिल नहीं, जब प्रसाद चढ़वाया गया तो मुझे यह ख्याल हुआ कि क्या ऐसा भी मुमकिन है कि हजरत किबला लाला जी महाराज और पीराने उज्जाम मेरे घर का मेरा प्रसाद कबूल कर लेंगे। ऊँ शान्ति का जाप होता रहा और मैं बराबर मुतफिक्र था कि न मालूम प्रसाद कबूल होगा कि नही। जब ओम् शान्ति का जाप खत्म हुआ तो महसूस किया कि जनाब हजरत किबला लाला जी महाराज खुद दोनों में प्रसाद उठाकर हर शख्स को फरदन – फरदन दे रहे थे। मुझे बहुत खुशी हुई कि चाहे मेरा ख्याल ही क्यों न हो लेकिन हालत ऐसी है कि जो इस अमर की तसदीक करती है क्योंकि हर सख्श आपके फैज से मुअस्स्र था। जब प्रसाद चढ़ाने के बाद मै और श्रीमान भाई साहब शान्ति बाबा से मिलने गए तो रास्ते में श्री मान भाई साहब ने फरमाया कि भाई तुम्हारा प्रसाद कबूल हुआ और मैने खुद देखा कि खुद हजरत किबला लाला ली महाराज ही अपने दस्ते मुबारिक से वह प्रसाद फरदन फरदन हर सख्श को दोनों में दे रहे थे और भी दो एक शख्सों ने इस किस्म का इषारा किया। सबने कहा साहबान यह प्रसाद मुबारिक था।

मैने यह ख्याल करके कि इस मकान में हजरत किबला लाला जी महाराज ने प्रसाद कबूल किया कुछ हिस्सा खरीद भी लिया था कि वहीं रहूँ पर कुदरत को यह मंजूर नहीं थी।

जुलाई या अगस्त सन् 1947 रहा होगा इसी दौरान एक रोज मैं श्रीमान भाई साहब डा. श्रीकृष्ण लाल जी को पहुँचाने के लिए बस स्टैण्ड पर खड़ा हुआ था कि एकाएक हालत गुजरी और वह हालत यह थी कि इस हालत में जो काम होगा वह निष्काम कर्म होगा। गरज अभ्यासी कितनी ही कोशिश करे और यह ख्याल करे कि मैं निष्काम कर्म करूँगा, यह सोचने और समझने या अपने कोशिश करने से नही होता है यह एक हालत अभ्यासी की जब परमात्मा उस पर दया करते है तब गुजरती है वैसे नहीं यह हालत बहुत आरजी थी क्षणिक मात्र के लिए थी। लेकिन उस क्षणिक मात्र के लिए जो अनुभव, और हालत गुजरी यह हालत कुछ अरसा बाद भी आपकी सोहबत में सिकन्दराबाद में गुजरी और बाद में भी कोई और बार भी, यह बुजुर्गो की दया कृपा थी।

सन् 1953 में मैं गाजियाबाद आ गया यहां श्रीमान भाई साहब से नजदीकी और बढ़ गयी और सत्संग का काम और ज्यादा रूझान से चलने लगा। उधर बनारस के साहबान जो खास मुझसे ताल्लुक रखते थे बराबर आते जाते रहे कई मर्तवा सत्संग आर्गनाईज (संगठित) करने के ख्याल से मुझको तनहा या हमराही श्रीमान भाई साहब ग्वालियर, बनारस, कानपुर, इलाहाबाद जाना पड़ा चूंकि गाजियाबाद मेन लाईन पर है सब सत्संगी साहबान सीधे गाजियाबाद ही आने लगे। दो चार वाक्या श्रीमान भाई साहब के मुत्तालिक सन् 1953 के और शुरू सन् 1955 के काबिले दर्ज है।

एक बार मैं हमराही श्री मान भाई साहब और चन्द असहाब फतेहगढ़ समाधि पर दर्षन करने गये समाधि पर बैठते ही क्या देखता हूं कि हजरत किबला ने मेरे गले में मुतवातिर फूलों की माला पहना दी और फूलों की बौछार की मैने आपसे इसका जिक्र किया, खुश हुए और फरमाया – उन्होंने तुमको हर सूरत से अपना लिया है। और यह सब एक बशारत खास है इत्तफाक से उसी के कुछ दिन बाद श्रीमान भाई साहब बहुत सख्त बीमार हुए और सुबह यह हुआ कि कोई चीज खाने में ऐसी थी जो जहर का काम कर रही थी। अस्पताल में दाखिल करा दिया गया। बाद में पता चला कि आपको किसी ने दूध में जहर दे दिया था, मुझे तार मिला मैं फौरन ही सिकन्दराबाद आया। हालत ज्यादा

खराब हो गई थी। परमात्मा ने दया की दो एक रोज में अच्छे हुए लेकिन कमजोरी काफी हो गयी थी मैं कई रोज आपके पास ठहरा इसके दो माह बाद हम लोग बनारस सत्संग के लिए गये वहां से इलाहाबाद होते हुए कानपुर आए। आपने कानपुर में सुबह मुझको खास अपने पास बिठाकर फरमाया – मुझको मालुम होता है कि मेरा वक्त आ गया है मैं तुमको सब इजाजत देता हूं मेरी तरफ से तुमको सब इख्तियार है मैने सवाल किया मैं किसके हाथ पर बैत करूँगा। हजरत किबला लाला जी महाराज के हाथ पर या आपके हाथ पर फरमाया – मैं जानता हूॅ कि तुम्हारी निस्बत हजरत किबला लाला जी महाराज से टक्कर खायेगी चूंकि वह तुम्हारे सारी उम्र की ईष्ट रहे हैं तुम दोंनो के हाथ पर बैत कर सकते हो जैसी हालत उस वक्त देखो अमल करना आप उस वक्त एक खास मोहब्बत से भरे हुये थे। दूसरे बार हम लोग घाटमपुर विश्वम्भर नाथ (आपके दामाद, बत्ता जिज्जी) के यहां गये बहुत अच्छा सत्संग रहा। वहां कुछ लोग खानदान चिश्तिया के मिले जिनके पीर पाकिस्तान चले गये थे, बड़े तपाक से मिले और सत्संग शुरू हुआ हम लोगों की निस्बत गालिब आई, वे लोग कहने लगे कि साहब हम सुना करते थे ख्वाजगान खानदान नक्शबन्दिया खामोश और निस्बत में बहुत ऊँचे होते हैं आज उनकी अपनी आंखो से देख लिया।

एक वाक्या सिकन्दराबाद का भी इसी तरह का है जब हकीम जी जो कहीं के सहजादा नसीन थे (गालिबन कादरियाखानदान) के सत्संग के वक्त पर आ जाया करते थे और ख्याल करते थे या बताना चाहते थे कि उनकी वजह से सब सत्संगियो को बहुत मदद मिलती है। एक दिन ऐसा इत्तफाक हुआ कि सत्संग शुरू हुआ और उनकी हालत कैफियत जारी हुई। बड़े मशकुर हुए और फरमाया कि भाई हम आप लोगों को इतना नहीं समझ पाए थे।

श्रीमान भाई साहब की बीमारी के बाद हम लोगों को यह ख्याल हुआ कि जितनी जल्दी मुमकिन हो सत्संग का काम और तेजी से किया कराया जाय ताकि उनकी सोहबत से जितना ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाया जा सके उठा लिया जाये। उसी दौरान एक दिन जब आप सो रहे थे तो मैने देखा कि आपका सारा जिस्म नूर मुनव्वर है और जिस्म कहीं दिखाई नहीं दे रहा है यह ऐसी घटना है कि दूसरे लोग कम यकीन करेंगे। लेकिन मैंने अपनी खुली आंखों से देखा है। मैं बेयकीन नहीं कर सकता।

सन् 1954 में आपने इजाजत ताजम्मा बख्शी और सन् 1955 में मैं जब भण्डारे के बाद चलने को हुआ तो आपने एक कागज दिया और कहा कि इसे बहुत संभाल कर रखना। मैं समझा कि इसमें लड़कों को वसीयत की होगी जैसा कि आप तीन चार मर्तवा पहले भी कर चुके थे घोषणा द्वारा मैने उसको मोड़कर जेब में रखना चाहा। फरमाया इसको खराब न करना बहुत काम की चीज है घर जाकर पढ़ लेना। जब घर जाकर पढ़ा तो इजाजत नामा – खास तौरपर लिखा हुआ मौजूद था। इज्जत अफजाई की और उसको सम्भाल कर रख लिया उसी दौरान एक रोज जब मैं पूजा में बैठा हुआ था तो क्या देखता हूॅ कि हजरत किबला लाला जी महाराज और एक बुजुर्ग मेरे पास आए और बड़े प्रेम से फूलों की माला दोनों साहबान ने मुझको पहना दी। मैने श्रीमान भाई साहब से जो इत्तफाक से उस रोज मौजूद थे जिक्र किया आपने फरमाया यह इजाजत बुजुर्गो की तरफ से भी तुमको है और यह अमर की बसारत है।

इसी मर्तवा हजरत किबला भाई डा. श्रीकृष्ण लाल जी साहब देहली सत्संग कराकर वापिस आए। मुझसे फरमाया कि भाई तुम्हारे लिए एक खुशखबरी है और वह यह है कि हम और तुम दोनों ही हजरत किबला लाला जी महाराज के करीब तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे लेकिन तुम पहले पहुँच गए हो। हमको बहुत रस्क हुआ गो कि यह रस्क प्रेम से भरा हुआ है तुमको यह खुशखबरी सुनाने के लिए ही मैं यहां रूक गया हूॅ।

आपके डायरी से एक वाक्या ख्याब का लिख कर मैं यह बताना चाहूंगा कि पूज्य ताऊ जी और पूज्य बाबू जी में कितनी हम ख्याली थी जो बात या हालत गुजरती थी दोनों पर एक ही साथ लगभग होती थी पूज्य बाबू जी के डायरी से उद्धत है :–

''अजीज सुरेश की शादी थी और मैं शादी में शरीक था, क्या देखता हूॅ कि श्रीमान भाई साहब भवसागर से पार हो रहे हैं। एक बहुत बड़ा समुद्र है कि एक बहुत ऊंची लहरें उठ रही हैं मैं समुद्र के उस पार खड़ा हुआ देखता हूॅ कि एक छोटी सी नाव है और हल्का सा पतवार है। उस नाव को अकेले ही आप जा रहे है। और मैं उस पार खड़ा देख रहा हूॅ। उस नाव को अकेले ही दोनों वहां पर मिले यहां मैं पहले से ही खड़ा था''।

देखिये कितनी साफ दिली है कोई बनावट नहीं, जो सच्चाई थी वह कह दिया। रश्क हुआ गो कि इसमें प्रेम भरा था, कोई ऐसी सच्चाई के कह सकता है। जिस सच्चाई के लिए पूज्य बाबू जी हमेशा सत्संग

भण्डारों में तथा अलग–अलग भी कहा करते थे जिस शत प्रतिशत सच्चाई की आप बात करते थे उसकी यह मिसाल हैं। पूज्य बाबू जी कहा करते थे कि मेरा अपना अकीदा यह है कि लाला जी महाराज का प्रेम आप पर बहुत था और हजरत किबला लाला जी महाराज की निस्बत बहुत ज्यादती के साथ आपमें और भाई साहब बाबू बृजमोहन लाल जी में थी। मैं तो यह कहने में जरा भी नहीं हिचकता कि पूज्य लाला जी महाराज की असली बिद्या के वारिस आप ही थे। मुमकिन है किन्ही और में ऐसी जबरदस्त निस्बत हो तो मैं नहीं जानता मुमकिन है कि उनसे मुझे कोई वास्ता न पड़ा हो। कहा करते थे कि बेटे आप एक बहुत ऊंचे फकीर थे और पूज्य लाला जी आपसे बड़ी मोहब्बत करते थे या यह भी कई बार कहा कि श्रीमान भाई साहब उनके मुराद थे।

पूज्य ताऊ जी भी आपसे बड़ी मोहब्बत करते थे और कहा करते थे कि अगर दुनियां में चिराग लेकर ढूंढ़े तो भी श्याम लाल जैसा हीरा नहीं मिलेगा। अगर किसी को दुनिया में दीनता सच्चाई सहनशीलता, मुष्तकिल मिजाजी तस्बीर और बुलन्दख्याली को देखना है तो श्याल लाल उसकी जीती जागती तस्बीर है। ऐसे आदमी युगों बाद दुनिया में आते है आप अक्सर कहते थे कि भाईयों में चलते समय (बिदा के समय) जो शोज की हालत श्याम लाल पैदा कर सकते हैं वह कोई नहीं पैदा कर सकता है।

यह चन्द मिसालें है जो आप दोनों का प्रेम दर्शाती है

एक बार की घटना है कि पूज्य ताऊ जी और पूज्य बाबू चाचा जी सिकन्दराबाद में थे और कहीं जा रहे थे। रास्ते में कुछ बदमाशों ने पूज्य ताऊजी पर कातिलाना हमला करना चाहा पूज्य बाबू जी ने फौरन समझ लिया और अपनी जान की परवाह न करते हुए आगे आ गये। इतनें में पूज्य बाबू चाचा आप दोनों को चले जाने को कहने लगे और खुद अकेले मुकाबले पर डट गए। पूज्य ताऊ जी दौड़कर बन्दूक लाने चले गये और पूज्य बाबू जी ने पूज्य चाचा का अकेले छोड़कर जाने के साफ इन्कार कर दिया। इतने में पूज्य ताऊ जी बन्दूक लेकर आ गए और बदमाश भाग गये। बाद में ज्ञात हुआ कि अखबार की एक एजेन्सी पूज्य ताऊ जी के पास थी दूसरी एजेन्सी वाले जो सत्संग भाई थे ने ईर्ष्या और डराने के ख्याल से ऐसा किया था। देखिए भाईयों का ऐसा प्रेम कहां देखने को मिलता है।

पूज्य ताऊ जी की बड़ी इच्छा थी कि वह और पूज्य बाबू जी साथ साथ रहें और एक जगह ऐसी कालोनी बनायी जाये जहाँ एक ख्याल के लोग रहे जिसमें अच्छी सोसाईटी रहे और सत्संग का काम अच्छी तरह चले। इस कारण 1955 में जब पूज्य बाबू जी का रिटायरमेन्ट होना था तो पूज्य ताऊ जी ने पूज्य बाबू जी से कहा कि तुम गाजियाबाद में ही सेटिल करो क्योंकि यह मेनलाईन पर है और सत्संगियों को आने जाने के बहुत आराम रहेगा और मैं भी सिकन्दराबाद से यही आ जाऊंगा और वक्त सत्संग अच्छा गुजरेगा। अभी इस तरह का खयाल किया गया और पूज्य बाबू जी को भी यही ख्याल अच्छा लगा यद्यपि बदायूं में एक प्लाट खरीद चुके थे और पहले इरादा भी वहीं रहने का था क्योंकि आप वहीं के रहने वाले थे परन्तु बाद में इस स्थान को बदल दिया और गाजियाबाद ही रहने का कुछ इरादा कर सा लिया। उसी समय बुलन्दशहर के एक वकील साहब जो अपनी जमीन बेचना चाहते थे और इज्जतदार होने के कारण जाहिर तौर पर किसी को बताना भी नहीं चाहते थे और पूज्य बाबू जी के पास तशरीफ लाए और उनके छः प्लाटों को खरीद लिया गया और उसे कालोनी का नाम 'रामा कृष्णा कालोनी' रखा गया उसमें एक प्लाट पूज्य सरदार करतार सिंह धींगरा दूसरा डा. विश्वम्भर नाथ सक्सेना (पूज्य स्व. जीजा जी) तीसरा पूज्य बाबू जी चौथा श्री कृष्ण जौहरी और डा.महेश ने (आधा–आधा) पांचवां पं. काशीनाथ छठा पूज्य ताऊ जी के भाई श्री गिरधर किशन भटनागर ने लिया। बाद को कुछ लोगों ने अपने अपने प्लाट बेच दिया। इस तरह पूज्य बाबू जी ने कोठी बनाई और वहीं रहकर सत्संगियों की सेवा करते रहे सन् 1963 में सत्संग ने भंडारा की शक्ल ले ली और तबसे आज तक यहां बुजुर्गो की याद में भण्डारा हो रहा है।''

इस कालोनी बनाने के अन्तर में पूज्य ताऊ जी बताते थे कि एक बार पूज्य लाला जी साहब ने यह इच्छा की कि यदि हम ख्याल सत्संगी भाई फतेहगढ़ में एक जगह मकान बनाकर रहने लगे तो सोसाइटी अच्छी रहेगी और प्रेम और एका भी बढ़ेगा। किसी सत्संगी भाई के जरिये यह ख्याल पूज्य ताऊ जी से कहलवाया। आपने कहा कि बिल्कुल बेकार ख्याल है परन्तु पूज्य ताऊ जी को यह मालुम हुआ कि पू. लाला जी महाराज की योजना थी तो आपको बड़ा दुख हुआ और फौरन पूज्य लाला जी साहब से माफी मांगने गये और कहा कि मुझे मालूम नहीं था कि यह आप चाहते हैं ऐसा ही होना चाहिए, पूज्य लाला जी महाराज बहुत दुखी हुए और फरमाया, मैंने अब अपना इरादा बदल दिया

है क्योंकि तुमने मेरे ख्याल को कबूल नहीं किया। मुझे अफसोस सिर्फ इस बात का है कि अभी तक तुम मेरे ख्यालों को कबूल नहीं कर पा रहे हो। यह बात आपके दिल में घर कर गयी। और सन् 1955 में उसको आपने साकार रूप दिया। इस प्रकार आपने पूज्य लाला जी महाराज जी की इच्छा को मूर्ति मान तो अवश्य किया लेकिन सेवक का ख्याल है कि जिस प्रकार से वह बुजुर्ग चाहते थे वैसा ये लोग न कर पाये। इसका राज भी वही बेहतर जानते हैं।

चन्द स्वार्थी लोगों ने सत्संग में कुछ ऐसी विषम परिस्थितियां उत्पन्न कर दी कि आप दोनों के पचास वर्ष के प्रगाढ़ मित्रता को एक धक्का सा लग गया और पूज्य बाबू जी ने सिकन्दराबाद भण्डारे में जाना बन्द कर दिया। इन दोनों का विछोह केवल बाह्य था। शरीर से अलग रहते हुए भी बिरह की अग्नि में दोनों ही लोग जलते रहते थे। यह तो ऐसा लगता है जैसे श्री राम और भरत की बिरह बिछोह के प्रसंग फिर से दुहरा उठा हो श्री राम को भरत से अनन्य प्रेम था और भरत को भी परन्तु परिस्थितियों ने बिछोह की अग्नि में ही रखा। यही दशा इन दोनों महान सन्तों की थी। सेवक को खूब मालूम है कि दोनों के जीवन में यह सबसे बड़ा सदमा था। पूज्य बाबू जी कहते थे कि उनको अपने माता–पिता हम लोगों की मां तथा पहले बच्चे के मौत का भी सदमा जो कि वाकई नाकाबिले बरदाश्त था इतना नहीं हुआ जितना पूज्य ताऊ जी से बिछोह का। पूज्य भाई साहब और सेवक को पूज्य बाबू जी की उस दशा की अब भी जब कभी याद आती है तो कलेजा मुंह को आता है। पूज्य शर्मा बहन जी ने बताया था कि पूज्य ताऊ जी माला लेकर रात रात भर जपा करते थे और दुआ किया करते थे कि किसी तरह पूज्य बाबू जी और हम दोनों भाई उनके पास आ जाएं। शर्मा बहन जी कहती थी कि उन्होंने आपसे कहा कि आप दो पैसे का पोस्टकार्ड क्यों नहीं डाल देते हैं। आपने बड़े दुख के साथ कहा कि अब तो मेरी दुआओं में भी असर खतम हो गया वरना मेरे भाई और बच्चे जरूर आ जाते।

नोटः– यह बातें शर्मा बहन ने तथा एक दो और साहबान ने बताई थी। और अब मिलने गये तो उनकी तसदीक हो गई। पूज्य बाबू जी जब आपसे मिलने गये तो आप फूट फूट कर रो पड़े और हाथ पकड़ कर कहने

रामा आश्रम सत्संग

(कार्यालय–मालिक राम संदेश)

सिकन्दरबाद (बुलन्दशहर)

क्रम संख्याः ....   दिनांकः ....

क्रम संख्या   दिनांक

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الحمد للہ رب العالمین والصلوٰۃ والسلام علی سید المرسلین وعلی آلہ واصحابہ اجمعین

اما بعد حقیر نے تا حضرت مہر سلسلہ کی طرف سے تصدیق کرتا ہوں کہ برادر عزیز شیام لال ابن
منشی پیارے لال ساکن سکندرآباد نے اثبات بیعت توبہ و بیعت توسل کے بعد ذکر - فکر - رابطہ شیخ
(مقام برزخ) صحبت و آداب - مقامات فنا و بقا توحید تقریر حقیر سر [illegible] بن منشی
گنگوت دیال ساکن سکندرآباد نقشبندی مجددی مظہری کے ساتھ [illegible] طے کئے ہیں۔ تعلیم و تلقین
میں مہارت تامہ حاصل کی ہے۔ لہذا برادر موصوف کو سند خلافت عطا کرتے ہوئے اجازت و کالت ہے
برادر موصوف تبلیغ سلسلہ عالیہ کرتے ہوئے حفظ النفس کی کوشش جاری رکھیں۔ اور مزید
مقامات کیلئے کوشاں رہیں۔ ما توفیقی الا باللہ۔

فقیر سید [illegible] نقشبندی مجددی [illegible]
۲۷ اکتوبر ۱۹۵۵ء

आचार्य

इजाजतनामा

राम आश्रम सत्संग
कार्यालय – मालिक 'राम संदेश'
सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर)

बिसमिल्लाह उल रहमान उल रहीम अल्लाह

अलहमदो लिल्लाहे रब्बिल आलिमीन वस्सलावातो व अस्सलामे। अली सैयदिल मुरसलीन व अली अलहा य असहा अजमतीन अमा बाद अकीन न्या बतन हजरत पीर मुरशिद की तरफ से तसदीक करता हूं कि बिरादर डा. श्याम लाल बिन मुंशी प्यारे लाल साकिन कटिया ने असबात बयैत तौबा व बयैते तवस्सुल के बाद जिक्र फिक्र राबता शैख (मुकाम बजरख) सोहवत व आदाब – मुकामात फना व बका को मुझ फकीर हकीर श्रीकृष्ण बिन मुंशी भगवत दयाल साकिन सिकन्दराबाद नक्शबन्दी मुज्दी मजहरी के साथ रहकर तय किए हैं। तालिम व तलकीन में महारात ताआम्मा हासिल की है। लिहाजा बिरादरे मौसूफ को सनद खिलाफत अता करते हुए इजाजत दी जाती है। बिरादर मोसूफ तबलीग सिलसिला आलिया करते हुए हिफजे नफ्स को कोशिश जारी रखें और उरूज के मुकामात के लिए कोशां रहें।

मातोफीकी इल्ला बिल्लाह
फकीर श्री कृष्णलाल नक्शबन्दी
मुज्दी, मजहरी
12 अक्टूबर 1955 ई0
आचार्य

लगे कि "भाई श्याल लाल जबसे तुमने छोड़ा तबसे सुख नाम की चीज हमने नही जाना। एक दिन भी तो ऐसा नहीं गुजरा कि सुख से रहा हूँ पूज्य बाबू जी कहते थे इतना सख्त आपको उस वक्त हुआ कि बता नहीं सकते थे। परन्तु प्रभु की इच्छा व होनी बलवान होती है यही कहा जा सकता है। जब सेवक और पूज्य भाई साहब पूज्य ताऊ जी से मिलने गए तब भी आप फूट फूट कर रोये थे। यह उनका अनन्य प्रेम था हम सबसे जो कभी भुलाया न जा सकेगा। और शरीर छोड़ने के बाद भी आप इतने मेहर बान है यह उनकी दया है नही तो हम में वह प्रेम कहां।

अंतिम भेंट

पूज्य बाबू जी की अंतिम भेंट अप्रैल 1970 में पूज्य ताऊ जी से हुई थी जब कि पूज्य बाबू जी माता जी एवम मुन्नी गई थी। पूज्य बाबू जी को देखते ही आप प्रेम विह्वल होकर अश्रुपात करने लगे थे और बहुत देर बाद पूज्य बाबू जी का हाथ छोड़ा और तब कहने लगे 'श्याम लाल' अब तो मुझे किसी का भरोसा नहीं रहा यहां तक कि मुझे अपने आप पर भी भरोसा नहीं रह गया। अब तो सिर्फ पूज्यपाद लाला जी महाराज का ही भरोसा है तुम मेरी आंखिरत के लिए दुआ करना देखो। दिन्ना ओर सेठ मेरी अमानत हैं तुम्हारे पास, इनकी तालीम का बहुत ख्याल रखना जिससे पूज्य लाला जी महाराज का काम होता रहे। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम सब बहुत खुश रहो। फिर माता जी से कहा बेटी मुन्नी की शादी हो जावेगी जैसा श्याम लाल और तुम चाहती हो मेरा आशीर्वाद है पूज्य बाबू जी की इच्छा थी कि मुन्नी की शादी तय हो गयी। यह उनका ही आशीर्वाद था। पूज्य बाबू जी फूट फूट कर रोने लगे। और कहने लगे भाई साहब हम छोटे हैं हमसे अगर कोई गलती हुई हो तो क्षमा कर दें। पर पूज्य ताऊ जी ने उन्हें बहुत देर तक रोके रखा। और रोते ही रहे जब आप चलने को तैयार हुये तो ऐसे ही बिदा किया जैसे अब न मिल सकेंगे। यही आपका अंतिम दर्शन तथा मुलाकात थी। और उसके बाद आपका 1970 मई में निवार्ण हो गया।

आप पूज्य बाबू जी से तो अतुलनीय प्रेम करते थे पर हम लोग भी उनके प्रेम की हरारत से सरोबार रहते थे। उनकी मेहरबानियां, उनका प्रेम, उनकी मोहब्बत बेगरजाना यदि लिखूं, तो समझ नही पाता हूं कि क्या लिखूं और क्या छोड़ दूं। एक घटना इस प्रकार की है कि हमारी वड़ी बहन की शादी हुए बहुत कम दिन हुए थे कि पूज्य जीजा

जी डा. विश्वम्भरनाथ को टायफायड हो गया। हालत बहुत बद्दतर हो गई और आपको सरशाम हो गया उनके बड़े भाई जो डाक्टर थे इलाज कर रहे थे हालत ऐसी हो गई कि बचने की कोई उम्मीद न रह गई। पूज्य जिज्जी ने घबराकर पूज्य बाबूजी को बुलाने का आग्रह किया और पूज्य बाबू जी को तार दे दिया गया पूज्य बाबू जी को ज्यों ही तार मिला आप पूज्य ताऊ जी के पास गये आप भी काफी चिंतित हुए और कहा कि ''अभी तो नन्ही के हाथ की मेंहदी भी नही छूटी और ये परेशानी। दया करके मोहब्बत से भरकर आपने एक ताबीज लिखकर पूज्य बाबूजी को दिया और कहा ''तुम फौरन चले जाओ और वह ताबीज दाहिने हाथ में बांध देना और बायें हाथ में तुम दुआ करके ताबीज बांध देना परमात्मा चाहेंगे तो वह शर्तीया अच्छे हो जायेंगे''। पूज्य बाबूजी ने ऐसा ही किया और आप ठीक होने लगे मुसीबत टल गई। जहां तक मुझे मालुम है पूज्य ताऊ जी ने फिर किसी को इस तरह का ताबीज नही दिया यह उनकी महती कृपा थी। हमारे परिवार पर। सारे संसार को कागज बना लूं, सारे बनों को कलम और सारे समुद्र को स्याही बना लूं तब भी आप दोनों के प्रेम को नहीं व्यक्त कर सकता हूं असमर्थ हूं। क्योंकि यह हृदय की वस्तु है और हृदय के पास लिखने की ताकत नही।

हे प्रभो! ये दोनों महान सन्त जहां भी हों हम सब पर दया करें और हम आपके बताए हुए रास्ते पर अग्रसर हो यही बरदान दें।

पूज्य बाबू जी ने बड़ी श्रद्धा पूर्वक भण्डारे का एक दिन खास आपके लिए रखा जिसमें हम सब उनको अपनी श्रद्धान्जलि अर्पण करते हैं। ऐसा कहीं नही है अक्सर देखा गया है कि लोग केवल अपने गुरूदेव का भंडारा करते हैं परन्तु बाबूजी साहब की यह एक विशेषता है कि आपने भण्डारा चार दिनों का करके पूज्य लाला जी पूज्य चाचा जी साहब तथा सिलसिले के बुजुर्गो के साथ–साथ अपने प्रिय पूज्यनीय गुरूभाई पूज्य ताऊ जी का भी भण्डारा एक दिन को अपने जीवन काल में कर दिया था। इसकी विशेषता वही समझ सकते हैं जो लोग उन दोनों महान सन्तों को समझने की शक्ति रखते हैं या कुछ समझ पाये हैं। पूज्य बाबू जी साहब सर्वप्रिय थे। वह उनके व्यक्तित्व का अनुपम सौन्दर्य था जो कहीं देखने को दुलर्भ है। ऐसे महान संत की हम संतान हैं ऐसे महान पुरूष से हमारा वास्ता है। सोच सोचकर एक अजीब अनुभूति का अनुभव कर उठता हूं। आशा है कि पूज्य बाबू जी एवं पूज्य

ताऊ जी के जीवन के प्रेम को पढ़कर सभी आध्यात्म मार्ग में चलने वाले प्राणी एवं सत्संगी बन्धुजन उस प्रेम का अनुभव करेंगे।

पूज्य ताऊ जी का एक पत्र जो पूज्य बाबू जी ने शायद बतौर याददाश्त रखा है उसकी नकल यहां देना अपना धर्म समझता हूँ।

खत 4 – 1 – 36

बिरादर अजीज डा. श्याम लाल जी साहिब

परमात्मा आपको अपनी नेमतो से सरफराज करे। मुहब्बत का भरा हुआ खत आया। दिल को तरावट का बाइस हुआ। मेरी मुद्दत से ख्वाहिश थी कि आपसे मिलूं, इसी वजह से किसी खत का मशहर जवाब नहीं दिया। इरादा कर रहा था कि अयाम दशहरा में जरूर नियाज हासिल करूँगा। लेकिन क्योकि उसमें ''मैं'' लगी हुई थी, पूरी नहीं हुआ, दूसरे परमात्मा को मंजूर था कि नये असहाब को आप ही शुरू करायें। मेरा इरादा था कि 20 तारीख को आऊं लेकिन उधर तो अजीज महाराज कृष्ण तशरीफ नहीं लाये और उधर आप का खत आ गया। इरादा 28 तारीख के लिए मुल्तवी (रद्द) कर दिया गया, फिर आपका तार आ गया अगरचे वालिद साहब की तबियत खराब थी, लेकिन मुकम्मिल इरादा कर लिया था कि जरूर पहुंचूँगा, लेकिन उसी रोज दफअतन उनकी तबियत ज्यादा खराब हो गई। उनको इन्फ्लून्जा के साथ निमोनिया हो गया था। मजबूरन 4 बजे शाम को इरादा तब्दील करना पड़ा और आपको तार दे दिया। मुझको आपके व दीगर भाइयों के तकलीफ का बहुत अफसोस है और माफी (क्षमा) चाहता हूँ। ईश्वर को अगर मंजूर है तो जल्दी ही फिर हाजिर होऊंगा। गुरू महाराज का कर्जा अदा करना है और फिर दुनिया पीछा नहीं छोड़ती बाज मर्न्तबा तो यह तबियत चाहती है, सबको छोड़ कर चल दूं, लेकिन फिर फर्ज की अदायगी का ख्याल आ जाता है। देखिये कब आजाद होता हूँ। लेकिन ऐसा न हो कि शरमसार जाना पड़े। परमात्मा तेरे हाथ लाज है रहम कर। आपको खत पढ़कर इतमिनान हुआ कि आपसे लोगों को फायदा पहुंच रहा है और ईंशाअल्लाह पहुंचेगा। आपको इजाजत किबला लालाजी महाराज साहब की जानिब से है न कि मुझ आसी की जानिब से जिसको आप खुद महसूस करते होंगे। मेरे लिये भी दुवा फरमावें। क्या अजब, मुझ पर भी रहम हो जावे ।

जब आप अजीज बिट्टन बाबू की शादी में तशरीफ लावें तो जरूर दर्शन दें। पेशकार साहब की बारात 19 तारीख की शाम को रूखशत होगी, अगर हो सके तो दो एक–घन्टे के लिए आ जायें बरना जैसा मौका हो। अजीज राजे (पूज्य ताऊ जी के छोटे भाई) को जगह मिल गई और उन्होंने 1 दिसम्बर से काम ले लिया। इतमीनान फरमावें। बाबू रधुनाथ सहाय जी की लड़की की चोरी का हाल मालूम होकर रंज हुआ, परमात्मा उनको शान्ति दें। शकुन्तला बोबो की शादी 15 फरवरी को पुख्ता हो गई। अभी तक मैने मेरठ नहीं लिखा है, वजह यह है कि मेरे पास एक पैसा नहीं है और न मुझको कर्ज मिल सकता है। दुकान का तकरीबन 1500 रूपये वसूल करना है लोगों का वायदा जनवरी के बाद अदा करने का है। जब रूपया आवे तो कोई काम करू और यह भी इरादा जरूरी है कि पहले जरूरी सामान फराहम करूँ जेवर न बनवाऊं। जेवर उतना जरूरी नहीं जितना और काम। जनाब किबला लाला जी महाराज ने अपने हिदायतों में रसम न्यौता के लिए बहुत जोर दिया है। मुझको दो–तीन रोज से बराबर इसका ख्याल आ रहा था लिहाजा इसको जारी करने का मैंने इरादा कर लिया है। फिलहाल 18 आदमी ऐसे तजबीज किये हैं जिनसे इनके लिए कहूंगा और उम्मीद है कि वे एक रूपये की रकम के लिए यह ख्याल नहीं कर लेंगे कि मैने रूपया इक्ट्ठा करने के लिए ऐसा किया है और अगर ऐसा ख्याल करें तो जो आदमी एक रूपया खर्च नहीं कर सकता उससे और क्या उम्मीद की जा सकती है। आप की तरफ से सत्संगियों को मैने नहीं लिखा है। अगर किसी को आप इस काबिल समझते है तो तहरीर फरमाये। वरना कोई जरूरत नहीं। जनाब किबला चाचा जी साहब वा बाबू बृजमोहन लाला जी को भी तहरीर पेश कर दिया है कि अगर वे मुनासिब ख्याल फरमाये तो जारी कर दें। फिलहाल पेशकार साहब की हमशीरा और बिट्टन बाबू जी की शादी दरपेश है। अगर मेरी राय से आप मुताफिक (सहमत) हों तो तहरीर फरमायें ताकि आप की जानिब से 100/– रूपये पेशकार साहब को दे दूँ आपका रूपया मेरे पास है। आपकी वाइफ (धर्म पत्नी) स्वर्गवासी को मैने एक रोज बहुत खुश देखा। वह बहुत श्रद्धालु तबियत से बात चीत कर रही है। परमात्मा उनको खुश रखे और अपनी राह पर रखे। आप शादी के बारे में परेशान न हो परमात्मा खुद इन्तजामकार है। मैं क्यों फिक्र करूं और परेशानी मोल लूं। बाकी खैरियत है।

दुआगो

श्रीकृष्ण

परम पूज्य बाबू जी का पारमार्थिक दृष्टिकोण एवं शिक्षा

प्रत्येक संत जो प्रभू का कार्य करने हेतु ईश्वर द्वारा भेजे जाते हैं उनमें एक विशेषता अवश्य रहती है जो जन साधारण से प्रतीत होते हुए भी उनसे कुछ भिन्न होते हैं। और यही असाधारण मनुष्य महात्मा संत सतगुरू के नाम से जाने जाते हैं। संत सतगुरू ईश्वर तथा उनके गुणों का प्रचार करके कुछ लोगों को उसके राह पर डाल कर अपना कार्य पूरा कर उसके धाम वापस चले जाते हैं। ईश्वरीय नियम है कि संसार बिना इनके ठहर नही सकता। लाखों करोड़ो में एक सच्चा साधू, सतगुरू बैठा है जो इस पृथ्वी को संतुलित किये हुए हैं। हर काल में ऐसे महापुरूष पृथ्वी पर आते हैं और परमात्मा को प्राप्त करने की राह एक नये तरीके से बता कर लोगों को उत्साहित करके उनको राह पर डाल देते हैं। परमात्मा एक है, उसको पाने का तरीका भी निश्चित एक है। पर जैसा समय होता है, जैसे मुनष्य की शारीरिक स्थिति होती है, जैसा वातावरण होता है उसको दृष्टि में रख कर संत फेरबदल कर देते हैं। वास्तव में मनुष्य की प्रकृति एक चीज पर बहुत देर तक ठहर नहीं पाती है। और वह तब उसमें रूचि लेना कम कर देता है। संतो ने उनके ही अनुसार उसमें कुछ फेर बदल कर परमात्मा के पथ पर चलने वाले के लिए रास्ता सरस कर देते हैं। इसी क्रम के कारण कभी बौद्ध, कभी जैन तथा सूफी या संत मत में जन्म लिया। किसी ने ध्यान धारण, किसी ने मंत्र जाप, किसी ने दया दान की प्रधानता रख दी और फिर एक नये धर्म को पाकर लोगों की रूचि उधर बढ़ जाती है। इसी प्रकार प्रत्येक बुजुर्ग या संत में अपना खशुसियत या विशेषता भी होती है पिछले पांच सौ वर्षो में जो संत गुजरे हैं उन्होंने अपनी दया करके इस रास्ते को काफी सरल बना दिया है। जिससे लोग इस दुखित वातावरण, निर्बल शरीर तथा कम आयु वाले जीवन काल में भी मालिक तक पहुंच सके।

इस परमार्थ के रास्ते पर चलने के लिए परम पूज्य बाबू जी ने जो अपना अनुभव, तालीम या निर्देश लिखे हैं वह लिख कर इस रास्ते की गूढ़ और महत्वपूर्ण बातों से सभी प्रेमी भाइयों को अवगत कराना चाहता हूँ। यह वही लाल डायरी है जिक्र आपने अपने जुबान मुबारिक से

सत्संग में कई बार किया था। इसी डायरी से उन्ही के शब्दों में उन्हीं के द्वारा इस प्रकार लिखा है।

हम सब साहबान यहां दूर–दूर से अपना वक्त और रूपया खर्च करके हर साल इकट्ठा होते है, कुछ साहबान ऐसे भी हैं कि जो सिर्फ हम लोगों के दोस्त हैं। वो सत्संगी भाइयों से जानना चाहते हैं कि आखिर यह सब लोग हर साल इस मौके पर क्यों इस कदर अपना रूपया और वक्त खर्च करके जमा होते हैं। अक्सर साहबान ऐसे भी मिलेंगे जो हम सबसे यह पूछेंगे कि साहब आपके वहां जाकर इकट्ठा होने का क्या मकसद है और क्या करते हैं। जवाब में आम तौर हम यही कह देते है कि वहां पर हम सब लोग अपने गुरू महराज के स्थान पर इकट्ठा होकर पूजा करते हैं। अव्वल तो जमाने में आजकल लब्ज पूजा ही सुन कर ही लोग बहक जाते हैं और फिर गुरू का नाम सुनते ही चिढ़ हो जाती है और होना भी चाहिये क्योकि ज्यादातर मिसालें ऐसी साबित हुई है जहॉ लोग को आडम्बर मिला धोखा हुआ और सिवाय कोरेपन के कुछ न मिला। लोगों ने पूजा को रूपये इकट्ठा करने का जरिया समझा, ज्यादातर मजमें ऐसे ही मिले। इसमें लोगों का और पब्लिक का कोई कसूर नही है। बल्कि कसूर उन साहबों का है जो अपने को किसी मजहब का पैरोकार व पीर समझकर उसकी आड़ में यह सब आडम्बर करते है और दरअसल में रूपया, इज्जत या अपना नाम पैदा करने का ही केवल उनका ख्याल होता है और ये ही उनका ध्येय होता है, असलियत का कहीं वहां जिकर भी नहीं है, उनको कोई सिद्धि या शक्ति हासिल हो गई और योगी या महात्मा के नाम से मशहूर हो गये। जब तक आप पूजा नही करते आपसे कोई कुछ नही कहता जिस रोज से आप पूजा करना शुरू कर देते हैं उसके बाद कोई भी जरा सी गल्ती आपसे सरजद होती है या धर्म शास्त्र के खिलाफ कोई बात आप करते हैं उसी वक्त से आपके लिए पब्लिक का कोड़ा तैयार है और आवाजें आने लगती है देखिए साहब बड़े पुजारी बनते है और इनके आचरण ऐसे है, गोया आपने पूजा करने का नाम लिया नही कि फौरन ही लोग आपकी जांच पड़ताल शुरू कर देते हैं। पूजा न करने वालों की समाज में कोई सजा नहीं लेकिन पूजा करने वालो की सजा फौरन मौजूद है। इस लिए मेरे ख्याल से जहां तक हो पूजा का जिकर करना ही मुश्किल है और आम तौर पर करना भी नही चाहिए। अब जरा और सोचिये कि बदकिस्मती से आपने किसी से पूजा का नाम ले लिया फिर

ये कहा कि हम फला जगह पूजा करने जाते हैं और वो हमारे गुरू है, इत्तफाक से गुरू में दुनियादारी और धर्मशास्त्र के मुताबिक पब्लिक के निगाहों में कोई कमी है या मिलती है तो आप यह समझ लीजिये कि आपने और हमने उस लब्ज पूजा को ही दूसरों की निगाहों में ही बदनाम नही किया बल्कि जिन साहब के पास आप जाते हैं वह भी बदनाम हुए और सारी संस्था बदनाम हुई। और वह बुजुर्गान दीन जिन्होंने उस पाक परवर दिगार ईश्वर की रहमतों का जिकर अपने उन बन्दों से जिन पर उसका भरोसा था कि वह उसका नाम उन गिरे हुये बन्दों तक पहुँचा दें उन सभी को बदनाम किया। गरज की लब्ज, पूजा और पूजा करने वाले और पूजा सिखाने वाले और जिन बुजुर्गो के रहमत और करम से ये पूजा हम गिरे हुए बन्दो पर जाहिर हुई सबकी इज्जत रखने के लिए लब्ज पूजा को मुँह से निकालने से पहले आपको अपने को इस काबिल बना लेना पड़ेगा कि कम से कम छोटी छोटी नही तो बड़ी बड़ी ऐसी बातें जिनसे जनता पर असर पड़े जरूर एहतिहात करनी पड़ेगी, और दूसरे लोगों के मुकाबले में अपनी रहनी सहनी और तर्जे अमल और अपना इखलाक व व्यवहार ऐसा करना पड़ेगा कि लोग पूजा को, उस पूजारी को, उस संस्था को, हकीर (गिरी) नजरों से न देखें। अगर आप में वो बुराइयां भी मौजूद हैं जो धर्म शास्त्र के खिलाफ हैं और आप अपने को पुजारी भी बतलाते हैं और फिर ये भी कहते हैं कि आप अपने गुरू के पास भन्डारे में फलां जगह जा रहे हैं, तो नतीजा यह होगा कि पूजा आप खुद और आपका गुरू का गुरू, सब जनता की निगाह में हंकीर और भद्दी नजरों से देखें जायेगें। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि पूजा करने वाला तथा पूजा सिखाने वालों के आचरण, सदाचार बहुत उच्च कोटि के होने चाहिये। यही नहीं इस संस्था और सोसाइटी के हर व्यक्ति के आचार विचार तथा व्यवहार अति उत्तम होना चाहिये, यदि अति उत्तम न भी हो तो साधारण व्यक्ति के मुकाबले अच्छा जरूर होना चाहिए। यही वजह है बुजुर्गो ने दीन ने इस बात की बहुत एहतिहात रखी है कि जिसको वो गुरू पदवी दे उसकी सब तरफ से खूब अच्छी तरह जाँच लें कि वह सख्श किधर ही से (चरित्र) किसी किसम की कमी तो नही रखता है और सख्त से सख्त इम्तहान लेते हैं। जिसका गुमान हर सख्श को और हर प्राणी को नही हो सकता। बुजुर्गगान गुरू पदवी देने से पहले इस बात को अच्छी तरह से जांच कर लेते हैं कि सख्श, भूख, प्यास, जिल्लत समाज में बेइज्जती रूपये की कमी, औलाद की

तरफ से दुःख गरज कि हर तरह से जब वह इम्तहान में पूरे उतरे उस वख्त उनको गुरू पदवी दी। यह सब इसलिये कि लब्ज पूजा जो उस पाक परवर दिगार के नाम से ताल्लुक रखती है। और उसके बाद उन बुजुर्गों के नाम से, जिनके जरिये से उस पाक परवर दिगार की तरफ से पहला इजहार अपने बन्दों के लिए हुआ, बदनाम न हो। यह एहतिहात ऊपर से बुजुगों ने की ताकि जो लोग उनके पास आकर बैठे, उस पाक परवर दिगार का वैसा ही नेक असर पहुँचे जो असल धार से आती है। एक ऐसी ही मिषाल है जो काबिले जिक्र है कि कोई बुजुर्ग परम धाम को सिधार गये उनका लड़का उनकी जिन्दगी में उनसे इस विद्या को हासिल न कर सका। उनकी मौत के बाद लड़कों को इस विद्या को जानने की ख्वाहिस हुई। लड़के ने तलाश करके यह पता चलाया कि उनके वालिद के खास शिष्य फलाँ जगह रहते है। लिहाजा उनके पास पहुंचे। उन्होने गुरू की औलाद को अपने यहाँ पाकर बड़ी इज्जत की। लड़के को ख्वाहिश जाहिर की कि वह इल्म जो मेरे वालिद ने आपको सिखाया था उसको मैं भी हासिल करना चाहता हूँ। चुनान्चे उन्होंने उस लड़के से कहा कि मैं आपको सिखाऊंगा और चीज भी आपकी है मुझ पर यह अमानत आपके वालिद के जरिये दी गई है आप मुझसे ले लें। साहबजादे काफी सरल थे और काफी आराम की जिन्दगी बसर की थी। वहाँ पहुँचने पर उनको जो पहला इम्तहान देना पड़ा वह यह था कि सादा जिन्दगी खुष्क रोटी, और नौकरों की तरह से रहना कोई पुरसाहाल ही नहीं था। कहां रईसों की जिन्दगी, कहां नौकरों जैसी जिन्दगी, दुखी बहुत हुए मगर बरदाश्त किया। जब आपने देखा कि यह सब बरदाश्त कर लिया तो कुछ रोज बाद घर की मेहतरानी को यह हुकुम दिया कि यह साहब जो पूजा करने के ख्याल से यहाँ रहते है। उनके ऊपर एक टोकरी पखाना डाल देना और जो वह कहें वो हमको बता देना। मेहतरानी ने ऐसा ही किया उन्होंने मेहतरानी को सैकड़ो गालियां दीं और जब साहबजादे ने घर जाने की ख्याहिश जाहिर की तो बुजुर्गान ने कहा अभी और साल छः महीने रहिये। यह इम्तहान गुस्सा और जज्ब जांच करने का था। फिर इसी तरह मेहतरानी ने उसके ऊपर दोबारा पखाने का टोकरा डाल दिया। दूसरी मर्तबा वह मेहतरानी पर गुस्सा तो हुए पर कहा कुछ नहीं। पर आखिरी बार मेहतरानी से कहने लगे कि तेरे हाथों में चोट तो नहीं आई देखिये कितना फर्क हुआ कि बरदाश्त भी आ गई, गुस्सा खत्म हो गया। और कितने नम्र तथा अधीन

हो गये। गरज कि सब तरफ से इम्तिहान लेकर देख लिया कि अगर यह साहब अब दूसरों को पूरा सिखायेंगे तो अच्छा असर पड़ेगा। तब हुकुम दिया कि जाओं और खुदा के नाम का बन्दों में प्रचार करो। इस मिसाल के यहां लिखने से मेरा मतलब सिर्फ यह था कि हर बुजुर्ग ने जिस सख्श के जिम्मे सिलसिले को चलाने का और तालीम का भार दिया है, उसको पूरी तरीके से खूब जाँच लिया बल्कि यह एहतियात और की, कि आपने जांच किये हुए व्यक्ति को उस जमाने के दूसरे बुजुर्गो से तस्दीक कराई कि कहीं हमारी जांच गलत तो नहीं है। उसके बाद ही इजाजत सिलसिला व तालीम दी है और फिर हर वक्त इस उम्मीद पर कि जो बुजुर्गान गुजर गये हैं। उनके भरोसे पर हुकूम तालीम दिया है। अब आप खुद गौर कर लीजिए कि सिर्फ इस ख्याल से कि लब्ज पूरा बदनाम न हो या जिसके पास आप सीखने जाते हो, उसके जरिये बुजुर्गानदीन और ईश्वर का नाम बदनाम न हो किस कदर एहतियात ऊपर से रखी गयी है। अब हमारा और आपका भी फर्ज यह है कि जब ऐसे बुजुर्गो के खिदमत में जावे तो यह खूब अच्छी तरह ख्याल कर लें कि हमारे आचरण धर्मशास्त्र के मुताबिक ऐसे हो कि जो आपकी, आपके सिखाने वाले की और उसके गुरू की और संतों की इज्जत रखें यह कोशिष शुरू से ही करनी होगी जो कि बाद में सत्संग में और अच्छी होती जायेगी।

बुजुर्गो ने इसीलिए यहाँ एक एहतियात रखी है कि सत्संग बराबर कराते हैं तालीम करते रहते हैं और अपनी सोहबत से हमेशा फैजयाब करते रहते हैं और फिर उस मालिक की रहमत का इंतजार करते रहते हैं। जब चार छः बरस सोहबत के असर से सीखने वाला इस योग्य हो जाता है कि अपना आचरण इस काबिल बना लें कि पब्लिक पर उसकी रहनी सहनी का बहुत अच्छा असर पड़े, यदि अच्छा नहीं तो बुरा असर भी नहीं पड़ें। जब व्यक्ति को एकताद हो जाता है और उसके आचार विचार शुद्ध हो जाता है और आचरण अच्छा हो जाता है तब उसे दीक्षा दे कर शिष्य बना लेते हैं, इससे पूर्व केवल सिखाते रहते हैं। बुजुर्गो ने यहां तक एहतियात रखा है कि यदि तालीम देने वाले का सदाचार एवं आचरण बाद में गिर जाता है या उसमें कोई ज्यादा तरक्की नही होती है जिसका सोसायटी पर बुरा असर पड़ता है तो तालीम की

इजाजत वापिस ले लेते हैं ताकि सोसायटी पर और सिलसिले पर इसका बुरा असर न पड़े।

यह प्रसंग पूज्यनीय बाबूजी ने बहुत उत्तम आचरण, बहुत ऊँचे सदाचार के संदर्भ में लिखा है क्योंकि वह कहते थे कि यह तो ठीक है कि सीखने वाले में कुछ कमी हो (वह भी धर्मशास्त्र के विरूद्ध न हो) परन्तु सिखाने वाले का आचरण बहुत उत्तम हो बल्कि आइडियल होना चाहिए उसी के संदर्भ में आप अपनी डायरी में बहुत जोर देते हुये लिखा है।

(डायरी से) सोहबत का असर

देखने में यह आया है कि जो शख्स जैसा सोहबत अख्तियार करता है वही असर अपने ऊपर ले लेता है, मसलन चोर के पास बैठने वाला चोरी का ख्याल करेगा, जुआरी के पास बैठने वाला जुआ का ख्याल करेगा और जुआरी बनने की कोशिष में रहेगा। व्यभिचारी के पास बैठने से बुरे ख्याल पैदा होंगे। गरज जिस सोहबत में इन्सान बैठता है वह उसी असर को कबूल करता है। यदि जल्द नहीं तो आहिस्ता–आहिस्ता कर लेगा लेकिन उसका असर जरूर होगा चोर जुआरी या व्यभिचारी की सोहबत में बैठने वाला आगे पीछे चोर, जुआरी या व्यभिचारी बनेगा। जरा गौर कीजिए ऐसा क्यों होता है। एक शख्स अच्छा है और दूसरा सख्श उसकी सोहबत अख्तियार की है वह चोर है। चोर हर वख्त यह सोचता रहता है कि कहाँ से चोरी करूँ और माल लाऊं। उसने इस खयाल को हर वक्त सोचने के कारण काफी मजबूत बना लिया है। शुरू में ख्याल हुआ फिर इस ख्याल ने एक बीज रूपी दरख्त बना लिया और वह दरख्त इतना मजबूत हो गया कि जड़, शाखें, तना व पत्ते सब उसमें पैदा हो गये मतलब एक जाल सा बन गया। अब दरख्त का एक साया बन गया जो इस साये में जायेगा साये से ठंड लेगा और ठंडा होगा मतलब उसका असर लेगा। इसी तरीके से जुआरी, शराबी, व्यभिचारी अपना ख्याल मजबूत करके एक इतना जबरदस्त ख्याली साया पैदा कर देते हैं। कि वो साया उस सख्श के साथ हर वक्त रहता है और जहां जहां वह सख्श जाता है वह साया अपना असर करता है, इसको यों कह सकते हैं कि हर सख्श का (सरकिल आफ थॉट) ख्यालात का दायरा होता है। जैसा सख्श होगा वैसा ही उसका

ख्यालात का दायरा होगा और वैसे ही उसका साया रहेगा। उस साये का असर औरों पर उसके ही ख्यालात का पड़ेगा।

एक मोटी मिसाल है जिससें इंसान आसानी से यह समझ सकता है कि फलाँ शख्स फलाँ तबियत का व ख्याल का है। एक वख्त आप नेक तबियत लेकर बैठे हैं दूसरा सख्श आपके पास आता है और उसके ख्यालात का असर आप पर पड़ा आपकी तबियत बदल जाती है। अगर आप जरा भी कमजोर साबित हुए तो उसी शख्स के ख्यालात आप पर असर कर लेंगे। चाहे वह थोड़ी ही देर ही क्यों न हो। अगर आप खुद मजबूत हुए तो वह ख्यालात दो चार मिनट में खत्म हो जायेंगे यदि आप कमजोर साबित हुये तो वह ख्यालात बहुत गहरा असर ले जायेंगे। उदाहरण एक मर्तबा हल्के जाड़े का मौसम था मैं रेल में सफर कर रहा था उसी डिब्बे में एक डिप्टी कलेक्टर साहब भी थे। मुझे काफी ठंड लग रही थी। इन्सानियत के नाते उन्होंने अपनी रजाई मुझे ओढ़ने को दे दी। रजाई का ओढ़ना था कि मुझे बुरे ख्याल आने लगे। तबियत शराब पीने की होने लगी। इस ख्याल ने बहुत परेशान किया। मै घबड़ा कर उठ गया। और दरूद शरीफ का जाप करने लगा और उसी समय रजाई नीचे सरक गई। जिस्म से रजाई का हटना था कि तबियत ठीक हो गई। ख्यालात संभल गये। पूछने पर पता चला कि वो रोज शराब का इस्तेमाल करते थे।

अपने एक भाई ने भी इसका मुझसे जिक्र किया वो सफर में थे, जैसे ही रेल के डिब्बे में सवार हो कर बैठे कि एकाएक निहायत बुरे ख्याल पैदा होने लगे और इस हद तक उस ख्याल का जोर हुआ कि वो ख्यालात जबरदस्त पड़ रहे थे। जब सफर खत्म हुआ तो वह उतर गये। उसके एक दो घण्टे बार वो बुरे ख्यालात खत्म हो गये। तहकीकात करने पर मालूम हुआ कि जिस जगह पर वह भाई बैठे थे वहां पर एक भद्दे ख्याल लिये हुये शख्स बैठा और उसी के ख्यालात का यह सारा असर था, जो कुछ देर के लिए मजबूत पड़ा, बाद में मेरे ख्यालात के मुकाबिले में दो एक घण्टे में उसका असर खतम हो गया। इसमें भी यह देखने में आया है कि मर्द से औरत का ख्याल ज्यादा मजबूत पड़ता है। गोकि मर्द के ख्याल में मुश्तकिलपन (स्थाई) होता है और औरत के ख्याल में आरजीपन (अस्थाईपन) होता है मर्द जिस ख्याल को लेकर बैठेगा वा मुश्किल होगा, चाहे कमजोर हो। औरत जिस ख्याल को लेकर

बैठेगी वह मुश्किल न होगा। जो थोड़ी देर के लिए मजबूत पड़ेगा। वह सोहबत का एक अंग है जो बुराई दिखलाने वाला है।

सोहबत का दूसरा अंग भी है जो अच्छाई दिखलाने वाला है जिसको अच्छी सोहबत कह सकते है जैसा कि ऊपर बयान किया गया है एक शख्स बुराई को लेकर बुरे ख्यालात का वायुमंडल बना लेता है इसी तरह अच्छे ख्यालात वाला शख्स अपने अच्छे और परोपकारी ख्याल से अच्छे ख्यालात का वायु मण्डल बना लेता है। उसे साधु कह सकते है। जो जितना जबरदस्त(ऊंचा) साधु होगा उतना ही मजबूत वायु मण्डल अपने चारों तरफ बना लेगा। मतलब यह है कि उस साधु के अच्छे विचारों का असर उस सख्श पर पड़ेगा। ख्यालात का असर इस बात पर निर्भर करता है कि वह साधु किस दर्जे का है और बैठने वाला उस साधु के पास कितनी देर बैठता है कितनी सोहबत उठाता है। जितना सोहबत उठायेगा उतना ही उस साधु के वायुमण्डल से ज्यादा फायदा उठायेगा और फैजयाब होगा साध के पास बैठ कर जो अच्छा वायुमण्डल का असर लेकर आये उसे कायम रखना भी होगा, अगर आप फिर किसी बुरी सोहबत में पड़ गये तो उतना ही फिर भद्दापन आ जायेगा। अच्छे ख्यालातों का असर या तो कम हो जायेगा या खत्म हो जायेगा। फिर दोबारा अच्छी सोहबत की जरूरत पड़ेगी। इसमें भी हर साधु या संत में कोई न कोई खशुशियत होती है, इसलिए अक्सर यह देखा गया है कि जिसमें वो खशुशियत होती है, उसका वास्ता देकर ईश्वर से दुआ मांगते है। जो लोग इस तरीके से वाकिफ है उनको फायदा भी होता है लेकिन हर खास और आम को जो फायदा होता है वह उनके अपने ख्याल के मजबूती पर ज्यादा निर्भर करता है। मुमकिन है कि यही वजह है कि अदबन (आदर की दृष्टि) और बुजुर्गो की खशुसियत का ध्यान देते हुये आपने सिलसिले में सिलसिले के बुजुर्गो को रोज याद करने को कहा है वह सिर्फ इस लिए है कि जो खशुसियत (विशेषता) अपने सिलसिये के बुजुर्गो में मौजूद थी उसका अंश हमको भी मिले इसलिये अपने सिलसिले में शजरा को रोजाना पढ़ने पर बहुत जोर दिया है, लेकिन बताते उन्हीं लोगों को हैं जिनको सिलसिले के बुजुर्गो पर पूरा एतकाद हो वरना टाल जाते है। मैं इस मिसाल से जरा और साफ कर दूँ। हमारे गुरूदेव परम पूज्य लाला जी महाराज में मोहब्बत और इखलाक खशुशियत लिये हुए था चुनाचें आप देखेंगे कि जो लोग पूज्यनीय लाला

जी महाराज के वख्त के हैं, एक मोहब्बत लिये हुए जरूर है और जहां भी जाते है उसी मोहब्बत को तलाश करते है। जिस जगह उनको वैसा मोहब्बत मिलती है उसी जगह ठहरने की कोशिश करते हैं। जिस तरह पूज्यनीय लालाजी महाराज में मोहब्बत और इखलाक की खसुशियत की ज्यादती थी उसी तरह हर संत या साधू में कुछ न कुछ खशुशियत होता है और शिष्य में 'उस खशुशियत का अंश भी असर करता है। नेक वायु मंण्डल का असर तो होता ही है एक दिन फिर ऐसा आता है कि शिष्य या जिज्ञासु साधु के पास बराबर बैठता है या सोहबत उठाता रहा है तो वह उसी जैसा हो जाता है। अगर संत या साधु अपनी मंजिल मकसूद तक पहुँच चुका है और शिष्य बराबर पुरूषार्थ करता रहा तो संत उसे सत् की जगह ले जाकर बैठा देता है और जिन्दगी जो आज माया के साथ थी वह सत्य की या असलियत की ओर पलट जाती है। इसको ही आप सोहबत का दूसरा अंग अच्छाई की तरह कह सकते हैं। दूसरे लब्जों में सत्संग भी कह सकते है। सत्संग में हम सब लोग इस अच्छे वायु मण्डल से फायदा उठाने के लिये ही इकट्ठे होते हैं और साल में दो चार जगह भण्डारा इसी ख्याल से होता है कि हम लोग जल्दी जल्दी उस वायु मण्डल से फायदा उठा सकें। सत्संग में जो गैप या इन्टरवल होता है उस बीच में मुमकिन है कि हमारे ऊपर बुरी सोहबत का असर पड़े और हमारे नेक ख्यालातों पर धब्बे आ जायें। इन धब्बों को साफ करने तथा आइंदा नेक ख्यालात को मजबूत बनाने के लिये ही हम लोग बराबर सत्संग में इकट्ठा होते हैं और परमार्थ के लिये यह अति आवश्यक है कितना ही अच्छा अभ्यासी क्यों न हो जब तक बार बार वह सत्संग नहीं करता तब तक हृदय में निर्मलता नहीं आती। इसी कारण हमारे सिलसिले में गुरू का काम धोबी या भंगी का बताया गया है क्योंकि वह सत्संगी भाईयों के बुरे ख्यालात को हटाकर उनके हृदय में अच्छे ख्यालात का असर भरते है और उसे मजबूत भी करते है। यदि सत्संग के इस वायु मण्डल की सोहबत का असर लेकर अपना वायुमण्डल भी अच्छा बना ले तो दूसरों पर भी उसका बड़ा अच्छा असर पड़ेगा। इस तरह सत्संग या उस सोसाइटी के सभी लोग अच्छे विचारों के हो जायेंगे। और सत्संग का संगठित करने का बेहतर तरीका यही है कि पहले आप किसी बुजुर्ग की सोहबत से खुद वैसे ही बन जायें या उन्हीं की तरह बन जायें उसके बाद अपनी सोहबत से दूसरों को भी वैसा ही बना लें, जरा गौर करें यह कितना बड़ा उपकार है। यही कारण

था कि परम पूज्य बाबू जी यह सदा दोहराया करते थे कि (वी गुड एण्ड डू गुड) पहले अपना भला करो फिर दूसरों का भला करो। यह काम आप चुपचाप कर रहे हैं कि अपने अच्छे ख्यालात से वायु मण्डल को साफ कर दिया जिससे आपका अपना भला हुआ और अब जो इस वायु मण्डल में दाखिल होगा वह भला और नेक ख्याल का बनेगा।

सिर्फ हवा ही नेक और बुरी सोहबत का असर नहीं लेती बल्कि जमीन भी असर लेती है। आपने घूमते फिरते अक्सर यह देखा होगा कि जहां–जहां संतों ने या साधुओं ने बैठ कर रियाजत या तपस्या की है या जहां वह रहे हैं या जहाँ उनकी समाधि है वहां पहुँचने पर तबियत में जरूर एक इनकलाब परमार्थी ख्याल पैदा होता है और तबियत खुद ब खुद ईश्वर की तरफ रजु हो जाती है यही वजह है कि हिन्दुओं में लोग तीर्थो में और मुसलमानों में मजारो पर हज पर जाते हैं और यह कहते सुना गया है कि यहां ऐसी हालत क्यों न हो यहां फलां बुजुर्ग या साधू रहते थे। इसी तरह अगर कोई बुरा आदमी वहां रहा है तो उस जमीन में बुराई मालूम होती है।

सोहबत व ख्याल का असर हवा या जमीन पर ही नही पड़ता बल्कि कपड़े तक इस असर को कबूल करते हैं। आप देखिये एक नेक ख्याल के आदमी का कपड़ा और एक बुरे ख्याल के आदमी का कपड़ा अपने जिस्म पर रखकर देख लीजिए, फर्क का अंदाज आपको खुद मिल जायेगा और इसीलिए संतों ने अपने कपड़े और अपने बिस्तर के अलग इस्तेमाल के लिये जोर दिया है। गरज की सोहबत का असर बहुत गहरा होता है। अच्छी सोहबत से आदमी अच्छा और बुरी सोहबत से आदमी बुरा हो जाता है। जैसी सोहबत वैसा असर और वैसा ही इन्सान बन जाता है।

हलाल की कमाई– परमार्थ के लिये हक और हलाल की कमाई ऐसे ही जरूरी है जैसे इन्सानी जिन्दगी के लिये हवा और पानी। हर एक काम या मजहब के बुजुर्गो ने इस पर बहुत जोर दिया है, क्योंकि हक और हलाल की कमाई का खाना खाने से ही अच्छे विचार बनते हैं। पूज्य बाबू जी तो अक्सर यह कहा करते थे कि एक या दो वख्त खाना न मिलने से आदमी भूखा नहीं मर सकता लेकिन उसको हराम की कमाई का खाना नही खाना चाहिए क्योंकि बुरे कमाई का खाना ख्यालात

को महीनों खराब कर देता है। इस सम्बन्ध में आप अक्सर एक कहानी सुनाया करते थे वह इस प्रकार है।

एक बार एक बुजुर्ग कहीं चले जा रहे थे। और ईश्वर के नाम का जाप कर रहे थे। इसी बीच आपकी निगाह किसी चीज पर पड़ी और आपका जाप रूक गया पीछे से एक फकीर आ रहे थे उन्होंने आकर उन बुजुर्ग के दो – तीन थप्पड़ मारे। आप पलटे और आपने उन बुजुर्ग से फरमाया कि मियां मेरी समझ में तो आ गया कि मुझे थप्पड़ क्यों पड़े, क्योंकि मेरा ध्यान दूसरी तरफ को चला गया था और मैं अल्लाह के नाम को भूल गया था और इसी लिए उन्होंने आप के जरिये ये थप्पड़ लगवाये। मैं आपका बड़ा एहसानमन्द हूँ कि अपने थप्पड़ लगाकर मुझे फिर से अल्लाह की याद दिला दी और अपना गलती का एहसास करा दिया। मगर आप भी इस पर गौर कीजिये कि अल्लाह ताला ने आपको ही इस काम के लिए क्यों चुना। यह भी उच्च कोटि के फकीर तो थे ही गौर किया और मालुम हुआ कि उन्होने 3 दिन पहले एक सुनार के यहां भोजन ग्रहण किया था वह भोजन खराब कमाई का था तथा उसको बनाने वाला भी बुरे विचार का था। अब गौर कीजिये कि हराम की कमाई तथा बुरे विचार से बनाया गया खाने का कितना बुरा असर तीन दिन बाद तक रहा। उन्होंने उन बुजुर्ग से माफी मांगी तथा वजह बताई और आइंदा किसी के यहां भोजन न करने की कसम खाई।

परमार्थ के लिए केवल हक हलाल की कमाई का खाना खाने से गहरा प्रभाव तो पड़ता ही है। परन्तु खाना बनाने वाले के आचार–विचार का असर पड़ता है। साथ ही साथ खाना किस जगह बनाया गया है और किस जगह खाया गया है। खाते समय कोई शख्स बुरे ख्याल का तो मौजूद नहीं है। इन बातों की एहतियात भी बहुत जरूरी है। इन्ही कारणों से हमारे हिन्दू धर्म में चौके की अलग व्यवस्था होती थी और खाने को बनाने वाली या तो घर की स्त्रियाँ या फिर ब्राह्मण ही रहते थे। खाना खाने की जगह को पानी से साफ कर परमात्मा का ध्यान करके ही खाया जाता था। ताकि खाये गये खाने से शुद्ध विचार उत्पन्न हो। यदि कोई व्यक्ति आ जाता है तो पहले उसको खाना अवश्य खिलाते थे।

परमार्थ के लिये दूध और फल तथा ताजा भोजन जरूरी है इसी कारण पुराने संतों के भोजन में इन्ही चीजों की मात्रा अधिक रहती थी। यह सतोगुणी भोजन है। जायकेदार और तामसी भोजन (मांस या मछली)

खाने से मन चंचल हो जाता है। और उस पर काबू करना बहुत मुश्किल हो जाता है। इस बात की एहतियात मुसलमान फकीरों ने भी बहुत रखी है हजरत किबला बाकी बिल्ला साहब निजामुद्दीन औलिया साहब ने केवल जौ की रोटी खाकर अपना जीवन व्यतीत कर दिया। कम खाने से मन शान्त रहता है। ज्यादा खाने से मन मोटा होकर चंचल हो जाता है। यही वजह है कि मजहब के बुजुर्गो ने हक हलाल की कमाई साफ सुथरी जगह बना, अच्छे या पवित्र ख्यालात के व्यक्तित्व के द्वारा बनाया गया, सतोगुणी भोजन पर जोर दिया। इस पर भी एहतियात के तौर पर ऐसे भोजन को भी कम खाने की एहतियात बरती है। जिससे अच्छे विचार बने रहे। और परमार्थ का रास्ता सुलभ हो जाये।

आदाबे मुरीदी

जिस तरह जिस्म को कायम रखने के लिए खुराक जरूरी है, उसी तरह शिष्य को गुरू का अदब बहुत जरूरी है, इसी को आदाबे मुरीदी कहते है। मुरीदी यानी शिष्य के लिये गुरू का अदब करना या उसके मेहरबानियों का और दया का कुछ मुआवजा (बदला) देना या मुआवजे का ख्याल रखना ऐसे ही है, जैसे कोई शख्स समुद्र को सोखना चाहता है, कहने का तात्पर्य यह है कि शिष्य गुरू की मेहरबानियों का मुआवजा दे पाये ये असम्भव है क्योंकि उनकी मेहरबानियों का कोई बदला दें ही नहीं सकता। ताहम हमारी समझ में जो आदाब आये है वह लिख रहा हूं :–

अदब दो तरह का होता है।

1. जाहिरी अदब
2. बातिनी अदब

जाहरी अदब

जाहरी अदब से मुराद यह है कि दुनियादारी और जिस्मानी ख्याले मर्तबा रखा जाये इसमें मेरा तजुरबा यह है कि फकीर ज्यों–ज्यों ऊंची पदवी को हासिल करता जाता है बहुत ही सूक्ष्म और नाजुक होता जाता है और ऐसी हालत में यह बहुत तेज तलवार के मानिद होता है। जिसका किसी वख्त कोई भी बात या ख्याले नजाकत बुरी या भद्दी मालूम हो सकती है और जहां फकीर के दिल में शिष्य की तरफ से

भद्दा या बुरा ख्याल आ गया वहां फायदा हो ही नहीं सकता है इसलिए शिष्य को दुनियादारी बातों में अदब का बड़ा एहतियात रखना चाहिए, इतना तक देखा गया है कि फकीर बात कर रहा है, शिष्य ने जरा सा बीच में बोल दिया तुरन्त उनकी त्योरी बदल गई, फिर उस वख्त फायदे का क्यों सवाल बल्कि नुकसान हो सकता है। लिहाजा जरूरत इस बात की है कि फकीर की चाल ढाल पर हर वख्त निगाह रखें और अपनी अक्ल का दखल न देते हुए दुनियादारी के हस्ब मरातिब (जाहरी व्यवहार) का अजैहद (बहुत अधिक) ख्याल रखे बाज साहबान शिष्य के इस व्यवहार को गुरू की चापलूसी कहेंगे कि शिष्य कितना ढकोसला या दिखावा कर रहा है लेकिन बात सच्ची यही है कि यह दुनियादारी व जिस्मानी अदब है शिष्य को यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि दुनिया के और लोग उसके व्यवहार के बारे में क्या सोचेंगे क्योंकि वह तो कुछ जानते ही नहीं मतलब कुछ ज्ञान ही नहीं रखते हैं शिष्य को गुरू की मौजूदगी में बहुत ही अदब से बोलना और बैठना चाहिए।

मैं एक मिसाल देकर इसे साफ कर देता हूँ। मिसाल के तौर पर मजमें में कही एक फकीर बैठते है। आप भी उस मजमें में जाकर ऐसे बैठ गये जैसे दोस्त–दोस्त बैठते हैं आपकी टांगे भी फैली है सिगरेट भी पी रहे हैं मजाक कर रहे है या वह बोल रहा है आप दूसरो से बातें कर रहे है और यह ख्याल कर रहे है कि इस वख्त यह हमारे दोस्त हो गये है और बड़े अच्छे मूड में है लिहाजा यह आप के किसी भी बात का बुरा न मानेंगे या इस वख्त उनका ख्याल आपकी और नहीं है वह क्या हमको ही देख रहे हैं पर आप यह न भूल जायें कि फकीर चाहे कितने ही खुश मूड में क्यों न बैठा हो न मालुम अपनी तबियत की नजाकत की वजह से किस वक्त उसकी त्यौरी बदल जाये और आप जिस फायदे की उम्मीद लेकर आये है वह फायदा न हो। अपने सिमसिले में शिष्य का इस अपनी बेअदबी की वजह से नुकसान नहीं होता क्योंकि ऊपर के बुजुर्ग उनके सर पर खड़े रहते है लेकिन फायदा नहीं होता है। दूसरे सिलसिले में कम या ज्यादा नुकसान भी होता है। इसीलिए किसी भी सिलसिले के बुजुर्गो के पास भी जाये तो बहुत अदब से पेश आये और सुन्दर व्यवहार करें।

गुरू जब खुद पूंछे या कुछ छेड़े तो अपनी समझ के मुताबिक उस सवाल का जवाब बड़े अदब से दे दें। वे जरूरत खुद बोलने व छेड़खानी की जरूरत नहीं अलबत्ता अपनी हालत को मौका देखकर

उनको खुश देखकर या उनको रिझाकर कहना शिष्य का फर्ज है क्यों कि उससे उनके अपने ख्यालात की तसदीक हो जाती है। अपने हालात के बयान करने में किसी किस्म की बनावट न हो तो समझ में हालत आई हो उसे वैसा ही बयान कर देना मुनासिब है, यानी बिल्कुल सच्चाई से बयान करें।

गुरू से मिलने पर अदब बजा लाना, जैसा भी जिस सोसाइटी का दस्तुर हो वही जायज है (ठीक है) कुछ फिरके (सोसाइटी) ऐसे होते हैं जहां गुरू से सिर्फ हाथ मिलाते हैं बहरहाल हिन्दुओं का तरीके अदब बुजुर्गो के पैर छूना ही रहा है। और बेहतर भी यही है।

पूजा मे गुरू के हुकुम देने पर जो आसन मौजूद है बैठ जाना चाहिये खशुशियत के साथ किसी आसन या अपनी किसी खास जगह तलासने की जरूरत नही है, जब तक फकीर कोई जगह उसके बैठने के लिये खुद ना बतालये या तजबीज करे। यह फकीर की मौज होती है। किसी से किसी वख्त कोई काम लेना हुआ कह दिया या किसी से कह दिया कि तुम फला साहब के यहां बैठ जाया करो। किसी से कह दिया कि आप फला साहब का काम कर दें इसके मायने यह नहीं है कि जिस साहब को हुक्म दिया गया वो काबिल हो गये यह उन साहब को खुद यह ख्याल हुआ कि मुझसे गुरू ने ऐसा काम लिया है और मैंने उनके हुक्म की तामील कर दी और अब मैं बहुत होशियार या ज्ञानी हो गया हूॅ औरों के मुकाबले गुरू समर्थ हैं जिधर उनकी मौज मस्ती हो गयी उन्होंने अपने ख्याल को उधर डाल कर उससे कह दिया कि यह हमारा ख्याल तुम जाहिर करो इससे शिष्य काबिल नही हो गया और ना उसको अभिमान करना चाहिये बल्कि यह ख्याल करना चाहिए कि यह गुरू की मौज थी जो घूम गयी और गुरू ने दया करके मुझे यह सेवा का मौका दिया, उनके हुकुम की तामील बहुत बेहतर से बेहतर तरीके से करें।

हमारे इस सोसायटी का आम तरीका यह रहा है कि हर गुरू यह समझता है कि जिन लोगों की तामील मैं कर रहा हूॅ कि वह मेरे गुरू की ही औलाद है लिहाजा मैं उनको गुरुभाई समझूँ और बराबर बर्ताव करूँ वह गुरू समझ कर आप से बर्ताव करता है वह केवल इसलिए कि उसका अपने गुरू को जवाब देना है। जिसने आपकी तालीम व देखभाल का भार उसके कन्धों पर सौंपा है लिहाजा गुरू दोनों तरफ से मौहताज रहता है, एक तरफ अपने गुरू की दया एवम् कृपा का मोहताज दूसरी तरफ आपके परिश्रम का मोहताज, लेकिन आपको भी

अपने फर्ज को नही भूलना चाहिए कि आप ही हर हाल मे गुरू का आदर करना चाहिए। जाहिरी अदब में मोटी मोटी बातें यह है कि :–

1. आपके बोलने का तरीका बड़े अदब से, धीरे–धीरे और साफ और सच्चाई से हो।
2. आपके बैठने का तरीका अच्छा हो यानी गुरू के सामने पैर फैलाकर या और किसी भी तरह बेअदबी से ना बैठें।
3. जब तक आपसे कुछ कहा न जाये या पूँछा न जाये उस वख्त तक खामोश रहें, अपनी ओर से कुछ न बोलें।
4. जब गुरू बोल रहे हों तो बीच में न टोंके, न कुछ पूछें। यदि कोई बात समझ में न आई हो तो ध्यान से सुनें, दूसरा ख्याल न करें और न दूसरें से बात करें।
5. जब भी गुरू के सामने अकेले या मजमें में बैठें तो बराबर अपने ख्याल की धार को तथा निगाह को उनके दौनो भौहौं के बीच में जमाये रहें।

जाहीरी अदब से गुरू के ख्याल की धार शिष्य की ओर जाती है और उसका रिझान शिष्य की ओर से जाता है। यही वजह है कि जाहीरी अदब भी अति आवश्यक है। एक बुजुर्ग कहा करते थे

बा अदब अजीजेमन,
बे अदब दूरेमन
गरज की जाहीरी अदब उतना ही जरूरी है जितना बातिनी।

बातिनी अदब

बातिनी अदब से गरज यह है की गुरू के दर्शन के लिए जाने पर हम को क्या–क्या ख्याल रखने की जरूरत है। इसका मुमकिन है नये आने वाले अभ्यासी अभी न समझें लेकिन पुराने अभ्यासी अच्छी तरह समझ सकते हैं कि दिल, बेलौस और बेगरज दिल, बेख्वाहिश, निर्मल और पाक दिल चाहिए ताकि वह उससे ईश्वर का प्रेम भर सकें और अपना असर पैबस्त कर सकें। मेरे अपने ख्याल से यही सबसे बड़ा अदब फकीर का है और हमारी और आपकी कोशिश यही होनी चाहिए कि हम अपने गुरू की मौजूदगी हर वक्त अपने साथ समझ कर अपनी इस हालत को बराबर बनायें रखें लेकिन अगर हर वक्त मुमकिन नहीं है तो कम से कम उनकी जिस्मानी मौजूदगी में (जिस समय वह आपके सामने बैठे हों) इस बात का होना बहुत जरूरी है। यानी आपके ख्याल की धार गुरू के पास बैठने में और कहीं नहीं जानी चाहिए। उत्तम तो यही है

कि हर समय आपको गुरू की मौजूदगी का एहसास होता रहे और आप अपने दिल उनके रूबरू हर वक्त बेगरजाना पेश करते रहिये और फिर लुत्फ (मजा) देखिये उनकी दयालुता को देखिए, गुरू से ज्यादा दयालुता की मिसाल आज तक न थी, न है और न होगी।

आप अपने ऐबों (बुराईयों) को भुल जायें जो आपमें थे और हैं। गुरू ने हमको उस रोज अपनाया था जब हमको न अपने ऐबों से वाकफियत (ज्ञान) थी और न इन ऐबों पर कोई काबू था तो हम अपने ऐबों को देख कर क्यूं घबरायें। हम यह क्यूं न समझ लें कि हमारे ऐबों का कोई आर पार नही है और गुरू कि दयालुता का उससे भी ज्यादा आर पार नही है अर्थात अंत नहीं है। देखना यह है कि हमारे गुनाह या ऐब हमको गढ्ढे में डाले देते हैं या उनकी दयालुता हमको वहां से उठा कर ईश्वर के दरबार में बैठा देती है, दोनों चीजों का मुकाबला है देखें आखिरी वक्त पर कौन जोरदार पड़ता है। हम तो गुनाहों और ऐबों से बनें हैं जब तक यह जिस्म कायम है तो यह मुमकिन है की इन्द्रियां किसी न किसी वक्त धोखा दे जायें, लेकिन फिर भी हमें गुरू के दयालुता का भरोसा भी पूरा होना चाहिए हमारा भी यह फर्ज है की उनके दरबार में जाकर अपनी जरूरियात को कम करके हर वक्त उनके हुकुम को कबूल करने के लिए मुन्तरजिर रहें ऐसा न हो वह कोई हुकुम दें और आप उस वख्त सो रहे हों। खाना पीना सोना जागना तो रोज का काम है और यह घर पर जब आप होते हैं तो भी करते ही हैं। लेकिन गुरू कि मौजूदगी में इन सब जरूरियात का कम कर देना इसलिये जरूरी है आपको 24 घण्टे यह इन्तजार करना है कि न मालूम किस वख्त क्या हुकुम दे और ऐसा ना हो कि आप उस वक्त बेखबर हों और ऐसा हुकुम को न बजा ला सकें। फकीर उसका बुरा न मानेंगा बल्कि आप को जो फायदा होता है वह नहीं होगा परन्तु ऊपर के बुजुर्ग (गुरू देव के बुजुर्ग) उसका बुरा मानेंगे और हो सकता है कि कभी नुकसान भी हो जावे। बाज वख्त फकीर भी बेअख्तियार होता है उस वख्त अगर उसकी मौज किसी की तरफ हो गयी और उस वख्त वह शख्स जिसकी तरफ मौज हुई है बेखबर है तो फायदा तो होगा लेकिन फायदे की सूक्ष्मता नहीं होगी लिहाजा बातीनी अदबों में सबसे बड़ा अदब यह है कि दिल हर वख्त हाजिर रहे और उसकी दयालुता का मुन्तजिर रहे। शिष्य को चाहिए कि इस चीज की मश्क (प्रेक्टिस) गुरू की सोहबत से अलहदगी में भी करते रहे और हर वक्त का ख्याल करता रहे कि

गुरू की दया और सोहबत हर वक्त मेरे साथ है। इसके मुन्तालिक थोड़ा सा मैं यह भी अर्ज कर देना चाहता हूॅ कि किसी को भी बेलौस मुहब्बत दो चीजों से नहीं हो सकती या यों कहिये दो शख्सों से नही हो सकती, तो वे लोग जो आज इस फकीर से मोहब्बत करते हैं कल दूसरे से परसों तीसरे से तो ऐसे लोग कहीं से भी अच्छा फायदा नहीं उठा सकते। बेलौस प्रेम एक ही से हो सकता है और एक ही गुरू हो सकता है। दस जगह से वाचक ज्ञानियों को दस बातें तो कहने सुनने को मिल सकती है परन्तु जो आन्तरिक अभ्यासी है उनको फायदा कम पहुंचता है या नही भी पहुंचता है। यह हो सकता है कि आपका ईष्ट एक हो और दूसरे शख्स इसी सिलसिले या ख्याल के हों उनका आप उसी अदब के निगाह से देखें जैसे अपने ईष्ट को देखते हैं तो उनसे फायदा हो सकता है, और इन्हीं लोगों को मुर्शिद कहते हैं। मुसलमानों ने कव्वाली और गजलों में लब्ज पीर मुर्शिद ज्यादातर एक साथ ही इस्तेमाल (प्रयोग) किया जाता है।

प्रेम गली ऐसी सांकरी, यामें दो न समाये,
जब मैं था तब गुरू नहीं, जब गुरू तब मैं नहीं ।

जिज्ञासु को सोच समझ कर और खूब तलाश करने के बाद ही अपना ईष्ट बनाना चाहिये। चाहे उसमें वर्षो लग जाये, मगर जब एक दफे ईष्ट कायम कर लें तो जीवन भर वही ईष्ट रहना चाहिए फिर जीवन में उसका बदलना नहीं चाहिए, न बदलने से कोई फायदा ही होता है। दूसरे इससे यह भी जाहिर होता है कि न तो आपको अपने पहले ईष्ट पर विश्वास पक्का था न अब दूसरे ईष्ट पर जो कायम किया है उस पर ही विश्वास पुख्ता है। इस तरीके से अपनी जिन्दगी का वख्त खराब करना आप खुद समझ सकते हैं कहां तक मुनासिब है। मिसाल की तौर पर मेरे जीवन के एकमात्र ईष्ट परम पूज्य लाला जी महाराज रहे परन्तु मुझे फायदा और बुजुर्गो से भी बहुत हुआ बाबू जी, चाहे गुरू कहिये या फकीर कहिये बहुत बड़ी चीज है और इस महिमा को वही शख्स पूरा समझ सकता है जो खुद गुरू पदवी पर पहुँच चुका है और यह दया किसी–किसी प्राणी पर उसकी (मालिक) होती है। गो कि यह अदब की परिभाषा में नहीं आती है। लेकिन भाइयों की खातिर इस चीज को खोलकर और साफ यहाँ लिख देना गैर मुनासिब न होगा।

1. बेगरज मोहब्बत, (निःस्वार्थ प्रेम)
2. बेगरज खिदमत, (निःस्वार्थ सेवा)

यही सिर्फ दो चीजे ऐसी हैं जिनमें फकीर बेकाबू हो जाता है। असल चीज को वह बहुत मुश्किल से देता है क्यों कि वह इस अनमोल चीज की कीमत और कद्र जानता है। ऐसी अनमोल चीज को देने में वह इस लिए बहुत एहतिहात बरतता है कि कहीं अनाधिकारी व्यक्ति पर न पहुंच जाये। लेकिन यह बेगरजाना मोहब्बत, और बेगरजाना खिदमत, जिसमें खशुशियत से जिस्मानी खिदमत के सामने वह बेकाबू हो जाता है। और यह अनमोल चीज उसके हाथ से निकल जाती है। फकीर देता नही है। बल्कि मोहब्बत व खिदमत करने वाला उससे जबरदस्ती छीन लेता है। इतने मुद्दत में मेरी समझ में तो यही दो चीजें असली सत्य है अपनी मेहनत तो ऐसे ही है। जैसे दिनभर कोई व्यक्ति फावड़े से पहाड़ को तोड़ता है और एक नोक नहीं टूटती या थोड़ा सा या बहुत कम तोड़ पाता है और थक भी जाता है। पर यह दो चीजें (बेगरजाना मोहब्बत एवं बेगरजाना खिदमत) बम के गोले का मिसाल रखती है कि जहां बम पड़ा पहाड़ उड़ गया और कोई थकान भी नही 'राहे सलूके इश्क में रियाजत नही जरूरी, सौ–सौ मुकाम होते हैं तै एक नजर में' अगर गुरूदेव या फकीर किसी बात को बार–बार पूछे तो आप बार बार ही बड़ी नम्रता से उस चीज का जवाब दें ऐसा न समझें या सोंचे कि सुबह तो इस बात को पूंछ चुके हैं अब क्यों (बार–बार) पूछते हैं। अक्सर ऐसा होता है कि फकीर को सुध नही रहती है।

एक बुजुर्ग की मिसाल है कि वह अपने खास मुरीद से हर दूसरे या तीसरे यह सवाल पूछते थे कि भाई तुम्हारे कितने बच्चे हैं और वह बड़ी नम्रता से साथ जवाब दे देते। पास बैठे हुए एक साहब ने सवाल किया कि साहब आप इनसे रोज यही सवाल करते हैं आखिर क्यों? आपने बड़ी आधीनता से जवाब दिया भाई क्या करूँ कुछ याद नहीं रहता और सच तो यही है कि बिल्कुल पास बैठे रहने वालों की भी याद नहीं रहती चूंकि फकीर हर वक्त अपने मालिक के ख्याल मे मस्त रहता है और फकीर की नजाकत नफासत रोज व रोज बढ़ती जाती है फिर भी किसी बात को बार बार पूछने में कुछ न कुछ मसलहत होती है वाज वख्त उनका भला करना चाहता है अदब के सम्बन्ध में मैं पहले भी कुछ कह चुका हूँ कि फकीर के सामने हस्ब मरातिब अदब (जाहीरी एवं

बातनी अदब) जरूरियत एहतियात बहुत जरूरी है यानी बहुत अदब और हर समय सजग रहे।

"खामोश ऐ दिल भरी महफिल में चिल्लाना नहीं अच्छा।
अदब पहला करीना है, मोहब्बत के करीनों में।"

अर्थ – गुरू प्रेमियों या भगवान के प्रेमियों की सब सभा या सत्संग में प्रेमी को मन वाणी और कर्म से मौन रहना चाहिए क्योंकि अदब या शिष्टता प्रेम की प्रथम पहचान है।

जिस्म रखते हुए फकीर की भी यही इच्छा होती है कि मेरी जिस्मानी औलाद में से भी कोई इस विद्या को कबूल कर ले और वह उसी के जीवन में इसी काबिल बन जाये। अक्सर देखा भी यही गया है कि औलाद मे से कोई न कोई बहुत अच्छा साबित होता है क्योकि उसमें पिता का अंश होता है और वह उसे ग्रहण कर लेता है सिलसिले के बुजुर्गो की दया भी उस पर औरों के मुकाबले अधिक होती है ज्यादातर यह भी देखा गया है कि जो फकीर के सिखाने का वक्त है और जिसमें वह मेहनत कर सकता है उस वख्त तक औलाद बेखबर सी रहती है और यह समझती है कि यह विद्या तो हमारे पिता से विरासत में हम पर आ जायेगी कुछ असर जिस्मानी ताल्लुकात का जरूर पड़ता है पर कोई जरूरी नहीं कि यह विद्या उसको विरासतन मिल जाये। यह उसकी आइंदा की मेहनत और कोशिश पर है अक्सर जो बाप से हासिल करने का वक्त है वह बेपरवाही में निकल जाता है। गुरू की औलाद होने के कारण लोग उसकी इज्जत तो कर सकते हैं पर ख्याल से बेपरवाही के कारण वह इस विद्या से खाली होते हैं औलाद में जो इस विद्या को हासिल कर लेता है वह दूसरों के मुकाबले में (Far Superior) बहुत अच्छा होता है। दूसरे लोग जो शिष्य के रूप में आते हैं वह बेगरजाना मोहब्बत से गुरू से इस विद्या को छीन ले जाते हैं। बगैर मोहब्बत और खिदमत के मेरे ख्याल से इस विद्या को छीन ले जाते हैं। बगैर मोहब्बत और खिदमत के मेरे ख्याल से इस विद्या को पाना असम्भव है और सब साधन और पूजा इसी को प्राप्त करने के लिए की जाती है। जब तक वह प्राप्त नहीं होती है इसके लिए हमेशा कोशिश करनी चाहिए क्या हुआ कि रास्ते में चले हैं तो थोड़ी दूर पहुंच भी जायें या चल लें पर इस विद्या को आप इसकी गैर मौजूदगी में हासिल नहीं कर सकते हैं।

एक ख्याल अभी–अभी आया कि जिससे गुरू को बुजुर्गो का काम लेना होता है उससे वह बहुत मोहब्बत करता है और उसकी इज्जत भी करता है उसके साथ गुरू का बर्ताव माशुकाना या प्रीतम का सा होता है, इसलिए कि फकीर को अपने गुरू का मिशन पूरा करना है। चाहे उसने खुद अपने गुरू के मिशन के काम को कितनी ही अच्छी तरह से अंजाम दिया हो लेकिन वह समझता है कि मैं उनके काम को इतनी अच्छी तरह न कर सका जितनी उनको मुझसे उम्मीद थी और यह शख्श उनके मिशन के काम को और अच्छी तरह–अंजाम देगा इसीलिए वह उसकी हद से ज्यादा इज्जत करता है गुरू के हुकुम का इजहार समझ कर हर तरह से उससे मोहब्बत करता है कि वह उस मिशन के कार्य को और अच्छी तरह कर सके। परम पूज्य लाला जी महाराज व पूज्य चाचा जी महाराज का हम कुछ साहबान की तरफ ऐसा ही व्यवहार था जो उस समय समझ में न आया था बल्कि कुछ लोग तो पूज्य चाचा जी महाराज से यह कहते थे कि आप तो इन लोगों की बड़ी इज्जत करते हैं तथा बड़ी मोहब्बत करते हैं जो उनके इखलाक से उस वक्त जाहिर भी होता था। उसका सबब यही था। अब समझ में आता है।

पूजा की महिमा

जिस पूजा के बारे में इस कदर तमहीद बांधी गयी है और बखान किया गया है जिसके लिए, मोहब्बत, अदब खान पान में एहतियात की इतनी जरूरत है वह दरअसल है क्या और उसकी क्यों इस कदर महिमा सबने गाई है।

असल की धार सबसे पहले पिण्डी शरीर (मनुष्य शरीर) पर ब्रम्हाण्ड पर पड़ी, ब्रम्हाण्ड चोटी का स्थान है और इसलिए हिन्दुओं में चोटी रखने का रिवाज था ताकि हर समय उस असल धार की याद आती रहे। उसके बाद असल धारा सारे सर में फैलती हुयी, कारण व सूक्ष्म के विभिन्न चकों से होती हुयी, दूसरी जगह त्रिकुटी पर पहुंची। वहां से उस धार का असर कंठ पर, हृदय पर, नाभी, इन्द्री तथा गुदा चक्र पर पड़ा। गुदा चक्र इस पिण्डी शरीर का आखिरी मुकाम है यहां के अधिष्ठाता गणेश जी हैं इसी वजह से हिन्दुओं के हर फिरके में दुनिया के हर काम में गणेश जी की पूजा सबसे पहले करते हैं। यह आत्मा की धार पैदाइश से या रोज अव्वल से जिस्म में पैबस्त होकर इनर्जी या ताकत देती है। मरते समय यह आत्मा की धार गुदा चक्र से होती हुयी सूक्ष्म और कारण को पार करती हुयी फिर ब्रह्माण्ड में होती हुयी अपने

असल भण्डार में मिल जाती है। मरते वख्त आप यह देखेंगे कि सबसे पहले गुदा चक्र का मुकाम जवाब देता है। उसके बाद इन्द्री चक्र फिर नाभिचक्र, फिर हृदय चक्र और फिर कण्ठ चक्र, उसके बाद आत्मा की धार त्रिकुटी के मुकाम पर आकर कुछ समय के लिए रुकती है इस मुकाम पर अक्सर ऐसा देखा गया है कि मरीज के रिश्तेदारों और डाक्टरों को ऐसा मालूम होता है कि मरीज कुछ संभल गया है गो कि नब्ज बिल्कुल कमजोर हो जाती है। और फेफड़े की हालत भी खराब हो जाती है लेकिन फिर भी जाहिर या मालूम होता है कि मरीज बेहतर है और चेहरे पर कुछ अजब सा तेज मालूम होता है जो कि उसके आत्मा का तेज होता है। त्रिकुटी से हटने के बाद आत्मा की धार सिर के सब मुकामतों को छोड़ती हुई आहिस्ता–आहिस्ता उनसे अलहदा होती हुयी ब्रह्माण्ड में वापिस होती हुयी अपनी अलग असल धार में मिलने की ख्वाइश रखती है। त्रिकुटी से ब्रह्माण्ड तक पहुंचने में आत्मा को कुछ समय लगता है। चूंकि यह धर असल से निकली थी और आरजी (अस्थायी) तरीके से इस पिण्डी शरीर में मौजूद थी उसको असल में ही मिलना है चाहे उसको कुदरत खुद मिला दे जैसा कि कुछ धर्मो में कहा गया है कि प्रलय के रोज यह धार आरजी तरीके से असल में मिल जायेगी। लेकिन यह तयशुदा है कि यह आत्मा की धार असल से आई थी और असल में ही मिल जायेगी चाहे इसे एक जन्म या और कई जन्म लेने पड़े। या जन्म जन्मांतर लग जाये। दूसरी सूरत यह है कि आप अपनी स्वयं की कोशिश से इस असल धार को जहां से यह चली थी उसी में इस जन्म में ही मिला दें। जिसके लिए जीवित गुरू का होना अति आवश्यक है। बिना उसके यह सम्भव नहीं गालिबन इस आत्मा के धार को असल से मिलने का ही नाम लोगों ने योग रक्खा है। मिसाल के तौर पर कर्मयोग, ज्ञानयोग, प्रेमयोग, राजयोग, हठयोग, सहजयोग, जिस तरीके से आत्मा की धार और अपने असल में यानी परम पिता परमात्मा में मिलती है चाहे वह किसी जरिये से हो उसी तरीके को हम और आप पूजा कह सकते हैं।

इस जददोजहद (कोशिश) में यानी आत्मा की धार को असल में मिलाने के तरीके मे, हर जगह, हर संस्था में, और कोई किसी और तरीके को व किसी संस्था में कोई और तरीके से तालीम दी जा सकती है। परन्तु मकसद (लक्ष्य) सबका एक ही है कि जीव के अन्दर की आत्मा को उसके असल धार परमात्मा से मिला दें मिसाल के तरीके मैं

यह अर्ज करूँगा कि एक तालीम करने वाले गुरू ने यह मुनासिब समझा कि हम इस धार को गुदा से उठाकर हर चक्र से निकालते हुए फिर ब्रह्माण्ड में मिला दें दूसरे गुरू का यह ख्याल हो सकता है कि ब्रह्माण्ड में इस धार को मिला दें तीसरे यह ख्याल हो सकता है कि हम नाभी चक्र से शुरू करें और फिर आत्मा की धार को ब्रह्माण्ड से मिला दें। चौथे का यह ख्याल हो सकता है कि हम हृदय चक्र से शुरू करें पांचवे का कंठ से, छठे का त्रिकुटी से बाजों के यहां यह देखा गया है कि और यह ख्याल किया गया है कि हम ब्रह्माण्ड से ही क्यों न शुरू करें। इससे बस यही मतलब है कि हर गुरू का सिखाने का तरीका अलग अलग हो सकता है और जब सीखने का तरीका अलहदा होगा तो कुदरतन हर अभ्यासी के अभ्यास का ढंग भी अलग होगा और अभ्यासी पर जो हालत गुजरेगी वह भी मुख्तलीफ (भिन्न भिन्न) होगी, मिसाल के तौर पर जैसे कोई अभ्यासी नाभी का चक्र सिद्ध करता है तो उसको आगे की हर चीज पर काबू होगा दूसरे इन्द्री पर अभ्यास की मश्क (पुख्ता) करता है उसे पानी की हर चीज पर पूरा अख्तियार होगा, गरज यह है कि जैसा सिखाने वाला और सीखने वाला रास्ता अख्तियार करेगा वैसे ही उसकी हालत होगी और बहुत सी संस्था ऐसी भी है जिन्होंने कोई तरीके खास अख्तियार नहीं किया बल्कि जो अभ्यासी जैसा ख्याल लेकर आया उसको वही तरीका बतला दिया बहुत से गुरू समर्थ होते हैं। वह यह देख लेते है कि किस शिष्य को कहां से तालीम शुरू की जाये वह शिष्य की जैसी योग्यता देखते हैं और यह देखते है कि किस जरिये या तरीके से यह शिष्य कम वक्त में अपनी मंजिले मकसूद पर पहुँच सकता है उसकी वहीं से तालीम शुरू करा देते हैं। हर गुरू की तालीम अलहदा होती है और उसका परिश्रम और उसकी रूचि भी अलग होती है और यही एक संस्था से दूसरी संस्था के लड़ाई झगड़े का मुख्य कारण है एक संस्था के लोग कहते है हम ठीक है हमारे गुरू ठीक है दूसरे अपने और अपने गुरू के ठीक होने का दावा करते हैं। लेकिन जो समर्थ गुरू होते हैं वह शिष्य के काबलियत और लियाकत व रिझान को देख कर तालीम करते हैं। एक ही लाठी से सब भेड़ों को नहीं हाँकते। इस तरह एक ही जमात में ऐसे अभ्यासी मिलेंगे जो अलग अलग तरीके से अभ्यास करते हैं। इस तालीम में फर्क होने से ही इतने मत मतांतर व फिरके बन गये और अलग अलग जमात कायम हो गई हालांकि जरा गौर से सोचें तो मंजिले

मकसूद सबकी एक है रास्ता एक है सिर्फ रास्ते पर चलने का तरीका मुखतलिफ (भिन्न) हो सकता है।

मैं फिर एक मर्तबे इसको दोहराये देता हूँ जो आत्मा की धार असल से सब चक्रों से गुजरती हुई गुदा चक्र पर ठहरी थी, उसी धार को गुदा चक्र से फिर वापस करने की कोशिश का नाम योग, अभ्यास, या पूजा है।

हम और आप जो यहां भण्डारे के वख्त इकट्ठे होते हैं कि दो तीन रोज एक साल में मिलकर सब लोग बुजुर्गों की कृपा या गुरू की दया का भरोसा करते हुए यह कोशिश करें कि हम सब भाइयों की ताकत मिलकर हमको जल्द से जल्द इस अभ्यास में कामयाब बनावें। आपस में सब भाई मिलकर दुनिया की बातों को छोड़कर जो अभ्यास के दौरान उन पर हालत गुजरी है उसका अपने भाइयों पर इजहार (बताया) करें, ताकि उन्हें भी फायदा हो और अपने गुरू से बता कर अपनी हालतों की तसदीक करायें, और आइन्दा तरक्की का रास्ता सोचें, और प्रयत्न करें, और कोषिष यही करें कि जल्द से जल्द गुरू की कृपा का पात्र बनकर, गुरू के ही जीवन में अपने मकसद में कामयाबी हासिल कर सकें।

अब सवाल यह होता है कि हर मनुष्य सोचता है कि जब पूजा के रास्ते में इस कदर तकलीफें और सख्त इम्तहान है तो हम बेजरूरत क्यों तकलीफ उठायें और पूजा करें। बरखिलाफ क्यों न दुनिया को और इन्द्रीसुख को भोगें। जवाब में सिर्फ यही कहा जा सकता है, कि दुनिया व इन्द्रियों के सभी सुख आरजी है, और पूजा से जो महान सुख अंत में प्राप्त होता है। वह बहुत महान और पूर्ण स्थायी है, क्योंकि यह पिण्डी शरीर छोटे पैमाने पर ब्रह्माण्ड की शक्ल का है, और जो ताकतें ब्रह्माण्ड में मौजूद है वह इस पिण्डी शरीर में भी मौजूद है। अन्तर केवल मात्रा का है। पूजा का मुख्य उद्देश्य यही है कि दुनिया में रहते हुए, दुनिया के हर कार्य को सुचारू रूप से भोगते हुए अपनी आत्मा को दूसरे असरों से साफ करते हुए आत्मा की धार को उसके निजधाम में, परमपिता परमात्मा में मिला दें।

हमारे यहां की तालीम

परमार्थ से सम्बन्धित जो भी जमाते हैं, उनके हर एक के सीखने के तरीके, रहन सहन, खान पान के उसूल व गुरू अलग–अलग होते हैं, परन्तु मकसद हर एक का एक ही होता है। वह है परम पिता परमात्मा की प्राप्ति। इनको सूफी मत में अलग–अलग नाम दिया गया है।

1. **शरीयतः–**

   शरीयत से मतलब यह है कि उस देश का जहाँ का अभ्यासी हैं उसका खान, पान, रहन–सहन, वेश–भूषा।

2. **तरीकतः–**

   तरीकत से मतलब यह है कि पूजा करने का तरीका जिस पर चल कर अभ्यासी अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

3. **मारफतः–**

   मारफत का मतलब यह है कि किस गुरू से वास्ता है या किसके द्वारा या जरिये से इस लक्ष्य की प्राप्ति का साधन कर रहा है।

4. **हकीकतः–**

   हकीकत का मतलब यह है कि ईश्वर एक है जिसको हर धर्म हर जमात या सारे जमात या प्राणी मानते है।

ज्यादातर जमातों में शरीयत, तरीकत और मारफत पर ही मतभेद या झगड़ा चलता रहता है और हकीकत तक पहुंचने से महरूम रह जाते हैं। उसी झगड़े में फंसे रहते हैं और हकीकत तक पहुंचने की कोशिश ही नहीं करते ।

हकीकत यह है कि ईश्वर एक है, ईश्वर के नाम अनेक है, मसलन ईश्वर, प्रभु, राम, रहीम, अल्लाह, गॉड। ईश्वर के नाम में अधिकतर तीन ही शब्द हैं जो सत, रज, तम को इंगित करते है। ईश्वर अपने ही घट में है कहीं बाहर नहीं। घट के अन्दर ही उसकी प्राप्ति होती है। बाहर उसकी तलाश करना, समय व्यर्थ करना है। बगैर घट के भेदी के साथ लिए ईश्वर की प्राप्ति करना असम्भव है। वक्त के समर्थ सतगुरू जो घट के भेदी हैं, वही दूसरे का घट खोल सकते हैं।

बगैर सत्संग के यह रास्ता नहीं तय हो सकता अर्थात ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

जिन्दा गुरू का होना भी अति आवश्यक है। गुजरे हुए बुजुर्गो से उनकी दया एवं आशीर्वाद मिल सकता है, परन्तु पूर्ण मार्ग दर्शन नहीं

मिल सकता है। यदि वह दया करके मार्ग दर्शन भी करते हैं तो अभ्यासी उनके ईशारे को समझा नहीं सकता है। और पूर्ण विश्वास नहीं ला सकता, बिना पूर्ण विश्वास के रास्ता तय नहीं हो सकता है।

वह लोग जिनकी निस्बत अपने गुरू तथा उनके ऊपर के बुजुर्गो से जुड़ी होती है वही दूसरे अभ्यासी की निस्बत अपने बुजुर्गो से जुड़वा सकते है। तभी उनसे असली फायदा होता है।

जो अभ्यासी परिश्रम करके बराबर सत्संग करते रहते हैं उनका अपने ईष्ट से या गुरू पर श्रद्धा, विश्वास और बेलौस प्रेम हो जाता है। उसी के बूते पर या आवेश में वह अपने गुरू से यह वेशकीमती रूहानी विद्या प्राप्त कर लेते हैं। सभी पूजा का लक्ष्य यही है। जिन अभ्यासियों को अपने गुरू से बेलौस प्रेम हो जाता है ओर पूर्ण रूप से उन्हीं पर निर्भर करते हैं उन्हीं के आश्रित हैं उनकी निगहवानी और निगरानी वह समर्थ स्वयं करते हैं। परमार्थ का रास्ता यकीनन सद्गुरू एवं बुजुर्गो की दया पर निर्भर है उसके बगैर कुछ हासिल नहीं हो सकता है।

परम पूज्य बाबू जी ने अपनी पुस्तक सन्त साधना भाग–1 एवं भाग–2 में परमार्थ का निचोड़ लिख दिया है ऐसे गूढ विषय का इतना सरल और सजीव वर्णन इन महापुरूष ने हम सब लोगों के लिए, इस रास्ते पर चलने वालों के लिए लिख दिया है। जिसको पढ़ने के बाद किसी और पुस्तक को देखने की आवश्यकता नहीं है। यहां पर कुछ अंश जो उनकी डायरी में भी इस विषय पर है लिखना मैं धर्म समझता हूॅ क्यों कि उनकी लेखनी से लिखे यह स्वर्णिम अक्षर हैं जो विषय की तारतम्यता को बनाये हुए हैं।

डायरी के अंश अपने यहां की तालीम

पिछले बुजुर्गो ने सात चक्र माने थे और उन्हीं सातों को अभ्यास करते थे और एक के बाद दूसरे पर गौर करते थे। अबूर करके कादिर होते थे। गुदा चक्र, इन्द्री चक्र, नाभी चक्र, हृदय चक्र, कंठ चक्र, आज्ञा चक्र सहस दल कवंल बगैरह है। इन सब चक्रों का एक के बाद दीगरे तय करते थे। इसमें बहुत वख्त मेहनत, ब्रह्मचर्य, खाने पीने में आचार विचार कर ख्याल रखते हुए जिन्दगानियां खर्च हो जाती थी और तब कहीं मंजिले मकसूद तक पहुँचने की नौबत आती थी। पिछले 500 वर्ष के अन्दर जो संत गुजरे हैं उन्होने इस काल के प्राणियों पर दया दर्शित कर के नीचे के तीन चक्रो को छोड़ दिया और हृदय पर तवज्जो को

जमाया और उसी का अभ्यास करने की हिदायत दी। यह वसीला और सिलसिला सिर्फ इस पांच सौ वर्ष के अन्दर जो संत गुजरे हैं, करीब करीब सब का ऐसा ही दस्तूर रहा है। अब भी कुछ लोग ऐसे हैं, या मिलेंगे जो पिछले तरीकों पर चलते हैं और अगर उनसे इस नये तरीकों का कुछ जिक्र कर दिया जाता है तो वे एकाएक कबूल करने को तैयार नहीं होते हैं और लौट फेर करके सैकड़ों सवाल बेमानी और बेसूद करते हैं और ज्यादा ख्याल यह जाहिर करते हैं कि ऐसा मुमकिन नहीं है।

इस सिलसिले की तालीम हृदय चक्र से शुरू करते हैं और तीन बातों में से जो अभ्यासी की रूचि होती है, उसको वैसा करने की इजाजत देते हैं।

क) ऊँ शब्द का ध्यान हृदय चक्र पर या दोनों भौहों के ऊपर।
ख) प्रकाश का ध्यान हृदय चक्र पर।
ग) शगल राबता यानी गुरू की शक्ल का ध्यान।

जो अभ्यासी शब्द की तरफ रूझान रखते हैं उनको शब्द का ध्यान बतलाकार गुरूदेव अपनी इच्छा शक्ति (Will Power) से उसमें ठेस देकर उसी चीज को जाग्रत कर देते है और अभ्यासी को उसी मश्क करने को कह देते हैं।

इस तरीके से जो अभ्यासी प्रकाश की तरफ रूझान रखते हैं, उनको प्रकाश का ध्यान बतलाकर उनको प्रकाश की मशक कराते हैं और अपनी ताकत से प्रकाश को जाग्रत कर देते हैं।

यह आम अभ्यासियों के लिए तालीम है। इस पर अभ्यासी मेहनत भी करता है और वक्त पर सत्संग भी करता है तो असर आहिस्ता—आहिस्ता जिस्म में भिदता जाता है। और नतीजा यह होता है कि उसका वह चक्र जाग्रत हो जाता हैं।

वह हृदय के मुकाम पर जहां दिन की धड़कन होती है, यह ख्याल बांधा जाता है, कि उसके स्थान पर खास हृदय चक्र के अलावा चार और महत्वपूर्ण नालियां हैं जब इन पर चोट लगती है तो वहां जाग्रति होती जाती है उनका अपने यहां कल्ब (यानि हृदय चक्र) रूह, सिर, खफी व अखफी कहते है।

1. कल्बः— बायीं छाती के नीचे।
2. रूहः— दायीं छाती के नीचे।

3. सिरः— कल्ब के ऊपर बायीं तरफ।
4. खफीः— रूह के ऊपर दाहिनी तरफ।
5. अखफीः— सिर और खफी के बीच में।

नोट— यह हृदय के मुकामात हैं। और इन पर जोर देना पड़ता है।

यह भी मुमकिन है, कि राधास्वामियों ने इसी को पांच नाम का जाप कहा हो, लेकिन पांच नाम के जाप की बहस यहां नहीं है। मुमकिन है उनके इन पांच नाम से कोई और मुराद हो। हृदय चक्र की मश्क बहुत अरसा लेती है, और अभ्यासियों को वर्षो लग जाते हैं। फिर भी वह मुकाम आसानी से हाथ नहीं आता है। लेकिन अभ्यास और संत्सग दोनों मिल मिला कर अपना असर जमायें रहते हैं। हृदय का ताल्लुक नीचे के चक्रों और ऊपर के चक्रों से होने की वजह से सब पर रोशनी पड़ती है और जाग्रति आती है।

अब शगल राबता की तरफ यह अर्ज है कि यह शगल हर शख्स के लिए नहीं और न गुरू कभी इसकी इजाजत देता है सिर्फ खास—खास एक दो ऐसे प्रेमी अभ्यासियों में होते हैं जो गुरू से बेलौस, बेगरज इजाजत और बिला किसी मुआवजा के मुहब्बत मानते हैं। उनकी गरज सिर्फ अपने गुरू को प्रेम की निगाह से हर वख्त देखते रहने की होती है उसको इससे कुछ मतलब नहीं कि तरक्की कुछ हुयी या नहीं वह तो बस अपने प्रेमी गुरू के प्रेम में डूबे रहते हैं। लेकिन बाकी अभ्यासी अपनी रूहानी तरक्की का ख्याल रखतें हैं जो एक या दो ऐसे अभ्यासी होते हैं। जो केवल गुरू का शक्ल का ख्याल करते हैं। उन पर गुरू की मुहब्बत और दया से वह सब हालतें गुजर निकलती हैं जो औरों को बहुत अभ्यास में मिलती हैं।

अगर हम यहां अभ्यासियों की तालीम के लिहाज से किस्में करें तो यह तीन मोटी मोटी किस्में होंगी।

1. अभ्यासी जिसका ख्याल शब्द पर ज्यादा जमता है।
2. अभ्यासी जिसका ख्याल प्रकाश पर ज्यादा जमता है।
3. अभ्यासी जो शगल राबता पर ध्यान जमाता है।

अगर ईश्वर अपनी रहमत करें और किसी वख्त पर वह अभ्यासी जिसने आज अभ्यासी की शक्ल अख्तियार की है वह इस हद तक पहुँच

जावे कि गुरू अपनी दया से तालीम का काम उसके सुपुर्द कर दें तो यह मानना पड़ेगा कि जो चीज उसमें गुरू से प्रबल रहेगी वही वह अपने शिष्य को खास तौर से बतायेंगे।

1. वह गुरू जो शब्द पर कादिर होंगे।
2. वह गुरू जो प्रकाश पर कादिर होंगे।
3. वह गुरू जिनकी शगल—राबता उनकी खसुशियत होगी।

यह सब हालते मुकाम सगरा (पिण्ड शरीर) और मुकाम कुबरा (ब्रह्माण्ड) तक है। अभ्यासी और अगर तालीम का काम किसी के जुम्मे है तो भी ये हालतें थोड़ी बहुत चलती हैं।

यह दोनों हालतों के गुजरने के बाद मुकाम औलिया आता है। उस वक्त अभ्यासी त्रिकाल दर्शी हो जाता है। और सब ब्रह्माण्ड सामने देखता है। उस वख्त मुमकिन है कि चीज शब्द या प्रकाश कुछ प्रबलता लिए रहे। बल्कि आखिर में शगल राबता पर कादिर हो जाता है और जहां से जिस अभ्यासी को चाहता है तालीम दे सकता है। अभ्यासी को पूरा पूरा फायदा होता है। वक्त सत्संग वह गुरू जो उस वख्त सत्संग में मौजूद होता है अपनी फनाईयत अपने गुरू में कर लेता है और दूसरों के ख्यालात को अपनी तरफ रागिब कर लेता है। दूसरे अलफाजों में यह कहिये कि अपनी फनाईयत करके और अपना सम्बंध सब भाइयों से जोड़कर आन्तरिक चढ़ाई करता है। इस तरह अपने गुरू की तरफ निसबत जोड़कर वह उनकी दया दृष्टि के मुन्तजिर रहते हैं। दोनों हालत मिलकर गुरू की कृपा का असर शुरू हो जाता है। यह रोज का अभ्यास है। अभ्यासी गुरू की कृपा से ऊपर की सैर करता हुआ, ऊपर के चक्करों का जिल्ली तरीके से आनन्द लेता है। बार—बार ऐसी हालत आने से एक वख्त ऐसा होता है कि अभ्यासी की बैठक अज, खुद हो जाती है। उसके बाद उस पर उससे ऊपर के मुकामात खुल जाते हैं। गरज अभ्यासी की अपनी मेहनत, गुरू की दया दोनों शामिल हो कर रास्ते की मुशकिलात (कठिनाइयों) को आसान बना देते हैं। देखने में यह आया है कि जो अभ्यासी सिर्फ प्रकाश का ख्याल लेकर चले और अपनी हालत की तसदिक अपने गुरू से नहीं कराई तो मुमकिन है कि प्रकाश के ख्याल में धोखा हो जाये, क्योंकि शुरू में प्रकाश महज ख्याली होता है।

शब्द देर से खुलता है लेकिन धोखा नहीं है। प्रकाश में सिखलाने वाले और सीखने वाले दोनों में मेहनत कम है। शब्द में मेहनत है।

इस मजमून को लिखने की मेरी गरज यह है कि तालीम तो मुमकिन है कि दूसरी जगहों पर मिल जाये जहां हमारे यहां एक खसुशियत खास है कि जिसको हर अभ्यासी ने, खसूसन उन अभ्यासियों ने जो बाकायदा अपने गुरू से ताल्लुक रखते हैं, जरूर यह महसूस किया होगा कि वाजवक्त बिना किसी ख्याल के बैठे हैं कि एक–एक धार फैज की या फैज को एक रस मान लीजिए अज खुद महसूस होती है। गुजरे हुए बुजुर्गो की आत्मायें दया करके घूम पड़ती हैं। और वह उस अभ्यासी को बहुत फायदा पहुँचा जाती हैं। मेरा तो यह तजुर्बा है कि यह हालत हजार वर्ष के अभ्यास से भी नहीं पैदा हो सकती है जो सेकेण्डों और मिनटों में हो जाती है। यह फैज या रस अपने असली मुकाम तक की खबर देता है। इस सिलसिले में कड़ी दर कड़ी बुजुर्गान मिले हुए हैं लिहाजा यह हालत इसी जगह के अभ्यासी को महसूस हो सकती है इस सिलसिले की नजाकत को वह लोग ज्यादा समझ सकेंगे जो कुछ दिनों से सत्संग उठा रहे हैं या जिनका हाथ गुरू ने अपनी दया व कृपा करके अपने से ऊपर के बुजुर्गो को पकड़ा दिया है। इस फैज या रस की एक और खूबी या विशेषता मिलेगी कि अगर किसी एक के ऊपर यह फैज गिर रहा है तो उस वक्त जितने भी सत्संगी वहाँ बैठे होंगे सबके ऊपर पर फैज का असर होगा चाहे वह उसको उस वक्त न महसूस करें। पिण्ड शरीर के सब मुकामात एक के बाद दीगरे अबूर होने पर उनकी निस्बत, ताल्लुक ब्रह्माण्डी मुकामात मे दाखिल होने पर एक खतरा है। माया यहां मायावी रूप से हमला करती है, इस वक्त पर गुरू अपनी कृपा से उस अभ्यासी के जिम्मे कुछ भाइयों की सेवा इसलिए उनके सुपुर्द कर देते हैं। कि अभ्यासी यह ख्याल करके कि मेरे जिम्मे गुरुदेव ने कुछ भाइयों की तालीम कर दी है वह अपनी देखभाल खुद करता रहता है परन्तु साथ ही साथ माया अपना पूर्ण रूप से हमला करती है। ख्यालात नफसानी इस कदर सताते हैं कि जो कभी अभ्यास न करने वालों को भी शायद न सताते हों, और अभ्यासी यह समझ कर कि इस हालत से तो बिना अभ्यास के ही अच्छे थे और बेकार इतना वक्त खराब गया, वह गुरू की तरफ से शर्म करने लगता है। सामने जाने से घबराता है, यह ख्याल मन में घुस जाता है कि इनके सामने ऐसी हालत लेके कैसे जाऊँ। इनको मेरी हालत मालूम हो जायेगी। गरज यह कि उनके

सामने जाना मुनासिब नहीं हैं यह गालिबन नफ्स का मुकाम है। यहां पर गुरूदेव अपनी दयालुता से ब्रह्माण्डी शब्द खोल देते है कभी–कभी वह उस शब्द के रस का सहारा लेकर ऊपर को चलना चाहता है कभी वह ख्यालात नफसानी में घिर कर नीचे गिरने लगता है और फिर गुरू का ख्याल करता है। पर सोचता यही है कि किस मुँह से उनके सामने जाऊं। गरज माया का हमला एक तरफ और गुरू की दया दूसरी तरफ कुछ अर्सा यही जद्दोजहद रहती है पर गुरू की दया से कामयाबी अभ्यासी की होती है। तजुर्बा यह बतलाता है कि वह साहबान या भाई नफस से ज्यादा जल्दी और सहुलियत से निकले हैं जिनका प्रेम किसी दूसरे सत्संगी भाई से घनिष्ठ रहा है। मसलन अर्ज है कि मुझ पर यह हमला गुजरे और मेरा प्रेम डा. महेश्वर सहाय जी (उनके दोस्त) से हो तो मैं अपनी हालत का जिक्र डाक्टर महेश्वर सहाय से कह दूँगा शर्म की वजह से पूज्य भाई साहब डाक्टर श्रीकृष्ण लाल साहब से न कह सकूंगा। अब डाक्टर महेश्वर सहाय अपने प्रेम की वजह से मुझे खींचते रहेंगे। और इस सिलसिले में बरगराता न होने देंगे। और तरकीब इस अमर की देंगे कि भाई, तुमको खुद भाई साहब से जिक्र कर देना चाहिये। मतलब इस मिसाल से मेरा यह था कि इस मुकाम के तय करने में गुरू की दया के अलावा हमारे सत्संगी प्रेमी भाई की भी दया होती है जो हमको बार–बार गुरू की दया का दरवाजा और उसके गुस्से का भय हमारे सामने रख देता है। उस वख्त हमारा भाई ही हमारी मदद करता है। और वह मदद काबिलेतारीफ और सराहनीय ही नहीं है बल्कि मैं यह कहूंगा कि उस मदद का कोई मुआवजा आप अपने भाई को नहीं दे सकते हैं क्योकि माया का हमला मामूली नहीं होता है बल्कि बड़ा जबरदस्त होता है। इस मुकामात के तय होने पर कुछ खतरात कम होते है।

नोट– इस हमला को वही जानता है जिस पर गुजरी है और भाइयों में से अक्सर ऐसे गुजरे है कि जो यहां पर ही आकर टकरा गये और छोड़ बैठे।

ब्रह्माण्डी मुकामात में दाखिला होने पर उन पर भी अबूर होने पर पिण्डी और ब्रह्माण्डी दोनों एक सी हालत में हो जाते है। इस दशा में अभ्यासी जहां से चाहता है उन मुकामात को जगा सकता है और पूरी ताकत हासिल हो जाती है। यहां पर दबी शक्ल में खतरात है क्योंकि

अभ्यासी अपने को जब ब्रह्माण्डी पाकर यह समझता है कि मुझको इस कदर ताकत है तो उस वख्त सिद्धि शक्ति में फंस जाने का डर रहता है। फर्ज कर लीजिए कि पृथ्वी चक्र पर पिण्डी हालत में भी कादिर है और ब्रह्माण्डी हालत में भी तो जितने पृथ्वी तत्व से मुतालिक चीजें है सब पर उसका अधिकार होगा और वह यह समझ लेगा कि जो ताकत मुझमें है वह किसी में नहीं है। इस तरह अभिमानी हो जायेगा मुमकिन है उस ताकत का नाजायज फायदा भी उठाये और इस ताकत को दूसरी जरूरियात में इस्तेमाल करे। देखने में अक्सर ऐसा आया है कि लोगों ने अपनी ताकत को फलूलियात में ज्यादा इस्तेमाल किया और सिद्धियों में पकड़कर अभिमानी बन गये।

कुछ लोग इन्द्रियों के चक्कर में फंसे गो नीचे के पिण्डी मुकामात से ब्रह्माण्डी मुकामात में न इतनी मेहनत है और न ही इतना वख्त ही लगता है क्योंकि हृदय चक्र की इतना अर्सा जगाते जगाते वे मुकामात अधिकार पहले ही खुल जाते हैं पर अभ्यासी इन मुकामात की सैर करते हुए और अपने को पूरा ताकतवर समझ कर धोखे में आ जाते हैं। और गिरावट हो सकती है। यहां फिर दोबारा माया अपना हमला शुरू करती है। वहां पहले महज नफसानी ख्वाहिशात और गुरू पर बद एतकादी या सामने न पड़ना था। पर यहां पर हर चीज का हमला हो सकता है चाहे वह कोई शक्ल अख्तियार कर ले। देखने में दो चीजें आई हैं, यह समझता हुआ कि उसका दरबार वसीह (बड़ा) है और उसकी रहमत ही ने मुझको इस दर्जे तक पहुंचाया है। रूपये का चक्कर माया डालना चाहती है। कभी मकान का ख्याल, कभी जायदाद का ख्याल, कभी लड़कों के पेशे मे लगने (Establishment) करने का वहम, गरज एक जाल सा बिछ जाता है। यह रूप माया का सूक्ष्म रूप होता है। एक छिपा हुआ हमला, समझ में उस वख्त यह आता है कि भाई हम जो कर रहे हैं वह कर तो अपने भाइयों की खातिर ही रहे हैं। उसमें गुरू का हुकुम भी था, हमारा न तो इसमें कोई जाती फायदा है और न अपनी कोई गरज ही शामिल है। संसार की भलाई मंजूर है। पहले पेट का इंतजाम लोगों के नहीं होगा तो वे पूजा ही क्या करेंगे। इस किस्म के सब ख्यालात अभ्यासी को आते हैं। गो तालीम का काम भी उसके सुपुर्द हो लेकिन हमला बिना हुए नहीं रहता। पिण्ड से ब्रह्माण्ड में आने के लिए जो हमला था वह स्थूल रूप से था और ज्यादातर वहीं पर गिरे या हमेशा के लिए रास्ते से हट गये। कुछ रहे सहे बचे थे वे यहां पर आकर

ठोकर खाई और बुरी तरह से गिरे, यहां तक कि वे भी गिरे जिनके सुपुर्द तालीम का काम था और जिनके सैकड़ों मुरीद थे, लुत्फ यह कि वे यही समझते रहे कि हम सही हैं, गो असली रस में कसाफत, बैहशत और स्याही आ गयी कबीर साहब ने एक जगह फरमाया है।

चलन–चलन एक कोई कहै, बिरला पहुंचे कोय,
एक काया और एक कासी, दुर्गम घाटी दोय।

हम और आप मिलकर सोचें कि माया हमला क्यों न करे, आप उसको त्याग कर पुरूष परमात्मा की खोज में है। वह कहती है कि मुझको छोड़कर जा नही सकते मुझको छोड़ा नहीं कि मैने तुम्हे गढ्ढे में फेंका नहीं। पहले श्री राम भगवान जी ने पंचवटी पर जाकर सीता जी को स्थूल रूप से त्यागा है। पहले अगर हम मसलन यह ख्याल कर लें कि हमारी पंचवटी हमारे हृदय चक्र के सब मुकामात हैं यानी कल्ब, रूह, सिर, खफी, अखफी है तो यह भी तसलीम कर लें कि माया स्थूल रूप से इस मुकाम के बाद ही छूटती है, यानी माया स्थूल रूप से मुकाम सगरा (पिण्ड) पर छूट जाती है। आज्ञा चक्र पर ही स्थूल रूप से माया छूटती है। दोबारा फिर भगवान ने सीता जी को आग में इम्तिहान (परीक्षा) लेने के बाद भी त्यागा। अगर हम इस मिसाल को यूं ले लें कि ब्रह्माण्डी मुकामात के तय होने पर सूक्ष्म रूप से माया छूट जाती है। अब महज प्रतिबिम्ब या साया की ही हालत रह जाती है। मेरी गरज कहने का सिर्फ यह है कि माया स्थूल और सूक्ष्म दोनों तरीके से पिण्ड और ब्रह्माण्ड के मुकामात पर ही छूटती है। अब अभ्यासी दयाल देश में पहुँच जाता है। वहां की चार हालतें बतलाई है लेकिन यह देश वही देखता है जिस पर प्रभु कृपा, गुरू कृपा और निज कृपा तीनों पूर्ण रूप से हो। यह चार इस तरह है।

1. सालोक्य
2. सामीप्य
3. सारूप्य
4. सायुज्य

सालोक्य

से मतलब है कि उस देश में पहुँच गये और दरअसल यह समझिये कि मेहनत पुरूषार्थ, सत्संग सफल हुआ। यह दूसरे दूसरी आत्मायें, जो हमारे पीराने उज्जाम के अलावा भी अपनी दया दृष्टि करती

है और देखकर बहुत खुश होती है कि यह जवां मर्द माया के हमलों से अपने को बचाता हुआ अपने गुरू की दया पर भरोसा करता हुआ इस देश में दाखिल हुआ है और इसी से खुश होकर मदद ही नहीं करते है बल्कि अपना अंश भी देने की कोशिश करते हैं इनकी दया से अभ्यासी कभी–कभी सराबोर हो जाता है।

सामीप्य

सामीप्य से मतलब है कि अब मंजिले मकसूद के नजदीक है।

सारूप्य

सारूप्य से मतलब है कि अब रूप भी असलियत का है धोखे का नही।

सायुज्य

सायुज्य से मतलब यह है कि वहीं के हो कर रह गये। इसमें स्थाईपन (Permanancy) है।

यह चढ़ाई थी अरूज था। एक अभ्यासी शुरू करता है और इस पदवी पर पहुँच जाता है और भगवान के भक्तों में खुमार हो जाता है जो आत्मा इस किस्म की होती है संसार के लोगों को उसके बहुत बड़ा फायदा पहुँचाता है। बाज संत ऐसे हैं जिनको ईश्वर अपनी प्रेरणा से संसार के प्राणियों के भले या उद्धार के लिये उस दयाल देश से सीधा यहां भेजता है वह शुरू से खसुसियत लिये हुये रहते है और बचपन से ही कुछ न कुछ चमत्कार होता है गो दुनियाबी उसूल और मर्यादा को रखने के लिये ये भी गुरू धारण करके बाकायदा तालीम हासिल करते है चूंकि पहले से सब मसाला तैयार रहता है न गुरू को कुछ करना होता है न शिष्य को, खाली एक दुनियाबी दिखलावा होता है।

ऐसी महान शक्तियां शुरू से ही माया के जंजाल से अलहदा होती हैं क्योंकि उनकी पैदाइश दयाल देश से होती है। उन पर खतरात जिनका पहले जिक्र किया गया है नहीं गुजरते, क्योकि वह यह सब कुछ पेश्तर से गुजरे हुए रहते हैं। फिर भी शरीर रख कर सब कुछ मुकामात में से है गो आम नही।

दयाल देश में भक्त का बहुत बड़ा इम्तिहान होता है गो कि नीचे से पानी शुरू से ही मुश्किलात का सामना करना पड़ता है तरह तरह के खतरात से गुजरना पड़ता है, लेकिन इस इम्तिहान के आगे वह मुश्किलात तकलीफें कुछ नहीं है। इस देश के वासी भक्त को सबसे प्यारी चीज से हमेशा के लिये छूटना होता है। बड़ा सख्त इम्तिहान है।

मसलन मुसलमान एक बुजुर्ग गुजरे हैं जिनको अपने लड़के की कुरबानी देनी पड़ी वह उनको सबसे ज्यादा अजीज था। मुसलमानों में यह कुर्बानी की दस्तूर इसी बात को इशारा करता है। अगर हम अपने यहां के भक्तों की मिसाल लें तो जिस्म कांप उठेगा महाराज हरिश्चन्द्र अपने लड़के की लाश फूँकने के लिये अपनी निर्धन बीवी से जिस पर पहनने के लिए पूरी साड़ी तक न थी– कर मांग रहे हैं। इकलौते लड़के की लाश सामने देख रहे हैं ये इम्तिहान सब भक्तों को देने पड़ते हैं अर्जुन को अभिमन्यु जैसे पुत्र को छोड़ना पड़ा और वहीं श्री कृष्ण तसल्ली देते हैं और उपदेश देते हैं। यहां सच्चे गुरू की दया और ईश्वर की कृपा बहुत चाहिये। कबीर साहब फरमाते है : –

"यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहीं,
शीश उतारे भुईं धरे, तब पैइठे घर मांहि।"

अरूज के बाद फिर नजूल है। चढ़ाई या फिर उतार होता है दोनों हालतों से फिर बन्दा गुजर कर इस हालत को पहुँचता है, कि 'मैं बंदा हूँ और तू खुदा है'।

अरूज में एक मुकाम यूँ गुजरता है कि अपने को पूरी ताकत वाला ब्रह्म के समान समझता है और अक्सर धोखा खाता है परन्तु अरूज के बाद जब नजूल फिर होता है, उस वक्त खुदा की खुदाई और अपनी बंदगी मालूम होती है। ख्याल फरमाइये रास्ता किस कदर मुश्किल और सख्त है अगर यह मायावी हमला बदकिस्मती से उस शख्स पर होवे जिसके जिम्मे कुछ भाइयों की देखभाल भी है और अगर उसने अपने मुरीदों को शगल राबता बतलाया है तो कितना बड़ा खतरा है। इसके मायने है कि वह खुद तो धोखा उठायेगा उसके जो पैरोकार हैं वे सब गड्ढे में पड़ जावेंगे। शुरू में गुरू की मदद भी मिल सकती है लेकिन जब तक अपनी कुब्बतें इरादी (Will Power) मजबूत नहीं है तब तक धोखा होना मुमकनात में से है। गुरू बनना बहुत बुरा है, क्योंकि अगर तालीम का काम जिम्मे नहीं है और कहीं धोखा खा जाता है तो अकेला ही गिरेगा लेकिन अगर तालीम का काम भी शामिल है तो खुद ही नहीं बल्कि औरों को भी जबरदस्त धक्का लगेगा। आखिर में यह तो ठीक है कि मेहनत बेकार तो नहीं जाती किसी वक्त फिर काम आ जाती है। लेकिन रास्ता बहुत मुश्किल है। धोखा माया से ही होता है माया का रूप

रूपया और औरत है शक्ल कुछ माया ने अख्तियान की हो। यही वजह है कि लाखों चलते हैं, हजारों पिण्डी पार किये हैं। हजारों मे कुछ ने ब्रह्माण्ड पार किया एक या दो दयाल देश पहुँचे। वहां हम्तिहान में नाकामयाब रहे और हिम्मत तोड़ बैठै। सब दलीलें, मेहनत, इम्तिहान एक मिनट में गायब हो जाती है इसलिए मैं एक मिसाल देकर इसे बन्द करता हूं। एक बुजुर्ग किसी वजह से शरीर से नापाक थे दरिया जिस में वह नहाना चाहते थे बीस कदम पर थी। वे दरिया की तरफ चलते बढ़ते जाते थे और जिस्म को रेत से मलते थे। उनके साथ एक आदमी ने पूंछा 'महाराज अब तो आप नहाने जा रहे हैं, जिस्म को रेत से क्यों साफ कर रहे हैं आपने फरमाया मुमकिन है कि बीस कदम चले चलते–चलते ही दम आये या न आये तो उस दरबार में नापाक क्यों जाऊं। दूसरे नापाकी में शैतान या माया अपना पूरा हमला भी कर सकती है। गरज यह है कि जब तक शरीर कायम है, कितना ही बड़ा अभ्यासी हो और बुजुर्ग हो हमेशा जरूरत एहतियात की है। यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि आखिर दम तक किसी वख्त पर धोखा हो सकता है।

इस रास्ते में ईश्वर कृपा, गुरू कृपा तीनों जरूरी है। तीनों में से न कोई छोड़ी ही जा सकती है और न एक दूसरे पर तरजीह ही दी जा सकती है कुछ जुबानी शगल ऐसे हैं मैं हमेशा करता रहा और मेरा ख्याल है कि जिसको हजरत किबला लाला जी महाराज से सोहबत का शरफ हासिल हुआ है वह करीब–करीब सभी साहबान कम व वेश इन अशगल को तो जरूर ही करते हैं। मुमकिन है इनके अलावा वे कुछ और भी करते हों।

वे अशगल इस तरह है:–

1. शजरा बुजुर्गान का पढ़ना–रोज सुबह बिना नागा पढ़ना चाहिये।
2. दरूद शरीफ – रोज सुबह बिना नागा पढ़ना चाहिये।
3. जाप, या फत्ता हों, या रज्जाकों या बहावों, या अल्लाह
4. गायत्री मंत्र का जाप रोज सुबह
5. रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम
6. ऊँ शान्ति का जाप रोज नियमित रूप से करना चाहिये।
7. राम नाम का जाप – रोज नियमित रूप से करना चाहिये।

(डायरी बन्द)

नोट– इन सभी उपरोक्त शगल को करने का तरीका एवं उनके बारे में 'पूजा की विधि' नामक पुस्तक में विस्तार से दिया जा चुका है इसलिये यहां विस्तृत रूप से पुनः नहीं दिया जा रहा है परन्तु जो खास बातें पू. बाबू जी ने अपनी डायरी में प्रत्येक शगल या जाप के बारे में लिखी है वह लिखा जा रहा है।

शजरा खानदान

वैसे तो हर बुजुर्ग और सन्त में एक पदवी या सतपद पर पहुंचकर सब खसुशियतें उनमें हो जाती है और क्यों न हो, परमात्मा का प्रेमी हर वख्त परमात्मा की हजूरी, फिर कमी किस बात की। लेकिन फिर भी कुछ न कुछ खशूसियत किसी एक बात की जरूर रहती है मिसाल की तौर पर –

1. किसी ने अपने पीर से प्रेम की अधिकता, ज्यादती है।
2. किसी में दया की ज्यादती है।
3. किसी में तपस्या
4. किसी में दान
5. किसी में बहुत सच्चाई की इम्तहां बगैरह–गरज बहुत कुछ खसूशियत जरूर ज्यादा होती है इस शजरा में यही है कि बुजुर्ग में जो खास बात ज्यादा होती है उसकी भीख उस बुजुर्ग के जरिये से मांगते है, कि हे प्रभु फलॉं बुगुर्ज के तुफैल से उन की खसूशियत का कुछ हिस्सा हम को भी अता करें प्रेम से पढ़ने पर यह खास बरकत रखता है।

दरूद शरीफ

इस दरूद शरीफ में एक खास बरकत है अगर अभ्यासी हिम्मत कर सके तो एक माला दरूद शरीफ की पढ़ें और शुरू से लेकर अपने पीर तक सबाब भेजता रहे तो मेरा ख्याल तो नहीं पूर्ण विश्वास है कि अभ्यासी की खुद की हालत तो कहीं गई नही है लेकिन शर्त यह है कि गुनाह अजीम (बड़ा गुनाह) नहीं होना चाहिये। किसी किस्म का भी, लेकिन जना तो जहर कातिल इस चीज के लिये है। बाज बुजुर्गान ने

इस में बहुत ही एहतियात बरता है। मिसाल के तौर पर एक वाकया अर्ज है।

जब ख्वाजा बख्तार बाकी रहमत उल्लाह ने पर्दा किया तो सवाल यह था कि जनाजा की नमाज कौन पढ़ेगा। एक बुजुर्ग ने फरमाया कि वह शख्स पढ़ेगा जिसने बीस साल से कोई गुनाह अजीम न किया हो खास तौर से जनाह। बहुत से बुजुर्गान थे पर नीचे को सर डाल गये, और किसी की हिम्मत जनाजे की नमाज के लिए न पड़ी। उस वक्त बादशाह अल्तमश ने जो आपके शागिर्द थे उठे और कहा कि मैं जनाजे की नमाज पढूँगा और आप सब साहबान को यकीन दिलाता हूँ कि मैने बादशाह होते हुए भी कभी जनाह की तरफ ख्याल नहीं किया गो कि यह मेरा एक खास राज था जिसको मैं जाहिर नहीं करना चाहता था। ख्याल फरमाये कि कितनी ज्यादा एहतियात बुजुर्गो ने की है। फायदा भी इन शगलों का तभी होता है जब इस किस्म का सदाचार शामिल हो वरना तो खानापूरी है। परमात्मा के रास्ते पर चलने के लिए दुनिया के सुख और इन्द्रियों का भोग तर्क न सही तो एतदाल पर तो लाना ही होगा।

मुझे मेरी दुनियाबी और परमार्थी दोनों मुसीबतों से बचाने वाले ये मेरे सब अशगाल थे। जब मैं हर तरफ से मुसीबत में गिरफ्तार हो गया तो मैने सब का सहारा छोड़ कर अपनी पीर के कदम मजबूती से पकड़े और, रात दिन उनके ही कदमों का सहारा लेकर इस अशगल को करता रहा नतीजा यह हुआ कि पीर ही नहीं बल्कि सब पीरने उज्जाम साया की तरह से मेरी निगाहदाश्त करने लगे और जो मेरे एतकाद और श्रद्धा को पुख्ता करता गया। गो जनाब पूज्य लाला जी महाराज का विसाल हो चुका है लेकिन मैने उनको जिन्दा और मौजूद समझकर उनके ही कदम का सहारा मजबूती से लिया और रात दिन उनके फैज का मुन्तजिर रहा। इस दरूद शरीफ के शगल की तारीफ एक बिहार के परमसंत जी परम हंस साहब जी गुजरे हैं उन्होंने की है आप बिहार से रवाना होकर बहुत घूमें और शादी भी नहीं, की, गालिबन 14 साल की उम्र पर ही सन्यास ले लिया था। आपने इस जाप की बरकत की बड़ी तारीफ की है गो कि आप का जन्म एक ब्राह्मण घर में हुआ था लेकिन परवरिश कायस्थ घराने में हुई थी। आपकी एक किताब दो जिल्दों में 'अद्वैत प्रकाश' जिस को ठाकुर भूरे सिंह, ठाकुर पंचम सिंह आगरा ने लिखा है। यह निहायत बेहतरीन है।

"या फताहों, या रज्जाकों या वहावो, या अल्लाह"

जनाब पू. लाला जी महाराज ने अपनी किताब 'कमाले इन्सानी' में यह तहरीर फरमाया है कि यह जाप हर तरह की मुसीबतों और बला से बचाने वाला बड़ा अकसीर जाप है। सांस को नाभी से भर कर पहले सीधे कंधे फिर बायें कन्धें पर फिर सर के बीच में फिर हृदय पर ले जाकर सांस छोड़ें। एक ही सांस में चारों ख्याल कर लेते है। तब साँस छोड़ते हैं।

गायत्री मन्त्र

यह तो समुन्दर को एक कूजे में बन्द करने वाला सिद्ध जाप है। हमारे हिन्दू ऋषियों ने इस की बड़ी महानता बखानी है। इस को रोज सुबह बिना नागा करने से परमार्थ में बहुत मदद मिलती है। और वातावरण बहुत शुद्ध हो जाता है।

रघुपति राघव राजा राम

यह आपको बहुत प्रिय था एक दिन तक सत्संग में बराबर ध्यान के पहले यह कहा जाता था। बाज वख्त यहां तक भी हुआ कि पहले एक शख्स कहे, उसके बाद सब लोग उसको दुहरा देवें। इस के पाठ से एक प्रेम और आधीनता का समा बँध जाता है ।

ऊँ शान्ति

यह भी जबरदस्त मुफीद पहुँचाने वाला पुख्ता जाप है। जो दरअसल शान्ति देने वाला है। यह जाप पूज्य लाला जी साहब को बहुत प्रिय था। उन्होंने तहरीर किया है कि जिन्दा तो जिन्दा मृतक आत्माओं तक को यह बहुत ज्यादा फायदा पहुँचाती है और उनकी रूहें आकर खुद इसका इजहार करती है।

राम नाम का जाप

इस नाम के जाप में मैने प्रेम, नम्रता और आधीनता का भाव देखा है। यह तो मेरी जिन्दगी भर का शगल रहा और मैंने इसको देखा है कि यह सच्चिदानन्द को या उसके देश की असली खबर देता है और दूसरों पर भी उसका बहुत बड़ा असर होता है।

इतने तमाम अशगाल का दारमदार सब पीराने उज्जाम की दया और रहम पर है। यह सिर्फ बुजुर्गो की दया से ही उन्हीं के दम पर है, उनका साया हर वख्त हमारे साथ है। इसमें कुछ चीजों को मैं पुख्तगी करना चाहूँगा। पहला यह कि हम कुछ नहीं कर सकते है और न ही कर ही रहे है उनकी दया हट जाये तो बेकार बैठे है। बल्कि यह फैज

पीराने उज्जाम का है जो हम पर असर करता है और जिससे दूसरों को फायदा हो जाता है। दूसरे यह कि जो चीज हमारी नहीं उस पर हम क्यों अभिमान करते हैं क्योंकि यह फैज इस वख्त तक नहीं हो सकता जब तक आप की निस्बत बुजुर्गो से न हो। तीसरे इसका शुक्र यह है कि उनके फैज का जायज इस्तेमाल करें और उन बातों से जरूर बचें जिन से उस फैज के टूटने का डर हो।

सिखाने के लिए भी कुछ बुजुर्गो ने कसौटी रखी है। कुछ ने महज प्रेम और खिदमत की वजह से भी लोगों को सिखाने की विद्या या तरीका बतला दिया। वैसे मुकामात सगरा यानी पिण्डी मुकामात कश्फी या कस्बी तरीके से तय होने पर एक इजाजत सत्संग को देते हैं और दूसरी इजाजत मुकामात कबरा यानी ब्राह्मांडी मुकामात तय होने पर तीसरे इजाजत मुकामात औलिया तय होने पर इजाजत ताम्मा यानी मुकम्मिल इजाजत देते हैं। मुसलमान सूफी पहली इजाजत का नाम इजाजत सगरा दूसरी की इजाजत कबरा और तीसरी इजाजत का नाम इजाजत ताम्मा कहते है। अपने यहां दूसरी इजाजत तक देते है जब मुकामात औलिया पर अबूर करा देते है। और तीसरी इजाजत तब देते हैं जब उसको हर तरह से तालीम के काबिल पाते हैं।

हजरत किबला लाला जी महाराज ने तो खास तौर से यह तहरीर फरमाई है कि बुजुर्गो का साया हर वख्त मेहर रह कर सत्संगी को बड़ी मदद करता है इस सिलसिलें में तो खशुसियत के साथ यह बात है। यह सिलसिला बिल्कुल इसी बात पर निर्भर है लेकिन इसकी तसदीक और सिलसिले के बुजुर्गो ने भी की है। जैसे मिसाल के तौर पर राधा स्वामी के एक गुरूजन अपनी हालत लिखते हुये इसका जिक्र लाते हैं, कि हमारे गुरूदेव ने संत कबीर दास, गुरू नानकदेव जो संत तुलसीदास जी से हमारी मुलाकात करवाई और यह निस्बत हमारे यहां मौजूद है। ऐसा लगता है कि संत कबीर साहब से दूसरों को बहुत फायदा पहुंचाता है। मेरा अपना ख्याल है कि इतने हिन्दू सन्तों की दया मेरे ऊपर हमेशा रही, संत कबीर साहब, गुरू नानक देव जी, राय साहब सालिगराम जी साहब, स्वामी राम कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द जी, चैतन्य महाप्रभु, पलटू साहब और महात्मा गांधी जी, से हजरत किबला लाला जी महाराज साहब को काफी उनसियत थी। हो सकता है कि ये बुजुर्ग उनकी वजह से हम पर इतनी दया करते हों, पलटू साहब जो फैजाबाद जिले के रहने वाले थे लेकिन उनके एक शिष्य फर्रूखाबाद

जिले में थे और ताज्जुब नहीं कभी हजरत किबला मौलवी फजल अहमद खां साहब रहमत उल्लाह या दादा गुरू या हजरत किबला लाला जी साहब से आप की मुलाकात हुई हो क्योंकि कहा जाता है कि हजरत किबला लाला जी महाराज को जब इसकी इजाजत दी गई तो करीब–करीब 72 सन्त मौजूद थे। और हजरत किबला मौलवी फजल अहमद साहब ने लोगों से मुखातिब होकर यह कहा था 'कि दुनिया में किसी ने कुछ किया, किसी ने कुछ, मैने अपनी सारी उम्र में यह सूखा बबूल का दरख्त लगाया है मुमकिन है फल दें सके', दूसरे मैंने देखा है और नोट किया है कि जितने सिलसिले हजरत पैगम्बर साहब से ताल्लुक रखते हैं उन सबका ताल्लुक हमारे इस सिलसिले से है जिस का सबूत भी साफ है कि हजरत ख्वाजा मुजद्दीन साहब अलफसानी का सब सिलसिले के बुजुर्गो से ताल्लुक था गो निस्बत नक्शबंदिया ज्यादा थी, या तो कहिये कि गालिब थी। आपने बहुत सी सहुलियतें अपने तालीम में कर दी थी। हमारे यहां हजरत किबला दादा गुरू ने पूज्य चाचा जी महाराज को खानदान चिश्तिया में भी बैत फरमाई थी इससे जाहिर है कि दूसरे खानदान वाले भी हम सब पर अपनी दया करते हैं।

मैंने तालीम में यह तरीका बरता कि खुद अपने को अपने पीर में फना किया और उसके बाद खाली तमाशा देखने लगा। जो हालत उसकी (शिष्य) हुई उससे उसका हाल समझ लिया और यह भी कि किस किस्म की तालीम उसको मुआफिक आ सकती है। अगर खुश किस्मती से उस बख्त किसी बुजुर्ग को दया हुई तो समझ लिया कि यह शक्स इन बुजुर्ग से ही ज्यादा फायदा उठा सकता है और अपने पीर के वसीला से उनके लिये दुआ कर दी। इसमें कम अज कम तकलीफ और मेहनत है और फायदा इतना जबरदस्त कि वह चाहे भी तो फिर उससे दूर नहीं हो सकता है क्योंकि हमारे बुजुर्गो के हाथ बहुत मजबूत हैं और बहुत कम वख्त और कम मेहनत से एक जबरदस्त बीच उसकी अन्दुरूनी सोई हुई ताकतों को जगाता और रोशन कर देता है। एक बात गौर करने की यह है कि अगर हालत पहली बैठक के वख्त स्थूल हो और बोझ सा मालूम हो तो समझ लीजिये कि निचले दर्जे के करम वाला अभ्यासी है और ऐसे शख्स को जब तक आप कर्म नहीं बतलायेंगे उसे सकून नहीं होगा, लिहाजा कुछ मेहनत का काम उस को जरूर बतला देना चाहिए और गायबाना तबज्जों देते रहना चाहिए और जिससे कुछ वख्त बाद उसमे प्रेम का ज़जबा उभरेगा और उसकी तरक्की होगी।

बरखिलाफ दूसरे के बैठने पर प्रेम का ज़ज्ब उठे और जिस्म हल्का रहे या जरा तबज्जों करने पर उसको प्रेम का उभार हो जावे तो ख्याल कर लीजिये कि यह शख्स प्रेम से पकड़ा जा सकता है और वह सिर्फ आप से प्रेम मांगेगा और बिना किसी मुआवजा के आपसे प्रेम करेगा, खिदमत व हर तरह के त्याग के लिये तैयार हो जावेगा। उसका सारा सीना नूर से भरा होगा, हर तरह से साफ होगा लिहाजा वह प्रेम को भीख और प्रेम का सौदा करेगा। पहले वाले से इसके सिखाने में काफी कम मेहनत होगी तीसरा ज्ञानी वह मिलेगा जिसको पिछली कमाई होगी वह तो एक दो सोहबत में कहां से कहां पहुंचेगा। यह ज्ञान की बाते सुनना पसंद करेगा लेकिन इसमें एक धोखा भी है बाज वाचक ज्ञानी होते हैं और अन्दर से वह महज किताबी रटी रटाई ज्ञान रखता होगा और बहस मुबाहिसा की तरफ बुरी तरह से झुकेगा ऐसे लोगों से प्राण छुटाना मुश्किल हो जाता है उसका एक तरीका जो मैने सहल इस्तेमाल किया वह यह कि खुद अपने को अपने पीर में फना करके बैठ जायें ब्रह्मांड से ताल्लुक कर लीजिए, उस वख्त उसके हर सवाल का जवाब आप बड़ी सहूलियत से देते जायेंगे और वह भी मुन्तासिर (Convince) हो जायेगा लेकिन ऐसे लोग बड़े हठी होते हैं उनकी आदत हठ की पड़ी रहती है बाहर निकले कपड़े झाड़े फिर जैसे के तैसे हो गये। मैंने ऐसे लोगों के तालीम में यही किया कि शुरू से उल्टा सीधा जो उस समय में आया कर दिया हृदय के मुकाम से चाहे आज्ञा चक्र से, बाद को चुप हो जाये और उससे कह दे भाई तुम सत्संग जरूर अटैण्ड करते रहो अगर वह सत्संग करता रहेगा तो आहिस्ता–आहिस्ता रूहानी मुकामात सब अज खुद सत्संग के फैज में खुल जाऐंगे और फिर वह आनन्द लेने लगेगा, उस वख्त उसके साथ थोड़ी सी मेहनत करके और गायबाना तबज्जो देकर उसका भला कर दो। बाज औकात तबियत यह करती है कि इतनी वेशकीमती चीज गैर मुस्तहिक (गैर अधिकारी) को या अनजान को क्यों दिया जाये, लेकिन उस वख्त अपने सद्गुरूदेव के हुकुम का ख्याल आता है कि मेरा मिशन जहां तक हो फैलाओ। गीता में भी श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है कि मुझे सब से प्यारा भक्त वह है जो मेरा जिक्र दूसरे भक्तों में बैठ कर सकता है। फिर यह दान अमिट है यह चीज ईश्वर की है और ये बन्दे भी उसी के हैं सोचने की चीज यह है कि अगर आप किसी से दो चार काम लेते हैं जिससे सिर्फ जिस्म या दुनिया का फायदा होता है तो हम कितने उसके शुक्रगुजार होते हैं।

ख्याल तो फरमाइये कि आप जिसकी आत्मा को उसके घर की याद दिला दें तो उसकी आत्मा किस कदर सुखी होगी। आत्मा परमात्मा के अति नजदीक है। उस आत्मा को अपनी तरफ झुकता हुआ देख कर परमात्मा कितना खुश होगा उस आत्मा से तथा जिसने उस आत्मा को उसकी तरफ मायल (रूझान) किया है उससे अति खुश होता है और झुकाने वाले का काम तो मुफ्त में बना बनाया है, ऐसे लोग जो पहले जन्म में कमाई लेकर आये हैं वह तो खुद सन्तों की तलाश में रहते है और जहां उनका हिस्सा होता है परमात्मा दया करके उन्हें उनकी मंजिल तक पहुंचा देते हैं। ईश्वर सबका भला करें। तालीम करने वाला तो तलवार की धार पर चलता है जरा सी गफलत हुई कि मारा गया फिर भी मर्दों ने हिम्मत की है और तालीम का काम किया है। बस चतुर वही है जिसने अपनी डोर अपने गुरू और पीराने उज्जाम के हाथ में दे रखी है।

"जमाले हमनशी दरमन असर करद
वरना मन हुआ खाकम कि हस्तम"

अर्थ– मेरे गुरूदेव के पाक दामन ने मेरे जिस्म में पूरा पूरा असर कर दिया है वरना मैं तो वहीं खाक का पुतला जो पहले था वही अब भी हूँ।

कुदरतन एक ख्याल गुजरता है कि आखिर हम क्या हैं? हमारा जीवन क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? यह दुनिया क्या है? इसका कर्ता धर्ता कौन है? इस दुनिया में कुछ लोग ऐसे गुजरे हैं जिन्होंने इन सवालों पर गौर किया तो इस नतीजे पर जरूर पहुंचें:–

1. अव्वल यह कि इस सृष्टि का करता धरता और अधिष्ठाता एक मालिके कुल्ल है।
2. दोयम यह कि सूरत रूह या आत्मा उसी मालिके कुल्ल का अंश है।
3. सोयम यह कि सूरत या रूह लाफानी है।

14–7–61, शुक्रवार

तरीका ज़ज्ब और तरीका सलूक

यह सिलसिला हमारा परमार्थ की उन्नति प्राप्ति करने का वह जरिया है, जिससे मनुष्य अपने सारे दुनियाबी जिम्मेदारियों को निभाता हुआ केवल अपने पीर, रहबर की मोहब्बत की बरकत से ऐसा दर्जा हासिल कर लेता है जो आज कल प्रायः असंभव सा है, न पहले जैसी प्राणों को मूलाधार तक खींचने की क्रिया जानने वाले, ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले लोग हैं, न ऐसा करने की पर्याप्त शारीरिक बल ही लोगों में है। इसी कारण सिद्ध आचार्य भी नहीं है।

अतएव श्रीमान महात्मा जी ने अपने सद्गुरू की आज्ञानुसार इस आंतरिक योग की क्रिया के शिक्षा का भार अधिकार गुरू पर ही रखा है कि वह अपनी कमाई हुई आंतरिक शक्ति के प्रवाह को जिज्ञासुओं और अधिकारियों के अंतः करण में प्रवेश करके उनकी दबी पड़ी हुई सत् की बिजली को जागृत कर दे ऐसा करने से सुरति और (तल्लीनता) ज़ज्ब का संस्कार उत्पन्न होने लगता है। इस तरह गुरूजनों ने इस योग तालीम के दो मुख्य अंश रखे हैं।

1. ज़ज्ब
2. सुलूक

ज़ज्ब

ज़ज्ब में आध्यात्मिक प्रेम, सत्संग और गुरू कृपा आरंभ ही से पैदा होने लगती है जिसमें मन–सुरत आत्मा की और खींचने और सिमटने लगता है यहां तक कि खींचते और सिमटते हुए अंतर में धुरी पर जाकर टिक जाती है और शान्त हो जाती है। इस खिंचाव और सिमटन में मन की सारी उपाधियाँ तथा बन्धन आप ही आप लुप्त हो जाती है। बस यही ज़ज्ब अर्थात लय (फनाइयत) कि अवस्थायें है। इस ज़ज्ब और फनाइयत कि भिन्न भिन्न अवस्थाओं में मन की शुद्धता (तकाजिया नफ्स) होती जाती है और हृदय भी निरमल (तसफिया कल्ब) होता जाता है।

सुलूक

सुलूक में शारीरिक–मानसिक मायावी प्रकृति, आध्यात्मिक प्रकृति में बदल जाती है और सब्र (संतोष) शुक्र तवक्कुल (भरोसा) कनाइयत (पूर्णसंतोष) जब्त (तितिक्षा) तहम्मुल (नम्रता) बरदाश्त (सहनशीलता) रजा व तसलीम (आत्म समर्पण) इत्यादि पर अटल विश्वास हो जाता है। जज्ब

के सम्बन्ध में मन सतपुरूष में सदा लीन और उसी के वशीभूत रहता है सारांश यह है कि जब मन ज़ज्ब या आंतरिक आकर्षण में आ जाता है और भीतर सिमटने और खींचने लगता है, तब सांसारिक आवरण हट जाते हैं और सूक्ष्म और निर्बल होता हुआ आगे बढ़ जाता है जहाँ पहुँच कर उसे आध्यात्मिक शान्ति और आनन्द मिलता है उत्थान होने पर सुरत वहां से अपने स्थान पर वापिस आती है और मनुष्य उसी रंग में महब होकर सुन्दर शुद्ध जीवन व्यतीत करता है और प्रभु के प्रेम में और लगन में निर्भय होकर स्थितप्रज्ञ (समदशा) रहता है तब उसी को सुलूक कहते है। जज्ब का उरूज (चढ़ाव) और सुलूक का नजूल (उतराव) अर्थात साधक को प्रभु का प्रसाद मिल जाता है और इस प्रकार आगे का काम होता है। आवश्यकता केवल रहबर की दया का रह जाता है कि वह रीझा रहे बस काम बना समझ लीजिये।

फनाइयत या लय होना

अकसर देखने में वह सुनने में आया है कि जब किसी खास ख्याल में इंसान इस कदर महब या मशगुल हो जाता है कि मशगूलियत की (लय को) इम्तहां हो जाती है तो इंसान कहता है कि हम इस कदर मशगूल या महव थे कि हम को भाई कुछ खबर नहीं कि गिरदो निगाह (आस–पास) में क्या हो रहा है और यह हर एक साहब का रोजाना का तजुर्बा है कि दुनियाँ का कोई भी काम करते हैं खास तौर से वह काम जिसको अच्छी तरह करना है उस समय वह अपने ख्याल के घाट को मजबूत कर के एकाग्र कर लेते हैं और ऐसे मशगूल या महब हो जाते हैं कि ख्याल की धार एकाग्र होकर अपने उसी एक नूक्ते पर जम जाती है जो काम उनको करना है बाकी सब तरफ से तबज्जोह सुरत ध्यान या ख्याल चाहे कुछ भी नाम रखे हट जाता है अगर दुनियाँ का ख्याल है तो हम लोग इस ख्याल को महवियत का नाम देते हैं अगर उस वख्त कोई दूसरा शख्स आ बैठता है तो उससे कह देते हैं कि इस वख्त भाई हमको यह खास काम करना है इसलिये आप हमको विध्न न डालें नहीं तो हमारा ख्याल हट जायेगा तो हम इस काम को उतनी अच्छी तरह नहीं कर पायेंगे जितना हम चाहते हैं। यह दुनिया के कामों में हर आदमी का रोजाना का तजुर्बा है दुनिया के हर काम के पूरा करने के लिये मनुष्य को अपने ख्याल की धार को सब तरफ से हटाकर एक नुक्ते (Point) पर लाना पड़ता है और वह लक्ष्य या नुक्ते जो करना है जब सामने होता है तभी कामयाबी होती है, इसी तरह परमार्थ का मामला है

कि हम को हर तरफ से अपने ख्याल की धार को हटा कर एक प्वाइन्ट लक्ष्य पर लाना होता है। वह लक्ष्य जिस पर यह ख्याल जमाया जाये क्या है? वह हर परमार्थी के फरदन–फरदन (अलग–अलग) तय करना होता है। कि वह अपने ख्याल के धार को कौन से लक्ष्य या नुक्ते पर जमा दे जिससे जल्दी कामयाबी हासिल हो। अपने यहां के सिलसिले में 3 तरीके इसके रखे गये हैं।

1. शब्द
2. प्रकाश
3. गुरू की शक्ल का ध्यान

इन तीनों में से किसी एक को लेना होता है और उसको इतना मजबूत कर लेते हैं कि एक मशगुलियत की इम्तहाँ हो जाती है। ख्याल की धार की एकाग्रता की इम्तहां को सूफियों की अस्तला (जुबान) में इसी को फनाइयत कहते है। संत इसे लय अवस्था कहते हैं। जितनी यह गहरी होती जाती है चित्त की वृत्तियां एकाग्र होती जाती हैं। और निवृद्ध (मुक्त) अवस्था को पहुँचती है। जिसका नाम योग है। इसका अभ्यास करना ही योगाभ्यास कहलाता है। योग का मतलब है जुड़ जाना। योगाभ्यास का अन्त यह कहा गया है कि दृष्टा को अपने स्वरूप में स्थित हो जाती है या अपने इष्ट को वह पूरी तरीके से प्राप्त कर लेता है। ऐसा जिक्र मजहबी किताबों में भी है कि चित्त की वृत्तियों के निर्वाह अवस्था को योग कहते हैं।

1. अगर किसी अभ्यासी ने शब्द में महवियत की है तो पिण्डी शरीर में जो शब्द है वही ब्रह्मांड में भी है लिहाजा पिण्डी शरीर के शब्दों को बार–बार जागृत करते हैं और उनको बराबर जगाने से थोड़े ही अरसे में इस पिण्डी शरीर के शब्दों का ताल्लुक ब्रह्मांड के सारे शब्दों से हो जाता है। जिस कदर इसमें महवियत या गहरापन आता जाता है उतना ही ज्यादा गहरा ताल्लुक ब्रह्मांड से हो जाता है शब्द जो पहले पिण्डी थे अब ब्रह्मांडी हो जाते हैं और लक्ष्य पर ही जाकर रूकते हैं पिण्डी शरीर के हर Nervous Plexes पर एक गुत्थी है और उस गुत्थी में शब्द और प्रकाश दोनों है। शुरू में किसी एक जगह के शब्द को जगा देते हैं उसके बाद आहिस्ता–आहिस्ता हर छोटे से छोटे Nervous Plexes पर इस शब्द को झनकार को सुनते हुये सारे जिस्म के Nervous Plexes पर जागृत कर के सारा Nervous System जागृत करते हैं और वह उस असल भंडार में जो ब्रह्मांड में है मिल जाता है वहीं से उसका सीधा ताल्लुक पैदा हो जाता है।

और वह असल चैतन्य शक्ति की धार से मिल कर वहीं का वासी हो जाता है।

यह देखने में आया है कि हर Nervous Plexes पर जो गुत्थी हैं उसकी शकल चिराग की सी है और जब उसमें प्रकाश जागृति हो जाती है तो ऐसा मालुम होता है कि पूरा जिस्म जलते हुए दीये की तरह रोशनी दे रहा है। गालिबन इसी को संतों ने ब्रह्मज्ञानियों की दीवाली कहा है इसी लिये कहा गया है सदा दिवाली संत घर, योगियों ने इस अवस्था को जागृति अवस्था कहा है। इस दीवाली की सी हालत के बाद देवष्ठान आता है और वह वैसे भी दिवाली के बाद आता है। इसलिये यह ख्याल है कि दिवाली ब्रह्मांडी सारे चक्रों के खुलने या जागृति होने को ही कहते हैं।

2. इसी तरह प्रकाश भी शुरू में एक खास जगह या सेन्टर पर जगा देते हैं और फिर हर गुत्थी पर अपने ख्याल की धार को इकट्ठा करके पूरे Nervous Plexes पर जगाते हुये असल भंडार चैतन्य शक्ति से गहरा ताल्लुक पैदा कर लेते हैं। ऐसा भी देखने में आया है कि शुरू में ख्याल की धार को एक चीज पर यानी शब्द पर या प्रकाश पर जमाया जाता है और अभ्यासी का शब्द या प्रकाश खुल गया। ज्यादा तर अभ्यासी ऐसे होते हैं जिनमें केवल शब्द जिस पर वह ध्यान करते हैं प्रबल रहता है जैसे जो शब्द का ध्यान करता है उसमें शब्द जो प्रकाश का ध्यान करता है उसमें प्रकाश प्रबल होता है कुछ अभ्यासी ऐसे भी हैं जिनका शब्द और प्रकाश दोनों एक साथ खुल जाते हैं बाजों में एक पहले दूसरा बाद में लेकिन तजुर्बा या कहता है कि जितनी फनाइयत दोनों में से किसी एक चीज में होती है उतना ही उसका दोनों शब्द या प्रकाश खुलता चला जाता है। शब्द और प्रकाश की जागृति के लिए इम्तहाई दर्जे की हालत में लाने के लिए जैसे जैसे चक्र खुलते जाते हैं तो यह कहते हैं कि अब यह शख्स ब्रह्मविद्या के लिये पात्र बन गया। बाज लोगों के पूर्व कमाई के कारण पूर्व जन्म से ही बहुत से स्थान खुले हुये होते हैं और जरा सी ठेस लगने पर बाकी सब खुल जाते हैं। इस मेहनत को संतो की जुबान में पात्र का बनना कहते हैं जैसे–जैसे नीचे के सेन्टर खुलते जाते हैं और एकाग्रता होती जाती है ऊपर के दूसरे सेन्टर भी खुलना शुरू हो जाते हैं और दिन पर दिन वह उन्नति करता जाता है हर अभ्यासी की हालत मुख्तलिफ होती है। उसकी वजह यह है कि पिछले जन्म की कमाई और संस्कार। किसी के कुछ सेन्टर खुले होते हैं और किसी के कुछ बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जिनके सब सेन्टर खुले हुये रहते हैं और ऐसी आत्माओं जिनकी सब सेन्टर जागृत होते हैं वह तालीम के लिये ही आते हैं और गुरू की दया को खास पात्र शुरू से ही होते हैं। गुरू को भी ऐसी आत्माओं से खास मोहब्बत और प्रेम

होता है। क्योंकि वे एक ही देश या धाम के वासी होते हैं। सिर्फ ठेस देने की जरूरत पड़ती है गुरू को इनके साथ कोई मेहनत नहीं करना पड़ता। क्योंकि उनका पिछले जन्म के साथ होता है और वे केवल तालीम के लिये या जो कुछ उनका रह गया था उसको पूरा करने के लिये ही आते हैं। ऐसे लोगो को सिर्फ इखलाकी हालत सुधारना पड़ता है और सुडौल करनी पड़ती है ताकि तालीम का काम सुन्दरता से अच्छी तरह कर सकें और लोगों पर या उनके पास बैठने वाले लोगों पर अच्छा और पाक असर पड़े उनकी रूहानी हालत कुदरती तौर पर संभली हुई होती है सिर्फ इखलाकी हालत संभालने में वख्त लगता है। दूसरे अभ्यासियों के साथ गुरू को मेहनत करना पड़ता है और साथ ही साथ अभ्यासी को भी क्योंकि उनके हर एक सेन्टर को ठेस देकर जगाना पड़ता है जिसमें वख्त लगता है और मेहनत भी और नतीजा अच्छा तभी निकलता है जब कि शिष्य गुरू के जीवन ही में मेहनत करके व लग लिपट कर अपना काम बना ले और अपनी सेवा या खिदमत से गुरू को बराबर खुश रखे। जो वाकई में सतगुरू हैं वह कभी दूसरे शख्स को इजाजत तालीम या तरीका नहीं देते जब कि उनकी रूहानी दोनों हालतें और इखलाकी मुकम्मिल न हो जाये, कहने का तात्पर्य यह है जब तक अभ्यासी को रूहानी और इखलाकी हालत मुकम्मिल न हो तब तक गुरू बराबर उसके साथ मेहनत और कोशिश करता रहता है गो शरीरधारी होने के नाते मुमकिन है कि कभी गुरू को धोखा हो जाये, लेकिन ऐसा कम होता है क्योकि ऊपर के बुजुर्ग बराबर देखभाल करते रहते हैं। सच्चाई तो यह है कि ऊपर के बुजुर्गो की ही तरफ से इशारा मिले तभी शिष्य को इजाजत तालीम या तरीका देना चाहिए जब बगैर बुजुर्गो के इशारे के अभ्यासी को तालीम की इजाजत दे दी जाती है तो उसमें धोखा होना मुमकिन हो सकता है ऐसी हालत में गुरू अपने दी हुयी इजाजतों को निरस्त भी कर देते हैं। ताकि सिससिला खराब न हो और गैर अधिकारी इस काम को न करें। यह एहतियात सभी बुजुर्गो ने बरती है।

तीसरा तरीका जो पहले भी अर्ज किया जा चुका है कि ख्याल के धार को एक नुक्ते या लक्ष्य पर जमाना है जिससे फनाइयत हासिल हो। वह यह है कि ऐसे सतगुरू की शक्ल का ध्यान करें जिनकी रूहानी हालत कुदरतन जागृति होती है और इखलाकी हालत आहिस्ता आहिस्ता संभलती जाती है। ऐसे गुरू की शक्ल का ध्यान करने से अभ्यासी को पहले जिस्मानी तरीके से और फिर रूहानी तरीके से इस इम्तहाई दर्जे की एकाग्रता हो जाती है कि दोनों की जिस्मानियत और रूहानियत एक हो जाती है। यहां पर भी यही है कि जितनी गुरू की जिस्मानियत और

रूहानियत में फना होगी उतनी ही शिष्य पर गुरू की हालत उतरती जायेगी। इसमें यह देखा गया है। कि यहां तक गुरू की हालत है और कुछ सेकेण्डों के लिए गुरू में शिष्य की फनाइयत हो गई हो उस वख्त यह मालूम होगा कि न मालूम इस कदर ताकत आ जाती है कि पहाड़ के पहाड़ तोड़ दें और जब शिष्य उस फनाइयत के मुकाम से नीचे आते हैं तो फिर अपनी हालत पर आ जाते हैं। जो अभ्यासी साहब पुराने हैं और गौर से सोचें तो अक्सर उन पर यह हालत गुजरी होगी। अब चौबीस घन्टे में से जो वख्त भी गुरू की फनाइयत में गुजरा उस वख्त उसकी हालत एक अजीब सी होती है। जिसको वही महसूस कर सकता है, जिस पर गुजरी हो। मुकम्मिल फकीर इस फनाइयत की उस हद तक गये हैं कि दिन रात के 24 घन्टे में किसी एक सेकेन्ड को भी फनाइयत से नीचे नहीं आये, फनाइयत से नीचे आने को ऐसे फकीरों ने बेअदबी कहा है, जितनी यह फनाइयत गहरी होती जायेगी उतनी ही गुरू की असलियत खुलती जायेगी। चूंकि गुरू अपनी रूहानी और इखलाकी जिन्दगी के नमूने होते हैं वो हालत जो गुरू पर गुजरती जायेगी हूबहू वही हालत शिष्य पर भी गुजरेगी और एक रोज ऐसा आता है कि दोनों मिलकर एक जिस्म एक जान हो जाते हैं इस हालत में पहुँच कर फर्क दूसरे के आँखो के लिए रह जाता है वरना आन्तरिक रूप से वह गुरू तथा शिष्य एक है। यहां पर जो अनुभव होता है वह सब सही होता है और उसमें कोई धोखा नहीं होता है क्योंकि यह अनुभव अपना नहीं होता बल्कि गुरू में मुकम्मिल फनाइयत के बाद होता है यानी गुरू का होता है गुरू और ईश्वर एक होते हैं, गुरू ईश्वर का ही स्थूल रूप होता है गो कि यह कहना लोगों के निगाह में कुफ्र समझा जा सकता है पर असलियत यही है गुरू उस वख्त ईश्वर रूप होते हैं लिहाजा उनके अनुभव मे गलती का कोई सवाल ही नही होता है अनुभव मे गलती सिर्फ वहाफ्र होती है जहाँ कि गुरू में फनाइयत केवल जिस्म तक ही होती है मगर रूहानियत के साथ मुकम्मिल फनाइयत नही होती है इससे उसमें अपना ख्याल भी शामिल रहता है और वह अपना ख्याल अपना रूप ले कर सामने आ जाता है और वैसा ही जवाब देता है इससे यहाँ पर गलती होती है क्योकि आप का अपना ख्याल सही भी हो सकता है, और गलत भी, चूंकि उसमें अपनापन शामिल होता है इसलिए ज्यादातर गलत होने की सम्भावना रहती है। वरना रूहानियत में मुकम्मिल फनाइयत होने की सम्भावना रहती है। वरना रूहानियम में मुकम्मिल फनाइयत के बाद अनुभव में कोई गलती होने का कोई सवाल नहीं है।

इस भण्डारों में जो सबसे बड़ा फायदा हर साहब को होता है उसकी खास वजह यह है कि सतगुरू अपनी दयालुता से हर शख्स में खुद

फना हो जाते हैं। सतगुरू की यही महती दया सिर्फ हम जैसे भूले जीवों को चेताने के लिये ही होता है वे खुद हर शख्स में फना होकर जीवों को असलियत का रूप दिखाते हैं। इधर शिष्य यह कहता है कि अपने ख्यालात की धार को रोक कर या एकाग्र करके उस दया का पात्र बनने के लिए अपनी सब ताकत लगा देता है। उधर सतगुरू की आंखों से, जुबान से, जिस्म से, दयालुता का रस निकल कर शिष्य के जिस्म में पैवस्त हो कर उसके जिस्म को असली गंगाजल से धोता हुआ रूहानियत के वो मुकामात जिनको अभ्यासी बरसों में भी तय नहीं कर सकता था सेकन्डों में तय करा देते हैं।

गुरू को जिससे अपना काम लेना होता है उसमें खुद फना होकर खुदी बोलते हैं और उससे मार–मार का वह कराते हैं जो उस वख्त में जीवों के उद्धार के लिये मुनासिब होता है और कहते हैं कि अपनी इखलाकी जिन्दगी को ऐसा बनाओ कि जीवों के लिये एक आदर्श बन जाओ कि वो तुम्हारी नकल कर के खुद तुम जैसे बनें जिससे जीवों का उद्धार हो वह यह कभी नहीं कहते हैं कि हम जैसे बने हमेशा यह कहते हैं कि तुम जैसे बने क्योंकि वह उसमें फना है और उन्हीं की शक्ति हुक्म देने वाली और खुदी उसको पूरा कराने वाली होती है। मेरा अपना जाती तजुर्बा यह है कि खुद हुकुम दिया और सफे के सफे पलटते गये। और मालूम हो गया है कि यह करना है यह लिखना है और इस तरीके से चलना है। इस हालत पर गुरू और शिष्य दोनों मिलकर एक होते हैं इसीलिये गुरू कहता है कि लोग तुम्हारी नकल करें क्योंकि गुरू को उससे काम लेना होता है इसलिये वह उसको आगे कर देता है और खुद पीछे से उसकी मदद पर रहता है।

भाइयों की खातिर मैं एक और भेद खोले देता हूँ कि शुरू – शुरू में शिष्य यह कोशिश करता है कि गुरू में फना हो जाये और मुमकिन है इसमें उसे कुछ कामयाबी भी मिल जाती है चाहे शिष्य गुरू में कितना ही क्यों न फना हो जायें और वह यह समझ ले कि मैं तो इसमें पूर्ण रूप से फना हो गया पर यह हालत मुकम्मिल नहीं है। असलियत यह है कि जब गुरू शिष्य में खुद फना होता है तभी मुकम्मिल फनाइयत होती है उस वख्त समुद्र का समुद्र उलटता चला जाता है। और इस हालत में दोनों में कोई फर्क नहीं रह जाता है और गुरू से प्रार्थना में कहते हैं कि तुम मेरे हृदय में आकर समा जाओ हृदय में भी आ बैठते हैं और इस वख्त अभ्यासी का मंजिले मकसूद पूरा हो जाता है। जब तक यह हालत नहीं होती तब तक मंजिले मकसूद पूरा हो जाता है। जब तक यह हालत नहीं होती है तब तक मंजिल दूर है या दूसरे अलफाजों में यह कहें कि दिन में जितनी

देर तक गुरू शिष्य की फनाइयत की हालत गुजरती है उतना ही वह पात्र बना है, मैं जाती तरीके से पात्र बनने को फनाइयत की अवस्था कहूँगा जिस अवस्था की गुरू और शिष्य में फनाइयत है वही उसकी पात्रता की हालत है।

बहुत से साहबान ऐसे है जिनकी फनाइयत गुरू में मुकम्मिल हो चुकी हैं और वह यह समझ बैठे कि अब हम खुद मुकम्मिल हो चुके हैं अब उन गुरू से हमारा ताल्लुक नहीं रहा क्योंकि वह इस हालत से आगे बढ़ चुके हैं तब गुरू और शिष्य के रिष्ते का लब्ज एक तरीके से फरजी रह जाता है क्योंकि वह अपने ही को गुरू या सब कुछ समझने लगते हैं और यह भूल जाते हैं कि उनका कोई गुरू भी है लेकिन यह अर्ज करूँगा कि जो लोग इस शगल के करने वाले हैं वे पहली सीढ़ी जिसमें फनाइयत हुई है। उसको कभी न भूले यानी अपने गुरू को कभी न भूलें। नहीं तो बहुत बड़ा धोखा होगा और राह से बेराह हो जायेंगे। मैंने यह देखा है कि पहली फनाइयत कुदरती होती है यानी ईश्वरीय हुकुम से होती है लिहाजा जिसने भी आगे स्टेज पर पहुँच कर पहली सीढ़ी (यानी अपने गुरू) को छोड़ा उसको वर्षो का गोता लग गया और फिर वहीं पर आना पड़ा। मैं थोड़ा सा और अर्ज करूँगा कि फनाइयत सिर्फ जिन्दा गुरू में होती है जो गुरू गुजर चुके हैं उनमें फनाइयत नहीं होती है जो गुरू गुजर चुके हैं उनमें उस वख्त तक मुकम्मिल फनाइयत न हो सकी थी जब वे जीवित थे तो कोई फायदा वहाँ से नहीं हो सकता जब फायदा होगा मौजूदा गुरू और मौजूदा हस्ती से ही होगा। मौजूदा गुरू आप को गुजरे हुये सभी बुजुर्गो से अच्छी तरह मिला देते हैं और निस्बत कायम करा कर खुद पीछे हट जाते हैं लेकिन फिर भी अपना सहारा कायम रखते हैं। और इसी निस्बत के कायम होने की वजह से उन बुजुर्गो से फायदा होता है। जब मौजूदा गुरू अभ्यासी को गुजरे हुये बुजुर्गो से मिलाने के बाद खुद पीछे हट कर पुष्तेपनाही होता है उस समय अभ्यासी को यह धोखा होता है कि उसकी निस्बत उपर के बुजुर्गो से हो गई और अभ्यासी मौजूदा गुरू को भूलने लगता है जब कि मौजुदा गुरू जिसका सहारा लेकर बुजुर्गो तक रसाई हुई है वह ज्यादा एहसान के काबिल है। उसको भूलने से बुजुर्गो से निस्बत टूट जाती है कहने का मतलब यह है कि अभ्यासी को अपने गुरू को जीवन भर में कभी नहीं भूलना चाहिये क्योकि बगैर बाप के दादा–परदादा की मौजूदगी का एहसास होना ही मुश्किल है।

मैं भाईयों से यह भी अर्ज करूँगा कि जितना ख्याल बाप यानी गुरू करता है उतना ख्याल कोई भी नहीं करता। बाप बाप ही है बाप का दिल अपनी रूहानी वह जिस्मानी औलाद की तरफ बड़ी दयालुता रखता है।

इसलिए अच्छा यही होता है कि बाप यानी गुरू की जिन्दगी में ही लग लिपट कर काम बना लें। बाप के बाद चाचा या भाई, लाखों में से कोई कोई होता है जो अपने भतीजे या छोटे भाई का उतना ख्याल रखते हैं जितना कि बाप रखते थे, बाप बाप ही होता है चाचा चाचा है और भाई भाई ही होता है हर एक की हैसियत में फर्क है। फिर इसका दूसरा पहलू भी है लाखों भतीजों और भाइयों में से मुश्किल से एक या दो ऐसे निकल सकेंगे जो चाचा व अपने भाईयों से अपने बाप की तरह इज्जत व मोहब्बत करते हों। वह जबकि पितरी (पिता का प्रेम) मोहब्बत का ख्याल करते हैं तो औरों का ख्याल रफू हो जाता है और होना भी चाहिए। जैसे पिता के बाद घर खत्म सा हो जाता है ऐसे ही जब कोई बुजुर्ग अपने धाम को वापस ले जाते हैं तो कुछ अर्से के लिये उस संस्था में एक अंधकार सा हो जाता है, लिहाजा वख्त को बेकार नहीं करना चाहिये। जो वख्त पिता की सोहबत का मिल सके गनीमत समझकर उससे फायदा उठाना चाहिये जिसने हमारा हाथ पकड़ा है वह बहुत मजबूत हाथ है। वहाँ धोखा नहीं है अगर धोखा होता तो गुरू दूसरे बुजुर्गो का साक्षी न दिलाते, इसी लिये अपने यहां अपने से ऊपर के बुजुर्गो के हाथ पर बैत करते हैं अगर इसके बाद धोखे का ख्याल होता तो समझ लीजिये शैतान ने घेरा है उसका बहुत जबरदस्त हमला है जो कि बार–बार गुरू की सोहबत में धोखा डाल रहा है यह हालत फाकाकशी (व्रत करना) और जबरदस्त रियाजत से दूर हो सकता है दूसरा कोई तरीका नहीं। अपने यहाँ के सिलसिले में बुजुर्गो ने एक और एहतियात बरती है कि अपने परम धाम सिधारने से पहले ही अपने ही जीवन में उन लोगों से काम लेना शुरू कर देते हैं जिनसे बाद में तालीम का काम लेना होता है और लिखी इजाजत के साथ–साथ भंडारे के अवसरों पर उन नामों की घोषणा भी कर देते हैं ताकि भाइयों को एतकाद हो जावे और सिलसिला टूटने न पाये, लोग गुमराह न हों, इतनी एहतियात के बाद भी अगर कोई शख्स उनकी हिदायतों को न माने तो उस पर असर शैतानी है जिसको ऊपर बताये गये तरीको से काबू पाया जा सकता है।

एक तरीका और है कि अपने को गुरू पर बिना शर्त समर्पण कर दें। Unconditional Surrender जब तक यह नहीं होगा दुई मौजूद रहेगी और फायदा नहीं होगा, जब आपने समर्पण (Surrender) कर दिया तो वह ऐसा होना चाहिये जिसमें जरा भी चूँ चरा न हो, गुरू के वचन को ब्रह्मवाणी समझनी चाहिये। ऐसी स्थिति में जो चीज गुरू में है वह खुद ब खुद शिष्य में आ जाती है, यह विद्या दी नहीं जाती बल्कि ले ली जाती है और यहां लेने का मकसद यह है कि बिना शर्त समर्पण पर गुरू प्रेम के वशीभूत हो मजबूर हो जाता है कि अपनी चीज को शिष्य में ट्रान्सफर कर

देता है यहाँ न कोई रिश्ता काम देता है न कोई ताल्लुक केवल पात्र बन जाने की जरूरत है।

(डायरी बन्द)

नोट– गुरू में फनाइयत का एक और सबसे आसान तरीका यह है कि हर समय अपने गुरू का ख्याल करता रहे। ख्याल ऐसा बांध लो कि परमार्थ ही नहीं वरन् दुनियाँ के सब काम, मसलन खाना, पीना, सरकारी, गैर सरकारी सभी दुनियाबी कामों को अन्जाम देते वख्त यही ख्याल करें कि मैं नहीं मेरे गुरू कर रहे हैं, इस तरह वो दिन के अधिकतर समय में वह खयाल से अपने गुरू से जुड़ा रहेगा। और धीरे–धीरे इसी अभ्यास से उसकी अपने गुरू में असली फनाइयत हो जायेगी। इसकी पहचान यह है कि गुरू शिष्य के सब ख्यालों की बराबर रिसीब करेगा।

गुरू शिष्य में तभी लय होता है जब कि उसकी इखलाकी और रूहानी हालत पूर्ण रूप से ठीक हो जाती है। यानी वह हर तरह से पात्र बन जाता है। जब गुरू शिष्य में लय हो जाता है और शिष्य गुरू में तब दोनों एक दूसरे के ख्याल को बराबर रिसीब करते हैं, यह फनाइयत की दोनों अवस्थायें तभी संभव है जब गुरू भी जीवित हो और शिष्य भी यदि शिष्य को फनाइयत अपने गुरू के जीवन काल में नहीं हुयी है ऐसे स्थिति में शिष्य को किसी जीवित शक्ति या हस्ती का सहारा लेना पड़ेगा जो गुरू द्वारा नियुक्त किया गया है सूफियों की भाषा में इस हस्ती का नाम ही मुर्शिद है, और इस बात की हिदायत है कि अभ्यासी जैसे अपने पीर की इज्जत व मोहब्बत करता है उतनी ही इज्जत और मोहब्बत अपने मुर्शिद से भी करें क्योंकि पीर के जीवन काल में फनाइयत हासिल न कर सकें और पीर परदा कर गये इसलिये अब मुर्शिद के जरिये से ही यानी पहले मुर्शिद में फनाइयत फिर पीर में होगी बहुत कम ऐसे खुशनसीब होते हैं जो अपने गुरू के जीवन काल में ही उनमें फनाइयत हासिल कर लेते हैं इसीलिये खानदान चिश्तिया के हर कव्वाली में पीर–मुर्शिद का जिक्र साथ–साथ ही किया जाता है, क्योंकि मुर्शिद में पीर खुद फना होता है और उसकी निस्बत ऊपर जुड़ी होती है इसलिये मुर्शिद से वैसा ही फायदा होता है जैसा पीर से।

पूज्य बाबू जी तथा गुरू परिवार

परम पूज्य लाला जी महाराज के शिष्यों में आप सबसे छोटे उम्र के थे। आप सब के प्रिय थे। सबका प्रिय होना कोई साधारण बात नहीं है। पूज्य बाबू जी निर्मल हृदय कोमल तथा नम्र स्वभाव के थे। यदि गुरू भक्ति का सच्चा उदाहरण देखा जाय तो आप में देखा जा सकता है। चौदह वर्ष की उम्र में जिस सद्गुरू से नाता जोड़ा उसको उम्र के 86 वर्ष तक उसी तारतम्य में जोड़े रहना आपकी बहुत बड़ी धरोहर है पूज्य लाला जी महाराज को आपने कभी यह नहीं समझा कि आप परदा कर गये। उन्हें सदैव

पूज्य जगमोहन लाल जी

पुत्र लालाजी महाराज

जन्म 3.11.1900
फतेहगढ़

निर्वाण: 28.8.1944
फतेहगढ़

"घराना शाद रहे मेरे पीर का
यही है आरजू मेरी यही है इल्तजा मेरी"।

अपने साथ सजीव रूप से ही अनुभव किया। कोई दिन आपकी जिंदगी का ऐसा नहीं था कि जिसमें आप उन्हें भूले हों। उनकी दया का शुक्राना वह सदा करते रहे और यही कहते रहे कि हममें तो कुछ ऐसा नही था बेटे जितनी दया और मेहर आपकी हम लोगों पर है हमेशा उनकी दया की प्यास पपीहे की तरह संजोये रहते थे उनके एक एक शब्द पर अटूट विश्वास, उनके एक झलक पर अपना सब कुछ न्यौछावर करने वाले बाबू जी का प्रेम केवल उन्हीं तक नहीं सीमित था उनके पूरे परिवार से, पूज्य चाचा जी महाराज साहब, पूज्य बृजमोहन लाल जी साहब श्रीमान जगमोहन नारायण जी साहब एवं उनकी पत्नी उनके सुपुत्र स्व. अखिलेश जी, श्री दिनेश जी विनय समीर सब तक थी। वह अपने गुरू दरबार का बहुत आदर करते थे। उनका यह कहना फतेहगढ़ हमारी जड़ है स्वयं इस बात की पुष्टि करती है कि कितना प्रेम कितना आदर आपके हृदय में था हमें उस दरबार का हर तरह से आदर करना है। ऐसी सुन्दर भावना उनके गुरू प्रेम का दर्पण है।

पूज्य लाला जी साहब के परदा करने के पश्चात आप पूज्य जिज्जी (पूज्य लाला जी महाराज की पत्नी) को बराबर 10 रूपये महावार भेजते रहे थे। उस समय 10 रूपये बहुत होते थे आप तनख्वाह मिलते ही पहले फतेहगढ़ मनीआर्डर कर देते थे तब तनख्वाह घर लाते थे। इस बात को कोई नहीं जानता था यहां तक कि पूज्य ताऊ जी भी नहीं जानते थे। वह जब तक रहीं आप उनका हर तरह से ध्यान रखते थे।

एक समय जब पूज्य लाला जी साहब की छोटी लड़की का गौना था, घर की आर्थिक स्थिति तो जर्जर थी ही पूज्य जिज्जी ने पूज्य बाबू जी को खत लिखा कि लड़की की बिदा होना है अगर हो सके तो 500/– रूपये भेज दो। आपके पास इतने पैसा नहीं थे और यह आपके भी तंगी का समय था। आप बहुत परेशान हुए आपने अपने बड़े दामाद स्व. डा. विश्वम्भर नाथ सक्सेना जी को पत्र लिखा कि तुम फौरन इस पते पर 500 रूपये भेज दो मेरा हाथ तंग है यह तुम मेरे ऊपर उधार समझना। उस समय आपके दामाद डा. साहब की बड़ी अच्छी प्रैक्टिस थी आपने अविलम्ब 500/– भेज दिया पूज्य जिज्जी रूपये पाकर बड़ी खुश हुई और आपने बहुत आशीर्वाद भरा पत्र लिखा। आपके आशीर्वाद से ही उसके बाद डा. विश्वम्भर नाथ जी का रूझान भी परमार्थ की तरफ हो गया।

हम लोगों को हर समय यह निर्देश दिया करते थे कि वहां के हर सदस्य को बड़ा प्रेम दो उनकी हर तरह से मदद करो उनका आदर करो।

जिस समय स्व. अखिलेश जी बीमार थे आपने सेवक को पत्र लिखा कि आप पूज्य लाला जी साहब के पोते हैं और बहुत बीमार हैं तुम दस दिन की छुटटी लेकर लखनऊ चले जाओ। उस समय सेवक नवाबगंज गोण्डा में पोस्टेड था और उन्हें अच्छे से अच्छे डाक्टर को दिखा दो और हर तरह से उनका इंतजाम कर देना, स्व. अखिलेश जी को भी कहा कि हिम्मत करके जन्म शताब्दी पूज्य लाला जी साहब के भंडारे का इंतजाम करो ईश्वर तुम्हारी मदद करेंगें और बुजुर्गो की दया तुम पर बरसेगी। आपने वैसा ही किया और लोगों ने देखा है कि भयंकर बीमारी में बिस्तर पर पड़े पड़े वे भंडारे का प्रबंध कर रहे थे। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दें। उनके इस त्याग व प्रेम का यह असर हुआ कि सारा सत्संग परिवार उनको आज तक बड़ी श्रद्धा से याद करता है। जिसका श्रेय पूज्य बाबू जी को विशेष रूप से जाता है। पूज्य बाबू जी जब तक जीवित रहे आप फतेहगढ़ वाली माता जी की बड़ी इज्जत करते थे और श्री दिनेश जी को भी इस राह पर लाने में हर संभव सहायता करते रहे थे। आपने उनको दीक्षा दी और फिर तालीम एवं सत्संग की इजाजत देकर फतेहगढ़ सत्संग की व्यवस्था देखते रहने की हिदायत दी। हम सबको भी हमेशा इस बात का बहुत ध्यान रखने का निर्देश दिया था कि हर तरह से वहाँ का आदर करें। जब भी उनके परिवार का कोई सदस्य आपके पास आता था। आप उनका बहुत आदर और प्रेम तो करते ही थे किराये के रूपये अवश्य देते थे। फतेहगढ़ का नाम रौशन हो यह आपकी प्रथम अभिलाषा और प्रयत्न था।

इस वर्ष फतेहगढ़ भंडारे पर पूज्य माता जी जब बोली (शायद प्रथम बार) तो आपने यही कहा 'कि इतना तो हम जानते हैं कि श्याम लाल और हमने भंडारे में मसाला पीसा है।' ऐसा प्रेम ऐसे गुरूमय शिष्य कम होते हैं। इस वर्ष चलते समय पूज्य माता जी जो काफी बीमार और थकी थी, ने हम लोगों से यही कहा कि जैसा तुम्हारे पिता जी ने हम सबको निभाया वैसा ही तुम लोग भी निभाना। दिनेश को छोटा भाई और विनय को अपना भतीजा समझना। पता नहीं अगले भंडारे तक क्या हो मैं यह फतेहगढ़ भंडारे एवं सत्संग की जिम्मेदारी तुम लोगों पर छोड़ रही हूँ। यह कहते कहते आप प्रेम विह्वल हो गईं और नेत्रों में आँसू छा गये। यह प्रेम पूज्य बाबू जी की दी हुई धरोहर है पूज्य बाबू जी के अटल विश्वास अनोखे प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में इतने लोगों के होने पर भी आप ने हम लोगों को

इस योग्य समझा ईश्वर हम लोगों को शक्ति दें कि हम उनके विश्वास को ठेस न लगने दें वह प्रेम और आदर का बीज जो आपने सन् 1914 में अपने गुरू देव के चरणों में अर्पित किया था उसने प्रेम के वटवृक्ष का रूप धारण कर लिया जिसकी छाया में हजारों लोगों ने शान्ति प्राप्त की और जिसकी हर शाख अपनी जड़ की तरफ ही झुकती रही। परम संत की पदवी तक पहुँचने पर भी आपके हर रोम रोम में वही पूज्य लाला जी साहब थे। वह कैसे रहते थे, क्या खाते थे, किस तरह का प्रेम करते थे, उन्हें क्या पसंद था, उनकी मोहनी छवि, उनका उदार दयालु रूप ऊँचे सदाचार का वर्णन करते वे कभी नहीं थके। वही बातें जैसे रोज नई शक्ति का संवरण कर रही हो। जमाने भर में उन्हें उनसे ऊँचा सन्त कहीं नही मिलें।

पूज्य चाचा जी साहब की दयालुता का वर्णन करते थे कि वह बड़े दयालु संत थे उनकी रियाजत के बारे में कहते थे कि बहुत बड़ी रियाजत थी आपकी। आप उनको बहुत प्रिय थे। वह (पूज्य चाचा जी) पूज्य बाबू जी को मुंशी, बिरजू की तरह कहते थे। अर्थात अपनी औलाद की तरह प्यार करते थे।

आप पूज्य ताऊ जी से भी बड़ा प्रेम करते थे और प्रेम की एक वजह यह भी थी कि पूज्य लाला जी साहब पूज्य ताऊ जी से बहुत प्रेम करते थे।

गुरू घराने की इस अनुपम गूढ़ प्रेम की मर्यादा रखने वाले पूज्य बाबू जी को सबका आशीर्वाद प्राप्त था। उन्हें पूज्य चाचा जी महाराज पूज्य ताऊ जी की भी इजाजत (पूर्ण पदवी) थी। जिसके कारण आप जिसके हाथ पर भी चाहते बैत करते थे। मेरे पुत्र अनमोल के दीक्षा के समय परम पूज्य चाचा जी महाराज की इतनी जबरदस्त मौजूदगी थी कि पूज्य बाबू जी ने पूज्य भाई साहब तथा सेवक से कहा कि पूज्य चाचा जी साहब की जबरदस्त मौजूदगी के कारण एक बार उन्होंने यही सोचा कि उनके हाथ पर बैत कर दें। परन्तु फिर पूज्य लाला जी साहब के हाथ पर ही करना मुनासिब समझा क्योंकि पहले उनका ख्याल ही लेकर बैठे थे ऐसा करने से कहीं बेअदबी न हो जाये फिर भी पूज्य चाचा जी साहब को भी सुपुर्द कर दिया और पूज्य चाचा जी साहब को बहुत खुश देखा। बिजनौर के सत्संगी भाइयों को आपने पूज्य ताऊ जी के हाथ पर बैत किया है।

आपकी गुरू भक्ति अद्वितीय थी गुरू प्रेम आलौकिक था तथा विश्वास अटल था पूज्य लाला जी साहब आपके जीवन के कर्णधार थे।

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हम लोग अपने दिव्य स्वरूप पूज्य बाबू जी के दिखाये हुये मार्ग पर चलें और गुरूजनों का आदर करना सीखें तथा उनका प्रेम प्राप्त कर सकें।

पूज्य बाबू जी तथा उनके प्रिय शिष्य ठाकुर शिव नरेश सिंह

ठाकुर शिव नरेश सिंह ग्राम शिवपुर डियर नई बस्ती जिला बलिया के रहने वाले थे। आपका जन्म 10 दिसम्बर सन् 1910 में हुआ था। आपका पूज्य बाबू जी से प्रथम मिलन 1941 दिसम्बर में हुआ था। जब आप लोको इन्सपैक्टर औड़ीहार मे थे। परम पूज्य बाबू जी आपसे बहुत प्रेम करते थे। आपकी हिम्मत की बड़ी प्रशंसा करते थे और आपको पूरब का शेर कहते थे। आप अपने जबान मुबारिक से अक्सर कहा करते थे कि इतना साफ दिल, बुलन्द हिम्मत और मददगार आदमी इस युग मे बहुत कम मिलेंगे। आपसे संबंधित कुछ घटनायें प्रशंसनीय है जिनसे और भाईयों को भी प्रेरणा मिलेगी और उनसे साफ दिली बुलन्द हिम्मत का इजहार होगा।

(1) आप मेल ट्रेन के ड्राइवर के पद पर कार्यरत थे जिसमें जगह–जगह रूकना, खाने पीने की अव्यवस्था या बाहर खाना अनिवार्य ही था। ठाकुर होने के नाते आप मांस मछली तथा मदिरा का भी प्रयोग करते थे। एक दिन पूज्य बाबू जी ने कहा कि क्या यह सम्भव नहीं है कि आप किसी और पद पर स्थानान्तरण करा लें जिससे जगह जगह के खाने पीने से बच सकें। आपने फौरन ही अपनी पोस्टिंग दूसरे स्थान पर करा ली और मांस, मछली, मदिरा छोड़ दिया। इस स्थान पर आने से आपकी आमदनी में उस समय 400–500 प्रति माह की कमी हो गयी जो अपने में एक उदाहरण रखती है। यह कितना बड़ा त्याग है। उस समय इतनी बड़ी रकम का नुकसान सह पाना बिरलो के ही वश में है। ऐसे ही शिष्यों पर गुरू फिदा होते हैं।

(2) जब 1952 वार्षिक भंडारा सिकन्दाबाद में परम पूज्य बाबू जी ने आपको तथा अन्य कुछ बनारस के लोगों को परम पूज्य ताऊ जी की सेवा में प्रेषित किया और दीक्षा देने का निवेदन किया। ये सब लोग आरम्भ से पूज्य बाबू जी के पास बैठे थे और उनसे बहुत प्रेम करते थे और उन्ही से दीक्षा लेना चाहते थे परन्तु किसी की हिम्मत नही थी कि इस बात को

पूज्य ताऊ जी के सामने रखें क्योंकि सभी भली भांति परिचित थे कि पूज्य बाबू जी पूज्य ताऊ जी की बड़ी इज्जत करते थे और इस बात का बुरा भी मान सकते थे।

स्व0 डा0 शिव नरेश सिंह जी

जन्म – 10 दिसम्बर 1910
शिवपुर डिअर
जिला– बलिया

निर्वाण– 28 जनवरी 1980
शिवपुर डिअर
जिला– बलिया

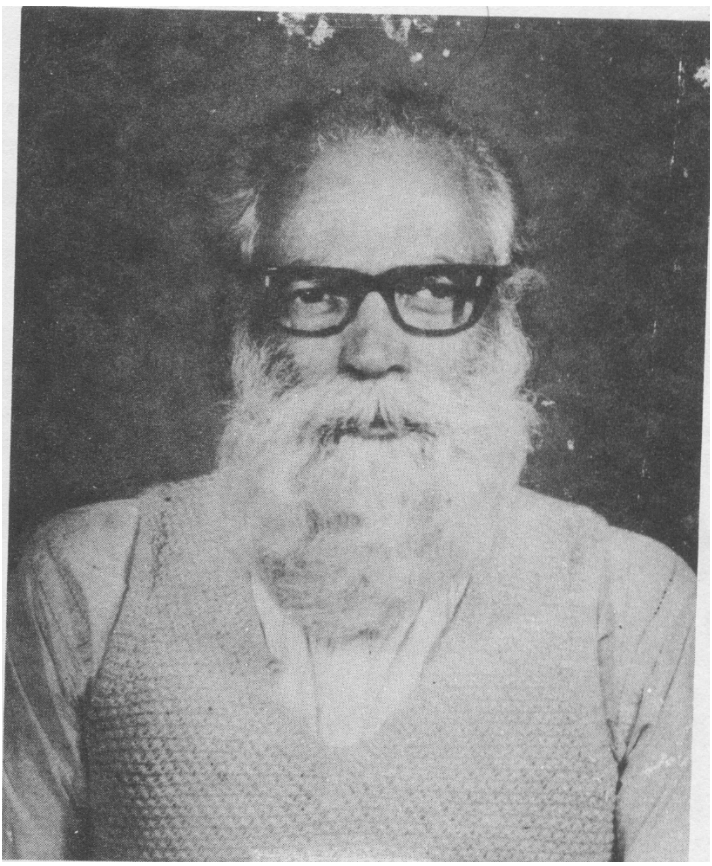

पूज्य बाबू जी आपको 'शेरे पूरब' कहा करते थे।

''तेरी खुशबू नहीं गई घर से मेरे
महक उठा तेरी याद से ऑगन मेरा''

स्व0 श्री अब्दुल रहीम अन्सारी साहब

जन्म – ....
आलमपुर – भदोई

निर्वाण– 14 सितम्बर 1987
आलमपुर, भदोई

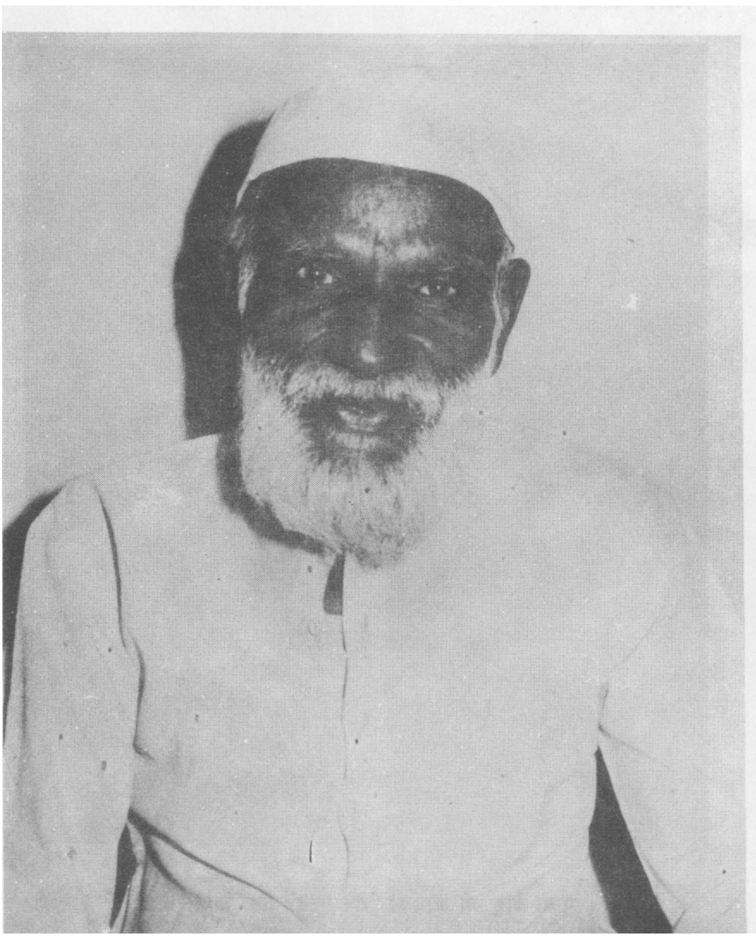

परन्तु ठाकुर साहब ने अपने इस विचार का स्पष्ट रूप से पूज्य ताऊ जी से कहा आप बड़ें खुश हुये और बाबू जी से कहा ''श्याम लाल अब वख्त आ गया है कि तुम्ही इन लोगों को दीक्षा दो'' इसी प्रकार 1952 में पूज्य बाबूजी ने दीक्षा दी। और ठाकुर साहब आपके प्रथम शिष्य थे।

(3) जब आप सेवानिवृत्त होकर अपने ग्राम शिवपुर डियर में रहने लगे तो आपने परम पूज्य बाबू जी से इच्छा जाहिर की एक बार आप यहाँ गाँव में अवश्य आयें। उन्होंने कहा कि क्योंकि वह शुरू से ही बाहर रहे हैं इसलिये आपके एक बार आने से यहाँ कुछ लोग सत्संग के लिए आने लगेंगे और उनके लिये वातावरण बन जायेगा। परम पूज्य बाबू जी ने कहा कि आने में उन्हें कोई एतराज नही परन्तु अब शौच के लिए बाहर जाने की आदत नहीं है और गांव में बाहर ही जाना होता है। आपने विनती की कि आप अवश्य आवें और खुद अपने हाथ से ईंट लगाकर एक दिन में लैट्रिन बना डाला जो अब भी है। पूज्य बाबू जी के पहुँचने पर जब उन्हें पता चला कि खुद अपने हाथ आपने बनाई है तो प्रेम के वशीभूत हो के आँसू निकल पड़े ऐसी उनकी गुरू सेवा थी ऐसा गुरू प्रेम था और इतनी कर्मठता यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी जो उन्हें औरों से अलग श्रेष्ठ श्रेणी में रख देती थी।

गाजियाबाद में वार्षिक भंडारे के अवसर पर आपने पूज्य बाबू जी से कहा अब मेरे बुढापा का समय है न जाने कब वापसी हो जाये मेरी यही इच्छा थी कि आपकी दया से शिवपुरी डियर में भंडारा वर्ष में एक बार हो जाता तो बहुत अच्छा होता। मेरी ऐसी इच्छा है बाकी जैसा आप बेहतर समझें कुछ देर आप चुप रहे फिर आवेश में आके बोले ठाकुर साहब मैने आपकी ही नहीं आपकी पत्नी तथा बच्चों तक की जिम्मेदारी ली है। जैसा आप चाहते हैं वैसा ही होगा पूज्य बाबू जी ने आपको दिया हुआ वचन पूरा किया और उनके पुत्रों में ऐसी उत्कृष्ठ भावना श्रद्धा की जगी कि रांची तथा कानपुर से आकर दोनों भाई भंडारे का सब इन्तजाम करते हैं। यह पूज्य बाबू जी के आशीर्वाद का ही फल है।

आपने पूज्य बाबू जी का कार्य बड़े लगन से बनारस, समस्तीपुर, उजियारपुर, औड़ीहार, गाजीपुर, बलिया तथा पूर्वी जिलों में किया। आप में एक विचित्र आकर्षण शक्ति थी जो भी उनसे बात करता था उनसे प्रभावित हो जाता था। पूर्वी इलाके के सभी भाईयों से वह विशेष प्रेम रखते थे और

उन्हें अपने परिवार का ही सदस्य समझते थे हर समय भाईयों की आर्थिक एवं सामाजिक सहायता के लिये तत्पर रहते थे। सभी भाईयों को इकट्ठा करके भंडारे में ले आना उनकी विशेष रूचि थी। इसके लिये अथक परिश्रम करते थे। वे कहा करते थे कि पूज्य गुरूदेव ने दो बार मुझे जीवन दान दिया है मेरा सब कुछ उनकी दया से है। उनकी सेवा में सबको अर्पण करना ही उनका निरन्तर कार्य था।

आप 28 जनवरी 1980 को अपना पार्थिव शरीर छोड़ कर परम धाम में विलीन हो गये पर उनकी याद पूर्वी जिले के प्रेमी भाईयों के दिलों में आज भी ताजा है और आज भी उनकी याद से उनके नेत्र अश्रुपूर्ण हो जाते हैं। ऐसे शिष्यों पर गुरू का गर्व होना स्वाभाविक है। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शांति दें तथा उनके परिवार को सुखी सम्पन्न रखें तथा अपना सच्चा प्रेम दें।

परम पूज्य बाबू जी एवं अन्सारी साहब

मौलाना अब्दुल रहीम अन्सारी ग्राम आलमपुर पो. भदोही जिला बनारस के रहने वाले थे। आप रेलवे विभाग में असिस्टेन्ट स्टेशन मास्टर के पद पर कार्यरत थे। आपका परम पूज्य बाबूजी से प्रथम मिलन गाजीपुर में 1942–1943 में हुआ था जब आप ताड़ी घाट में तैनात थे। आप पहले मुसलमान थे जिन्होने सन्तमत को अपनाया पूज्य बाबू जी ने आपके साथ बड़ी मेहनत की थी आप अक्सर कहा करते थे कि उस वख्त के भाईयों में सबसे ज्यादा मेहनत इनके साथ अपने की थी क्योंकि आप की यह इच्छा थी कि दादा गुरू मौलवी फजल अहमद साहब का ऋण उतार सकें और यह संतमत मुसलमानों में उनके जरिये फैले आपके जरिये आपके परिवार के कई सदस्य आये और अब भी हैं। परन्तु किन्ही कारणों वश जितनी अपेक्षा पूज्य बाबू जी का इस कार्य की उनसे थी उतना न हो सका आपके सम्बन्ध में दो एक घटनायें है जिनका लिखना यहाँ मुनासिब होगा।

(1) एक बार आप काफी दूर तैनात थे जहां से बराबर आना जाना संम्भव न था अब आप गाजियाबाद भंडारे पर तशरीफ लाये और सत्संगी भाईयों ने अपनी अपनी हालत का बयान पूज्य बाबू जी से किया। इन सब बातों को सुन सुन कर आपके हृदय में क्षोभ हुआ कि उन्हें तो कुछ भी नहीं आता। आप बताते थे कि वह हाल में बैठे थे और पूज्य बाबू जी बरामदें में टहल रहे थे आपने कहा बेकार का वहम न लाईये आप सब जानते हैं आप कहते थे कि उनकी ऐसी हालत हो गयी कि अगर वह आसमान की तरफ देखते थे तो कुदरत के सारे राज मालूम होते थे। औरत, मर्द जिस पर

निगाह डालते उसका सब कुछ मालूम हो जाता और यह हालत कई दिन रही एक दिन अचानक आपको होश आया कि वह तो सब पूजा वगैरत छोड़ बैठे हैं आपने खत द्वारा अपनी हालत का बयान पूज्य बाबू जी से किया। तब कहीं जाकर इस ख्याल से छुटकारा पा सकें। आपने यह बताया कि हुजूर साहब (वह पूज्य बाबू जी को हुजूर साहब के नाम से ही सम्बोधित करते थे) ने फरमाया कि हमारे सिलसिले में गुरू इन सब चमत्कारी चीजों पर परदा डाले रहते हैं जिससे समय बर्बाद न हो।

एक बार की बात है आप एक साहब को तबज्जोह देने बैठे आपको थोड़ी ही देर बाद ऐसा लगा कि एक बहुत मोटा काला दैत्य निकला और बुरी तरह से उनका गला दबाने लगा आप बुरी तरह डर गये आपने इसका जिकर पूज्य बाबू जी से किया। पूज्य बाबूजी ने आपको बताया कि जब कभी किसी नये आदमी को तबज्जोह दे उसने अपने को पूरी तरह अपने गुरू में लय कर लो यदि लय करे लोगे तो कोई परेशानी नहीं होगी। और इससे पहले तबज्जोह देने से उसके बुरे ख्यालात का दैत्य तुम पर हावी हो जायेगा जैसा कि अभी हुआ। जब तक पूरी तरह पीर में फनाइयत न हो किसी को तबज्जोह न दें।

एक बार आप पूज्य बाबू जी को देखने गाजियाबाद आये थे आपको दूसरे दिन ही पूज्य बाबू जी ने बुलाया और निर्देश दिये कि आप फौरन अपने मकान चले जायें। आपके जहन में यह ख्याल हुआ कि बहुत लोगों के रहने से शायद खाने पीने की दिक्कत हो रही है। ऐसी ख्याल से आप श्री जे. पी. बाजपेई जी के घर पर चले गये। दूसरे दिन फिर आपने उनके बारे में दरियाफ्‌त किया और थोड़ी सख्ती से कहा कि वो क्यों नहीं गये। मजबूरन आप जाने को तैयार हो गये और चलते समय पूँछा कि अगर हुकुम हो तो गांव और फतेहगढ़ होता चला जाऊँ। आप बहुत खुश हुये और फौरन जाने को कहा आप सब जगह गये और अपना आखिरी सलाम पेश किया। आपने खत में पूज्य बाबूजी को लिखा था कि आप पूज्य मौलवी अब्दुल गनीं साहब के मजार पर पहुँचने वाले थे तभी आपने देखा कि मौलवी साहब तथा कई और बुजुर्ग उन्हें लेने सड़क पर आ गये। और जब आपने पूज्य बाबू जी का वास्ता देकर सलाम किया तो उन्होंने बहुत प्रेम से उनका इस्तकबाल किया और अपनी दया से भर दिया था। यह आपका अन्तिम पत्र था और उसी समय आप अपने पार्थिव शरीर को छोड़कर 14 सितम्बर 1987 को परम पिता में समा गये।

आपने बनारस, भदोई, गोरखपुर क्षेत्र में पूज्य बाबू जी के परमार्थ का काम किया पूज्य बाबू जी के आप प्रिय शिष्यों में थे जिनको पूज्य बाबू जी ने इजाजते बख्शी थी।

परमार्थ का कार्य

जिस से प्रभु को अपना काम लेना होता है या यह कहिये कि जो प्रभु का काम करता है उसके लिये सब साधन वह स्वयं इकट्ठा कर देते हैं। यही बात पूज्य बाबू जी साहब के संबंध में भी कही जा सकती है।

बचपन में ही पहली भक्ति की किरण आपको अपने माता एवं पिता के संस्कारों को पढ़ा, इसके पश्चात गांव के ही एक आर्य समाजी विचार के मास्टर साहब के द्वारा सदाचार एवं सद्भावना की कृपा दृष्टि आप पर बहुत रही और आप भी बहुत प्रभावित रहे और इसके पश्चात सन् 1914 में वख्त के पूरे सन्त सदगुरू पूज्य लाला जी महाराज ने आपको पूर्णरूप से अपना कर सैकड़ों मनुष्यो को परमार्थ पर चलाने का काम सौंप दिया जिसको आप जीवन पर्यन्त तक करते रहे थे।

परम पूज्य लाला जी महाराज जिनसे तालीम का काम कराना चाहते थे उनको अपने जीवन काल में ही कह देते थे कि आज शाम को तुम सत्संग कराओ और सबको तबज्जोह दो यह कहने पर कि तबज्जोह कैसे दी जाती है नहीं मालूम वह कहते थे कि तुम बैठ कर यह ख्याल बांध लो कि तुम नहीं, हम बैठे हैं और प्रभु तथा मेरा काम समझ कर हिम्मत से काम करो, कामयाबी तुम्हारे कदम चूमेंगी यह कभी भूले से भी न समझ बैठना कि यह मेरा सत्संग है यह ख्याल करना कि तुम सेवक हो। इस पुनीत कार्य का आरम्भ आपने सन् 1929 में ही कर दिया था और अपने कई साथियों को पूज्य लाला जी महाराज के चरणों में प्रेषित किया कि जिनमें डा. महेश्वर सहाय जी तथा पं. नन्हू मल जी थे जो लोग अंत समय तक इस रास्ते पर कायम रहे। पू. लाला जी साहब के निर्वाण के बाद आपने इस कार्य को और तेजी से शुरू किया और अन्तिम सांसों तक करते रहे।

प्रारम्भ में सबसे पहले सन् 1929 में सत्संग भंडारे की बुनियाद सिकन्दराबाद में पड़ी उस समय पूज्य बाबूजी बुलन्दशहर में तैनात थे। उस समय लोग बहुत कम थे और अधिकतर लोग पूज्य लाला जी साहब या

पूज्य चाचा जी साहब के समय के थे अर्थात् उनके पास जाया करते थे। सबसे पहले पूज्य बाबूजी की प्रेरणा से (हमारे दोनों चाचा) उनके दोनों छोटे भाई स्व. बाबू राम जी एवं स्व. श्री गंगादीन जी तथा पूज्य स्व. बाबूराम जी मित्र ग्वालियर के वकील साहब स्व. बाबू दामोदर दास जी, बिहारी जी कटिया वाले (यह सब कटिया के थे) कुछ रिष्तेदार तथा और कुछ गांव के लोग सत्संग में शामिल हो गये थे। सन् 1929 से 1939 तक इसी प्रकार इधर पश्चिमी जिलों में परमार्थ का काम उत्साह से होता रहा था। सन् 1939 में पूज्य बाबू जी का तबादला गाजीपुर हो गया और पूर्वी जिलों में परमार्थ का कार्य भी तभी आरम्भ हुआ वैसे तो सन् 1923 में जब पूज्य लाला जी महाराज दिलदार नगर गये थे। उसी समय आपने यह कह दिया था कि गो कि अभी वहां कोई अधिकारी नहीं दिखाई दे रहा है। इसीलिये यह विद्या इसी जमीन में छोड़े जा रहा हूॅ पता नहीं फिर आना हो न हो और वक्त आने पर यह तुम्हारे ही हाथों फूले फलेगी आपकी भविष्यवाणी सत्य हुई और 1941 में स्व. ठाकुर षिव नरेश सिंह ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे पूज्य बाबू जी के शरण में आये (उस समय दिलदार नगर में ही नौकरी में तैनात थे।) और ऐसे चिपक कर रह गये कि आखिरी वक्त तक आपकी (पू. बाबूजी को) याद को सीने से लगाये रहे तथा उनकी ही याद में अपने को मिटा दिया ठाकुर साहब के बाद स्व. मौलाना अब्दुल रहीम अन्सारी साहब जो उस समय गहमर में तैनात थे गहमर दिलदार नगर से अलग स्टेशन है आपकी शरण में आये उसके पश्चात बाल कृष्ण मिस्त्री फिर नित्य सत्संगियों की संख्या बढ़ने लगी बनारस तथा उसके आस–पास के इलाके के पच्चीस तीस लोग हो गये। वहां के समस्त भाई बहुत ही श्रद्धालु तथा प्रेमी हैं आप सब लोग परम पूज्य बाबूजी साहब से बहुत प्रेम तथा आदर करते हैं। बनारस के सभी लोगों के आग्रह करने पर नवम्बर 1953 में ठाकुर शिव नरेश सिंह द्वारा भण्डारा बनारस में उन्हीं के रेलवे क्वाटर्स (जो अब नन्द जी भाई के पास है जहां आज भी भंडारा होता है) में आयोजित हुआ।

ताऊ जी महाराज पूज्य बाबू जी महाराज उसमें तशरीफ ले गये थे। भाग्यशाली है वह भाई जिन्होंने उस सत्संग का लाभ उठाया था और जो थे उनके दिलों में आज भी उनकी याद ताजी है ओर मिलने पर अक्सर उसकी चर्चा पर बैठते हैं। पूज्य वाबू जी ने स्वयं फरमाया था कि अजब हालत थी स्टेशन से लेकर उनके घर तक का हर जर्रा जर्रा प्रकाशमय था और सभी जो भी वहां थे उन सब पर बहुत असर पड़ा। सन् 1953 में डाली हुई बुनियाद वाला सत्संग भंडारा आज भी प्रतिवर्ष बसंत पंचमी के अबसर पर उसी घर में होता है जब आप बदायूं रहे तो वहां भी सत्संग बराबर चलता रहा स्व. श्री गंगादीन जी के यहां दो बार बिसौली जि. बदायूं में भी सत्संग रहा। 1947 से

1949 तक जिला बुलन्दशहर फिर 1950 से 1953 तक खुर्जा हुआ। 1954 से 1957 तक गाजियाबाद तथा 1957 से 1959 तक हापुड़ रहे इन सभी जगहों पर आप पूज्य लाला जी साहब का काम बड़ी लगन से करते रहे और बहुत से प्रेमी जन आपकी शरण में हो गये। सुविधा और प्रेमियों को संख्या के अनुसार आपने कई सेन्टर्स परमार्थ के कायम किये जहां ईश्वर की दया तथा बुजुर्गो एवं आपकी कृपा से परमार्थ का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है।

परमार्थ एवं सत्संग के सेन्टर

1. **हापुड़**

   सन् 1957 में हापुड़ में एक सत्संग सेन्टर स्थापित किया गया और वहां आपके अनन्य प्रेमी श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता (जगदीश भाई साहब) के घर पर प्रतिवर्ष उनकी देख रेख और भाइयों की सहायता से एक दिवसीय भंडारा बसंत पंचमी के बाद अगले रविवार को होता है तथा साप्ताहिक सत्संग भी होता है।

2. जब आप गाजीपुर में थे उस समय उजियारपुर व समस्तीपुर जो कि बिहार प्रदेश में है वहां के कुछ प्रेमी आने लगे। सन् 1963 में वहां सत्संग सेन्टर कायम किया जो अब भी बराबर चल रहा है।

3. **गाजियाबाद सेन्टर**

   25 जून 1963 में अपने निवास स्थान 7 रामा कृष्ण कालोनी में पहले भंडारे का आरम्भ हुआ जिसमें पुराने सभी लोग आये थे। लेकिन उन लोगों की संख्या केवल 29 थी ओर वह बढ़ते बढ़ते आज एक से दो हजार के बीच में है। गाजियाबाद का सलाना भंडारा पहले जून में फिर दशहरे और दिवाली के बीच में होता था परन्तु अब दशहरे पर ही होता है।

   जुलाई 1981 में गुरू पूर्णिमा का भी एक दिन का सत्संग आपने रखा वह अब भी होता है। गाजियाबाद का सालाना भंडारा चार दिन का होता है। इस वर्ष यह 32 वां वार्षिक भंडारा है भंडारा आपके निवास स्थान पर ही होता है क्योंकि आप फरमाते थे यहां मेरी 37 वर्ष की तपस्या है इस कारण एक एक ईट में ईश्वर का नाम पैबस्त हो गया है और हर आने वाले को जो भी आयेगा उस पर ईष्वर की दया अवश्य होगी। इसी कारण उन्होंने अपने वसीयत में यह लिखा दिया है। कि उसको बेचने का हक किसी को नहीं है। प्रारम्भ में सभी भाई यहीं पर रूकते थे परन्तु अब संख्या बढ़ जाने से भाइयों के ठहरने का प्रबन्ध दूसरी जगह पर किया जाता

है। इस कार्य में इस समय प्रेमी भाई श्री सोनू बाबू, श्री मुकुट बिहारी लाल जी, एवं प्रेमी भाई प्रोफेसर राय साहब तथा तिवारी जी का बहुत बड़ा योगदान है जो भाइयों की हर सुविधा का ध्यान रखते हुए बड़े प्रेम एवं श्रद्धा सहित उनकी सेवा करते हैं परन्तु खाने तथा पूजा का प्रबन्ध अब भी यहीं पर होता है। पूज्य बाबू जी के सदैव निर्देश थे कि जब भी लोग भंडारे में आये अपना अधिक से अधिक समय इसी घर में व्यतीत करें जिससे वहां का वातावरण का असर बराबर रहे।

4. पटना सेन्टर

अपने 1976 में बिहार में पटना में डा. जे पी. कर्ण साहब की देख रेख में एक सेन्टर की स्थापना की ईष्वर की दया से वहां प्रतिवर्ष भंडारा होता है यह भंडारा डा. साहब, उनकी पुत्री श्रीमती मीना दास तथा श्रीमती मंजू दास के निवास स्थान पर होता है। यह प्रतिवर्ष जून के दूसरे सप्ताह में होता है।

5. फरदनी सेन्टर

सन् 1977 फरदनी जिला (गोरखपुर) श्री राजेन्द्र मणी त्रिपाठी जी के निवास स्थान पर पूज्य बाबू जी तशरीफ ले गये थे। अब वहां आप के भाई सब जमा हो जाते हैं यहां का कार्य भार पूज्य श्री राम दास जी की अध्यक्षता में सुचारू रूप से चल रहा है। हर वर्ष 24, 25, 26 दिसम्बर को फरदनी जिला गोरखपुर में श्री कृष्ण बिहारी त्रिपाठी के निवास स्थान पर भंडारा सत्संग होता है।

6. बलिया सेन्टर

आपके प्रिय शिष्य ठाकुर शिव नरेश सिंह की प्रबल इच्छा थी कि उनके निवास स्थान शिवपुर डियर में भंडारा सत्संग हो पर किन्हीं कारणों वश शायद उनके पुत्रों की कम रूचि के कारण यह कार्य उनके जीवन काल में न हो सका। आपके 24 दिसम्बर 1979 निर्वाण पर पूज्य बाबू जी ने मुझ सेवक को पत्र लिखा कि तुम ठाकुर साहब की तेरहीं पर जरूर चले जाओ हालांकि तुम्हे तकलीफ होगी पर वह मुझे बहुत प्रिय थे। उनके लड़को को इस दुख के वख्त में यह न लगे कि वह अकेले हैं और उनके सर पर हाथ रखने वाला कोई नहीं है। मैं चाहता हूॅ कि उनकी यह इच्छा पूरी हो कि वहां उनके निवास स्थान पर भंडारा हो। उन्होंने परमार्थ के कार्य में मेरी बड़ी मदद दी है ईश्वर तुम्हारी मदद करेगा और सिलसिले के बुजुर्गो की रहमत बरसेगी। जनवरी का महीना था सेवक रात भर बस का सफर कर

बहुत कठिनाई से शिवपुर डियर पहुंचा यह स्थान बलिया स्टेशन से 6 किलोमीटर की दूरी पर है वहां सत्संग में ऐसी दया व कृपा रही कि जो लोग उस समय थे वह आज तक उसे भूले नहीं है उस दया व कृपा का विशेष असर ठाकुर साहब के लड़को पर हुआ और उन लोगों ने स्वयं यह इच्छा प्रकट किया कि भाई साहब हमारे पिता जी बड़ी इच्छा थी कि यहां साल में एक बार भंडारा हो तो हम लोग चाहते है कि ऐसा हो। मेरा अपना ख्याल यह है कि पूज्य बाबूजी के ही ख्याल का यह असर था जो उन सब के दिमाग पर छा गया था। एक बार आप स्वयं भी वहां तशरीफ ले गये थे और अब सालाना भंडारा वर्ष पर 1979 से बराबर बसंत पंचमी के अवसर पर होता है।

7. लखनऊ सत्संग सेन्टर

यद्यपि लखनऊ सेन्टर की बुनियाद पूज्यवाद ताऊ जी ने 1963 में डाली थी और हर रविवार को रीवर बैंक कालोनी में सत्संग होता था कुछ कारणों से वह सुचारू रूप से न चल पा रहा था। 1977 में सेवक लखनऊ तबादला होकर आया और उसी समय आपने मुझसे फरमाया कि लखनऊ एक सेन्ट्रल प्लेस है यहां से हर जगह आने जाने में सुविधा है कोशिश करो कि यहां एक सेन्टर कायम हो जाये और सत्संग बराबर चलता रहे पूज्य ताऊ जी का डाला हुआ बीज तथा पूज्य बाबूजी की दया का यह असर हुआ कि आज लखनऊ एक सेन्टर हो गया है और इसमें काफी लोग शामिल हो गये हैं हर इतवार को सत्संग का काम चल रहा है आपने अपने निर्वाण से पहले दो तीन सालों में बराबर कहा कि इस समय लखनऊ से अच्छा सत्संग का कोई सेन्टर नहीं है यहां के लोगों ने तालीम को खूब ग्रहण किया है इन्हीं दरम्यान में आप कई बार लखनऊ पधारे थे और यहां पर अक्सर कई दिन तक कायम किया। यहां प्रति वर्ष एक जनवरी के दिन पूज्य बाबू जी के जन्म उत्सव के उपलक्ष्य में एक दिवसीय भंडारा सत्संग होता है जिस अवसर पर आस पास के सब भाई इकट्ठे हो जाते हैं।

8. दिलदार नगर सेन्टर

सन् 1985 में दिलदार नगर जिला गाजीपुर में डा. एस. एन. राय जी ने निवास स्थान पर अगस्त में पहला भंडारा दिलदार नगर का हुआ और पूज्य पाद लालाजी साहब की भविष्यवाणी सत्य हुई।

सन् 1983 में जब (पू. बाबू जी) आप सख्त बीमारी के बाद स्वस्थ हुये तो आपने हम लोगों को बताया कि आपने एक ख्वाब देखा है कि पूज्य ताऊ जी उनके पास आये हैं और पूछते हैं कि उनके पास कुछ पैसे हो तो गोरखपुर तथा दिलदार नगर हो आया जाये। पूज्य बाबू जी ने बताया कि उनके पास 23 रूपये हैं पूज्य बाबू जी ने कहा कुछ उनके पास है और टिकट लेकर ट्रेन में बैठकर रवाना हो गये रास्ते में उन लोगों को पूज्य बृज मोहन लाल जी साहब मिलें वह भी उन लोगों के साथ उसी गाड़ी में सवार हो गये वह ट्रेन आकर दिलदार नगर स्टेशन पर रूकी, वहाँ पर पूज्य मौलवी साहब पू. लाला जी साहब व पूज्य चाचा जी महाराज मौजूद थे। ये तीनों लोग स्टेशन पर उतर कर उन सब बुजुर्गो के पैर छूते हैं पूज्य लाला जी साहब ने बड़े प्रेम से पूज्य बाबू जी से कहा कि उन्होंने आपकी जिन्दगी कुछ और बढ़ा दी है और एक टोकरी जो बड़े अच्छे सेबों से भरी थी उसकी ओर इशारा करके कहते हैं कि वह चाहते हैं कि यह सेब (बाबूजी) वह अपने हाथों से ही यहाँ के लोगों में बाँट दें। वह सेब इतने सुन्दर और ताजे थे कि पूज्य बाबू जी कहते थे ऐसे सेब उन्होंने देखे नहीं थे। यह ख्वाब सत्य हुआ और अगस्त 1985 में पहला भंडारा आरम्भ हुआ तब से आज तक जून के महीने में हर वर्ष भंडारा होता है। यह भंडारा डा. एस. एन. राय के निवास स्थान पर उनकी देख रेख तथा अन्य तमाम प्रेमी भाईयों के सहयोग से होता है।

9. बाराबंकी सेन्टर

यद्यपि यह सेन्टर आपके निर्वाण के पश्चात दिसम्बर 1991 में स्थापित किया गया है और एक दिवसीय भण्डारा होना आरम्भ हो गया है जो श्री ओ. पी. सिंह जी के निवास स्थान पर अन्य प्रेमी भाईयों के सहयोग से होता है, परन्तु उसकी नींव या भविष्यवाणी बाबू जी ने बहुत पहले 1975 में जब आप श्री ओ. पी. सिंह जी के यहां गये थे तभी कर दी थी आपके चरण उनके निवास स्थान पर जब पड़े उसी समय उसकी आधारशिला पड़ गई थी। इस प्रकार 9 सेन्टर है।

1. गाजियाबाद

आपके निवास स्थान 7, रामाकृष्ण कालोनी गाजियाबाद में दशहरे के अवसर पर पूज्य भाई साहब डा. राजेन्द्र कुमार सक्सेना के एवं सेवक के अध्यक्षता में तथा भाइयों के सहयोग से प्रतिवर्ष बड़े

उत्साह से मनाया जाता है। ईष्वर एवं बुजुर्गो की दया विशेष रूप से रहती हैं।

2. बनारस

बसंत पंचमी के दिन तथा दूसरे दिन श्री नन्द जी सिंह के निवास स्थान पर श्री नन्द जी सिंह क्वाटर नं एल/27 ए पूर्वोत्तर रेलवे कालोनी बनारस कैन्ट बनारस में होता है यह सत्संग श्री नन्द जी सिंह तथा राम नारायण लाल जी की देख रेख में अन्य भाईयों के सहयोग से होता है। भाइयों का प्रेम सराहनीय है।

3. बलिया

बसंत पंचमी पर शिवपुर डियर जिला बलिया में स्व. ठाकुर शिव नरेश सिंह जी के स्थान पर श्री अमरनाथ तथा श्री अमर बहादुर के सहयोग से होता है पता श्री अमर नाथ सिंह, ग्रम व पो. शिवपुर डियर नई बस्ती जिला बलिया।

4. दिलदार नगर

यह भंडारा सत्संग जून के दूसरे हफ्ते में डा. एस. एन. राय के निवास स्थान पर होता है।
पता– डा. एस. एन. राय,
ग्राम व पो.– दिलदार नगर
जिला– गाजीपुर

5. पटना

यहां जून के दूसरे हफ्ते मे शुक्र, शनिवार, तथा रविवार को निम्न पतों पर होता है।

1. डा. जे. पी. कर्ण, चित्रगुप्त नगर, नई कालोनी पटना– 20
2. श्री महेन्द्र लाल दास – मीना दास
   एफ/33 पिपुल्स कोआपरेटिव कालोनी कंकणबाग, पटना
3. श्री डा. वी. के दास ए/25 हाउसिंग कालोनी,
   कैमियर बार कालोनी, कैमियर बाग, पटना – 20

फरदनी गोरखपुर

श्री कृष्ण बिहारी मणि त्रिपाठी के निवास स्थान पर श्री पू. रामदास जी की अध्यक्षता में यह 24, 25, 26 दिसम्बर को होता है।

पता – श्री कृष्ण बिहारी मणि त्रिपाठी, ग्प्रम व पो.– फरदनी,
जिला – गोरखपुर।

लखनऊ

यहां इस सेवक के निवास स्थान पर 1 जनवरी को एक दिवसीय तथा सप्ताह में दो दिन रविवार को सुबह बृहस्पतिवार को सांय काल में इस पते पर होता है।

डा. वी. के. सक्सेना, बी 1/26 सेक्टर के, अलींगज, लखनऊ।

बाराबंकी

26 दिसम्बर की शाम तथा 27 की शाम को एक दिवसीय सत्संग का आयोजन श्री ओ.पी. सिंह जी के निवास स्थान पर होता है पता इस प्रकार है।

श्री ओ. पी. सिंह, सिनेटरी इन्सपेक्टर
राम आश्रम 142, सत्य प्रेमी नगर, बाराबंकी।

साप्ताहिक सत्संग, श्री जय प्रकाश श्रीवास्तव जी के निवास स्थान पर होता है।

पूज्य बाबूजी ने दो पुस्तकें भी लिखी हैं जिनका नाम सन्तमत साधना भाग 1 तथा सन्तमत साधना भाग 2 यह दोनों पुस्तकें परमार्थ विद्या का निचोड़ है जिसको पढ़ने के बाद इस विद्या के लिये कोई और पुस्तक पढ़ने की आवष्यकता नहीं है आपकी पुस्तक की सराहना करते हुए एक विदेशी व्यक्ति जिनका नाम श्री हेन रिच बेराऊच है लिखा है कि बहुत सी पुस्तकें पढ़ी पर आप की पुस्तक में जो रस (जिस्ट) को मिला जो साफ साफ शब्दों में इतने गहरे विषय मिले उससे वह बहुत प्रभावित हुआ और आपके दर्शन की तीव्र अभिलाषा व्यक्त की परन्तु उसका दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है कि वह उनके दर्शन न कर सके और आप परमधाम में लीन हो गये। आप का एक प्रवचन भाषण जो आपने सिकन्दराबाद में पढ़ा था वह राम संदेश में उद्धत किया जा रहा है।

Heinrich Weihrauch
Burggener Str.5
8921 Schwabbruch
W. Germany

22.5.1987

Dear Sir,

Last April I was with my wife in Fatehgarh, Where we visited Lalaji's house and Samadhi. At that occasion I purchased your short biography of your Master. He too is my Panguru, because I followed the late Ram Chandra of Shahjahanpur, U.P.. Many events, reported in your booklet, are new for me. So I read it with big interest and joy.

I would like to demand your permission to translate your speech into German. The abhyasis of our Munich Mission are interested to learn more about Ram Chandra of Fathgarh.

One question more: Do there exit other Photos of Lalaji, except the famous one, where he is sitting on the ground? If yes. could you send me a copy please?

Unfortunately I did not know your address before. So on my last trip in India it was no more possible to visit you. May it be possible to meet you later, perhaps already next winter.

Sincerely yours
H. wei

राम सन्देश

अक्टूबर 1954 से लिया गया भंडारे के अवसर पर परम पूज्य बाबू जी का भाषण

प्रेमी भाइयों किसी काम में चाहे वो दुनिया से मुताल्लिक हो या परलोक से मूताल्लिक हो तरतीब का होना बिना किसी सिद्धान्त का होना वसूल के मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है। जब आदमी में कोई खास कमजोरी होती है या बहुत सी कमजोरी होती है तो उनको दूर करने के लिए तदबीर और कोशिश करते हैं इन तदबीर की सूरतें मुख्य–मुख्य तो कर्म उपासना और ज्ञान ही है। लेकिन इन्हीं तीन सूरतों की हजारों बल्कि अनगिनत सूरतें हो गई हैं और होती जाती हैं इन्ही के मेल–जोल औ भाग से हजारों मत मतान्तर पन्थ सम्प्रदाय कायम हो चुकी हैं और न मालूम और आगे कितनी पैदा होंगी। अब गौर करके सब सूरतों की अगर तहकीकात की जाये तो सिर्फ नाम और रूप तो अलग अलग दिखलाई पड़ेंगे लेकिन हर सूरत में सिद्धान्त और वसूल अपनी जाति और असली सूरत में छिपा हुआ जरूर मिलेगा जहां तक मेरा ख्याल है कि किसी फकीर को अगर वो हठ धर्मी दूर कर लें तो इसके मानने में इन्कार न होगा कि जाति वसूलों में कोई भेद नहीं है मतभेद का होना लाजमी भी है क्योंकि हर शख्स की प्रकृति और आदतें अलग अलग हैं समझने और समझाने के लिए अगर हम लोग सिर्फ अपने ही मत के सिद्धान्तों को आगे रखकर और विचार करके नतीजों को देखें तो सिद्ध हो जावेगा यह ही चार साधन (न. 1– विवेक, 2– बैराग्य, 3– पट सम्पत्ति, 4– मुमुक्षता) सब मजहबों में घुसे हुये हैं और कोई फिरका इनसे बच कर जी नहीं सकता वेदों में वेदान्त का फिलसफा सबसे ऊँचा साबित किया गया है सब किस्म की फिलसफे वाले बहस कर करा और खूब दलीलों को करके आखिरकार इस जगह चुप होकर बैठ जाते हैं जहां बेदों का अन्त हो जाता है या दूसरे लफजों में यों कहिये कि मुरक्कब और मिलौनी चीजों से परे दर परे पहुँचे हैं। जहाँ इस मामूली कारोबारी अकल को दखल नहीं रहा। इस हालत को महवियत और हस्तमराकी कैफियत या फना और लय की अवस्था बोलते हैं। ब्रह्म विद्या के जानने वाले इन कैफियेतों और हालतों को द्वैत विशिष्टाद्वैत द्वैत्वाद्वैत और शुद्धाद्वैत के नामों से पुकारते हैं और रस्में इस्लाम अहदियत वहदियम वहदा–नियम में तकसीम करते हैं। गरज कि इन ऊँची हालातों पर पहुँचने के लिए जो कोशिश की जाती है वह साधनों के जरिये होती है। इस

साधनों को शुरू में तकसीम सिर्फ चार है जिनको साधन चतुष्ट्य कहते हैं। बिला इन साधनों के आखिरी मंजिल पर नहीं पहुँचा जा सकता है। पहला साधन (विवेक) या तमीज है जिसमें सबब और सबब की तमीज हो जाती है। यानी यह कि इस दुनियां में कौन सी चीजें फानी या मिट जाने वाली हैं और तबदील होने वाली हैं। और कौन कौन सी चीजें अमिट हैं जो तबदील नहीं होती है। इस बात के जानने पर दूसरा साधन आ जाता है। जिसको वैराग्य या नफरत अजदुनिया कहते हैं जब ये मालूम हो गया और जहननशीन हो गया कि यह चीज मिट जाने वाली हैं और इनको कायम नहीं रहना है तो खामखवा कुदरतन उससे लगाव मिट जाता है। और नफरत पैदा होने लगती है और दूसरी जानिब जो हमेशा कायम रहने वाली है उसकी जानिब लगाव हो जाता है। दुनिया की हर चींजें नासवान हैं लिहाजा तजुर्बा हो जाने पर इन्सान की तबियत दुनियां की तरफ से हट जाती हैं और परमात्मा की जानिब जो हमेशा कायम रहने वाला है फिर जाती है इसे बैराग कहते हैं। दुनिया से नफरत या लगाव का कम हो जाना इन तीन तरीकों से होता है। दौलत के खुब भोग लेने पर भी जब नतीजा हसरत भरा हुआ निकलता है उस वक्त तबीयत का मिलान कम हो जाता है –2– रिश्तेदारों या दोस्तों की बेरूखी मुरव्वती के साबित हो जाने पर –3– अजिजों या रिश्तेदारों की मौत हो जाने पर या अपनी मौत का नजारा पेस आने पर तबियत दुनिया से हट जाती है लेकिन यह तबियत का हटाव पक्का और मुश्तकिल नहीं है क्योंकि जब तक कि यह चीजें भोग न ली जावे और उनसें सेरी ना हो जावे उस वक्त वासनाओं और ख्वाइशों का बीज अन्दर दबा हुआ पड़ा रह सकता है। बिना मन भरे और साफ हुये सच्चा वैराग्य पैदा नहीं हो सकता है। सिर्फ तर्जुबा ही एक ऐसा उम्दा जरिया है जो असली वैराग्य पैदा करता है साधन और तुर्जुबे की दो सुरतें विवेक और वैराग्य का जिक्र किसी पन्थ ने किसी तरह पर और किसी ने किसी तरह पर किया है। वेदान्त वालों ने शुरू में यह ख्याल करना शुरू किया कि माया मिथ्या और नाशवान है और असली चीज ब्रह्म है। ख्याल से यह साधन विवेक शुरू कि और इस ख्याल को इस तरह पुख्ता किया की किसी तरह से यह बात दिमाग और हाफ्जे से हट ही न सके और इस ख्याल को कि दुनिया मिथ्या और ब्रह्म सच और साधन से इतना मजबूत कर लिया कि दिमाग में निश्चय हो गया। लेकिन यह सिर्फ ख्याली पहलू से किया गया अमली पहलू को कोई दखल नहीं अगरजे अमली पहलू इस कदर तो जरूर आ गया कि कुब्बत ख्याल के पुख्ता करने का साधन किया लेकिन तजुर्बे का इसमें कोई दखल नहीं इस साधन के बाद दूसरा साधन बैराग्य हो गया यानी दुनियां मे नफरत पैदा हो गया। इन दोनों साधनों के

बाद तीसरा साधन षट–सम्पति वेदानत वालों ने शुरू किया मगर सन्त मत वालों के कुब्बत तमीजी और विवेक शक्ति को इस तरह पर मांझा नहीं दिया जैसा कि वेदान्त वालों ने दिया था सनत मत वालों ने विवेक और वैराग्य को इस तरह पैदा किया कि शुरू में तीसरे साधन वाली षट–सम्पत्ति से शुरूआत की, क्योंकि मुतवातिर और बारबार के तजुर्बे के बाद यह नतीजा निकाला गया कि कुब्बते तमीजी और विवेक शक्ति जो महज कुब्बते ख्याल से पैदा की जाती है क्योंकि बगैर अमली तजुर्बे होती है पुख्ता नहीं होती और वसा औकात दुनिया के मामलात में बरतने पर झूठी साबित होती है और अगर गौर करके देखा जाये तो मालूम होगा कि विवेक और बैराग्य बजाते खुद कोई साधन नहीं है बल्कि साधनों के नतीजें है जब कि इन्द्रियां मन बुद्धि चित्त को साफ न कर लिया जावे उस वक्त तक सबसे ऊपर वाले तबके यानी अहंकार की शक्ति इस तरह से साफ और बेहतर हो सकेगी क्योंकि विवेक शक्ति खालिस अहंकार तत्व के मातहत है इसलिये सच्चा ज्ञान उस वक्त हासिल होगा जब इन्द्रियां और अन्तः करण शुद्ध हो जायेगी इसलिये सन्त मत वालों ने पहले साधन विवेक को और दूसरे साधन विवेक के नतीजे वैराग्य को शुरू और इवतिदा में साधन नहीं माना बल्कि तीसरे साधन षट–सम्पत्ति से शुरू कराया जिसके साधन से इन्द्रियां और अन्तः करण शुद्ध हो जाते हैं और जिन के शुद्ध हो जाने पर विवेक शक्ति पैदा हो जाती है और वैराग्य जो सच्चा बैराग्य है खुद बखुद पैदा हो जाता है। इस वैराग्य में दुनियां से नफरत नहीं बल्कि सेरी हो जाता है और यह सच्चा ज्ञान है। वेदान्त के तीसरे साधन और सनत मत के पहले साधन के छः भाग है। जिनको षट–सम्पत्ति या छः तहकीकात कहते हैं मतलब यह है इससे छः किस्म के फायदे हासिल होते हैं।

(1) सम्पत्ति का नाम शम यानी तसकीने कल्ब है जिसके मानी है कि दिल का ठहराव हो जाये दिल इधर उधर न बहके अपने केन्द्र पर रहे।

(2) दम पर जब्ते हवास इन्द्रिय दमन

(3) उपरती उपराम या सैरी इसके लब्जी मानी तबियत मरजाने के है इस्तलाह में उपरतीमन की उस हालत को कहते हैं कि जिसमें लोक और परलोक की तमन्ना नहीं रहती और उसको पूरा यकीन हो जाता है कि यह सब सच है। चौथी सम्पत्ति तितिक्षा, पांचवी सम्पत्ति श्रद्धा या एतकाद का गुरू होना छठी सम्पत्ति समाधान या इकसुंई है अब एक–एक को तफसील के साथ लेते हैं। पहली सम्पत्ति या हासिल का नाम शम है यानी तकसीम

कल्ब इसका मतलब यह है कि दिल का ठहराव हो जावे दिल इधन–उधर न बहके । अपने केन्द्र पर रहे दिल का ठहराव दो तरह का होता है बैराग्य और अभ्यास में सन्त मत अभ्यास को पहले लेता है इससे बैराग्य खुद बखुद पैदा होता है यानी मन को साफ करता है मन के साफ हो जाने पर असली ज्ञान हासिल हो जाता है कि दुनियां मिथ्या है। सिर्फ परमात्मा ही हमेशा रहने वाली चीज है और यही वैराग्य है और अभ्यास ऐसा मार्ग है जिसमें हर चीज को छोड़कर एक चीज को कबूल किया जाता है और इस तरह बारी–बारी हर चीज से मन को हटा लिया जाता है। लेकिन मन आदी होता है चीजों को पकड़ने का एक साथ हर चीज को छोड़ने में इसको तकलीफ होती है लेकिन जब एक चीज में दिल बिल्कुल लग जाता है तो निहायत आसानी से बाकी और चीजों से खामख्वाह दिल मुखातिब नहीं होता। अभ्यास योग और उपासना फल हैं इससे खुद बखुद बैराग्य पैदा हो जाता है और क्योंकि उसकी जड़ अमल पर होती है पुख्ता और मुश्तकिल होता है वेदान्ती लोग वैराग्य के ख्याल को मजबूत करने को ही अभ्यास मानते हैं। यह नेकी मार्ग है। इसमें हर चीज को छोड़ने का अमल किया जाता है यह मुश्किल है कि इससे जो वैराग्य पैदा हो ता उसमें अमल का कोई दखल नहीं इसलिए भरोसे के काबिल नहीं होता है। चित्त की वृत्तियां यानी कैफियातें– नफूर हमेशा बदलती रहती है। नफूस कभी एक हालात पर कायम नहीं रहता ख्यालात की उछलकूद यह सब नफूस की कैफियात है। इसके अलावा चित्त की कैफियत और तरह की भी है मसलन, गुस्सा, शर्म, नींद बेहोशी वगैरा–बगैरा अगर इनकी जांच की जावे तो यह कैफियत पांच किस्म की होती हैं। क्षिप्तं, विक्षिप्त मूढ़, एकाग्र और निरोध। क्षिप्त में तमाम दुलियाबी ख्यालात शामिल हैं जिनसे मन चंचल रहता है। मसलन भूख–प्यास, गुस्सा, रंज, इज्जत, दौलत, इल्म और अमल हविश बगैरा दूसरा मूढ़, नींद, आलम, बेहोशी, वगैर तीसरी विक्षिप्त वो वृत्तियां हैं जो मन को ध्यान और समाधि से हटा कर बाहर की तरफ खींच ले जाती हैं। मसलन ध्यान लगाते वक्त बाजार में सौदा वगैरा लेना।

एकाक्रम एकाग्र वृत्ति एक सुई को कहते हैं जिसमें सब तरफ से तबज्जह को हटाकर सिर्फ एक तरफ लगाई जाती है। निरोध वो वृत्ति हैं जिसमें चित्त की तमाम कैफियातों के रूक जाने से दिल अपनी जाती हालत में कायम हो जाता है। निरोध की हालत को पहुंचने के लिए अष्टांग योग करना जरूरी है अष्टांग योग है–

1– यम 2– नियम 3– आसन 4– प्राणयाम 5– प्रत्याहार 6– धारणा 7– ध्यान 8– समाधि यम के मानी रोकने के हैं जो पांच हैं अहिंसा, सत्य, अस्तिय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन सबकी बाबत गौर कीजिये।

1– अहिंसा किसी जान दार को मन बचन कर्म से आजार न पहुँचाना।

2– सत्य के मानी सच्ची बात का कहना सच्चा ख्याल दिल में रखना कोल फेल में एक सा होना, जाहिर और बातिन का एक होना ।

3– अस्तेय के माने चोरी न करना दूसरों को माल पर नजर न रखना ।

4– ब्रह्मचर्य के माने है कि फेल और ख्याल से शहवाती जजबात से परहेज करना ।

5– अपरिगृह के माने हैं जो कुछ अपने पास है उस पर साबिर और साकिर रहना दूसरों के माल पर नजर न करना।

नियम के मानी अहद के हैं यह अहद करना कि खास–खास बात हम जरूर करेंगे यह भी पांच हैं 1– शौच, पाकीजगी, तिहारत 2– सन्तोष, सब्र 3– तप 4– स्वाध्याय 5– ईश्वर प्राणिधन

शौच :– जिस्मानी और कल्बी दोनों की जरूरत है । जिस्म को पाक साफ रखना और मन को बुरे और बेहूदा ख्यालों से बचाना ।

सन्तोष :– कनात को कहते हैं हर्ष और हसद से दिल को पाक साफ रखना।

तप :– भूख, प्यास, गर्मी, सर्दी, वगैरह के बरदाष्त करने का नाम है अपने ऊपर जब्त करना और दूसरों को फायदा पहंचना सबसे आला तप है।

स्वाध्याय :– मुताला को कहते हैं किसी मजहबी किताब का पाठ करना

ईश्वर प्राणिधान :– परमात्मा पर भरोसा रखने को कहते हैं यह मसला तसलीम और रजा का है जिसमें मरजी को परमात्मा की रजा के ताम्बे बना देना है।

आसन :— इस तरीके से बैठना जिसमें मन एकाग्र रहे और बैठने में आसानी हो और मन इधर उधर न जाये।

प्राणायाम :— यह एक योग है जिसके जरिये नर्वस सिस्टम पर काबू पाया जाता है यानी ख्याल के जरिये तमाम जिस्म में जो कि न्याय हो रही हैं उन पर काबू पाना। जिसमें मन को एकाग्र करने और तनदुरूस्ती कायम रखने में बहुत मदद मिलती है।

प्रत्याहार :— के पानी तबदीली के हैं, इन्द्रियों के जरिये जो चीजों की मुख्तलिक सूरतें दिल बनाया करता है तो न बनाने देना यह अमल तबज्जह को रोक देने या इधर—उधर न जाने देने से हो सकता है तबज्जह को बार—बार हटाने के अमल को प्रत्याहार कहते हैं। यह आलादर्जे का जब्ते हवास है।

धारणा :— चित्त को सिर्फ एक जगह पर कायम करने का नाम है यानी दिल से किसी चीज को कबूल कर लेना उस पर दिल को मुतवातिर कायम रखना है। जब दिल उधर—इधर जावे उसको हटा कर फिर उसी ख्याल या चीज में लगाना।

ध्यानः— धारणा के मुकम्मिल हो जाने का नाम ही ध्यान है जब धारणा तकमील को पहुँच जाती है उसको ध्यान कहते हैं। धारणा को मुतवातिर इस तरह पर जारी रखना जिस तरह के तेल की धार बराबर एक रस जारी रहती है ध्यान कहलाती है, गोया कि धारणा एक नुकता है और ध्यान लाइन है।

समाधि :— नफस यानी चित्त की उस हालत का नाम है जिसमें इल्म आलिम दोनों का ख्याल दूर होकर सिर्फ मालूम बाकी रह जाता है यानी ध्यान करने वाला अपने को भूल जाता है और ध्यान को भी भूल जाता है सिर्फ ध्यान करने वाली चीज का ख्याल बाकी और कायम रहता है। ध्यान में ध्यान करने वाला अपने आपको भूल जाता है। लेकिन दो चीजें जो ध्यान किया था वो और जिसकी वावत ध्यान किया था दोनों बाकी रह जाती है और धारणा मे तीनों चीज बाकी रहती है। लेकिन समाधि में सिर्फ एक चीज जिसका ध्यान किया था बाकी रहती है। बाकी दोनों चीजें ध्यान और ध्यान का करने वाला गायब हो जाता है। गोया कि चित्त खुदष मालूमा बन गया और कुछ बाकी नहीं रहा।

अब हम इस तमाम बयान से इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि तीसरे साधन की पहली सम्पत्ति शम यानी मन की एकग्रता यानी तसकीन और दूसरी सम्पत्ति दम या जब्तेहवास (इन्द्रि दमन) पहिले कराया जाता है। कोई–कोई पन्थ तो शम यानी तसकीने कल्ब में सिर्फ कर्म का साधन कराते हैं और कोई सिर्फ उपासना या भक्तियोग का और कोई पन्थ इन दोनों को छोड़ कर सिर्फ ज्ञान का लेकिन सन्त मत और सूफियों में कर्म, उपासना और ज्ञान की मंजिले एक साथ ही रफता–रफ्ता तय कर देते हैं और यह सब सत्संग में एक साथ हो सकती है, कर्म उपासना और ज्ञान लाजिम और मलजूम है एक के बगैर दूसरे का काम नहीं चल सकता। सत्संग में यह सब साथ–साथ निहायत खूबी के साथ तय होते रहते हैं और आसन, प्राणयाम, धारणा, ध्यान, समाधि, बगैरह भी साथ–साथ तय हो जाते हैं सत्संग में कभी तो कर्म का रंग ऊपर उभर आता है और उपासना और ज्ञान दब जाते हैं और कभी भक्ति का अंग उभर आता है और ज्ञान दब जाते हैं और कभी ज्ञान उभर आता है और कर्म और भक्ति दब जाती है लेकिन रहते तीनों साथ–साथ हैं। जब कर्म का अंग उभरा हुआ दिखाई देता है तो उसमें दिल की एक सुई उपासना सा अंग छिपा हुआ और दबा हुआ रहता है बिला ज्ञान कर्म, और उपासना दोनों बेकार से रहते है। इसलिए कुब्बतें तमीजों यानी ज्ञान का अंग भी दबा हुआ मौजूद रहता है, क्योंकि बिला कुब्बतें तमीजों यानी ज्ञान, कर्म और उपासना दोनों बेकार होंगे।

उपासना में चित्त को रोकने का अमल कर्म है। रूका हुआ चित्त उपासना है और उसकी तमीज ज्ञान है। खालिस ज्ञान में सोचने का अमल कर्म है, सोची हुई चीज पर ठहराव और काबू पाना उपासना है, और नतीजा ज्ञान है। सत्संग में शरीक होना इरादा करना बचन सुनना कर्म का अंग है । सुनी हुई बातों पर मनन करना, विचार करना, साधन और दिल का ठहराव हासिल करना, उपासना का अंग है, और इन दोनों साधनों से विवेक वैराग्य का पैदा होना ज्ञान का अंग है। यह लाजिम हो गया है कि सत्संग में कर्म उपासना बगैरा से विवेक और बैराग्य पैदा न हुआ तो कोई फायदा नहीं हुआ थोड़ा बहुत विवेक और बैराग्य तो सबमें पैदा हो ही जाता है यानी तसकीने कल्ब और एकाग्रता का भान होता है जजबाती कैफियतों के उभार साफ मालूम होते हैं। अन्दरूनी मुषाहदे होने लगते हैं मगर असली विवेक वही है जिसमें कि अपनी कमी और नुक्ष मालूम होकर पछतावा मालूम हो अगर इन्द्रियों पर काबू नहीं पाया तो अभी उम्दा नतीजा नहीं निकला है और अभ्यास के अन्दर की तरफ अभी कब्जा हासिल नहीं किया

है और नतीजा जो कमसूद इस सब करने कराने का है कि मन शुद्ध और पाकहो जावे और इन्द्रियों पर काबू हासिल हो जावे ताकि आत्मा का इजहार असली हालत में हो और उसका असली रूप नजर आये। (आत्मा) का असली रूप सच्चा मुकम्मिल ज्ञान, मुकम्मिल आनन्द हमेषा की जिन्दगी और सिर्फ एक ख्वाहिष अपने प्रीतम से मिलने की हरदम और हर लम्हा तड़प और बेकरारी है।

हमारी तरीके सत्संग में अगर जिज्ञासु या मुरीद भीद्व हो तो बिला अभ्यास के गुरू की कुब्बते कझिसी से ही विवेक बैराग्य जब्ते हवास और दिल की सफाई और ठहराव हो जाता है भैदिब मुरीद गुरूमत होता है और बेअदब मुरीद मनमत बेअदब मुरीद वो हैं जो दूसरी ख्वाहिषात दुनियावाी को साथ लाता है अगर मुरादे उसको पूरी न हों तो चलता फिरता नजर आता है उसके सब इरादे खुदगर्जी के होते हैं। फिदाई मुरीद फजली होता है वा कुछ करता धरता नहीं ख्याल से सब काम उसके सिद्ध हो जाने है ख्वाह इस लोक के हों या परलोक के जो कुछ उसके पास है वो सब गुरू के अर्पण करके तन मन धन का फिदा कर डालता है। यानी निछावर कर देता है उसको कोई खवाहिष दीन दुनियां लोक परलोक की नहीं होती सिवाय इसके कि अपने प्रीतम को अपने ऊपर रिझायें और खुष कर लें उसको दुनिया की कोई ख्वाहिष अपने इस एक इरादे से नहीं हटा सकती और वो उसमें कायम रहकर मस्त रहता है उसकी निस्बत माषूकाना होती है वो अपने पीर का माषूक होता है और पीर उसका माषूक दोनों मिलकर एक जान दो कालिब या यों कहिए कि एक जान एक कालिब हो जाते है। हमारे सिलसिले की निस्बत माषूकाना है और माषूक से ही सिलसिला आगे को चलता है इसको मुराद भी कहते हैं लेकिन मुरीदों में से ऐसे दो एक मुष्किल से हो सकते हैं। इनको अभ्यास से कुछ गरज नहीं होती ऊपर से खुद बखुद अमृत की धारा वारिष उनके कल्ब पर होती रहती है।

शमदम दोनों से फुरसत मिल जाने के बाद तीसरी सम्पत्ति उपरती या उपरान्त की बारी आती है इसके लफ्जी माने थाने के हैं इस्तलाह में उपरती मन की उस हालत को कहते हैं कि जिसमें लोक और परलोक की तमन्ना नहीं रहती और अभ्यासी को पूरा यकीन हो जाता है कि यह सब हेचकर कर। उपराती और बैराग्य में यह फरक है कि बैराग्य में चीजों को दोष दृष्टि से देख जाता है यानी यह कि यह चीज बुरी है या धोखा है और इससे परहेज है उपरती या सैरी में उनकी तरफ से भोग कर सेरी खो जाती है और दिल उनमें रघवत नहीं करता और उनकी तरफ से

बेरूखी हो जाती है बैराग्य में उनसे कुछ न कुछ ताल्लुक रहता है, यह दूसरी बात है, कि मोहब्बत के साथ न हो नफरत के साथ हो लेकिन लगाव जरूर बाकी रहता है, सेरी में बे ताल्लुक हो जाती है सन्त मत ख्याल यानी विवेक से पैदा हुए बैराग्य की हालत को गैर मुकम्मिल समझ कर इसकी तरफ तवज्जह नहीं करता जब तक इन्द्रियां मन, बुद्धि, साफ न हो जावें असली बैराग्य पैदा नहीं हो सकता। उपरती से दुनियां के भोगों और व्यवहारों की जानिब से बेताल्लुकी हो जाती और फिर वहीस्त दीझख से और फिर गन्धर्व देव लोकों और प्रजापति के लोक में जाने से भी बेपरवाही हो जाती है।

4 :— सम्पत्ति तितिक्षां या त्हमुल है यह बरदाषत का मासूदा है जिसमें हर तरह के मान अपमान की कुछ परवाह नहीं रहती है और हनुमान जी महाराज के मानिन्द अधीनता की सिफत पैदा हो जाती है।

5 :— सम्पत्ति 1 — श्रद्धा या एतकाद का गुरू में होना। 2 — शास्त्रों में विष्वास होना इससे पहले विष्वास और एतकाद असली मुरीदों में हरगिज पैदा नहीं हो सकता। नकली एतकाद होता है जिसका गवाह सालाह साल का तजुर्बा है यहां पहुंचकर गुरू की अजमत मालूम होती है और एतकाद सही होता है और गुरू की सच्ची मोहब्बत जिसमें गरज और मतलब का बिल्कुल दखल नहीं होता, हो जाती है और सोचने पर भी वजह समझ में नहीं आती कि गुरू से क्यों मोहब्बत है। इस मंजिल पर पहुंचने पर ना मालूम कितनी दफा अभ्यासी गुरू से वद एतकाद हो जाता है और कभी बा एतकाद हो जाता है। और यह कोई एतबार के लायक कैफियत नहीं है। खामोषी से गुरू इसे वक्त का इन्तजार करते रहते हैं जब मुरीद को सच्चा एतकाद पैदा हो और मुरीद के जोषों जज्बात के जो इजहार होते हैं उनको मुनासिब वक्त के आ जाने तक हूंहां करते रहते हैं एतबार कभी नहीं करते। इसी मंजिल पर शास्त्रों पर असली श्रद्धा पैदा होती है और असली मतलब उनकी समझ में आने लग जाता है।

6 — सम्पत्ति, समाधान या इकसुई है यह आखिरी किस्म की एक इकसुई है इसमें आनन्द और गैरआनन्द की तरह कुछ तबज्जह और दिलचस्पी बाकी नहीं रहती है । तवक्कुल राजी वरजा मुकामे हैरत वका विल्ला होना इसके चिन्ह और अलामाते हैं। अब चौथा समाधान आता है जिसमें मोक्ष या तलब निजात का सवाल भक्त की नजर से असली पहलू और ज्ञान की सजर से पैदा हो जाता है वादये वस्ल चू सवद नजदीक।

आतिषे शौक तेज तर गरदद। अब सिवाय कुरवत व दीदार हक के कोई ख्वाहिष बाकी नहीं रह जाती है इसका समझना मुश्किल काम है इतने बयान से मुमकिन है कि हमारी मतलब बराबर तसकीने दिल के लिए हो जायें और वहम और शक जो घेरे हुए रहते हैं किसी हद तक उनका निवारण हो जाये मेरी असली गरज इस बयान से यह थी कि अभ्यासी लोग यह समझ लें कि मन में जजबात और कैफियत के समझ लेने के लिहाज से अगर विवेक पैदा हुआ है और अपनी कमजोरियों की समझ नहीं आयी है और नुक्श नजर नहीं आये हैं या अगर नुक्श नजर आये हैं और इन्द्रियों पर काबू नहीं है तो यह विवेक अभी मुकम्मिल नहीं हैं। छः किस्मों की सम्पत्तियों के नतीजे और साधनों से जो नतीजे पैदा होते हैं अगर वो मालूम होना उन नुक्शों का दूर हो जाना इन्दियों पर काबू पा लेना दूनयाबी सुखों से तबियत का भर जाना और दीन दुनियां के पदार्थो से उपरती पैदा हो जाना सिवाय दीदार हक के बाकी ख्वाहिशयात से मुह मोड़ लेना बगैरा–वगैरा यह अलामते हैं जिनसे मालुम होता रहता है कि रास्ता ठीक है या रास्तें से बहक गये ख्वाबों कैफियतों और आनन्द के उत्साहों से दिल को तसल्ली दे लेना ऐसा है जैसा कि लड़कों की तसल्ली खिलौनों से हो जाती है मकसद असली तो उसकी कुरवत शास्त्रों में विश्वास, बुजुर्गों का इत्तिवाय कामिल का नसीब हो जाना और राजी वरजा रहना है। अब मैं और सब लोग उसके दरबार में प्रार्थना करें कि इस तरह से काम बनाने की तौफीक हमको अता फरमाये ।

— आमीन ।

सत्संग एवं सत्संग केन्द्र का संगठन

परम पूज्य बाबू जी ने अपनी डायरी में सत्संग केन्द्र के संगठन के संबंध में निम्नलिखित बातें इस निर्देश के साथ लिखी है इस निर्देशों का पालन अवश्य किया जाये जिससे सतसंग का कार्य सुचारू रूप से चलता रहें।

(1) वख्त के पूरे सद्गुरू की सेवा करके या उनसे प्रेम करके सारे उत्तम गुण पहले स्वयं अख्तियार करें और आना सदाचार बहुत सुन्दर बनायें बाद में इन उत्तम गुणों को दूसरे लोगों पर इजहार करें।

(2) हर जगह जहां कुछ सत्संगी भाई हो या आस पास की जगह मिलाकर जहां कुछ भाई इकट्ठे हो सके एक सेन्टर कायम करें। सेन्टर सलेक्ट (चयन) करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि ऐसे शख्स के यहां हो जो स्थायी रूप से रहता हो, सत्संग के लिये अपना समय दे सकता हो, अपनी आमदनी का कुछ पैसा सत्संगियों पर खर्च करने की क्षमता और इच्छा रखता हो, सत्संग के लिए पर्याप्त स्थान हो। भाईयों के ठहरने तथा खाने पीने का बन्दोबस्त करने की क्षमता रखता हो।

(3) हर सेन्टर परदो व्यक्ति ऐसे नियुक्त करें जो मानीटर का काम करें । इन व्यक्तियों के सदाचार बहुत अच्छे हो और लोगों को उनकी तरफ किसी तरह उंगली उठाने का मौका न हो इन दोनों व्यक्तियों का उत्तरदायित्व होता है कि और भाईयों के साथ मेहनत करें और उनसे बहुत प्रेम करें जिससे वह परमार्थ के अच्छे पात्र बन सकें। वाचक ज्ञानी तथा गैर अधिकारियों से अपने को बचायें परन्तु अधिकारी को बहुत प्रेम से पकड़े। दों व्यक्तियों की नियुक्ति का यह आशय है कि यदि एक व्यक्ति किसी कारणवश कहीं चला जाये तो दूसरा व्यक्ति उस कार्य को करता रहे ताकि सत्संग का कार्य सुचारू रूप से चलता रहे।

इन दोनों व्यक्ति का यह भी उत्तरदायित्व है कि सेन्टर के सभी भाईयों के पते (स्थानीय तथा स्थायी) एक जगह पर नोट करके रखें ताकि पत्र व्यवहार में सुविधा हो एक जगह के सभी भाईयों में आपस में बहुत अधिक प्रेम हो और एक परिवार की तरह एक दूसरे के सुख दुख के समय पर मददगार हो।

(4) हर सेन्टर पर यदि रोज हो सके तो अति उत्तम है नहीं तो सप्ताह में एक दफा या यह भी सम्भव नहीं हो तो महीने में एक बार मिल कर सत्संग की अवश्य व्यवस्था होनी चाहिए ।

(5) वार्षिक भण्डारें की सूचना सभी सत्संगी भाइयों को दें और यह कोशिश करें जैसे भी हो सभी भाई वार्षिक भंडारे गाजियाबाद पर पहुँच सकें इसकी व्यवस्था यदि किसी को आर्थिक कठिनाई होती है तो जहां तक सम्भव हो उस समय किसी मदद से उसकी व्यवस्था करें।

(6) इन दोनों का यह भी उत्तरदायित्व है कि (वार्षिक भण्डारे में) अपने यहां के लोगों को यह समझायें भंडारे में बड़े अदब के साथ में बैठे तथा कोई बातचीत न करें। अर्थात भाइयों को हर अदब करना बतायें। बहुत सी ऐसी जानकारी जो नये भाई नहीं जानते हैं और संकोचवश पूंछ नहीं पाते हैं उन्हें बतायें।

गुरूदेव की आज्ञा लेकर और समय देख कर अपने सेन्टर के प्रत्येक भाई को उनसे मिला दें।

(7) एक या दो शख्स ऐसे जरूर हों कि जब गुरूदेव बोलते हो उस वख्त लिख लें या टेप कर लें और एकांत में उनकों दिखा दें और अपने अपने सेन्टर पर दौरान सत्संग उसको पढ़ें या सुना दें जिससे दूसरों को फायदा हो।

(8) सभी भाइयों का यह फर्ज है कि वो प्रतिमाह अपनी आमदनी में से कुछ पैसा भण्डारे में आने जाने के लिये बचा सकें।

उत्तराधिकारी

सिलसिले को जारी रखने के लिये सन्तमत में यह नियम है कि जब बुजुर्ग यह समझते है कि अब उनकों यह संसार छोड़ना है तो वह उस वख्त लिखित रूप से सिलसिले की इजाजत दे देते हैं जिससे सत्संग का काम सुचारू रूप से चल सके। यह संकेत उन्हें ईश्वर या बुजुर्गों की ओर से होता है वास्तव में यह उनके अपने हाथ की बात नहीं होती है ऐसा बहुत बार होता है कि बुजुर्ग एक या दो या इससे भी अधिक जो उनके शिष्य इस श्रेणी तक पहुँच जाते हैं उनको लिखित इजाजत

डा0 राजेन्द्र कुमार सक्सेना

उर्फ

सेठ भाई साहब

जन्म – 3, जुलाई 1931 | निर्वाण– 9 फरवरी, 2002
बुलन्दशहर | गाजियाबाद

ज्येष्ठ पुत्र पूज्य बाबूजी साहब

''सारी दुनिया से बेनियाज है वो
जिसकी निस्बत है तेरे नाम के साथ''

डा0 वीरेन्द्र कुमार सक्सेना

उर्फ

दिन्नू भाई साहब

जन्म – 23 अगस्त 1933
सिकन्दरा बाद, बुलन्दशहर

द्वितीय पुत्र पूज्य बाबू जी साहब

''बस गई हे मेरे हर सॉस में कुछ ऐसी तेरी महक
कोई खुशबू मैं लगाऊँ तेरी खुशबू आये''

देकर सत्संग के काम का भार उनके ऊपर सौंप देते हैं जो उनके परदा करने पर उनके काम को चलाते हैं।

जैसे संसार में वंश चलाने के लिए अपनी जिस्मानी औलाद की महत्ता है जिसमें उस व्यक्ति का अंश रहता है उसी तरह परमार्थ में भी उस सिलसिले या वंश को आगे चलाने के लिये उत्तराधिकारी की आवश्यकता होती है। जिसमें गुरू अपना अंश भर देता है।

संत मत का नियम है कि हर बुजुर्ग अपने उत्तराधिकरी की घोषणा लिखित रूप में देता है तथा दूसरे बुजुर्गों से इसको कभी–कभी तसदीक भी कराता है। जिससे कोई दुविधा या कमी न रह जाये। पूज्य बाबू जी ने शिवरात्रि 13 फरवरी 1972 दिन रविवार को सिलसिले की इजाजत अपने दस्त मुबारिक से अपने रजिस्टर में लिख दिया है।

''मैं डा. श्याम लाल सक्सेना ये इजाजत यहां दर्ज करा रहा हूँ और मेरी दुआ है कि ये लोग इस सिलसिले को जारी रखेंगे ताकि आइन्दा आने वाले लोग बुजुर्गों के नाम को न भूल जायें।''

लिखने के अतिरिक्त सन् 1981 को भंडारे के अवसर पर अपने उत्तराधिकारी की घोषणा की थी जो हापुड़ के जगदीश भाई साहब ने टेप की थी और जिसको भंडारे के अवसर पर बब्बू और जगदीश भाई साहब ने सुनवाया। आप उस समय बहुत गम्भीर बीमारी से ठीक तो हुए थे पर बहुत कमजोर थे। जिस समय यह घोषणा सुनाई गई उस वक्त एक ऐसी हालत हो गई कि कलेजा खींचा आ रहा था और हर व्यक्ति के आंखों से आंसू की धार बह रही थी। अजब समां था अजीब हालत जिसका बयान नहीं हो सकता है।

घोषणा उत्तराधिकारी 1981

हर वर्ष की भांति गाजियाबाद का वार्षिक भण्डारे 1981 का समय था इस वर्ष विशेष कर सभी प्रेमी भाई भिन्न–भिन्न जगहों से अपने परिवार के साथ पधारे थे परम पूज्य बाबू जी एक बहुत गम्भीर बीमारी से उठे थे सभी भाइयों को उनके दर्शन की प्रबल तथा उत्कृष्ट इच्छा थी। परम पूज्य बाबू जी मोटर खाने वाले कमरे में मसहरी पर विराजमान थे।

सत्संग चल रहा था सभी लोग ध्यान मग्न थे सबेरे 8 बजे बाबू जी ने बब्बू (ज्ञानेन्द्र) उनके पुत्र को बुलाया और कहा कि जगदीश बाबू को बुला लाओ कि वह अपना टेप लेकर चले आयें । जगदीश भाई साहब के आने पर आपने कहा कि वह कुछ कहना चाहते हैं जिसको टेप करके समस्त सत्संगी भाइयों को प्रसाद के पहले सुनवा दें।

पावन घोषणा

स्थान – गाजियाबाद **18 अक्टूबर 1981**
दिन – रविवार
समय – प्रातः 9 बजे

गाजियाबाद 18 अक्टूबर 1981 आज जब सब यहां अद्‌भुत प्रेम से भरे हैं ख्यालात से खाली हैं यह देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। परमात्मा आपको ईश्वर का प्रेम कहीं ज्यादा दें ताकि यह रास्ता आपके लिये अति सुगम हो जाये।

मैं आज अपना सक्सेसर (उत्तराधिकरी) अपने दोनों बड़े लड़कों डा. आर. के. सक्सेना एवं डा.वी.के. सक्सेंना को एप्वाइन्ट (नियुक्त) करता हूं ये अपनी माता और अपने पांचों छोटे भाइयों और आप सबको देखेंगे भाइयों जिन्होंने आज 24 वर्ष में मेरी बड़ी सेवा की है इनके सहयोग से इस भण्डारे का इन्तजाम करेंगे। सत्संग के अध्यक्ष ये ही होंगे। ये ही सबको सत्संग करायेंगे लेकिन मदद सबसे लेंगे।

कुछ भाई ऐसे हैं जिनको मैं तालीम की इजाजत दे चुका हूँ ये अपना तालीम का काम कर रहें हैं परमात्मा उनकी मदद करें। इन दोनों भाइयों से मैनें यह कह दिया है कि वे दस पांच रोज निकालकर जहां हमारे भाई हैं वहां सत्संग बडी मेहनत से करें और उनकी मदद करें जिनमें खासकर बनारस, औड़ीहार, बलिया, समस्तीपुर, उजियापुर, पटना और गया है। इसमें जितनी मदद कर सकते हो खूब मदद करो और जो भाई ऐसे हैं जिनको इजाजत है जिनको मैं नहीं लिख पाया खत में लिख कर भेज दूंगा। कोशिश यही हो कि सत्संग की सुन्दरता गायब ने होने पाये । इसकी सुन्दरता बनी रहेगी। क्योंकि मैंने गलत आदमियों को बेकार का मौका नहीं दिया।

जहां तक फतेहगढ़ का सवाल है वह हमारी जड़ हैं। हमारा सबका धर्म है, कि जब भी मौका मिले वहां जाएं और उस दरबार की इज्जत करें। उनके पोते दिनेष बाबू जो इस वख्त हैं इनको अपनी तरफ से कोई ऐसा मौका न दें कि उनका दिल दुखे। जो मदद उनकी कर सकते हों करें लेकिन साथ ही साथ किसी पार्टी बन्दी में कोई सत्संगी हमारे यहां का या हमारे लड़कों में से किसी पार्टी में पार्ट न ले जो कुछ हो रहा है उसका इन्तजाम वहां के लोग बेहतर कर सकते हैं। हम लोगों को वहां की भलाई बुराई से कोई ताल्लुक नहीं है । जहां तक इस विद्या का ताल्लुक है विद्या दान सबसे श्रेष्ठ है लेकिन विद्या दान अच्छा हो । इसको गुरूदेव ने बहुत उदार चित से हम लोगों को बख्शा। मैं इतना ही कहूँगा कि यह विद्या इस वख्त बहुत कम सोसाइटी में मिलेगी। बल्कि करीब–करीब नहीं के बराबर। यह सोसाइटी बड़ी जीती जागती सोसाइटी है। इस विद्या के मुकाबले में यहां का दो, चार माह का बैठा हुआ सच्चा जिज्ञासु दूसरी जगह के 50 वर्ष के अभ्यासी से फार सुपीरियर मिलेगा।

इसमें जहां जिक्र जगहों का आया है उसमें गोरखपुर रह गया है उसको और शामिल कर लें । बाकी मुझे जो याद आयेगा या मौका मिलेगा तो मैं सत्संग के वख्त जिक्र करता रहूंगा।

भाइयों से प्रार्थना है कि सच्चाई से यह सारा वख्त चारों दिनों का सिर्फ ईष्वर के नाम व ईश्वर की चर्चा में खर्च करें। फिजूल की बातों में अपना वख्त खर्च न करें। यह चार दिन साल के सिर्फ परमार्थ के लिए अलग रख दिया करें। परमात्मा सबका भला करें। यह मेरी प्रार्थना है कि जो भाई आए हैं वह प्रेम से भरे हुए वापस जाएं जब उनको मौका हो वक्तन, फवक्तन अपनी कुशल का खत लिखते रहें, बस आज के लिए इतना ही काफी है। गाजियाबाद का जो मेन (खास) सेन्टर है उसका भण्डारा दशहरे और दीवाली के बीच में हर साल इसी उत्साह से होता रहे।

आज की तारीख 18 अक्टूबर 1981 है। डा. श्याम लाल सक्सेना हम दोनों भइयों के अतिरिक्त पूज्य बाबू जी ने इजाजत निम्नलिखित लोगों को दी है :–

1– स्व. ठाकुर शिव नरेश सिंह – बलिया निवासी
ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे।
2– श्री अब्दुल रहीम अंसारी साहब – भदोही निवासी
ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे।

3– श्री पूज्य बाबू राम दास जी :– आप विजयी पुर जिला गोपाल गंज बिहार के रहने वाले हैं आप पूर्वी जिलों में पूज्य बाबू जी का काम बड़ी मेहनत तथा लगन के साथ कर रहे हैं। यद्यपि आप की वृद्धावस्था हो गई है परन्तु आप परमार्थ का काम बड़े उत्साह से कर रहे हैं ईश्वर उनकों उमर बख्शे तथा अपनी दया बनाये रखें। पूज्य बाबू जी की यह भविष्यवाणी थी कि बाबू राम दास जी पूर्वी जिलों के सत्संग में तुम लोगों की बड़ी मदद करेंगे। वह शत प्रतिषत सत्य हुई अपनी वृद्धावस्था आर्थिक कठिनाइयों को नजर अन्दाज करते हुये आप सत्संग का काम कर रहे हैं गोरखपुर सत्संग आपकी अध्यक्षता में चल रहा है।

इसके अतिरिक्त किसी को आपने इजाजत नहीं बख्शी है जहां तक मुझे ज्ञात है कि यदि किसी को लिख कर दी हो तो मुझे इसका ज्ञान नहीं है।

इजाजत तालीम व वैत की इजाजत

त्रिकुटी के स्थान से ऊपर चढ़ाई करके जो अभ्यासी आत्मा के स्थान तक पहुँच चुके होते हैं उनको सत्संग के अधिष्ठाता सद्गुरू 'गुरू' पदवी दे देते हैं। सत्संगियों को आध्यात्मिक शिक्षा देने के अलावा इन्हें यह भी अधिकार प्राप्त होता है कि वह जिज्ञासुओं को उपदेश (दीक्षा) दें। इसे सूफियों में ''बैंत करना'' कहते हैं ये लोग दूसरे सत्संगियों या अभ्यासियों को इजाजत नहीं दे सकते निम्नलिखित लोगों को पूज्य बाबू जी ने इजाजत तालीम सिलसिला व वैत की इजाजत दी है ।

(डायरी से)

1– श्री अखिलेश कुमार– इनको इजाजत तालीम व वैत की है जहां तक मुझे पता है कि श्रीमान भाई साहब डा. श्रीकृष्ण लाल जी ने भी इनको अपनी इजाजत दी है मेरा इनकों हर तरह का आशीर्वाद है आप

बाबू राम दासजी

जन्म ....
विजयीपुर, गोपालगंज
बिहार

''रूबरू आयें तो मेरी रूह में सरूर आयें
छुप के बैठे हैं न जाने वो मेरे अन्दर कहाॅ''

हजरत किबला मकबूले खूदा और मकबूले पीर पूज्यपाद लाला जी महाराज के पोते है और हजरत किबला भाई साहब बाबू जगमोहन नरायन के बेटे हैं परमात्मा इनकी उमर दराज करें। मझे उम्मीद है कि आप फतेहगढ़ का नाम रौशन करेंगे मेरा आशीर्वाद है कि फतेहगढ़ के नाम को आप अपनी हिम्मत से रौशन करेंगे।

नोट – आज वे दुनिया में नहीं हैं आपने भीषण बीमारी में भी बड़ी हिम्मत से पूज्य लाला जी महाराज साहब की जन्म शताब्दी के भण्डारे का इंतजाम किया था परमात्मा उनकी आत्मा जहां कहीं हो वहां उनको शान्ति बख्शें।

2– स्व. बाबूराम जी :– यह आपके हकीकी भाई थे इनको इजाजत तालीम व बैत दोनों है परमात्मा इनकी आत्मा को शान्ति दे। कटिया में परमार्थ का बहुत अच्छा काम किया ।

3– स्व. गंगादीन सक्सेना :– यह आपके सबसे छोटे भाई थे आपको भी इजाजत तालीम व बैत की इजाजत थी परमात्मा इनकी आत्मा को शान्ति दे।

4– स्व. बाबू दामोदर दास जी :– आप ग्वालियर मे वकील थे आपको इजाजत तालीम व बैत दोनों थी आपके यहां सत्संग होता था और आप बहुत प्रेमी थे।

5– बाबू सूरज कुमार लाल श्रीवास्तव : – आप जिला बलिया के रहने वाले है आप रेलवे विभाग में कार्यरत थे आपको भी इजाजत तालीम व बैत दोनों ही है।

6– डा. बृजेन्द्र कुमार सक्सेना :– यह आपके तृतीय पुत्र हैं इनको इजाजत तालीम व बैत दोनों है।

7– श्री राम नारायण लाल श्रीवास्तव :– आप रेलवे कर्मचारी थे और सेवा निवृत्त होकर यहां रहते हैं आपको इजाजत तालीम व बैत दोनों है आप बहुत ही प्रेमी है पूज्य बाबू जी आपसे बहुत प्रेम करते थे।

8– श्री नन्द जी सिंह :– आप बनारस में ही रहते हैं और आपके क्वार्टर में ही सत्संग होता है आपको इजाजत तालीम व बैत दोनों है। आप पूज्य बाबू जी से बहुत प्रेम करते थे और आप भी इनसे बहुत प्रेम करते थे बनारस के सत्संग के आप दोनों ही लोग बहुत प्रेमी हैं।

9– श्री दिनेश कुमार सक्सेना :– आप पूज्य श्री जगमोहन नारायण जी मरहूम के पुत्र हैं और परम पूज्य लाला जी महाराज के पोते हैं इनको 19 मार्च 1978 में परम पूज्य बाबू जी ने इजाजत तालीम व बैत अता फरमायी और अपना आशीर्वाद दिया साथ ही हम दोनों भाइयों को यह हिदायत दी कि इनका विशेष ख्याल रहे ताकि फतेहगढ़ का नाम बराबर चलता रहे और आपने श्री दिनेश जी से भी फतेहगढ़ के सत्संग को मजबूत बनाने और वहां की व्यवस्था सुचारू रूप से चलाते रहने के लिये पूरी हिदायत दी थी।

इसके अतिरिक्त कई अन्य प्रेमी भाइयों को आपने तालीम तथा सत्संग कराने की इजाजत दी थी। आपने कुल मिलाकर 513 व्यक्तियों को दीक्षा दी थी तथा हजार डेढ़ हजार लोगों को परमार्थ के रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी।

■■■

पूज्य बाबू जी महाराज के रूहानी अनुभव और अनुभूति (रूहानी डायरी से)

पूज्य बाबू जी महाराज की यह मुबारक डायरी जो स्वर्णिम अक्षरों में लिखी है जिसका एक–एक अक्षर परमार्थ के रस में भीगे हैं वह खजाना है जिसको उन्होंने बड़े संभाल कर जीवन पर्यन्त रखा जिसके बारे में उन्होंने खुद लिखा है।

''मैं इस डायरी को अपनी जान की तरह रखता हूँ दो एक साहबान ने कुछ नकल करने की गरज से मांगी थी लेकिन मैंने नकल करवा कर फौरन वापिस ले ली यह डायरी मेरी लाइफ का एक अंग है। मेरी जिन्दगी का हिस्सा है क्योंकि उसमें ऊपर से उतरी हुयी या यूँ कह लीजिये जनाब किबला लाला जी महाराज के ही अलफाज हैं।''

जिस डायरी की इतनी महानता पूज्य बाबू जी साहब ने की है उसके एक भी अक्षर को छोड़ने को जी नहीं चाहता है ऐसा महसूस होता है कि डायरी नहीं स्वयं आप केवल आप की हस्ती बोल रही है सफे के सफे (पत्रें दर पत्रें) जैसे आप वह रहस्य खोल रहे हों जिसके लिये हम आपके मौहताज हैं परमार्थ का कोई पहलू अछूता नहीं रह गया है हो सकता है कुछ बातें यहां इस पुस्तक मे ऐसी लिखी जा रही हैं जो विषय से कुछ भिन्न प्रतीत हो रही हैं परन्तु उनको यहाँ लिखना बहुत आवष्यक है क्योंकि जीवन के जिस अंग या रूचि या तत्व को शब्दों में डायरी में आपने अंकित किया है वहीं उनकी जीवन पूँजी है वहीं उनका वास्तविक व्यक्तित्व है वहीं तो है हमारे पूज्य बाबू जी पुण्य स्वरूप आनन्द श्रोत, जब तक ज्योति स्वरूप स्वयं बैठे रहे लुटाते रहे अमरता, परमतत्व और एक खजाना, एक धरोहर छोड़ गये आप डायरी में जो हमें मार्ग दर्शन करती रहेगी। डायरी कैसी अचंभित कर देने वाली है क्या क्या भर दिया है इसमें हमारे पूज्य विलक्षण बाबू जी ने, हम सब को कहीं धोखा न हो हर तरह से महफूज कर दिया है यहां मैं उनके डायरी के पन्ने से उनकी अनुभूतियॉ लिख रहा हूँ पढ़े और उससे गूढ़ता के निचोड़ को हृदयगम करें आप अकसर हम सब से कहा करते थे कि मैंने परमार्थ कूट कूट कर तुम लोगों मे भर दिया है तुम इस बात को बाद में मेरे मरने के समझोगे। कई बार दौराने सत्संग भण्डारा आपने कहा कि मैंने डायरी में लिख दिया है। परन्तु इतना कुछ लिखा है देखकर हतप्रभ

हूँ इतनी व्यस्त ओहदेदार नौकरी की जिम्मेदारियां निभाते हुये इतने बड़े परिवार की इतनी बड़ी जिम्मेदारियों को बखूबी पूरा करते हुये आपने गूढ़ और विस्तृत (डायरी) रूप से सब कुछ लिखा जिसका हम लोगों को तक को पता न चलने पाया। यह इस बात का शत प्रतिशत साक्षी है कि आपके जीवन का एक भी क्षण ईश्वर की याद से खाली नहीं था और सारा जीवन क्षण क्षण केवल दूसरों के उद्धार के लिये ही था उनका जीवन अपने गुरूदेव के काम के लिये समर्पित था। स्वाति की बूँद की तरह वह अपने गुरूदेव की याद में सदैव डूबे रहते थे कब उनकी दया की बूंद उन पर हो जाये यही उनकी प्रतीक्षा रहती । उस एक बूँद की हृदय से तमन्ना करने वाले पूज्य बाबू जी पर बुजुर्गों ने, पूज्य लाला जी साहब पूज्य चाचा जी साहब, अपने सिलसिले के बुजुर्ग दूसरे सन्तों ने दया का समुन्दर उड़ेल दिया जिसने उनको तो पूरी तरह पैबस्त कर ही दिया था उस दया की ठंडक हम सब तक को सराबोर कर रही है आपका वसीला देकर जिस बुजुर्ग के कदमों में सिर झुकाते हैं, गो कि हम में कुछ नहीं है न वह प्रेम व सदाचार न वह मोहब्बत न व रियाजत, बर्राखिलाफ हम तो गुनहगार है फिर भी वह बुजुर्ग हमें अपने फैज से सराबोर कर देते हैं क्योंकि हमने उनका वसीला दिया है। ऐसी दया करके वह सतपुरूष हमारी हिम्मत अफजाई करते हैं और निस्बत कबूल करते हैं हमारी कमियों को माफ करते हैं हौसला बुलंद करते हैं और साथ ही साथ हमें अपने गुरूजनों के नक्शें कदम पर चलने का इशारा करते हैं उनकी बख्शीश इस बात की पुष्टि करती है कि पूज्य बाबू जी ने हम सब में जरूर कोई हीर भरा है जिससे बुजुर्गान सिलसिले खुश हो कर दया कर रहे हैं वरना हम सब तो कुछ नहीं हैं यह उनका वरदान है, उनकी दया है उनकी शक्ति है, उन्हीं का सहारा है वह सब का भला करें ।

डायरी के कुछ अंश (पूजा की हालत)

24 मार्च 1939 :– जब बस्त की हालत गुम होती सी मालुम हो तो बाज औकात फाका करने से भी बस्त की हालत आ जाती हे और कब्ज दूर हो जाती है जेसे जिस्मानी बीमारियों में कब्ज सा हो जाता है उसी तरह रूहानी हालतों में सत्संगियों को जो फैज पूजा में होता है सब फैज बन्द हो जाता है न पूजा करने की तबियत करती है, यहां तक

जाप करने की भी तबियत नहीं चाहती गरज बुरी हालत हो जाती है और ख्याल यह हो जाता है कि हाय हम तो बुरी तरह गिर गये बाज वख्त गुनाहों की तरफ तबियत जाती हे लेकिन मेरा जाती तजुर्बा यह है कि घबरायें नहीं सिर्फ यह देखें कि कोई गुनाह सरजद न हो जावे और जो पूजा का नियम बंधन बांध रखा है उसका नियम से करता रहे तो किसी न किसी रोज हालत खुल जाती है और फिर बस्त हो जाता है बस्त से मतलब अभ्यासियों की परिभाषा में खुलने को कहते हैं यानी उसके दरबार में फैज यानी अमृत रस जो अति आनंद देने वाला होता है जारी हो जाता है यह उस को होता है यानी जो उच्च कोटि के महात्मा हैं वह भी इससे बचते नहीं अभ्यासियों का तो कहना ही क्या। मेरे तजुर्बे में सबसे बेहतर फाका उसके बाद हम चार पांच रोज के लिए जगह तबदील कर देने से भी फायदा होता हैं सबसे ज्यादा ठीक तो यह है कि ऐसे शख्स की सोहतब कुछ रोज इख्तियार करें जो बुजुर्गों का कायल हो । बहरहाल हालत अजीब है और अभ्यासी को घबरा देती है ऐसा मालूम होता है कि बिल्कुल कोरा हो गया।

25 मार्च सन् 1939

को जब सब साहबान कटिया के सत्संग में बैठे थे उस वक्त एक बुजुर्ग बशक्ल जनाब पर दादा साहब पीछे बैठे हुये थे और मेरा जिस्म उनसे मिल गया वह हालत सारी रात रही बल्कि रात को एक वख्त पर यह मालुम हुआ कि इस कदर मिले कि मेरे सारे जिस्म में दर्द हो गया, खसूसन सीधे बाजू पर जनाब की शक्ल दादा गुरू से मशहबा मिलती जुलती जरूर थी, लेकिन जिस्म कुछ बिनस्वत उनके भारी और उम्र रशीदा (उम्रदार) मालुम होते थे। जहां तक उस वक्त ख्याल गुजरता था बाकी बिल्ला साहब रहमत उल्लाह थे आज कल ख्याल की धार सीधी हजरत मुजदीद साहब रहमतउल्ला की तरफ पहुंचती है और सब बुजुर्गान तरीके को भूल सा बैठा हूं।

6 अप्रैल 1939

रात को बुखार था, ख्याल हुआ कि ऐसी बेखबरी की हालत में अगर दम निकल जावे तो क्या अच्छा हो। उसी रात को एक खूबसूरत बुजुर्ग बशक्ल दादा गुरू महाराज सुबह के वख्त पास खड़े मालुम हुये । मैंने पैर छुये और बतौर नजर एक रूपया पेष किया। फरमाने लगे, अगर

बिल्कुल हलाल की कमाई का रूपया हो तो हम ले लें। मैनें कहा कि मैं आपके चरणों की दुआ की बदौलत रिश्वत कभी नहीं लेता और न कोई ऐसा काम है जिसमें ले सकूँ, लिहाजा मंजूर फरमाया और खुश थे।

नोट – हक और हलाल की कमाई इस रास्ते में बहुत जरूरी हैं और सब ही बुजुर्गों ने इस पर जोर दिया है कितनी दया है कि इशारा वख्तन–फ– वख्तन खुद करते रहते हैं।

7 अप्रैल सन् 1939

अजीब वाकया पेश आया क्या देखा कि दो बदमाश चाचा जी महाराज पर आरी एक किस्म का तार सा लेकर हमलावर होना चाहते थे कि सिर जुदा कर दें मैंने रोका वे मुझ पर हमलावर हुये मैंने सांस खींच लिया वे समझे कि मैं मर गया और वे चले गये। मैंने आँख खोल दी । आप हंस दिये और मैं भी हँस दिया बाज औकात ख्वाब में अजीब–अजीब वारदातें गुजरती हैं।

नोट – ऐसा लगता है कि पूज्य चाचा जी महाराज शायद कुछ इशारा देना चाह रहे हो या कुछ हो ख्वाब बहरहाल ख्वाब है, हो सकता है मुझे मुसीबतों से जूझने का सबक सिखाना चाहते हैं।

9 अप्रैल सन् 1939

को बीमारी से उठा था सुबह को उठा लेकिन अभी बिस्तर पर ही था एक अजीब शान्ती थी और तबियत का खिंचाव ऊपर की जानिब था। कमजोरी जब होती है जब अजीब किस्म का लुत्फ आता है।

नोट – बीमारी के बाद रूहानी तरक्की जरूर होती हे यह मेरा पूरा यकीन है।

11, 12 अप्रैल सन् 1939

अजीब पागलों की सी हालत थी जैसे कोई नशा पी लेता है और कुछ खबर ही नहीं है न कुछ काम करने को खास तौर से जी चाहता है बल्कि तबियत परेशान सी है।

नोट – जब त्रिकुटी के ऊपर के चक्रो की खबर आने लगती है तो गालिबन कभी–कभी ऐसी हालत हो जाती है।

23, 24, 25 अप्रैल सन् 1939

को बारात में करीब 3 या 4 बजे थे कि सब लोग बैठ गये । थोड़ी देर बाद यह हालत हुई कि जो जहां था उठ नहीं सकता था। एक साहब जिन्होंने कभी एक बार पूज्य चाचा जी महाराज के दर्शन किये थे वह भी उसी हालत में बैठे रहे और एक लड़का नया और आ गया। वह भी उसी हालत में आ गया।

24 अप्रैल को बवख्त सत्संग बैठते ही यह मालुम हुआ कि सब को किसी चीज की जबरदस्त ताकत ने घेर लिया और सत्संग में बहुत लुत्फ रहा।

25 अप्रैल को बवख्त सत्संग यह हालत थी बमुश्किल तमाम सत्संग को छोड़ने को जी नही चाहता था और एकदम से ऐसा फैज जारी हुआ कि यह मालूम होता था कि तमाम कोशिश और वालिद साहब के इसरार करने पर भी कोई उठने को तैयार न था यहां तक कि उठ कर कपड़े बदलने की हिम्मत नहीं हो रही थी और बड़ी मुश्किल से घर पहुँचे यह मालूम होता था कि रूह एक बहुत ऊँची जगह पर पहुँच गई हैं और उतरने मे देर लगेगी आखिर कार हम लोग जैसे कपड़े पहने थे वैसे ही पहने बैठ गये हालांकि यह बात हमारे वालिदसाहब को काफी नागवार गुजरी लेकिन हम लोगों में से किसी को होश तक नहीं था।

नोट – यह किसी शादी का मौका था।

वाकया जिन्दगी :– गो कि यह बिल्कुल क्षणिक मात्र हालत हुई या खुली आंखों देखा। मैं खाने के ख्याल से बैठा था। वाईफ ने (पू0 माताजी) कहा कि मैं पखाना हो आऊँ मैंने कहा जाओ मैं यहीं बैठा हूँ। यह चली गई एक क्षण में क्या देखता हूँ कि बिल्कुल सुनहरे रंग का पीला पीतल का कमंडल हाथ में लिये हुये एक साधू आये और मुझसे कहने लगे भिक्षा दे दो । मैं कुछ ऐसा मुन्तसिर हुआ कि कुछ कहने को जी नहीं चाहा। जब गौर से देखा तो हजरत किबला लाला जी महाराज थे मैंने रोकर पैरों पर गिरना चाहा आपने कहा घबराओं नहीं बरदाश्त करो, तुम छोटे हो फिर फरमाया कि डाक्टर श्रीकृष्ण तो गालिबन बाहर होंगे और कुछ चेहरे पर शिकन नमुदार हुआ फिर फरमाया तुम बरदाश्त करो वरना सत्संग बिगड़ जायेगा और एकदम गायब हो गये । मैं लुटा–लुटा सा बैठा रहा ।

नोट :– उसके बाद कुछ इजहार इसी किस्म के आये जिन से मालूम होता था कि जरूर कुछ उनकी नाखुशी का इजहार श्रीमान भाई साहब की तरफ था बाकी परमात्मा बेहतर जानता है यह वाकया मैंने श्रीमान् भाई साहब से बयान भी किया था।

एक मर्तबा सिकन्दराबाद में भंडारे पर एक बुड्ढे सन्त लकड़ी लिये हुये सुबह से ही चारों तरफ घूम रहे थे उनके पास में लकड़ी थी और उसी के सहारे चल रहे थे और कमर झुकी हुयी थी। ये हिन्दू और काफी जईफ (बुड्ढे) थे। गरज यह जिन्दगी का बहुत मुबारिक दिन गुजरा ।

एक बार हजरत किबला भाई साहब डाक्टर श्रीकृष्ण लाल जी के साथ हम कई शख्स पीराने कलियर गये। पहले तो किसी की हिम्मत नहीं पड़ रही थी क्योंकि जनाब का जलाल मशहूर था लेकिन फिर सब ने हिम्मत की और जनाब के मजार पर सलाम पेश किया। बड़ी शफक्कत से आप भी पेश आये और हम सब लोगों को अपने नूर से पुरनूर किया मालुम होता है कि जनाब ने भी अब जलाली हालत को तर्क करके जमाली हालत दूसरों को फैज पहुँचाने के लिये अख्तियार फरमाई है उस सलाम पेश करने का यह असर हुआ कि उस वक्त से निस्बत खवाजग्रान खानदान चिस्तियां ज्यादा मालुम होती हैं मेरा अपना जाती ख्याल यह है कि खानदान नक्शबंदिया मुजहदी मुजहरीया के बुजुर्गो में सब खानदानों के, यानी चिश्तिया, कादरिया और दूसरे खानदानों की भी निस्बत मालुम होती है। मैंने यह नोट किया कि हर खानदान के पीराने उज्जाम दया और मदद वख्तन फवख्तन देते ही रहे हैं मुमकिन है कि मेरा ख्याल बंध गया हो, एक मर्तबा मैंने देखा कि हजरत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती साहब एक बड़ा कागज हाथ में लेते हैं जैसा कि अकसर जन्मपत्री की तरह होता है और उस कागज को दिखला कर कुछ इरशाद फरमा रहे हैं, जो बशारत तालीम की तरफ मालूम होती है, बहरहाल मैंने कई बार उनको मराकबा (ध्यान) और पूजा और कई दीगर औकात पर नजरें इनायत करते हुये देखा जिससे जाहिर है कि जनाब की निस्बत किसी जरिये से हो चाहे पू. लाला जी साहब के जरिये हो चाहे पूज्य चाचा जी महाराज के जरिये से हो, चाहे खानदान के बुजुर्गो के जरिये से हो बहरहाल निस्बत जरूर है।

6 नवम्बर 1963

को सिर्फ चाचा जी महाराज का सब तरफ घूमना ही घूमना था मालुम होता था कि यह दिन पूज्य चाचा जी महाराज की खास दया का रहा।

7 नवम्बर 1963

दोपहर तक की यह हालत थी कि उठना मुश्किल हो गया। बहरहाल बुजुर्गों की बड़ी दया रही और जो लोग उस वख्त थे वे भी बड़े मायूस थे।

भंडारा सन् 1983, 20, 21, 22, 23 अक्टूबर था मुझे कोई होश चारों रोज नहीं था मैं चारों रोज यह देखता था कि सिवाय बुजुर्गो के पंडाल में कोई नही है। हर तरफ प्रकाश और शांति इतनी है कि हर शख्स अनुभव कर रहा था।

भंडारा सन् 1984

निहायत अच्छा रहा चारों दिन प्रभु की बड़ी दया और कृपा थी। आखिरी दिन यह हालत थी कि मेरे चेहरे की तरफ कोई आसानी से नहीं देख सकता था क्योंकि इसमें इतना जबरदस्त तेज था कि भाइयों की निगाह मेरे चेहरे पर नहीं रूक सकती थी सड़क तक मालूम होता था कि आदमी ही आदमी हैं ऊँ शान्ति के जाप के बाद एक एक अजीब हालत थी।

2 जुलाई सन् 1985

को बैठते ही यह हालत थी कि कोई चीज किसी किस्म की नहीं थी ऐसा मालुम होता था कि यह हालत घुरपद की है। पूज्य लाला जी महाराज की मौजूदगी बराबर दो घंटे रही, पर इसके बाद भी करीब–करीब दिन भर हालत वही रही। मेरे ख्याल से ऐसी कृपा मैंने पहले कभी नहीं देखी । इस अर्से के बाद पूज्य भाई साहब डा. श्रीकृष्ण लाल सिकन्दरबाद वालों की बड़ी मौजूदगी अपने साथ देखता हूँ।

एक बार डा. चतुर्भुज सहाय साहब मथुरा वालों को अपने साथ देखा उनके साथ एक कोई बड़े आदमी अकेले थे। थोड़ी देर में देखा कि एक पति पत्नी जो बड़े आदमी आफिसर ग्रेड के मालूम होते थे आये हैं

मैंने चाहा कि उनके लिये कुर्सी पुछवा दूँ ताकि आराम से कुर्सियों पर बैठ जायें लेकिन उन दोनों ने मेरा हाथ पकड़ लिया और बड़ी इज्जत दी। उसके बाद मैंने देखा एक अजीब सुहावना दरख्त (पेड़) था जिस पर बड़े सुन्दर आम और आंवले लगे हुये थे। मैंने जल्दी से अपने बेंत से उन आमों और आँवलों को तोड़कर अपनी जेब मे भर लिया। यह इतना सुन्दर दृश्य था कि करीब तीन महीने हो गये मैं न तो उस दरख्त (पेड़) को ही भूला हूँ और न उन आम और आंवलों को।

आजकल मैं मुंशी मदन मोहन लाल शाहजहांपुर वालों को रोज अपने साथ देख रहा हूँ और बड़े खुश नजर आते है वैसे सत्संग के वख्त खासतौर से शाम को रायपुर वाले मौलवी साहब, पूज्य लाला जी साहब, पूज्य चाचा जी महाराज बल्कि सभी बुजुर्ग साथ–साथ दिखाई दिये और सत्संग में सब पर बड़ी दया करते हैं।

अपने बुजुर्गों की दया और जबरदस्त निगहबानी बेमिसाल है। मैनें कई बार देखा है कि जब कोई साहब तशरीफ लाये, जरूर बुजुर्गों का साया मौजूद हो गया और साफ मालूम होता था कि फलां बुजुर्ग है। एक मर्तबा नन्द जी और राम नारायण जी आप दोनों ही आपके शिष्य हैं और वे उनसे बहुत प्रेम करते थे आये बड़ी ही दया थी हजरत किबला लाला जी महाराज में फना बिल्कुल बका होकर रह गई उसके बाद हजरत किबला की याद और एक सफेद नूर आया और बाज औकात बहुत तेज सफेद रंग का नूर बिल्कुल रूहानी होता है।

एक मर्तबा राम औतार जी आये तीनों बुजुर्गांन हजरत किबला लाला जी साहब, पू0 चाचा जी महाराज और भोगांव वाले मौलवी साहब मौजूद थे (हापुड़)

दूसरे दिन राधेलाल जी उस वख्त पूज्य चाचा जी महाराज की मौजूदगी थी।

पिछले दिनों बाबू सूरज कुमार लाल जी के आने पर हजरत किबला फजल अहमद खां साहब रहमत उल्लाह की मौजूदगी ही नहीं की बल्कि उन्होंने फैजायाब किया।

एक मर्तबा मैं पूजा में बैठा था बाबू राम दास जी आकर बैठ गये ऐसा फैज रव्वानी जारी हुआ कि सरावोर हो गये आँख नही खुल रही थी

इसका जिक्र उन्होंने मुझसे किया एक षख्स और पीछे बैठा था वह भी बड़ा मायूस हो गया हालांकि बिल्कुल नया था और संस्कारी भी नही था।

इसका जिक्र मैंने यहाँ इस वजह से कर दिया है कि हजरत किबला लाला जी महाराज ने अपने मकतुवात मे तहरीर फरमाया है कि जो काम हो रहा है वह सिर्फ बुजुर्गो कि दया से और उनका साया हर वक्त हमारे साथ है।

■■■

पूज्य बाबू जी महाराज के जीवन की कुछ घटनायें

अधिकतर सन्त देश काल के शिरोमणि होते है उनका जीवन साधारण लोगों के जीवन से हटकर बहुत ऊँचा होता है। निसंदेह संसार में परोपकारियों की कमी नहीं यहाँ अनेक नेक, दयालु पुरूष हुए हैं परन्तु संतो के परोपकार, को उनके उपकार को, उनके दया को कोई नही पहॅुच सकता। उसको समझ भी पाना बहुत कठिन है। जो संत जीव की आत्मा को परमात्मा से मिला देता है या राह पर डाल देता है वही हंस है, वही धन्य है, वही सदगुरू है। कोई जो भी रिश्ता ऐसे संतो से बाँध ले पर प्रेम सौदाई, फिदाई होना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं ''हरि मेरे पीऊ, मैं राम की बहुरिया'' अर्थात परमात्मा को पति तथा जीव को स्त्री की संज्ञा देते हैं वही स्त्री सुहागिन है जिसको प्रीतम का प्रेम मिल जाये। स्वामी रामकृष्ण परमहंस परमात्मा और जीवात्मा को मॉ बेटे के रिश्तों से याद करते हैं। मॉ है तो बेटे को क्या चिंता। ईसा मसीह ने उस परमात्मा को सच्चे बाप का पवित्र नाम दिया है और जीव को बच्चे का जब तक बच्चे के ऊपर बाप की छत्रछाया है क्या गम है क्या तकलीफ है कोई चिंता नही कोई दु:ख नहीं। रिश्ता कोई भी माने, कुछ भी पुकारे पर सब महात्माओं का यही अनुभव है कि जिस परमात्मा की हमें तलाश है, या जिससे हम मिलना चाहते हैं वह एक है वही हिन्दू का है वही मुसलमान का वही सिक्ख का वही ईसाई का भी सबका वही परमेश्वर है। सारे जग को जीवन दान देने वाला एक ही वह दाता है उस मालिक की कोई कौम नहीं उसकी कोई जाति नही उसका कोई वर्ण नहीं वह तो सर्वव्यापक है। जैसे मालिक के लिये कोई बंधन नही वैसे ही संत सदगुरू जो उसी के देश के वासी हैं वह भी उसी की तरह दयालु, सब बंधनो से परे है। जैसे ईश्वर एक केवल प्रेम का नाता जानता है वैसे ही संत के दरगाह मे उनके कदमों में एक मात्र भक्ति और प्रेम की कदर होती है उन्हें तलाश ही उसकी है इसीलिये हर संत सद्गुरू हमारे ख्याल के इन ओछे भेद भाव के छोटे छोटे दायरों से ऊपर ले जाने की कोशिश करता है यहाँ तक की हमारे अन्दर अपनी कमाई परमात्मा की भक्ति और प्रेम के सच्चे नाम और प्यार का छींटा देकर हमें राहे रास्ते

पर डाल देता है। दरअसल जीव को तो जन्म जन्म से दुनियां के भोगों की लज्जत मिली है लेकिन जब कोई सन्त सदगुरू मिल जाते हैं वह हमें उससे अधिक लज्जतदार वस्तु का मजा या आनन्द देते हैं तब हम इस दुनिया के भोंगो को तो खुद छोड़ देंगे, फेंक देंगे जिसको अशर्फी मिलेगी वह कौड़ीयाँ को तो फेंक ही देगा। पर जब तक उसका आनन्द नही मिलता तब तक दुनिया नही छूटेगी। जब आनन्द सदगुरू की दया से मिल जायेगा तब दुनिया में जाहिरी तरह से रहते हुये भी चुपचाप अंदर परमात्मा के उस प्रेम के लिए लालायित रहेगा मिसाल के तौर पर अगर किसी लड़की से यह कह दें कि तुम मां बाप भाई बहन का प्रेम को त्याग दो तुम्हे पति का प्रेम मिलेगा पर ऐसा नहीं होता जब उस लड़की का अपने पति का प्रेम मिल जाता है तो धीरे धीरे मां पिता भाई बहन का प्रेम कम होता है और फिर ऐसा होता है कि करीब करीब भूल सी जाती है 24 घण्टे अपने पति के घर पति की सेवा और प्रेम में पूरा जीवन सहर्ष गुजार देती है उसे पता नहीं चलता कि इतना समय गुजर गया उसके ख्याल की धार वहीं आकर सिमट जाती है इसी तरह संत लोग दुनिया में रहते हुए परमात्मा से जुड़े रहते हैं जिस प्रकार परमात्मा की गति को कोई नहीं जान सकता है क्योंकि वह राजदार हैं उसी तरह सन्तों की जीवन दर्शन को भी समझना बहुत असंभव है। वे सर्वज्ञ हैं हम अल्पज्ञ, वे सर्वव्यापी हैं हम सीमित हैं, वे महान हैं हम तुच्छ हैं जिन्हें पूरे गुरू मिल गये है वे भाग्यशाली है जिन्हें नही मिले वे वास्तव में भाग्यहीन हैं। परमात्मा उन पर भी दया करें।

मेरे यहां यह सब लिखने का आशय बस इतना ही है के उनके जीवन में घटी घटनायें हमारे लिये उद्देश्य हैं कि हम उनसे कुछ सीखें या अपने को उनके बताये हुये सांचे में ढालें उनके जीवन की घटनायें चाहे छोटी से छोटी हो अपना महत्व रखती है, अपना अर्थ रखती है। ईश्वरीय गुण से ओत प्रोत हमारे पू0 बाबू जी साहब के जीवन की घटनायें सब अर्थ पूर्ण दिशा सूचक हैं कुछ हम लोगों को सिखाने के लिये है जो हमें यह शिक्षा देती है कि मानवीय गुणों का शत प्रतिशत अपने व्यक्तित्व में समावेश कर लें उनके कथनी और करनी में कोई रंच मात्र अंतर नहीं रखें शत प्रतिशत सच्चाई बरतें सच्चे बनें रहने बनें का मूल मंत्र जो करो वह सच्चा हो उसमें लेश मात्र भी झूठ न हो अंदर बाहर समान ईश्वरीय गुण उनके चरित्र की विशेषता थी उनका व्यक्तित्व पूर्ण सदाचार Be good and do good के महामंत्र पर आधारित था। मैं

पाठकों के समक्ष उनके सरल सच्चे व्यक्तित्व की कुछ अमिट छाप जो हमारी सब्र की धरोहर है जो उनके जीवन की घटनायें हैं उसको हम जितना समझ पाये हैं जैसा समझ पाये हैं लिख रहा हूँ क्योंकि उनके गहन जीवन को जो साधना में डूबा था उसको पूरा–पूरा समझ पाना मेरे लिये शायद कठिन है घटना उनके महिमामयी चरित्र का दर्पण है।

यह घटना उसी समय की है जब आप गाजीपुर में पोस्टेड थे उस समय पूज्य लाला जी साहब वहाँ तशरीफ ले गये उनके साथ पूज्य बाबू बृज मोहन लाल जी साहब तथा डा0 श्रीकृष्ण लाल जी साहब और कई दो एक साहबान भी थे आप शाम को बैठे थे तभी एक मरीज आ गया। पूज्य बाबू जी ने उसे सुई लगाकर दो रूपये ले लिये पूज्य लाला जी साहब ने फौरन पूछा ''मरीजों से इतना तो नहीं लेते हो कि उनका जी दुखें''। पूज्य बाबूजी ने अर्ज किया ''इस मरीज से दूसरे डाक्टर 400/– ले चुके हैं, मुझे इससे सिर्फ 15/– रू0 मिले हैं और अब ये काफी ठीक है'' पूज्य लाला जी साहब बहुत खुश हुए और कहा ''हमारा मकसद यही था कि मरीज को ज्यादा से ज्यादा फायदा पहुँचे और जितना कम हो सके पैसा उतना ही लेना'' यह एक इशारा नेक कमाई की ओर था जिसको इतने सीधे सरल शब्दों मे आपने बता दिया ।

दौरे कयाम शाम को टहलने गये और कहने लगे चलों यही खेत में पूजा कर लें। पूज्य बाबू जी यह न समझे कि खेत मे पूजा क्यों जब कि घर था, पर पूछने की हिम्मत न कर सके। आपने कहा जानते हो हम वहां खेत में क्यों पूजा करने बैठे गये पूज्य बाबूजी ने सर नीचे कर लिया। खुद ही कहने लगे ''यहां दूर दूर तक कोई इस विद्या का अधिकारी नही दिखाई देता है। ईश्वर को अगर मंजूर होगा तो यह तुम्ही सब के हाथों फले फूलेगी। तुम भी सरकारी नौकर हो पता नही कितने दिन रहोगे मेरा भी पता नही इतनी दूर आना हो या न हो।'' देखने की बात है कि कितने दयालु थे कि कोई नही मिला तो जमीन मे असर डाल दिया। पूज्य बाबू जी अपनी पहली सख्त बीमारी के बाद से ही यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि कोई दिलदार नगर का आयेगा जरूर पूज्य लाला जी की कही बात जरूर पूरी होगी वह बार बार कहते थे ''बेटा बुजुर्गो ने जिन्दगी कुछ वर्ष बढ़ा दी, उनका कुछ काम बाकी है।'' सौभाग्यवश दिलदारनगर से डा0 एस.एन. राय साहब आये और उन महान पुरूष ने अपने गुरूदेव के काम को पूरा कर दिया। वहाँ प्रतिवर्ष भंडारा होता है यह सब उनकी दया है।

यह उस समय की बात है जब आप खुर्जा म्युनिसिपल बोर्ड में तैनात थे। यह 1950 की बात है कि उनके पिता जी की सख्त बीमारी की खबर कटिया से आई। आप तार पाते ही एक दम रवाना हो गये इत्तफाक से दूसरे दिन दफ्तर मे कोई एक बहुत जरूरी मीटिंग थी और आपका उसमें होना भी बहुत जरूरी था पर आपने यही धर्म समझा कि उन्हें अपने पिताजी के सेवा मे जाना आवश्यक है हालांकि उस मीटिंग से अनुपस्थित की चिंता उन्हें थी उनके आश्चर्य की सीमा न रही जब आप वापस आए तो हर व्यक्ति से यही ज्ञात हुआ कि कोई नही जान पाया कि आप उस मीटिंग में नही थे। अर्थात आप अनुपस्थित रहते हुये भी उपस्थित थे पू0 बाबू जी को उस दिन से पू0 लाला जी साहब पर इतना अटल विश्वास हो गया कि आप जब इस तरह हमारे साथ साये की तरह है तो फिर क्या चिंता है। किस बात की कमी है ''काह कमी, जा के रामधनी''।

यह 1943 का वाकया है आप गाजीपुर में तैनात है और मोहल्ला खजुरिया में उस समय रहते थे आप दौरे पर जा रहे थे जाने से पहले आपने हमारे बड़े भाई पू0 मदन लाल साहब (जो कि उम्र मे काफी बड़े थे) पू0 सेठ भाई साहब और मुझको सबको बुलाकर यह समझाया की बेटे होशियार रहना हो सकता है चोरी हो जाये वह अच्छी तरह जानते थे कि ऐसा होगा परन्तु स्वयं अपने ड्यूटी और काम के इतने पक्के थे कि यह जानते हुए भी दौरे पर चले गये। हम लोग से यह तक कह गये कि हो सकता है दशहरे के दिन चोरी हो जाये। घर मे हमारी मां और बड़ी जिज्जी थी, दो नौकर भी थे उस दिन हम लोग रात भर जागे प्रातः 3–4 बजे के करीब आँख लग गयी और चोरी हो गयी हालांकि पू0 मदन भाई साहब ने चोर को पकड़ भी लिया था पर दरोगा ने किन्ही कारणों से उसे पेशाब के बहाने भगा दिया। ठीक उसी दिन पू0 बाबू जी आ गये और उन्होंने कहा बेटे परदेश मे ख्वामख्वाह किसी से दुश्मनी नही लेते हैं और चोरी की वजह खराब पैसा और बेईमानी का पैसा बताया आपने कहा कि तुम्हारी माँ कुछ ऐसा पैसा अपने घर से ले आई जो अपने साथ (हलाल का) 300–400 रू0 यहाँ का ले गया। हम लोंगो को यह नसीहत यह संस्कार उसी छोटी उम्र मे कर दी कि खराब पैसा सिवाय तबाही के और कुछ नहीं कर सकता है।

उसी समय के लगभग 1944 की एक और ऐसी घटना है जिससे पाठकों को ज्ञात होगा कि आप कितनी जबरदस्त ऐहतियात रखते थे। संस्कारों का कितना ख्याल रखते थे। और ईमानदारी के अलावा एक भी पैसा बेईमानी का न आये। इसका कड़ाई से पालन करते थे। हम लोगों के सबसे छोटे मामा श्री ब्रह्मनन्द जी थे उनको पू0 बाबू जी ने गाजीपुर में ही राशन विभाग में नौकरी दिलवा दी थी उस विभाग में लेन देन तो था ही आप पू0 सेठ साहब और मेरे लिए नये अच्छे किस्म के जूते लाये। हम लोग बच्चे थे अच्छे किस्म के जूते पाकर बहुत खुश हुए और पू0 बाबू जी को भी खुश होकर पहन कर दिखाया। पू0 बाबू जी को अच्छा नहीं लगा वह चुप रह गये दूसरे तीसरे दिन हम लोगों ने कहा कि ये जूते कुछ बहुत अच्छे नहीं है और इसको वापस करके और ला दीजिए उन्होने इसको वापस न कर के एक–एक जोड़ी और जूते लाकर दे दिये आदत के मुताबिक हम लोंगो ने पू0 बाबू जी को वह जूते दिखाये। आप बहुत नाराज हुए सभी जूते वापस करा दिये और उनसे सख्ती के साथ साथ साफ कह दिया कि मैने नौकरी लगवा दिया अपना फर्ज पूरा कर दिया अब आप अलग रहे वरना बच्चे खराब हो जायेंगे और हम लोगों को भी मिलने जुलने से मना कर दिया क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में सिद्धान्तों से कभी समझौता नही किया चाहे वह कोई भी हो इस तरह बचपन में ही ईमानदारी, और सादे जीवन की नींव डाल दी। कुछ वर्षों पश्चात् पू0 बाबू जी ने हम लोगों को खत लिखा कि तुम लोग फौरन जगत चले जाओ। तुम्हारे मामा श्री ब्रह्मनन्द बहुत बीमार हैं वे तुम लोंगो से बहुत प्यार करते है तुम्हारा धर्म है वो बीमारी की हालत में है उन्हें देख आओ हम लोग उनके आदेशानुसार जगत पू0 मामा जी को देखने गये और उसके कुछ ही दिन बाद उनका स्वर्गवास हो गया कितना विरोधाभास प्रतीत हो रहा है पहले जीवन के मूल्यों और सिद्धान्तों के कारण उन्हें घर से अलग रहने और हम लोगों को बोलने की मनाही कर दी थी और फिर जब वे बीमार हुए तो आदेश दिया उनसे मिलने का यह उनके प्रति आपके हृदय की दया थी वास्तव मे वह यही चाहते थे कि हम लोगो मे ये छोटे–छोटे प्रतीत होने वाले बड़े–बड़े संस्कार पड़ जायें, यह उनका आदर्श था। ईमानदारी की कमाई, सादा जीवन।

यह घटना नवम्बर 1945 की है। आपके बड़े दामाद डा0 विशम्भरनाथ जी को 4.11.45 को बुखार आया और बाद मे यह बुखार टाईफाइड की शक्ल ले बैठा जैसा कि बताते हैं दिमाग की झिल्ली में सूजन आ गई थी और डिलिरियम की सी हालत हो गई हालांकि उस समय के अनुसार जो इलाज हो सकता था वह किया जा रहा था परन्तु हालत दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी उरई से डा0 विशम्भरनाथ जी के पिताजी का तार और खबर पाते ही आप उरई के लिए रवाना हो गये आप वहाँ दो दिन रहे। आपने उनके पिताजी से कहा कि अगर आप कहें तो हम इन्हें आराम से फर्स्ट क्लास में ले जायें और बनारस इलाज करवा लें। शायद गंभीर बीमारी के कारण उनके पिताजी कुछ नाउम्मीद से हो गये थे और उन्हें घर से बाहर नहीं जाने देना चाहते थे पूज्य बाबू जी ने उनकी चारपाई का रूख बदलवा दिया और पूज्य जिज्जी (अपनी बड़ी बेटी) को उनकी देख भाल की हिदायत करके चले गये। वहां से उन्होंने एक सफेद कागज पर यह लिख कर भेजा ''दुआ करने वाला आपका बन्दा श्याम लाल'' और जिज्जी को उसी के साथ खत में हिदायत दी कि इस कागज को एक सफेद कपड़े में बाँध कर तावीज की तरह सीधे हाथ में बाँध देना सब ठीक हो जायेगा। जिज्जी ने ठीक वैसा ही किया उनकी दुआ ने असर दिखाया परमात्मा की दया से दूसरे ही दिन से उनकी तबियत ठीक होने लगी और वह एकदम स्वस्थ हो गये। यह उनकी दया थी।

एक बार स्व0 डा. विश्वम्भर नाथ मौंठ में तैनात थे उस समय उन्हें तथा उनकी पत्नी (पूज्य जिज्जी) को रूह बुलाने का बड़ा शौक था कुछ तौर तरीके भी ठीक तरीके से नहीं मालूम थे। एक दिन शाम के वख्त दोनों ही लोग किसी की रूह बुला रहे थे। इत्तफाक से किसी मुसलमान फकीर जो नमाज के लिये जा रहे थे उनकी रूह आ गई न जाने कैसे आ गई वह बहुत नाराज हो गई। बहुत प्रार्थना की और माफी मांगी उनका गुस्सा शान्त नहीं हुआ। आप (पूज्य बत्ता जिज्जी) बतातीं है कि तरीके के मुताबिक उस रूह से यह पूछा कि आपको सबसे ज्यादा प्यारा क्या है। उस रूह ने जवाब दिया 'कुरान' उसका वास्ता देकर उनको बिदा किया परन्तु उसी समय उनकी तबियत बहुत खराब हो गई लगभग बेहोशी सी हालत थी। (जीजा जी) डा. साहब ने तार भेज कर पूज्य बाबूजी को बुलाया हालांकि बाबू जी बुन्देलखण्ड के इलाके से

वाकिफ भी नहीं थे और मोंठ कभी नहीं आये थे। पर रात होते हुए भी वह ठीक सीधे घर पहुँच गये। उन्होंने एक नजर पूज्य जिज्जी पर डाली और कुछ धीरे से कहा कि आपकी ऐसी हिम्मत कैसी हुई। (पूज्य जीजा जी ने बताया था) उसी के थोड़ी देर बाद होश आने लगा और जैसा कि पूज्य बाबू जी ने कहा था "सुबह ठीक हो जायेगी" सुबह तबियत बिल्कुल ठीक हो गई और जो भयानक रूहें उन्हें दिखाई दे रही थीं सब गायब हो गई थी। चलते समय पूज्य बाबू जी ने पूर्ण हिदायत दी कि इन चक्करों में नही पड़ना चाहिये और कहा कि अपने बुजुर्गो का ध्यान करो वह लोग हर समय मदद करते हैं।

नोट– पूज्य बत्ता जिज्जी के द्वारा बताई गई यह घटना है वैसे तो यह साधारण घटना लगती है पर इससे उनकी विलक्षण शक्ति का भान होता है जिसको अब समझ पा रहे है।

पूज्य बाबू जी परमार्थ के अग्रणी सन्त तो थे ही आपने मानव कल्याण का व्रत तो लिया ही था पर उन्होंने उसके साथ ही साथ अपने वंश जाति गांव माता पिता पत्नी संतान दोस्त भाई बहन सब का ऋण चुकाया। आपमें कर्तव्यनिष्ठा भी अटूट थी यह हादसा सन् 1950 का है आप खुर्जा में तैनात थे खुर्जा घी की बहुत बड़ी मंड़ी है। यह तय किया गया कि डालडा को किसी रंग में बेचा जाये जिससे लोग दशी घी में इसको न मिला सकें। इस प्रस्ताव को लोग चाहते थे कि न पास हो इसके लिए यह प्रस्ताव पूज्य बाबू जी के पास आया और हर तरफ से दबाव पड़ने लगा कि कलरिंग का प्रस्ताव पास न हो परन्तु पू. बाबू जी ने तमाम विरोध के खुर्जा से इसको पास करा दिया। तमाम कोशिश के बाद भी कोई इनको इस फैसले से न डिगा सका। अंततः लोगों को मिल कर बहुत कोशिश करके इस प्रस्ताव को असेम्बली के एजेन्डा से ही निकलवाना पड़ा। परन्तु पूज्य बाबू जी ने जो चीज सही थी उसकी का साथ दिया। वैसे आप इरादे के बड़े पक्के और सच्चाई पर अड़िग रहते थे।

यह घटना खुर्जा की है जब पूज्य बाबू जी वहीं पर तैनात थे। पू. बाबू जी सुबह के समय शहर का गश्त करने लगे थे। गश्त करके जब आप वापस आने लगे तो आपने ऐसा महसूस किया कि पूज्य लाला जी महाराज पूज्य चाचा जी महाराज साथ–साथ चलने लगे। और पूज्य बाबू जी से कहा कि इन दोनों बच्चों सेठ और दीन्नू को श्रीकृष्ण के पास

सिकन्दराबाद भेज दो इनकी दीक्षा का समय हो गया है। पूज्य बाबूजी घर आये हम लोग पढ़ रहे थे। हम लोगों को कुछ आत्मा परमात्मा की बातें समझाने लगे, परन्तु उस समय कुछ समझ न आया था और कहा कि सिकन्दराबाद चले जाओ। जब तक ताऊ जी न कहे वापस न आना। यद्यपि खेल का प्रोग्राम होने से उस दिन लोगों की ज्यादा तबियत सिकन्दराबाद जाने की नहीं थी, पर पू0 बाबू जी के कहने से चले गये। वहाँ पहुँचने पर पूज्य ताऊ जी ने पहला प्रश्न यही किया कि क्या 'श्यामलाल ने कुछ कहा है'। हम लोगों ने उन्हें बताया कहा तो कुछ नहीं बस कहा चले जाओ ताऊ जी के पास, आपने खुद अपने पैसों से रेवती हलवाई के यहाँ से पेड़े मँगवाये और कहा सुबह नहा धो कर मेरे पास आना और इस तरह हम दोनों की दीक्षा हो गई और हम लोग दूसरे ही दिन शाम को वापिस आ गये। इतनी जल्दी वापिस आने पर आपने पूछा कि ताऊ जी ने क्या कहा। हम लोगों ने बताया कि हम लोगों को बैत कर दिया और आपको चिट्ठी दी उसके पश्चात आपने गष्त वाली उपरोक्त घटना का जिकर किया।

नोट – यह घटना आपके जबरदस्त कश्फ तथा बुजुर्गों के ऊपर पक्के विष्वास का और बुजुर्गों की दया का उदाहरण है।

यह घटना 1949 की है। पूज्य बाबू जी सिकन्दराबाद गये हुये थे और पूज्य ताऊ जी तथा पूज्य बाबू जी पूजा में बैठे थे। पूजा से उठते ही पूज्य बाबू जी ने पूज्य ताऊ जी से कहा कि उन्होंने देखा है कि श्री सेवती प्रसाद को पुलिस पकड़ रही है लगता है वह किसी परेशानी में है यदि आप कह दें तो वह कासगंज चले जायें। पूज्य ताऊ जी ने आपको जाने को कह दिया। जब पूज्य बाबू जी कासंगज पहुँचे तो यह सत्य निकला आपका वारंट था क्योंकि उनके किसी मुवक्किल ने एक मुसलमान को (बुरके में रखकर) गलत आईडेन्टीफिकेशन करा लिया था और आप जान नहीं पाये थे। पूज्य बाबू जी गजटेड आफीसर थे उस समय गजटेड आफीसर महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। उनके जाने से और प्रयास से सब ठीक हो गया। यह घटना उनके जबरदस्त कश्फ का दर्शन कराती है।

यह घटना करीब 1951 की है। पूज्य बाबू जी ने ख्वाब देखा कि पूज्य ताई जी (धर्म पत्नी परम पूज्य ताऊ जी सिकन्दराबाद वाले) को कई बुजुर्ग लिये जा रहे हैं। उनमें पूज्य लाला जी महाराज पूज्य चाचा

जी साहब तथा कई बुजुर्ग है। सब लोग साथ जा रहे है और सब खुश हैं लेकिन जब वे पूज्य बाबू जी पू. ताऊ जी वापस सिकन्दराबाद आते हैं तो वे ताई जी वहाँ नहीं है और उनका कमरा बड़ा सुनसान है। यह सपना आपने पू. ताई जी के निधन के लगभग एक हफ्ते पहले देखा और इसका जिकर उन्होंने पू. ताऊ जी से भी किया था।

इसी बात का संकेत एक स्वप्न द्वारा एक वर्ष पहले पूज्य लाला जी ने पूज्य ताऊ जी को दिया था। अचानक एक दिन रात को आपकी तबियत खराब हुई और बिना किसी दवा देने का अवसर दिये बिना वह चल बसी। इस प्रकार आप दोनों के स्वप्न एक से थे ऐसा अक्सर होता था लगता था कि आप एक दूसरे के पूरक हैं। विचारों की इतनी समता थी कि जो बात पूज्य ताऊ जी के विचार में आती थी ठीक उसी तरह वह पू. बाबू जी के विचार में उतर जाती थी। विचारों की इतनी समानता जिसका वर्णन करना कठिन है ऐसा तारतम्य दोनों का था कि उसको जितना लिखूं कम है।

पूज्य ताई जी हमारे पू. बाबू जी को बहुत स्नेह तथा आदर करती थी और पू. बाबू जी आप का बहुत आदर करते थे। आपके निधन से आपको बहुत धक्का लगा एवं दुख हुआ और आप दो महीने की छुट्टी लेकर पूज्य ताऊ जी के साथ साये की तरह रहे जिससे उनका दुख बहुत कम हुआ।

नोट– इस घटना के लिखने का महत्व यही है। कि जब सच्चा प्रेम हो जाता है तब ऊपर से उतरे हुये हर विचार को वह धारण करता है। जब मन एक हो जाते है या उसका घाट बदल जाता है तब ऐसी ही विचारों की समानता हो जाती है वहां मन की गति व्यवस्थित हो जाती है और आत्मबोध हो जाता है यही सच्चा परमार्थ या प्रेम है।

आप दोनों महापुरूष पवित्रता की मूर्ति थे, उन्होंने हमें पवित्रता की शिक्षा दी वे प्रेम एवं नम्रता की मूर्ति थे उन्होंने हमें प्रेम और नम्रता की शिक्षा दी वे दिव्य स्वरूप शांति, सदाचार के प्रतीक थे उन्होंने हमें दिव्यता सरलता की शिक्षा दी। धन्य है हम सब जिनको आप दोनों के चरण रज मिले।

यह घटना सिकन्दरबाद की है अलीगढ़ में एक सक्सेना साहब जिनके कई लड़कियां थी वह (भेष बदल कर) साधुता का भेष बनाकर ऐसी संस्था पर ईश्वर तथा परमार्थ का काम होता था जाते थे और इधर उधर के सवाल आदि को पूछ–पूछ आने वाले को भ्रम में डालने की

कोशिश करते थे क्योंकि आज कल परमार्थ के नाम पर पैसों का धन्धा करने वाले कम नहीं है। वहाँ से उनको कुछ धन की प्राप्ति भी हो जाती थी। कहने का अर्थ है कि वह एक तरह से ब्लैक मेलर का काम करते थे। दुर्भाग्यवश वह सिकन्दराबाद में आ गये और पहले दिन इसी तरह से उल्टे सीधे प्रश्न पूछे जिनका जवाब ताऊ जी ने कुछ दिया और चुप हो गये यह साहब अपनी ज्ञान का रोब जमाना चाहते थे उस दिन तो पू. बाबू जी चुप रहे। दूसरे दिन वह फिर आ गये और परम पूज्य ताऊ जी से बहस करने लगे और कहने लगे कि क्या आप हमें भगवान दिखा सकते हैं। पूज्य ताऊ जी चुप ही थे या कुछ कहते उससे पहले पूज्य बाबू जी को बहुत आवेश हो गया क्योंकि उन्हें उन लोगों का पूज्य ताऊ जी से बेकार बहस करना और सत्संग का समय तथा वातावरण खराब करना बहुत बुरा लगा। पूज्य बाबू जी एकदम आवेश में आ गये और उनकी तरफ मुड़कर बहुत तीव्रता से कहा आप आईये यहाँ आइये मैं अभी आप को भगवान के दर्शन करवाता हूँ। आप आगे आइये इतना सुनते ही वह श्री मान एक दम डर गये और क्षमा माँगने लगे तथा अपनी असलियत बताते हुये यहा कभी न आने का वचन दे कर चले गये। यह घटना भी पूज्य बाबू जी का पूज्य ताऊ जी के प्रति अगाध प्रेम व आदर को दर्षाता है ।

"निःनामी वह स्वामी अनामी
तुलसी संत पावे सो चाहीं
जो कोई पूँछे, तेहि कर लेखा
कस–कस भांखौ रूप न रेखा
तुलसी नैन सैन हिये हेरा
सन्त बिना नहिं होय निवेरा।"

केवल पूर्ण सद गुरू ही इस प्रकार प्रभु को दिखाने का साहस कर सकते है।

यह घटना उस समय की है जब पू. बाबू जी हापुड़ में हेल्थ आफिसर के पद पर तैनात थे एक बार नन्द जी भाई एवं राम नारायण जी दोनों ही लोग गाजियाबाद से होकर हापुड़ गये आप चारपाई पर बैठे थे वहीं पास दूसरी खाट पड़ी थी उन लोगों को बैठाया पूछा "खाना

वगैरह खाये हो" आप लोगों ने बताया कि गाजियाबाद से होके आ रहे है माता जी ने खाना वगैरह खिला दिया है हाल चाल पूछा और बिठाल लिया। यह लोग बताते हैं कि नन्द जी भाई की नजर उनकी धोती पर पड़ी जो कि काफी फटी थी यह देखते ही प्रेम वष आपके आँसू जारी हो गये जितना भी रोकते आंसुओं को पर जब ही नजर धोती पर जाती थी बड़ा दुख उनके दिल में हो रहा था सेब आदि काट कर स्वयं खिलाया और जब शाम को वह लोग वापस जाने की स्टेशन आये तो आप उन लोगों को स्टेशन पहुँचाने भी आये, जबरदस्ती 5–5 रू0 देने लगे आप लोगो को बहुत संकोच हो रहा था जबकि कभी रूपये इस तरह से नहीं देते। वास्तव में इन लोगों के पास रेलवे के पास के अलावा बस 1, 2 रू0 थे वह अन्तर्यामी थे उनको यह पूर्व आभास हो गया कि उन लोगों के पास पैसे नहीं है। यह घटना लिखने का अर्थ यहां यही है कि भाइयों को छोटी–छोटी जरूरतों छोटी से छोटी बात का भी आप इतना ध्यान रखते थे यह आपकी अपार दया थी।

यह भी घटना बहुत पहले की है बाबू राम दास जी आपके साढू श्री के. पी. श्रीवास्तव आई. ए. एस. एवं उनकी पत्नी को एक बार आपसे मिलाने ले गये, कि क्यों उनकी पत्नी को बहुत इच्छा थी कि वह भी आपसे मिले आप गये तो जैसे आपकी आदत थी उनके बारे पूँछा कि आप कहां सर्विस में है तथा और भी परिवार सम्बन्धी बातें पूछी उस समय आप इलाहाबाद में अध्यापक थे बाबू राम दास जी ने बताया कि आप लेक्चरर इलाहाबाद में है अचानक आप के मुँह से निकल गया जैसा कि जल्दी कभी नहीं होता था (क्यों कि आप बड़ा संयम रखते थे) कि इनको तो बड़ा धनाढ़य होना चाहिये उनकी ब्रह्म वाणी सत्य हुयी और आप पी.सी.एस. में आ गये और फिर बाद में आई.ए.एस. होकर रिटायर हुये है और आर्थिक दृष्टि से काफी संपन्न है जब आप बनारस में थे तब दया करके एक बार आप उनके घर पर भी पधारे थे उनकी पत्नी बड़ी श्रद्धालु थी यद्यपि जीवित न रही परन्तु जब तक थी पूज्य बाबू जी पर बड़ी श्रद्धा रखती थीं। श्री के. पी. श्रीवास्तव साहब भी आप पर काफी श्रद्धा रखते हैं यद्यपि सत्संग में नहीं आ सके शायद यहां उनका अंश न हो परन्तु आप पर उनकी श्रद्धा है।

यह घटना श्री रामदास जी ने स्वयं बताई है।

आपकी दया का और आपकी सर्वज्ञता का तो हर सत्संगी भाई के पास अपार अनुभव है जो यदि लिख दी जाये तो एक पूरी पुस्तक अपने आप में हो जाये आप सब कुछ जानते थे यद्यपि बड़ी एहतिहात रखते थे परन्तु फिर भी आप कई बार अपने प्रेमियों की भलाई के लिये उन्हें सजग कर दिया करते थे।

यह घटना उस समय का है जब आप बीमार थे सत्संगी भाई सब आप को देखने आ रहे थे। नन्द जी भाई और राम नारायण जी भी आये और भाई लोग थे बनारस के सभी लोग हाल में सो रहे थे आप अन्दर के कमरे में थे आपने अचानक पूंछा नन्द जी कहां है किसी ने बताया कि हाल में सो रहे हैं। कहा उनको बुलाओ उनके आने पर कहा कि बस निकल जाओ हमारी तबियत ठीक है तुम चले जाओं नन्द जी भाई छुट्टी लेकर आये थे उनका मन भी नही था कि वह जाये पू. सेठ भाई साहब ने उनके मन को देखते हुए कहा कि बाबूजी छूट्टी है कल चले जायेंगे पर उन्होने फिर थोड़ी देर बाद याद किया और कहा कि गये कि नहीं सब बनारस के लोग निकल जाओ बेमन से दुखी होकर के आप सब लोग चले गये जब बनारस पहुँचे तो पता चला कि नन्द जी की पत्नी बहुत सख्त बीमार हो गयी थीं और बी.एच.यू. में भर्ती थी। उस समय वहां उनकी बड़ी ही आवश्यकता थी।

नोट– एक एक पल की खबर रखते थे कितनी दया की आपने सब जानते थे पर किसी से कुछ कहते नहीं थे।

बनारस के पूज्य ताऊ जी महाराज के एक सत्संगी भाई श्री परमानन्द ब्रत (जो मेरी पत्नी के चाचा जी है) पूज्य ताऊ जी से मिलने गये थे क्योंकि वह पू. बाबू जी पर बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम रखते थे और ठाकुर शिव नरेश सिंह जी के धनिष्ठ थे अपने पूज्य ताऊ जी से मिलने के बाद पूज्य बाबू जी से मिलने जाने की इच्छा जाहिर की आप बड़े खुष हुए और बोले जरूर जाइये बड़ी अदब से जाइये। उनसे आज्ञा लेकर श्री परमा बाबू पूज्य बाबूजी की सेवा में गये पू. बाबूजी बड़ी मोहब्बत से मिले और जब चलने को तैयार हुये तो खाना खिलाया पूड़ी बनवाई थी और खुद अपने हाथ से ला लाकर दे रहे थे श्री परमा बाबू वहां से चलकर अपने बड़े भाई (मेरे श्वसुर) स्व. श्री दयानन्द श्रीवास्तव जी के पास कानपुर चले गये वहां उन्होंने मेरी पत्नी को पूड़ियाँ दी जो कि वह गाजियाबाद से लेते आये थे और बताया कि आप इतने प्रेम से

खिला रहे थे और इतना आग्रह था कि उनसे कुछ कह नहीं पाये और पूड़ियां रखकर प्रसाद रूप में ले आये यह बात आपने 1961 में मेरी पत्नी को बताई थी और बताते समय पूज्य बाबूजी का तरह तरह से गुणगान किया आज भी आप उनकी बड़ा आदर के साथ नाम लेते है।

यह घटना 1964 की है हमारे स्व. जानकी चाचा जी जो पूज्य बाबू जी के सगे छोटे भाई थे का अन्तिम समय था आप उनको देखने के लिये कटिया गये आप का कश्फ इतना जबरदस्त था कि आपने देखा कि एक औरत बार बार सामने आ रही है और कहती है कि उसका पैसा इनके पास है पूज्य बाबू जी ने मदन भाई साहब से पूछा और हुकुम दिया कि अगर कोई अपना पैसा माँगने आये तो उसे जरूर देना ऐसे समय में आपने बड़ी दुआ की और प्रार्थना की इन्हें माफ किया जाये पूज्य बाबू जी की दुआ कबूल हुयी और उनकी चारपाई के चारो तरफ (फकीर) बुजुर्गान मौजूद थे और जब आप की अर्थी उठी तो पूज्य मौलवी साहब लाला जी महाराज तथा पूज्य चाचा जी महाराज ने कंधा तक दिया। यद्यपि न तो आप सत्संग में थे और न ही परमार्थ की तरफ रूझान ही था परन्तु इतनी बड़ी दया बुजुर्गो ने की प्रेमी की प्रार्थना स्वीकार की तभी तो कहा गया है।

"प्रबल प्रेम के पाले पड़कर
प्रभु को नियम बदलते देखा
उनका मान घटे घट जाये
जन का मान न घटते देखा।"

हमारी धर्म पुस्तकें इस बात की पुष्टि करती है कि यदि वंश में एक सन्त ने जन्म ले लिया तो उसकी तीन पीछे और चार आगे की पीढ़ियाँ तर जाती है यह घटना भी इस बात की पुष्टि ही है। इन बुजुर्गो की दया की याद पूज्य बाबू जी को सदैव रही और उसका जिकर आप भंडारे के वख्त कई बार करते थे।

नोट– यह घटना हमें बुजुर्गो की दया, पूज्य बाबू जी के जबरदस्त कश्फ और उनकी महती कृपा की याद दिलाती है और अपार शक्ति का भी, कौन कर सकता है ऐसा ? सारे दुनिया के बंधन काट दिये। एक क्षण का संग एक सच्चे संत का बहुत है जबकि वह खुश हो।

''सुनि आचरण करे जिन कोई
सत संगति महिमा नहीं गोई।''

एक समय की घटना है लखनऊ से श्री सतीश बाबू उनकी पत्नी तथा उनके साथ स्व. बाबू अच्चितानंद भी सिकन्दराबाद जा रहे थे। आप लोग पूज्य बाबू जी से मिलने गाजियाबाद गये सतीश बाबू ने चाहा कि अच्चितानंद जी चले जायें परन्तु उन्होने भी इच्छा जाहिर की वो भी दर्शन करने की इच्छा रखते हैं उन्हें बाहर रोक कर जब सतीश बाबू और उनकी पत्नी पूज्य बाबू जी के पास पहुँचे आप ने कहा ''सतीश बाबू आप लोग तो तीन आदमी थे'' मैं उन्हें पहचान नहीं पाया था वह कौन थे, क्या चले गये। सतीश बाबू हतप्रभ रह गये। और अच्चितानंद का परिचय दिया।

नोट– जब कोई व्यक्ति उनके ख्याल लेकर चलता था तो आप उसी समय से उस के क्षण–क्षण की खबर रखते थे उन्होंने कहा कि कि ''मैं देख रहा था कि पूज्य भाई साहब के तीन आदमी आ रहे है।'' ऐसी जबरदस्त कश्फ था आपका।

यह घटना पूज्य बाबू जी के सर्वज्ञाता होने तथा पलपल निगहबानी का ज्वलंत उदाहरण है जो प्रिय दिनेश भाई फतेहगढ़ वालों ने बताया था।

घटना इस प्रकार है कि दिनेश भाई गाजियाबाद भण्डारे के लिये चले। आप बस से आ रहे थे आपको बस में बड़े बुरे ख्यालात सताने लगे। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह ख्याल नहीं छूट रहा था। खुद प्रिय दिनेश भाई भी बहुत परेशान थे। कुछ देर बाद तमाम प्रयत्नों के बाद उन्होंने अपने ऊपर काबू किया और गाजियाबाद पहुँचे। बदस्तूर वह पूज्य बाबू जी से मिलने और चरण स्पर्श करने पहुँचे आपने बड़े कड़े शब्दों में चेतावनी दी और कहा कि ''बरखुरदार जब कोई भंडारे के लिये चलता है मैं उस वख्त से उसकी एक एक सेकेण्ड की खबर रखता हूँ आपको हर हिदायत रखनी चाहिए कि भविष्य में ऐसा न हो।''

नोट– इससे ज्यादा क्या प्रमाण चाहिये कहाँ गाजियाबाद और कहाँ फतेहगढ़ वह सब कुछ जानते हर एक की खुली तस्वीर उनके सामने थी पर कन्ट्रोल इतना कि किसी को कुछ खबर तक नहीं लगने देते थे।

यह घटना छोटे भैया ने बताई है जो इस बात की पुष्टि करती है कि सदाचार, और चरित्र के क्षेत्र में तथा अपने सिद्धान्तों में उन्होंने कभी किसी के साथ कोई समझौता नहीं किया चाहे कुछ भी हो जायें। इस दिशा में आपका फैसला अड़िग और निश्चयपूर्ण होता था परन्तु ऐसे लोगों के प्रति आपका अन्दरूनी व्यवहार दयापूर्ण और स्नेहिल ही रहता था।

घटना इस प्रकार है एक लड़का घर पर जो पीछे की कोठरी थी उसमें रहता था वह सब लोगों से अम्मा जी वगैरह से काफी घुलमिल गया था। वह समय आर्थिक कठिनाइयों का था अक्सर समय पर कुछ आर्थिक मदद कर देता था (जो पैसा बाद में उसे दे दिये जाते थे) एक दिन उसने पड़ोस में रहने वाली लड़की से कुछ कह दिया था। जब पूज्य बाबू जी शाम को टहलने जा रहे थे तब उन लोगों ने उस लड़के की शिकायत की अपने वापस आते ही भैया से उस लड़के को बुलवाया उस समय वह नहीं था। भैया को डा. पिछौरा सिंह जो पूज्य बाबू जी के साथ के थे और अक्सर उनके साथ घूमने भी जाते थे के घर भेजा और भैया से कहा कि मैंने उनसे कह दिया है वह जो भी 30–40 रूपये दें ले आओ। (देखिये किसी को कुछ नहीं बताया भैया तक को नहीं जिससे पैसे मंगवाये उस तक को भी जरा सा भी भान न हुआ कि पैसे किस लिये मँगाये जा रहे हैं) आप रात तक बरामदे में टहलते रहे जब वह लड़का आया उसके एडवांस के पैसे वापिस कर दिया और कोठरी छोड़ने के लिये कह दिया और दो कमरे भी बता दिये कि वहाँ बात कर लो और तुरन्त खाली कर दो, किसी को कुछ पता नहीं घर के लोगों को उसी से पता चला कि रात ही में, एडवांस का पैसा वापिस कर दिया था। आपने बाद में बताया कि इसी कारण पैसे मँगाये थे उसको दे दूँ और अब घूमने गये तभी कमरे का भी पता करके आये थे। जिससे वह उन पैसों से एडवांस दे दें और उसे कोई तकलीफ न उठानी पड़े अम्मा

जी ने बहुत कहा पर वह माने नहीं इसका यह बर्ताव अच्छा नहीं पर यह भी पूरा ख्याल रखा कि लड़का परेशान न हो।

"ऐसो को उदार जग माही,
बिना सेवा जो द्रवे दीन पर
राम सरिस कोऊ, नाहीं।"

एक बार की घटना है, यह वह वख्त था जब आपका हाथ काफी तंग था और पूरी गृहस्थी का भार था। बच्चों की पढ़ाई का बोझ था और हर तरह की आर्थिक कठिनाइयाँ थी। आप चाहते थे कि घर के दरवाजे और खिड़कियाँ पेन्ट की जायें क्योंकि वह बहुत खराब हो गये थे आप भैया को लेकर एक जान पहचान की दुकान पर गए कि पेन्ट उधार ले लिया जाये। परन्तु पेन्ट उपलब्ध न हो सका। भैया ने बताया कि दुकानदार के व्यवहार से आप काफी दुखी हुये परन्तु आप बोले कुछ नहीं और उठकर चल दिये। हालांकि उस दुकानदार के लाइसेंस दिलाने में आपने काफी मदद की थी। उसके रूखे व्यवहार से भैया जो छोटा ही था वह भी दुखी हुआ और उसने कहा कि आपने इसकी इतनी मदद की और इसका ऐसा व्यवहार रहा आपने बिना किसी अपशब्द के बड़ी विनम्रता से कहा– बेटा यहीं दुनिया है वह अपनी जगह ठीक है।

नोट– यह बरदाश्त का एक उदाहरण है। अपने आप में एक मिसाल कोई बुरा ख्याल नहीं लायें। यहीं समभाव है। उसने अभद्रता का व्यवहार किया पर फिर भी कोई शिकायत नहीं।

"बदऊं सन्त समान चित हित अनहित नहिं कोई,
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोई,"

कुछ ही दिन बाद पेन्ट का प्रबन्ध हो गया। पेन्टर काफी पैसा मांग रहा था। पैसे की कमी के कारण पेन्टर से काम कराना कुछ सम्भव

नहीं हो पा रहा था। भैया ने पूज्य बाबू जी से कहा कि वहीं क्यों न पेन्ट कर ले। आपने प्रेम से उत्तर दिया बेटे थक जाओगे बहुत है, और शायद सफाई न आये, भैया के इसरार करने पर उसे इजाजत दे दी कि अच्छा करो पर उसके साथ स्वयं बराबर से लगकर सारे घर की खिड़की दरवाजे पेन्ट किये। भैया ने बताया कि उनके साथ काम करने में जो उत्साह और आनन्द उसे मिला वह उसको व्यक्त नहीं कर सकता है। थकान लेशमात्र न थी। इस तरह से उसे भी यह बताया कि अपना काम स्वयं करना ही अच्छा है किसी काम में कोई हिचक नहीं थी।

नोट – यह घटना प्रिय नरेन्द्र (छोटे भैया) ने बताई है।

नरेन्द्र हम लोगों का सबसे छोटा भाई है छोटे होने के कारण और कुछ और कारणों से पूज्य बाबू जी का उस पर काफी स्नेह था। उसने बताया कि सत्संगी भाइयों की आवभगत और सत्कार जो पूज्य बाबू जी में देखा वह अद्वितीय है, वह केवल अनुभव किया जा सकता है व्यक्त नहीं। जब बनारस के लोग या कोई भी आता था और वह लोग पढ़ाई में व्यस्त रहते थे तो आप स्वयं उन भाइयों को खाना खिलाते थे और फिर आकर नरेन्द्र आदि से कहते थे कि बेटे अब तुम जरा उन्हें खिला दो कहीं ऐसा न हो कि हमारे शरम से ठीक से न खा पाये और भूखें रह जायें। हर एक आराम से सोया कि नहीं किसी को किसी तरह की तकलीफ तो नहीं खुद सारी व्यवस्था देखते थे। यह सब त्याग, उनके पुरूषार्थ की याद दिलाती है। आपके सांसारिक एवं व्यवहारिक जीवन की एक एक घटना प्रेरणा देने वाली है यदि किसी सत्संगी भाई को घर का कोई ऐसा काम करते देख लेते जो घर के सदस्यों को करना चाहिये तो दुखी होते थे और कहते थे यह काम तो तुम खुद भी कर सकते हो यह लोग बाहर से आये है क्या सोचेगें। यह उनका निज जनों के प्रति प्रेम था और हम सब के लिये अपना कार्य स्वयं करने की प्रेरणा।

आप नौकरी में ड्यूटी के बड़े पाबंद थे। पहले ही पाठकों को उनके कड़े परिश्रम और सर्विस के समय नियम पूर्वक कर्तव्य के पालन

का पूरा परिचय आपके व्यक्तित्व व पेशे नामक पन्नों में हो चुका है जो उनकी ईमानदारी और अलग व निष्ठा पूर्वक कार्य करने का उदाहरण है। कोई भाई भी जब आते थे तब उनसे आपका पहला सवाल होता था छुट्टी लेकर आये हो कितने दिन की छुट्टी लाये हो यह जान लेने के बाद ही आप निश्चिंत होते थे और उस व्यक्ति विशेष को उसी के अनुसार खुद को कह देते थे। आप कहा करते थे कि ईमानदार व निपुण आफीसर की कद्र हमेशा होती है और बाद तक लोग याद रखते हैं। उसी की यह घटना है।

एक बार सेवा निवृत होने के काफी साल बाद पू. बाबू जी बाजार गये साथ में भैया भी था। कई दुकानदार दुकान बंद करने लगे तथा आवाज दे देकर दूसरे दुकानदारों को बताने लगे कि हेल्थ आफीसर साहब आये हैं। दुकानें बंद होने लगी। पू. बाबू जी ने कहा कि यह लोग जानते हो क्यों डर रहे है। क्योंकि यह मांस में कुत्ते तक का मांस मिला देते है। आज कल अफसर ड्यूटी पर नहीं आते होंगे इसलिये यह लोग उन्हें जानते ही नहीं और हम को देख कर डर रहे है। और आपने उस दिन फैसला किया कि अब वह बाजार नहीं जायेंगे और बाजार जाने से परहेज करने लगे तथा अब या बब्बू या भैया का भेजने लगे थे।

नोट– आप ड्यूटी के बारे में काफी सख्त थे। हर क्षेत्र में ईमानदारी बरतते थे।

नोट– यह घटना भैया ने बताया जो उस समय बहुत छोटा था। हम लोग तो जन्म से ही पूज्य ताऊ जी के आँगन में खेले और बड़े होने के कारण सब समझते थे पर यह घटना जो मैं लिखने जा रहा हूॅ उस समय की है जब भैय्या नरेन्द्र एक दम बच्चा था ठीक से कुछ समझ नहीं सकता था। उस समय बच्चे की जो अनुभूति हुयी जो उसने देखा वह मैं यहाँ लिख रहा हूॅ जो कि पूज्य बाबू जी तथा ताऊ जी महाराज दोनों महान हस्तियों के उस परम प्रेम को दर्शाता है जिसका कोई उदाहरण मैं नही दे सकता हूॅ क्योंकि ऐसा प्रेम कहीं मैंने देखा नहीं। जो भैया ने देखा वह घटना इस प्रकार है जो मैं उसके ही शब्दों में लिख रहा हूॅ।

''परम पूज्यनीय ताऊ जी सिकन्दराबाद के प्रति आपका प्रेम व आदर सभी लोग जानते है परन्तु जो मैंने देखा वह आज भी मेरी आंखों के सामने है और अक्सर छा जाता है। मैं छोटा था, आदरणीय गोपाल

भाई साहब (पूज्य ताऊ जी के तृतीय पुत्र) के पुत्र गुडडू मेरा दोस्त था हम साथ–साथ खेलते थे उस दिन पूज्य ताऊ जी महाराज यहां आये थे। मैं जैसे ही खेल कर आया पूज्य बाबू जी ने मुझसे पूछा कि क्या गुड्डू के बाबा जी आये हैं। अभी मैं इतना बता ही रहा था कि पूज्य ताऊ जी (जीजा जी के बाद वाले) सरदार जी के मकान के फाटक से निकलकर हमारे घर की तरफ आ रहे थे उनके साथ कुछ लोग और थे। पूज्य बाबू जी उस समय बाहर बरामदे में थे। मुझसे फौरन बोले पूज्य ताऊ जी के पैर छू लो जाकर और खुद हाल वाले कमरे में चले गये मैं वहीं बढ़ गया तब तक आप (पूज्य ताऊ जी) घर के सामने आ गये थे। मैंने वही सड़क पर आपके पैर छू लिये आपने बड़ी मोहब्बत से कहा खुश रहो। अपने साथ के लोगों से कहने लगे यह सबसे छोटा वाला है आपने पूछा तुम्हारे बाबू जी कैसे है मैंने उन्हें बताया कि ठीक है और वह घर के सामने (जहां गेट अब लगा है) आकर कुछ क्षण के लिये रुक गये। मैंने कहा ताऊ जी घर चलिये। आपने उत्तर दिया ''तुम्हारे बाबू जी बुलाये ही नहीं है और फिर आगे बढ़ गये वापस आने पर पू. बाबू जी ने पूछा क्या कह रहे थे। मैंने उन्हें सब बताया। आप एक दम रोने लगे मैं छोटा था और सब बातों से अनभिज्ञ था। मैंने महसूस किया और देखा था कि आप बराबर हाल से पूज्य ताऊ जी के दर्शन करने की कोशिश करते रहे जब तक वे आँखो से ओझल न हो गये। अब मैं समझ सका हूँ कि यद्यपि संकोच वश आप उनके सामने न जा सके थे पर उन्हें देखते ही आप प्रेम के वशीभूत हो गये और आँखो से आँसू बहने लगे थे। ऐसा प्रेम और आदर आप उनका करते थे और हम लोगों से भी यही कहा था कि उनका सदैव आदर करना ।

नोटः– यह घटना ज्ञानेन्द्र ने बताया है जो पूज्य बाबू जी के, पूज्य ताऊजी के प्रति प्रेम को तो दर्शाती ही है उसके साथ–साथ अच्छे इखलाक का भी प्रतीक है। घटना जैसा बब्बू ने बताया उसी के शब्दों में

''घटना उस समय की है जब मैं 12–13 साल का था मैं बाहर बरामदे में बैठा पढ़ रहा था और पूज्य बाबू जी हाल में बैठे पूजा कर रहे थे। अचानक पूज्यनीय ताऊ जी सिकन्दराबाद वाले मेरे पास आ कर खड़े हो गये और पूछने लगे'' ''श्याम लाल कहां है'' मैं जल्दी में पूज्य ताऊजी के पैर छूना भूल गया क्योंकि वह अचानक आकर खड़े हो गये थे, और मैं अचम्भे में पड़ गया था। जबकि पूज्य ताऊ जी मुझे कहीं भी कभी भी मिलते थे तो मैं जरूर उनके पैर छूकर उनका आशीर्वाद लेता

था वह भी हमेशा मुझे बड़े प्यार से आशीर्वाद देकर घर का हालचाल पूछते थे और खासतौर पर पूज्य बाबू जी के बारे में पूछते थे। पूज्य बाबू जी ने हाल में से यह सब देख लिखा था फौरन बाहर जाकर पूज्य ताऊ जी के पैर जल्दी से छुये। मुझे अहसास हो गया कि मैं तो खुशी में आपके पैर छूना ही भूल गया था। पूज्य ताऊ जी और पूज्य बाबू जी ने हाल में बैठकर कुछ बात किया और फिर वे चले गये। उनका जाना था कि पूज्य बाबू जी ने मुझे एकदम डाँटते हुये पूछा तुम ताऊजी के पैर छूना कैसे भूल गये। मेरे बार बार बताने पर कि ऐसा उनके अचानक मेरे पास खड़े हो जाने से हो गया है। वरना मैं तो वे जहां भी मिलते है बड़े आदर से पैर छूता हूँ। मेरे तमाम कहने पर भी आपने मुझसे कहा कि आज के बार फिर कभी ऐसी गलती दुबारा न हो वह हमसे बड़े हैं तुम्हारे ताऊ जी हैं मैं उनकी बहुत इज्जत करता हूँ तथा उम्मीद करता हूँ कि मेरे सब बच्चे उनकी उतनी ही इज्जत करें कोई उनसे बेअदबी करें उसे मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। मुझे उस दिन पता चला कि पूज्य बाबू जी पूज्य ताऊ जी की कितनी इज्जत करते हैं।

नोट– यह घटना प्रिय ज्ञानेन्द्र जो उनके पुत्र हैं उनके द्वारा बताई गयी है।

यह घटना लगभग 1967 या 68 की होगी जब बब्बू 16–17 वर्ष का था। उस समय घर में बहुत अधिक आर्थिक तंगी का समय था पैसों की काफी कमी थी और घर में खर्चे अधिक थे। शाम को सब्जी आदि सामान लाने का काम प्रायः बब्बू ही करते थे। एक दिन शाम को सब्जी के लिये जब पूज्य माता जी से पैसे मांगे तो वे कुछ गुस्से में थीं (पैसा न होने की वजह से) और कहा हमारे पास पैसे नही हैं। पूज्य बाबू जी हाल में बैठे पूजा कर रहे थे, बब्बू ने जाकर कहा कि अम्मा जी सब्जी के लिये पैसे नहीं दे रही हैं। आपने बड़ी शांत मुद्रा में बिना किसी झुंझलाहट या क्रोध के कहा कि कोई बात नहीं आज नमक की रोटी घी के साथ खा लेंगे। कुछ लाने की जरूरत नहीं है। कुछ ही देर बाद बनारस से नन्दजी, राम नारायण जी एवं पारसनाथ जी आ गये। पू. बाबू जी ने बब्बू से कहा कि अम्मा से कह दो कि दाल या मुगोड़ी, बड़ी बना लें ये लोग खाना खायेंगे। माता जी ने कहा जैसे सब खायेंगे वैसे वह लोग भी खा लेंगे। बब्बू काफी परेशान था कि बाहर के लोग हैं क्या सोचेंगे । पूजा 9 साढ़े 9 बजे खत्म हुयी पू. बाबू जी को जब पता चला कि कोई सब्जी नही बनी है कहने लगे कोई बात नहीं नमक घी की

रोटी ही खिला देना खा लेंगे कोई बाहर के थोड़े ही है और उन लोंगो से बड़े प्रेम से बोले तुम लोग थक गए होंगे, नहा धो लो फिर खाना खा कर आराम करो यह कहकर आप बाथरूम में जाने लगे और बब्बू से बोले ''बेटा परेशान मत हो, उन लोंगो के खाने का इंतजाम हो गया है। थोड़ी देर में खाना आ जायेगा उधर माता जी रसोई में नमक की रोटी बनाने लगी। अभी वह लोग नहा धोकर तैयार ही हो रहे थे कि लगभग 9.45 बजे पर बाबूजी ने फिर बब्बू से कहा कि वह लोग तैयार हो गये हैं तो उन्हें खाना खिला दो बहुत थके हुये हैं खाकर सो जायेंगे। बब्बू बिना सब्जी के खाना परोसने में बड़ा हिचक रहा था बेमन से थाली लगाने लगा इतने में ही एक सज्जन टोकरी लिये हुये पू. बाबू जी को पूछते हुये आये और आँगन में आ गये और कहने लगे साहब हम हापुड़ से आये हैं कांन्ति जी के रिश्तेदार हैं दिल्ली जा रहे हैं उनके घर उनके लड़के का जन्मदिन था उन्होंने खास तौर से यह प्रसाद गुरूजी के लिये भेजा है खाने की टोकरी देकर वह फौरन वापस हो गये टोकरी में पूड़ी कचौड़ी दो सब्जियां मिठाई वगैरह तमाम खाने की चीजें थी। उन लोगों को खूब अच्छी तरह खाना खिलाया गया। बब्बू ने बताया कि खाना इतना था कि घर के और सब लोंगो के लिये भी पूरा हो गया। दो दिन बाद इतवार था कि घर के और सब लोगों के लिये भी पूरा हो गया। दो दिन बाद इतवार को कांति जी हापुड़ से आये तो वह पू. बाबूजी जी से माफी मांगने लगे कि बच्चे के जन्मदिन की खबर पहले आपको न दे सके उम्मीद है आप क्षमा कर देंगे। बब्बू बच्चा था उसके कौतूहल पूर्ण मन ने पू. बाबू जी से यह सवाल किया कि जब आपको यह पता नहीं था कि कांति जी के यहां जन्मदिन है तो आपने यह कैसे जान लिया और इतने विश्वास से कैसे कहा कि उन लोंगो के खाने का इंतजाम हो गया है। यह क्या चमत्कार है। बब्बू बताता है कि उन्होंने यही जवाब दिया कि बेटा यह सब बुजुर्गो की मेहरबानी और उन पर अटल विष्वास का फल है बड़े होकर सब समझ जाओगें और चुप हो गये थे। बब्बू को पहली बार पू. बाबू जी के कश्फ का आभास हुआ था और बुजुर्गो के ऊपर श्रद्धा बढ़ी ।

नोट– ईश्वर भक्तों की लाज रखते हैं उनका मान रखते हैं और उनकी आन भी शर्त यही है कि हमारा विश्वास बस हो। यह घटना हमें संकेत देती है कि किसी दिखावे की जरूरत नहीं और प्रेमियों का कितना ख्याल है कि वे बहुत थके हैं मानो उनकी थकान का वह अनुभव कर

रहे हैं उनके खाने का सोने का आराम का इतना ध्यान। कैसा आदर्श है कैसा प्रेम था जो उनकी याद को झंझावत की तरह झनकार दे कर एक हूक उठा देती है।

"जो धूप थी वह साथ गयी आफताब के"

ऐसी ही एक बात पू. बाबू राम दास जी ने मुझ दास को बताई थी कि जब वह लोग सो जाते थे तब पू. बाबू जी रात में उठकर हाल की खिड़की से देखते थे कि सब ओढ़े है या नहीं किसी को ठण्ड तो नहीं लग रही है। ऐसा बताते समय उनकी आँखें आपके प्रेम से ओत–प्रोत ही गीली हो गयी थी ऐसा प्रेम कहाँ है।

यह भी घटना भैया ने बताई जो उनकी अपार दया व आशीर्वाद का उदाहरण है। जैसा भैया ने बताया उसी के शब्दों में:–

मेरी रूढ़की सी.बी.आर.आई. में फैलोशिप का टेन्योर (निश्चित अवधि) पूरा हो चुका था तथा उस समय तक नौकरी का कुछ बन्दोबस्त भी नहीं हुआ था। हॉस्टल का मकान छोड़ना था पूरी गृहस्थी का सामान था और (पुत्र) बन्दित छोटा था मकान की समस्या बहुत गम्भीर थी मैं गाजियाबाद गया था। मैं आपको अपनी परेशानी बताना तो नहीं चाहता था आप वैसे ही मेरी नौकरी और मकान की तरफ से चिन्तित थे परन्तु आप धीरे–धीरे सब कुछ पूछ लिया करते थे जब मैं वापिस आने के लिए पैर छूने गया तो उन्होंने पूछा मकान कब छोड़ना है मैंने उन्हें बताया तारीख तो निकल गयी है एक हफ्ते का वख्त और दिया है उस वख्त उनके चेहरे पर चिन्ता के कोई भाव नही थे और आपने बहुत स्पष्ट एवं सुदृढ शब्दों में कहा परेशान मत हो सब ठीक हो जायेगा। आपके यह गम्भीर शब्द आज तक मेरे कान में गूँजते है और ऐसा लगा कि मेरे दिल के ऊपर से कोई भार हट गया हो। यहाँ आने पर कोई इन्तजाम मकान का ना हो सका दूसरे दिन ही मकान खाली करना था रात में सोचा सामान कहीं रखकर मकान तो छोड़ ही दूँगा फिर इन्तजाम करूँगा। सुबह करीब आठ बजे एक सज्जन हमारे घर पर आये हम उन्हें जानते भी नहीं थे आपने अपना परिचय दिया कि वे यूनिवर्सिटी में रीडर है और यही पूछा कि आपको मकान चाहिए। मैंने आश्चर्य में पड़कर पूछा कि उन्हें कैसा पता चला उन्होंने एक प्रोफेसर का नाम लिया जिनसे मेरी पत्नी वन्दना की माता जी ने जिक्र किया था वे कहने लगे कि वे शाहजहांपुर जा रहे हैं। और 2–3 दिन बाद लौंटगे तब तक आप शिफ्ट

(मकान बदल) कर लें और चाभी देने में बहुत हिचक रहा था कि एक तो कोई परिचय नही फिर उनके न रहने में उनके घर की चाभी लेना कुछ उचित नहीं लग रहा था। परन्तु वह चाभी छोड़कर चले गये। यह आपके आशीर्वाद का ही प्रताप था उनकी दया का फल था अन्यथा कौन अपने मकान की चाभी बिना कोई जान पहचान के देता है वह भी खुद आ कर जबकि जरूरत हमारी थी ।

इसी प्रकार पी.एच.डी. में और नौकरी के समय तथा एक बार जब मेरी पत्नी के सारे जेवर चोरी हो गये थे उस समय, हर समय जब भी कोई परेशानी हुई आपकी दया मेरे साथ सदैव रही। आज भी जब कभी उनकी अहैतुकी दया की याद करता हूँ तो लगता है कि आपकी एक एक बात जो आप हँसी–हँसी में कह देते थे। आज अक्षरशः सत्य प्रमाणित होती है। एक बार एक सत्संगी भाई पूज्य बाबूजी बात कर रहे थे मैं भी वहां था किसी सज्जन के बारे मे पूछा कि ''क्या आप जानते है'' उन्होंने कहा कि वह तो बहुत बड़े आदमी हैं (धन से) थोड़ी देर बाद आप बोलो ''आदमी वहीं बड़ा है जो परमार्थी है'' इसी तरह रिश्तेदारी में व्यवहार के बारे में कहते थे कि भाई आजकल तो यह हिसाब रह गया है कि ''जब हमारे घर आओगे तब क्या लाओगे और जब हम तुम्हारे यहां आयेंगे तब क्या खिलाओगे'' कतई ज्यादा चक्कर में न पड़े। एक सा सामर्थ्य के अनुसार करें यदि कोई मुसीबत में है तब बात अलग है वहाँ तो फर्ज है धर्म है इसी तरह की गूढ़ बातें हँसते–हँसते सिखा देते है वैसे भी दिखावा आपको पसन्द नही था।

बात लगभग 1981 की होगी पूज्य बाबू जी और अम्मा जी रूढ़की (नरेन्द्र) छोटे भाईया के यहां गये थे वहां से मुजफ्फर नगर पू. भाई साहब के यहां होते हुए गाजियाबाद आये शाम को उन्होंने बब्बू (ज्ञानेन्द्र) से बताया कि उन्होंने हरपीज बीमारी (जिसमें दाने होते है) हो गयी है। यह बहुत ही दर्ददायक बीमारी होती है और जब कमीज उतारी तो बब्बू ने देखा कि सारी पीठ पर बुरी तरह फैली थी बब्बू ने कहा कि उन्हें सेठ भाई साहब के यहां रूक जाना चाहिये था जिससे अच्छा इलाज हो जाता। उन्होंने बब्बू को बताया कि वो रोक भी रहे थे और दवाइयां भी अच्छी दी है परन्तु कल इतवार है लोग बाहर से हापुड़ से आयेंगे अगर वो नहीं मिलेंगे तो वो बेचारे लोग निराश हो जायेंगे बब्बू चुप हो गया परन्तु दो एक दिन बाद भी जब कोई ज्यादा आराम न आया तो बब्बू ने आपसे कहा कि अगर कहें तो किसी (स्थानीय) लोकल

डाक्टर को दिखा दें आप एकदम बोले "वह सेठ से अच्छी दवा थोड़े ही देंगे और फिर यह मेरा तो है नही दूसरे का संस्कार है" 9, 10 साल का संस्कार 8–10 दिन तो लेगा ही कहकर एकदम चुप हो गये बाद में 8–10 दिन बाद ही वह ठीक हुआ।

नोट– यह घटना यह बात स्पष्ट करती है कि आप किस तरह दूसरे के संस्कार चुपचाप काटते थे। किसी को पता भी नहीं चल पाता था दूसरे अपने सत्संगी प्रेमियों का कितना ध्यान था कि वह आयेंगे और निराश हो जायेंगे अपनी इतनी तकलीफ का कोई ख्याल नहीं उनकी मन, आत्मा, शरीर दूसरों को ही आर्पित था।

बुलन्दशहर के एक सत्संगी भाई थे जो स्वयं तथा उसके परिवार के लोग किसी मुकदमे आदि की परेशानी में फँस गये थे उस समय पूज्य बाबू जी से बहुत प्रार्थना करते थे उनकी दया से वह उस झंझट से छूट गये। कुछ दिन पष्चात पूज्य बाबू जी एक बार बुलन्दशहर गये साथ में पूज्य भाई साहब थे बाबू जी ने कहा चलो दो मिनट मिलते चले जाने पर उनका व्यवहार बड़ा रूखा सा था और उन्होंने उनका स्वागत ठीक से नहीं किया पूज्य भाई साहब को यह बात बहुत बुरी लगी। पर पूज्य बाबू जी ने कहा कि वह तो चाह रहे थे कि शायद उनके जाने से फिर उनका परमार्थ जाग उठे जो वह भूल बैठे हैं कितनी उदारता है कि अपना निरादर होने पर भी यही ध्यान है कि उनका शायद भला हो जाये तुलसी दास जी ने इसी गुण के लिए लिखा है–

"उमा सन्त के यहीं बड़ाई"

यह घटना आपकी पुत्री मुन्नी, कुसुम की शादी के समय की है। फकीर किसी का उधार नहीं रखते, सब जानते हुए भी ईश्वर की रजा में राजी रहते हैं तथा निज जनों का कल्याण ही ध्येय रखते है।

हमारी छोटी बहन मुन्नी की शादी में एक सत्संगी भाई जिन्होंने टेन्ट आदि लगाने सजाने की व्यवस्था ली थी। उनके अपने भतीजे की भी शादी उसी दिन थी इस कारण उन्होंने सारा टेन्ट सजावट आदि की सब व्यवस्था सुबह ही से कर के करीब 11 बजे पूज्य बाबू जी से जाने की आज्ञा मांगी पूज्य बाबू जी ने कहा थोड़ी देर और रूक जाओ। खाना वगैरह खाके निकल जाना। खाना खाने के बाद भी उन्होंने रुक–रुक कर कई बार आज्ञा मांगी पर हर बार उन्होंने यही कह कर रोक दिया अभी रूक जाओ चले जाना। दुनियाबी अकल के हिसाब से उस समय

हम लोगों ने भी पूज्य बाबू जी से कहा कि सब इन्तजाम हो गया है जाने दीजिए पर आप चुप रहे। हम लोगों को यह ख्याल हो रहा था कि कहीं वह यह न सोचते हो कि आपके बेटी की शादी है इसलिये रोक रहे है। बहरहाल शाम को करीब 5 बज गये थे। बाबू जी ने कहा कि अब बेटे फौरन निकल जाओ। वह सोचने लगे कि अब तो बारात भी चली गयी होगी अब जाके क्या करेंगे। परन्तु वह कहने लगे कि नहीं चले जाओ, मेरठ होते हुए चले जाना, जब आप मेरठ पहुँचे तो पता चला कि बारात की बस का बहुत भयंकर एक्सीडेन्ट हुआ है और लोग बहुत बुरी तरह घायल है। उस समय वह भाई समझ पाये कि पूज्य बाबू जी उन्हें क्यों रोक रहे थे। इस प्रकार निज जनों की आप रक्षा करते थे इतना ही नहीं उनकी उस सेवा सजावट आदि का यह पारितोषक उन्हें मिला कि आज उनका बहुत अच्छा बिजनेस है दो– दो दुकानें हैं तब बहुत छोटा सा बिजनेस था यह आपकी देन है।

मुन्नी की शादी के बाद जब हम दोनों भाई चलने लगे थे आपने बहुत आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम दोनों ने मेरी बड़ी भारी जिम्मेदारी बहुत अच्छी तरह निभा दी। मेरे पास तो 300/– रूपया जो पहले थे वह अभी रखे हुये है तकिये के नीचे। तुम दोनों बहुत खुश रहो और तुम्हारी औलाद सब खुश रहें। तुम सबने बहुत अच्छा निभा दिया। आज जब अपने लोंगो के जीवन के बारे में शुरू से सोचता हूँ तो यही लगता है कि यह सब सुख आप बुजुर्गों की दया से है वरना हम लोग क्या है और क्या थे। सब उन्हीं महापुरूषों की देन है उनके निमित्त जरा सा भी कुछ किया उसका उन्होंने न केवल दीन बल्कि दुनिया भी बना दी है इसके उदाहरण हर सत्संगी भाई के पास है।

संत कभी उधार नहीं रखते हैं यह बात आपने भंडारे के अवसरों पर कई बार कही और उनकी इस बात की सत्यता का अनुभव मैं समझता हूँ सभी सत्संगी भाइयों ने की है। हापुड़ में जगदीश भाई साहब जिनको आप बहुत चाहते थे और हर काम के लिये उनका यह शब्द रहता था कि ''जगदीश बाबू को बुलाओ'' और आपने भी उनकी, उनके परिवार की और सत्संग की जो निःस्वार्थ सेवा की है उसको अधिक लिखने की आवश्यकता नही है क्योंकि सभी परिचित हैं आपकी गृहस्थी बहुत बड़ी और आमदनी शुरू–शुरू के समय काफी कम थी (खर्चे के लिहाज से) कन्याओं का बोझ, पर पूज्य बाबू जी की दया से उन्होंने

सभी जिम्मेदारियों को बहुत अच्छी तरह पूरा कर दिया। सब लड़के बहुत खुष हैं आर्थिक दृष्टि से बहुत संतुष्ट है। और सभी पुत्रियां अपने अपने घर में बहुत खुश हैं और आर्थिक दृष्टि से भी संतुष्ट है। उस समय और इस समय में बहुत अंतर है। यह सब आपकी दया का प्रताप है। और भी कई भाइयों पर आपने ऐसी ही दया की है और वह लोग सम्पन्न हैं।

यह घटना सन् 1969 की है जबकि सेवक डिस्ट्रिक जेल गोण्डा में पोस्टेड था। जेल कैम्पस में रहता था उस समय मेरे पास एक कामता नाम का नौकर था जिसकी उम्र लगभग 12 वर्ष की थी। पूज्य बाबू जी गोरखपुर के कुछ सत्संगी भाइयों के साथ मेरे यहां आये और करीब 5–6 दिन तक रुके। आप उस नौकर के कार्य से बहुत खुश थे। अचानक एक दिन आपने मुझसे पूछा यह लड़का कौन सी जाति का है। मैंने उत्तर दिया कि यह लड़का अहीर जाति का है। दो ही मिनट बाद आपने फरमाया कि इससे होशियार रहें कही चोर न हो बात आई गई हो गयी आप वापस गाजियाबाद चले गये। वहाँ से मेरा स्थानान्तरण नवाबगंज अस्पताल में हो गया।

सन् 1972 में पुनः पूज्य बाबू जी नवाबगंज तशरीफ लाये और करीब एक हफ्ते रुक कर गाजियाबाद वापस चले गये। इस बार भी उन्होंने बताया कि यह लड़का काम तो बहुत अच्छा करता है परन्तु इससे होशियार रहना हम लोगों को सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि यह चोरी कर सकता था इसी बीच मैंने अपनी पत्नी से कई बार कहा कि जो पैसा मैं रखता हूँ वह कम हो जाता है। उन्होंने उत्तर दिया कि बाहर का कोई आदमी आता नहीं उस समय मेरे घर में मेरी पत्नी मेरे बच्चे एवं नौकर रहता था। मैंने चिकित्सालय के एक फील्ड वर्कर की तनख्वाह 276/– रूपया निकाल कर घर पर रख दी थी कि वह बेवख्त आयेगा तो घर से ले लेगा, शाम को जब वह कर्मचारी आया तो मैंने वह पैसा निकाल कर उसको दे दिया। उसने बिना गिने हुये अपनी जेब में रख लिये मैंने एक दो बार कहा कि पैसा गिन लो, मेरे कई बार कहने पर जब उसने पैसे गिने तो भौचक्का सा रह गया। क्योंकि वह केवल 176/– रूपये ही थे पूरे 100 रूपये कम थे उसने मुझसे पूछा कि सर आपने यह पैसे गिने थे। मैंने कहा कि नहीं उसने मुझे सारे पैसे दे दिया और कहा कि यह 176 रूपया है, 100 रूपये कम है मैंने घर से 100 रूपये निकाल कर उसकी वेतन के पैसे दे दिया मैंने अपने पत्नी से

बताया कि इसमें से 100 रूपये किसी ने निकाल लिये हैं परन्तु उस नौकर पर किसी को सुबहा नही थी आखिर में जब वह बाहर सोने गया तब हम लोंगो ने उसके कमरे की पूरी तलाशी ली, जब तलाशी ली तो उसके बक्से के एक कोने में 1200 रूपये निकले सुबह हुयी तो उसने यह बात स्वीकार किया कि वह पैसे चुराता रहता था जब पूछा कि कब, तो उसने बताया कि जब आप लोग पूजा करते थे जब मैंने गाजियाबाद पू. बाबू जी को पत्र के द्वारा सूचित किया तो उन्होने निर्देश दिया कि उसको पुलिस में मत देना। क्योंकि वह अभी बहुत छोटा है उसका भविष्य खराब हो जायेगा परन्तु अपने घर में नहीं रखना एवम् उसके सारे पैसे (महीने की तनख्वाह) दे देना। इस घटना को लिखने का मकसद यह है कि सभी भाइयों को इस बात की जानकारी होगी पूज्य बाबू जी को इन्सान की कितनी अच्छी शिनाख्त (पहचान) थी जिसको एक बार देख लिया उसके बारे में सब जान लेते थे। परम पूज्य ताऊ जी भी पूज्य बाबू जी कि शिनाख्त की बहुत तारीफ किया करते थे।

पूज्य बाबू जी क्षमा और दया की मूर्ति थे। उन्होंने उस नौकर को सुधरने का मौका एवं क्षमा करने का आदेश सेवक को दिया। कितना विशाल हृदय थे कि अपने पुत्र के नुकसान होने पर भी दूसरे व्यक्ति को आप अक्सर सुधरने का मौका देना धर्म समझते थे। सबसे बड़ा उपकार यह है कि मनुष्य बुराई को छोड़ दें। और अच्छाई को अपना लें।

यह घटना उस समय की है जब मैं (1972) में नवाबगंज जिला गोण्डा में पोस्टेड था। तब पूज्य बाबू जी मेरे घर पर तशरीफ लाये हुए थे। मैंने अपने स्टाफ के तीन आदमी जो कि परमार्थ में रुचि रखते थे आपकी सेवा मे पेश किये। शाम की संध्या के समाप्त होने पर जब यह लोग चले गये थे तो आपने मुझसे पूछा कि तुम्हारी इन लोगों के बारे में क्या राय है मैंने उत्तर दिया कि श्री पंचानन्द तिवारी (लेवोरेटरी टेक्नीशियन) उनकी अंदरूनी हालत अच्छी है। जब वह प्रतिदिन रजिस्टर में हाजिरी लगाने आते है तो मेरी तबियत उनकी तरफ रजू (आकर्षित) होती है।

2. श्री ओम प्रकाश सिंह जी जो मेरे अधीनिस्थ (सेनेटरी इन्सपेक्टर) के पद पर तैनात थे। उनके बारे में मैंने बताया कि वह परमार्थ की भी रुचि रखते हैं और साथ साथ दुनियां की भी।

3. तीसरे व्यक्ति श्री वर्मा जी जो कि वजीरगंज अस्पताल में (लेवोरेटरी टेक्नीशियन) थे उनके सम्बन्ध में मैने बताया कि यह केवल शिष्टाचार के तौर पर आये थे थोड़ी देर खामोश रहने के बाद आपने फरमाया कि तुम्हारा अनुभव तो सही है। परन्तु तिवारी जी को तुमसे फायदा नही होगा। क्योंकि उनकी अपनी जाति का अभिमान हमेशा बना रहेगा। वह तुम्हारी इज्जत तो बहुत करेंगे परन्तु इस रास्ते के योग्य नहीं है।

श्री ओम प्रकाश सिंह जी के लिये आपने फरमाया कि इनकी ओर ध्यान दो और उनके बराबर गायबाना तबज्जोह (जिसकी जानकारी न हो) दो यह इस रास्ते पर अच्छे चलेंगे और आने वाले समय में तुम्हारी लिये परमार्थ के कामों मे सहायता करेंगे। वर्मा जी के लिए आपने फरमाया कि यह किसी एक जगह नही रुक सकते परम पूज्य बाबू जी की इन तीनों के बारे में राय शत प्रतिशत सही साबित हुयी। श्री ओम प्रकाश सिंह (बाराबंकी निवासी) जिनको सभी सतसंगी भाई भली प्रकार से जानते है उनको सत्संग में आते करीब बाईस वर्ष हो रहे है उन्हीं के द्वारा उनके परिवार के सदस्य एवं बारांबकी के अन्य लोग भी इस रास्ते पर चल रहे है तिवारी जी आज भी परमार्थ की दृष्टि से मेरी बड़ी इज्जत करते है एवं वर्मा जी अधिकारी की दृष्टि से। परम पूज्य बाबू जी का इतना अच्छा अनुभव तथा ज्ञान था कि आपने पहली ही सिटिंग में इस बात को जान लिया कि कौन इस रास्ते का अधिकारी है और कौन नहीं और किसके साथ मेहनत की जाए ताकि समय खराब न हो। आप अकसर हम लोंगो से भी कहा करते थे कि केवल अधिकारियों के साथ मेहनत करनी चाहिए। गैर अधिकारियों के साथ मेहनत करने से अपना समय व मेहनत खराब होती है क्योंकि वह कहते थे कि एक शेर अच्छा है सौ गीदड़ो से हमें केवल गिनती नहीं चाहिये हमें तो दिल चाहिये जो टूटने वाला हो।

बनारस की श्री राम नारायण लाल जी तथा नन्द जी दोनों ही रेलवे विभाग के कर्मचारी थे। रेलवे में पहले पेंशन नही थी और रिटायरमेंट पर इकट्ठा पैसा मिल जाता था। विभाग द्वारा उनसे यह पूछा गया कि वो लोग पेंशन लेना चाहते हैं कि नहीं, आप दोंनो ने कोई विकल्प नहीं लिया परन्तु जब विकल्प देने मे केवल दो दिन बाकी रहे तो उनके मन में एकाएक यह भाव उठा कि क्या करें ? आप दोनो तुरन्त गाजियाबाद रवाना हो गये क्योंकि आप लोग बिल्कुल बच्चों की तरह

कुछ भी पूछना हो आप के पास चले जाते थे। जब आप लोगों ने आपको अपने आने का आशय बताया तो फौरन उन दोनों को वापिस किया कि जाओ विकल्प पेंशन का भर आओ अब तो कुछ पूछना ही नही था आप लोग आये और पेंशन का विकल्प भर दिया। पू. बाबू जी ने कहा कि एक साथ मिले पैसे का सदुपयोग अच्छी तरह नहीं हो पाता है। बड़ी गृहस्थी है पेंशन ठीक रहेगी। आज उन लोंगो को उनकी दया दूरदर्शिता का आभास हो रहा है कि इस पेंशन के कारण उन्हें कितनी आर्थिक मदद मिल गई है आपको हर प्रेमी भाई के परिवार उनके बच्चों तक की पूरी चिंता रहती थी। यदि आपने यह विकल्प न दिलवाया होता तो शायद आप लोगों को इतनी सहूलियत नहीं रहती। यह उनकी दया का ही फल है।

मैं गोण्डा जिला अस्पताल में उस समय पोस्टेड था। यह बात सन् 1968 की है पूज्य बाबूजी और कुछ बनारस के लोग गोण्डा मेरे पास आये। आपने शाम को इच्छा जाहिर की कि मेरे एक पुराने साथी डा. बालकराम जी जो गाजीपुर में मेरे साथ थे उनसे मिलना चाहता हूँ। इत्तफाक की बात है कि जब मैं जिला अस्पताल में मरीज देख रहा था तभी वह और उनकी पत्नी आई। मैं कुछ मरीजों के देखने के बाद उनकी तरफ मुखातिब हुआ। आपकी पत्नी ने न जाने कैसे कुछ देर मुझे देखा और एकदम यह सवाल कर दिया कि बेटा तुम सेठ हो कि दिन्नू मैं चौक गया और बड़े आश्चर्य में पड़ गया कि इन्होंने कैसे पहचाना फिर उन्होंने परिचय दिया और तब मेरे घर भी आये थें। और बड़ी मोहब्बत से दोनों मिलते थे। मैंने पू. बाबू जी को यह सब बताया शाम को हम लोग उनसे मिलने गये आप पू. बाबू जी को देखकर बड़े खुश हुए और उनका बहुत स्वागत किया। आपने कहा श्यामलाल हम भगवान श्रीकृष्ण की पूजा बहुत दिनों से करते है पर हमें अब कभी कभी ऐसा लगता है कि जो हम करते है वह ठीक है कि नही पू. बाबू जी से आप उम्र में बड़े थे। आपने कहा डाक्टर साहब जो आप करते है वह सब ठीक ही करते है करते रहिये मैं दीन्नू से कह दूँगा कि वह आपसे मिलते रहेंगे। उनके बहुत इसरार पर पू. बाबू जी ने कहा आप एक माला ऊँ शान्ति का पूज्य लाला जी महाराज के लिये कर दिया करें। मेरा फिर जब इधर आना होगा आपसे मिलूँगा। पू. बाबू जी के कहने के मुताबिक मैं हर इतवार की शाम को आपके पास जाता था। आने जाने के कारण वह दोनों ही लोग मुझसे पुत्रवत प्रेम करने लगे थे। और बताते थे कि

जब वे गाजीपुर में थे तो उन्होने देखा था कि कंबल ओढ़कर कुछ दाढ़ी वाले लोग सत्संग करते थे। पर वह कुछ समझ न पाये थे वैसे तो वह पूज्य बाबू जी की बड़ी इज्जत भी करते थे। पर अब उनसे उन्हें बहुत अधिक उन्सीयत सी हो गई थी। पू. बाबूजी भी खत में हमेशा उनकी खैरियत तो पूछते ही थे उनका पूरा ध्यान रखने की भी ताकीद करते रहते थे। सेवक से जितना बन पड़ा उनकी सेवा गोण्डा में तथा नवाबगंज में रहने के दौरान करता रहा। पू. बाबू जी जब नवाबगंज आये थे तो आप दोंनो लोग उनसे मिलने भी आये थे। आपकी पत्नी के देहांत हो जाने के कारण बाद में आपने अपने एक मात्र पुत्र जो हमारी ही विभाग में एक प्रसिद्ध डाक्टर है के पास लखनऊ आ गये। उस समय मैं भी लखनऊ में था। व्यस्तता के कारण बहुत जल्दी मिलना तो नहीं हो पाता था फिर भी मौका निकाल के आपको मिलने चला जाया करता था। मुझे भी उनसे काफी प्रेम सा हो गया था और वह भी पिता तुल्य प्रेम करने लगे थे आप बीमार होकर बलरामपुर अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में भरती हुए मैं रोज ही उनके पास जाता था उस समय कोई पीड़ा के चिन्ह नहीं थे। जिस दिन आप ने शरीर छोड़ा उस दिन उनके पौत्र श्री आलोक श्रीवास्तव आई.पी.एस. सुबह सुबह मेरे पास आये और कहा कि आपको बुला रहे है उनके पास गया और पूरी व्यवस्था करके मैं आया ही था और राउण्ड पर ही था कि एक डाक्टर ने मुझसे फिर कहा कि आपने बुलाया है मैं फौरन उनके पास गया और वह बोले बेटा दीन्नू इस वख्त बस तुम्हारे पिता जी और वहीं लाला जी साहब और तुम हर वख्त मेरे पास हो। उन्हें शरीर छोड़ने का जरा भी कष्ट नहीं था और इस तरह आपने पू. बाबू जी की याद में बिना किसी कष्ट के शरीर त्याग दिया। परम पूज्य लाला जी तथा पूज्य बाबू जी की मौजूदगी इस बात का सबूत है कि बुजुर्गो ने आपको कबूल किया लखनऊ में एक सत्संगी भाई श्री केशव बाबू उस समय गाजियाबाद गये थे। जो बालकराम जी के बहुत दूर के रिश्तेदार लगते थे। पूज्य बाबू जी ने उनसे कहा कि डा. बालकराम जी की मृत्यु हो गई केशव बाबू ने कहा नहीं बाबू जी मैं उनको परसों देखकर आया हूँ। पूज्य बाबू जी धीरे से बोले नहीं बड़ी अच्छी घड़ी मौत की रही। रात को चलकर सुबह जब केशव बाबू लखनऊ आये तो सीधे मेरे पास आकर उनका हाल पूछा यह बताने पर कि कल उनकी मृत्यु हो गई है वे कहने लगे कि ठीक इसी वख्त पूज्य बाबू जी ने यही कहा था। आपने मुझे खत लिखा कि तुम्हारे उनके पास

जाने से बुजुर्गो से उनका वास्ता हो गया पूज्य बाबू जी कहीं भी जाते उनका प्रथम ध्येय यही होता था कि परमार्थ में कुछ लोगों का भला हो। उनका जीवन का मुख्य ध्येय ही यही रह गया था। डा. बालकराम जी एक बड़े ईमानदार परिश्रमी आफिसर के साथ–साथ बड़े नेक इंसान भी थे। पूज्य बाबू जी पर अंतिम दिनों में अटूट श्रद्धा रखने लगे थे। इतने से ही उनका अन्त संवर गया यह बुजुर्गो की महती दया है।

पू. सेठ भाई साहब के साढू का लड़का उनके पास रहता था क्योंकि उसके पिता माता विदेश गये हुए थे। उसी समय वह बहुत गम्भीर रूप से बीमार हो गया। दिल्ली अस्पताल में भर्ती कराया गया। एक ही दिन में हजारों रूपये की जांच वगैरह के बाद भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था और बचने की कोई आशा नहीं थी पू. सेठ भाई साहब बहुत ही परेशान थे। उस परेशानी में बच्चे को दिल्ली छोड़कर वह पूज्य बाबू जी के पास आये उनसे आपकी परेशानी देखी नहीं गयी और उनको समझाते हुए कहने लगे परेशान मत हो बेटे जाओ बच्चा ठीक हो जायेगा उसके बाद से ही उसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ वह एकदम ठीक हो गया। आज इंजीनियर है कोई राह नहीं थी उसके बचने की यह केवल आपकी दया थी जिसने उन्हें जीवन दान दे दिया। वरना सभी डाक्टर अमल, दवा नाकाम हो चली थी। उनकी दया का वर्णन कर पाना कठिन है उनके प्रेम को शब्दों में लिख पाना असंभव है।

घटना इस प्रकार है कि बब्बू की पत्नी की डिलवरी होने वाली थी। डाक्टर के अनुसार अभी 10–15 दिन से ज्यादा बाकी थे अचानक पू. बाबू जी ने 30 जून को बब्बू को बुलाकर कहा कि आज ही प्राइवेट वार्ड लेकर भर्ती करा दो वैसा ही कर दिया गया उस दिन रात बब्बू भी अस्पताल में रुक गया दूसरे दिन डाक्टर कहने लगे कि अभी काफी वख्त है आप इन्हें घर ले जाइये जब बब्बू ने पूज्य बाबूजी से डाक्टर की बात कही तो आप बोले आज रात को अम्मा को लेते जाना वह वहीं रुक जायेगी और अम्मा जी को भी यह कह दिया था। रात को 9 बजे अम्मा जी अस्पताल पहुँची हैं और उसके एक या डेढ़ घण्टो बाद ही बब्बू की पत्नी को तकलीफ शुरू हो गयी और 5 बजे सुबह बच्ची का जन्म भी हो गया आश्चर्य की बात यह है कि 6 बजे सुबह जब बब्बू पू. बाबू जी को खबर देने गया तो बब्बू के बिना बताये ही पू. बाबू जी ने उससे पूछा कि रजनी व बच्ची कैसी है। बब्बू बताता है कि वह अचम्भे में पड़ गया कि

अभी तो वह सीधा अस्पताल से घर आ रहा है फिर धीरे से बोले तुम्हारी अम्मा को भेजा ठीक रहा, चलो समय टल गया। बुजुर्गों की बहुत दया है तुम सब पर। बाद को पता चला कि कुछ Complication हो गई थी पर उन महान पिता की दया से सब सकुशल हो गया। जब अपनी पत्नी की गंभीर हालत और दया की बात शाम को बब्बू ने पू. बाबू जी को बताई तो आपने कहा बेटे इस सिलसिले में बुजुर्गो की यही खासियत है कि वह बहुत दयालू है तथा सच्चे भक्तों की हर मदद करने को हर वख्त तैयार हैं। तुम सभी बहुत खुशकिस्मत हो जिनको ऐसे बुजुर्गो का आशीर्वाद वख्त पर मिलता रहता है जिन्दगी में हमेशा सच्चे बनकर सेवा भाव रखते हुए इन बुजुर्गों से दया की भीख मांगते रहना परमात्मा तुम सब का भला करें।

नोट– यह घटना प्रत्यक्ष प्रमाण देती है कि हम सब लोगों पर आने वाली मुसीबतों को परमपिता परमेश्वर से तथा बुजुर्गो से दुआ करके हम सब को रक्षा करते थे और उन मुसीबतों को आभास भी नहीं होने देते थे। धन्य है ऐसे पूज्यनीय महापुरूष, महात्मा ।

यह घटना उस समय की है जब पूज्य भाई साहब देहरादून मे पोस्टेड थे। आपका परमोशन सीनियर स्केल में हो गया था। विभागीय नियम के अनुसार प्रमोशन पर आपका स्थानान्तरण होना निश्चित था। दूसरे देहरादून में आपको पांच वर्ष हो गये थे। मैंने बहुत प्रयास किया और पूज्य भाई साहब को सूचित किया कि आपका स्थानान्तरण किसी अन्य स्थान पर किया जा रहा है। आप पूज्य बाबू जी से मिलने गाजियाबाद गये और सब स्थिति से अवगत कराया आपने फरमाया कि अच्छा तो यही है कि तुम वहीं रुको बच्चों की पढ़ाई ठीक रहेगी और सब चीजों से वहां वाकिफ हो, जिस रोज आर्डर हो रहे थे उसी दिन मैंने पू. बाबू जी की तरफ से एक अप्लीकेशन दे दी, जिसमें केवल चार लाइनें लिखी थीं। ''प्रार्थी इसी विभाग का एक सेवानिवृत अधिकारी है और अपने पुत्र डाक्टर आर. के. सक्सेना के पास रह कर अपना इलाज करा रहा है। मेरा आपसे अनुरोध कि उसको इस समय यहीं रहने दिया जायें। इसके लिए मैं आपका आभारी रहूॅगा।

सुपरिन्टेन्डेन्ट देहरादून बड़ी महत्वपूर्ण स्थान है बहुत से लोग कोशिश कर रहे थे जब भाई साहब की फाइल सचिव के पास पहुँची तो उन्होंने यह निर्णय लिया कि क्योंकि इनके पिताजी विभागीय सेवानिवृत अधिकारी थे और इलाज हो रहा है। इसलिए उन्हें वहीं रहने दिया जाये

सब की कोशिश नाकाम हो गई। इस प्रकार पूज्य भाई साहब के ऊपर दया करके उनकी इच्छा की पूर्ति की।

पूज्य बाबू जी भाई साहब के पास देहरादून मुजफ्फरनगर तथा मेरठ सभी जगह गये थें। मेरठ में आपने देखा कि पू. भाई साहब बहुत व्यस्त रहते है और परमार्थ के लिये समय कम दे पा रहे है इसका जिक्र आपने मुझे भी किया कि सेठ बहुत व्यस्त रहते है उसी समय पूज्य भाई साहब का ट्रान्सफर नगर स्वास्थ्य अधिकारी के पद पर हो गया। हालांकि भाई साहब को यह पद पसंद नहीं था फिर भी इससे आप को पूजा तथा पूज्य बाबू जी की सेवा के लिये पर्याप्त समय मिल गया और निर्वाण के बाद फिर दया करके आपकी पोस्टिंग बुलन्दशहर हो गयी। जो जगह बहुत अच्छी साबित हुयी । यह सब उनकी दया का ही फल है।

सेवक बलरामपुर चिकित्सालय लखनऊ में पोस्टेड था। उसी समय अधीक्षक बलरामपुर चिकित्सालय की रिक्त जगह हुई थी और सेवक ने भी प्रार्थना पत्र दिया था। बलरामपुर चिकित्सालय उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा तथा प्रमुख चिकित्सालय है उसके लिये बहुत से लोग कोशिश कर रहे थे। डा. एस.एन.राय गन्ना विभाग परम पूज्य बाबू जी से मिलने गाजियाबाद गये थे पूज्य बाबू जी ने उनसे पूछा कि दीन्नू की पोस्टिंग में क्या दिक्कत है। डा. राय ने एक ज्वांइट डायरेक्टर का नाम बताया कि वह किसी और में दिलचस्पी ले रहें है आप एक दम आवेश में आ गये और कहने लगे दीन्नू को तो वहीं रहना है उन ज्वांइट डायरेक्टर को रहना है कि नहीं उनको ही अपनी कुर्सी को छोड़नी पड़ेगी और ऐसा ही हुआ उनके हटते ही मेरी पोस्टिंग बलरामपुर चिकित्सालय में बिना किसी प्रयास के हो गयी। आप पूरा अख्तियार रखते थे जब और जैसा चाहते थे करा लेते थे। उनकी दया से मुझे यह महत्वपूर्ण पद मिला और बड़ी दया रही। यद्यपि उन्हें सब अख्तियार था पर वह बड़ा संयम रखते थे और राजी व रजा में ही पूरा विश्वास रखते थे पर प्रेमवश कभी–कभी प्रेम के आवेश में हम सब पर इतनी बड़ी दया कर देते थें। वे महान हस्ती थे।

यह घटना पूज्य बाबू रामदास जी ने बताई बताते समय आप उनके प्रेम और दया से सराबोर थे आपने बताया कि आप का रिटायरमेन्ट होने वाला था और उनके कोई भी बच्चे लड़के कहीं रोजगार

से नही थे, इस कारण आप बहुत परेशान थे। बताते हैं कि पूज्य बाबू जी बैठे थे और आप भी वहीं पीछे चुपचाप बैठे थे मन में यही खयाल आ रहा था कि अचानक आप बाबू रामदास जी की तरफ पलटे और प्रेम के आवेश में बोले ''बाबू राम दास जी मैं जो तुम्हारे लिए हूँ क्यों परेशान होते हो सब हो जायेगा'' यह बताते समय वे प्रेम विव्हल हो गये कि आपके सारे काम रिटायरमेन्ट के बाद हुये और यह सब उनकी दया है।

अपनी गंभीर बीमारी में जब आप मोहननगर अस्पताल में भर्ती थे और काफी बीमार थे उस बीच आप पूज्य भाई साहब एवं मुझसे बोले कि 500/— रूपया बाबू रामदास की लड़की की शादी में भेज दो हम लोंगो को लगा कि शादी तो अभी तय नही हुयी हम लोगों ने उनके लड़के से पूछा जो कि वहीं था उसने कहा शादी तो नहीं तय हुयी है। पर उसके बाद ही खबर मिली कि शादी तय हो गयी है। वहां इस घटना के लिखने का आशय यही है कि हमारे सिलसिले में बुजुर्ग हर समय साये की तरह साथ रहते है और मदद करते है। यही इस संतमत की बरकत है।

मैं 1981 में दिल्ली ट्रेनिंग में गया था। रोज सुबह दिल्ली जाता था और शाम को घर आ जाता था अच्छा अवसर मिल गया था पूज्य बाबू जी के साथ रहने का। दिल्ली से शाम को जब मैं आया तो पूज्य बाबू जी ने कहा बेटे अपनी चारपाई यही डाल लो मेरे पास मैंने कहा कि गैलरी में डाल लूँ आपने कहा नहीं, यही डाल लो मैं संकोच के कारण वहां डालने से कतरा रहा था पर जब आपने दुबारा कहा तो मैंने चारपाई वहीं डाल दी। रात के 3 बजे मुझे पेशाब लगी मै कुछ देर इस ख्याल से चुपचाप पड़ा रहा कि आप जग जायेंगे। कहीं आपकी नींद न खुल जाये पर जब नहीं रुक सका तो 5 मिनट बाद धीरे से उठकर बड़े धीरे से हाल की कुण्डी खोली आप तो जगे थे ही बोले उठ गये बेटा जब मैं पेशाब से उठकर आया तो देखा पू. बाबू जी पूजा करने बैठ गये थे। मैंने पूछा कि आप उठ गये, कहीं आपकी नींद तो नहीं डिस्टर्ब हुयी आपने कहा हमने तो बेटे पिछले दस सालों से यही नियम बना लिया है कि इसी वख्त उठकर अपना पूजा से निपट जाते है क्योंकि इस वख्त वातावरण शांत रहता है। उसके बाद दुनियां के धंधे शुरू हो जाते है और शोरगुल भी हम तो जग ही थे, हम तो इसलिए नहीं उठ रहे थे कि तुम थके होगे आराम मिल जाये देखिये कितना ख्याल था कि आराम

मिल जाये दूसरे नसीहत दी कि सुबह पूजा का बहुत अच्छा समय है। यही उनका तरीका था जो बताना चाहते थे पहले उसे कर के दिखाते थे स्वयं उसका उदाहरण प्रस्तुत करते थे।

यह घटना शायद 1982 की है जबकि गाजियाबाद के हाल में पू. बाबू जी पूज्य भाई साहब व मैं बैठे थे, आप इस समय बड़े प्रसन्न चित्त थे। 1981 की गंभीर बीमारी के बाद काफी स्वस्थ हो गये थे। हम लोगों ने आपको खुश देखकर कहा कि कि आपकी सब दुनिया की जिम्मेदारियां समाप्त हो गई। आपने कहा कि ईश्वर की कृपा और बुजुर्गो की दया से और तुम दोंनो भाइयों के सहयोग से सब बड़ी अच्छी तरह बड़ी इज्जत से खत्म हो गयी। इसके बाद आपने मुस्कुराते हुये हम लोगों से पूछा बेटे किरन व बेबी की कितनी उम्र अब होगी हम लोगों ने उत्तर दिया दोनों की उम्र साढे उन्नीस या उन्नीस वर्ष की हो रही है। आप कहने लगे कि फिर तो साल ही भर बाद उनकी शादी की चिन्ता करनी होगी और इनसे फुर्सत पाने के बाद बच्चों के सेटिलमेन्ट की भी फिक्र करनी होगी। आपके कहने का तात्पर्य यह था कि जब तक जिस्म है दुनिया का सर्किल इसी तरह चलता रहता है बस अपनी दुनिया की जिम्मेदारी पूरी हो जाये तो शुक्र है बहुत ही सरलता से समझा भी दिया कि दुनिया में छुट्टी नहीं है और हम लोगों को अपनी जिम्मेदारी का एहसास भी दिला दिया कुछ देर सोचने के बाद आपने फरमाया कि सेठ दुनियाबी मामलों में बहुत सीधे है लिहाजा बेबी की शादी की जिम्मेदारी तुम्हारी है पूरब के तरफ लड़को का ध्यान रखना। वह बहुत पहले की बात थी आई गई हो गयी पर बाद में यह सब अक्षरशः सत्य हुई जिससे यह ज्ञात होता है कि वह त्रिकालदर्शी थे सब जानते थे।

सन् 1984 की बात है जब पूज्य बाबू जी बहुत सख्त बीमार थे तथा मोहननगर अस्पताल में भर्ती थे। पूज्य सेठ भाई साहब एवं पूज्य दीन्नू भाई साहब जो दिन रात उनकी सेवा में थे इन दोंनो भाइयों के आ जाने पर हम लोग तो निश्चित थे ही पूज्य बाबू जी काफी निश्चित हर तरह से हो जाते थे।

पूज्य बाबू जी की हालत कई दिन तक लगातार अच्छी नही हुयी इधर घर में तमाम सत्संगी भाइयों का तांता लगा जो उनके दर्शन करने आये थे घर के रिश्तेदार भी आ जा रहे थे। घर में खर्चा बहुत था घर का सब्जी, सामान आदि लेने का काम मैं शुरू से करता था। वैसे ही

दिनचर्या चल रही थी। आगरे से पू. राजकुमार जीजा जी के पू. पिता जी एवं मुन्नी जीजी (पूरा परिवार) आपको देखने आये और जब वह पू. बाबू जी को मोहन नगर अस्पताल में देखकर घर लौटने लगे तब मुझे धीरे से इशारे से बुलाया और कहने लगे बब्बू बेटे आज कल तुम्हारा बहुत खर्चा हो रहा होगा। मैंने उन्हें पूरी तरह आश्वस्त करते हुये बताया कि बाबू जी कोई दिक्कत किसी तरह की नहीं है। फिर धीर धीरे बोले बेटे आगरे से कुंवर बाहदुर जी (राज कुमार जी के पूज्य पिता जी) आये है अगर हो सके तो एक दो अच्छी सब्जी खाने में बनवा देना और उनके ठहरने और आराम का सब इंतजाम ठीक से करवा देना, मेरे बक्से में शायद 100/- रूपये रखे हैं। अगर जरूरत समझो तो उसे निकाल लेना। मैंने बताया कि उनका सब इंतजाम ठहरने आराम का घर पर अच्छी तरह हो गया है और खुद ही दो तीन अच्छी सब्जी दे आया हूँ। और खाने का अच्छा इंतजाम करने को कह आया हूँ। पूज्य बाबू जी की आंखो में आँसू आ गए और कहने लगे बेटे तुम सब भाइयों को ईश्वर बहुत बरकत दें और चुप हो गये।

नोट– प्रिय बब्बू के द्वारा बताई गई घटना उसी के शब्दो में ।

नोट– दुनियादारी की इससे उत्कृष्ट मिसाल कहां मिलेगी ऐसी भयंकर बीमारी में जब जिन्दगी और मौत की लड़ाई थी उस समय भी दुनिया के रस्म में अनुसार प्रिय राजकुमार जी के पिता जी के आवभगत का इतना ऊँचा ख्याल। दीन और दुनिया का इतना सुन्दर सामंजस्य देखने को नहीं मिलता। हर एक के प्रति जो कर्तव्य रस्मी भी है उनका इतना ठीक ठीक जीवन में उतारना बड़े वीरों का काम है। इतनी बीमारी में हर सतसंगी भाई का इतना ख्याल कि उनको कोई तकलीफ न हो उनको खाना आदि ठीक से मिला या नही। जब बोलने की शक्ति नही थी तब इशारे से पूछा कितनी महानता थी उनकी। अपनी तकलीफ का कोई ध्यान नही। कितना बड़ा संदेश शिक्षा बब्बू को दिया कि क्या हुआ जो हम मरण शैया पर है हर आने वाले की आवभगत जरूर होनी चाहिए। यह वेद के उस सूत्र को चरितार्थ करता है कि अतिथि की सेवा भगवान की सेवा मानकर करो। धर्म शास्त्र के अनुसार सब बातें हो ऊचा आदर्श हम सब के सामने रख गये। किसी बात की मौखिक शिक्षा नहीं देते थे। बल्कि चरितार्थ करके दिखा देते थे और संकेत में समझा देते थे।

पूज्य सेठ भाई साहब देहरादून से कार लेकर आये थे और उसी कार से पूज्य बाबू जी को फतेहगढ़ लाये। लौटते पर कार का चेम्बर फट गया मोबिल आयल गिरने लगा उन्हें पता भी नहीं चला। एक ट्रक वाले ने गाड़ी के आगे ट्रक लाकर गाड़ी रोक दी। भाई साहब को लगा कहीं कोई बदमाश न हो क्योंकि रात का वख्त था और रास्ता भी काफी सुनसान सा ही था परन्तु उसने यह बताने के लिये ही कि चेम्बर फट गया है रोका था और उसने गाड़ी बांधकर वहीं पर पहुचा दी जहां गाड़ी दी बड़ी आसानी से ठीक हो गयी पूज्य बाबू जी ने भाई साहब से कहा कि तुम्हारा तो बेटे बहुत खर्चा आ गया होगा पर कोई हर्ज नहीं बुजुर्गो के लिये .... सब ठीक हो जायेगा ......। उनकी दया से उन्हें उसका बदला दूसरी जगह से मिल गया। पूज्य बाबू जी को अपनी बीमारी में यह ख्याल रहता था कि उनकी बीमारी की वजह से और सेठ भाई साहब के इधर व्यस्त हो जाने से वह बच्चों की पढाई वगैरह ठीक से नहीं देख पा रहे है उनकी ऐसी दया हुई कि उस साल तीन बार परीक्षायें किन्ही कारणों से निरस्त हुई और अंत में उनके पुत्र पंकज की एम.एस.सी. में फर्स्ट डिवीजन आई और उसी फर्स्ट डिवीजन के कारण वह बड़ी अच्छी नौकरी में भी लग गई। यह सब उनकी दया, उनका प्रेम उनका आशीर्वाद ही है।

यह घटना सन् 1985 की है। अपने एक सत्संगी भाई की है जिनसे सभी भाई परिचित है। बनारस के रामनारायण जी जो डीजल इंजन के ड्राइवर थें गाड़ी लेकर छपरा जा रहे थे। अचानक उनकी लाइन पर दूसरी गाड़ी आ गयी। आपने देखा कि उनकी जान तो बचना असंभव है ऐसी दशा में आपने यही प्रार्थना की कि है गुरूदेव इन सवारियों की रक्षा कीजिए। ऐसा ख्याल करके आंखें बन्द कर ली दोनों इंजन आमने सामने टकराये पर आश्चर्य है कि किसी को भी कुछ चोट नहीं आई। यहां तक कि उनको भी नहीं लोग उन्हें शाबासी दे रहे थे कि इतनों की जान बच गई वे स्वयं तो अपने आपे में नही थे और पूज्य बाबू जी की दया का करिश्मा देख रहे थे।

रेलवे विभाग में जब किसी ड्राइवर से कोई एक्सीडेन्ट होता है तो उसे उसी वख्त नौकरी से निकाल दिया जाता है बाद में काफी सीरियस कार्यवाही होती है। विभागीय लोगों के कहने से आपने छुट्टी ले ली और पूज्य बाबू जी के पास गये सारी बातें बताई और कहा कि

कोई सजा न मिले इस कारण मैंने छुट्टी ले ली है। आपने कहा किस बात की सजा इतने आदमियों की जान बचा दी है सजा कैसी। उनकी अपार दया से छुट्टी के बाद उन्होंने ज्वाइन कर लिया और कुछ न हुआ जबकि विभागीय नियम के अनुसार बिना किसी सजा के रह जाना असंभव है पर जिन पर गुरू रीझे है उनकी रक्षा भी तो वह स्वयं ही करते है। राम नारायण जी का पूज्य बाबू जी बहुत प्रेम करते थे वह लोग भी उनके अनन्य प्रेमियों में से है। ईश्वर उनका प्रेम तथा उनकी दया हमेशा रखें।

अपार दया जिसको लिखते वख्त शरीर रोमांचित हो उठता है और उनकी शक्ति का भान होता है यही सच लगता है।

"अनहोनी प्रभु कर सकें, होनी हू टर जायें"

घटना इस प्रकार है पूज्य मदन भाई साहब के बेटे रमेश का मुकदमा चल रहा था उस मुकदमें में रंजिश की या किसी कारण पू. मदन भाई साहब का नाम डाल दिया गया जबकि कसूर किसी और का था उस मुकदमें में कोई संभावना ऐसी नहीं थी कि बिना सजा के छूट जाये पर यह आपकी दया थी कि छूट गये।

आप काफी परेशान थे रात को आपने ख्वाब में देखा कि दरवाजा आपके ऊपर गिर रहा है। दरवाजा काफी भारी और बड़ा था। तभी अचानक देखा कि पूज्य बाबू जी पूज्य लाला जी ने दरवाजा अपने हाथों पर रोक लिया और उन्हें निकाल दिया, और कहा जाओं बेटे तुम्हारा मुकदमा खत्म हो गया तुम छूट गये। मुकदमें की वजह से आप बहुत परेशान थे जज साहब ने उनकी सजा के आदेश कर दिये थे, मदन भाई साहब जो आपसे काफी प्रेम करते थे उन्हें याद कर रहे थे उसी समय अचानक जज साहब ने दूसरे जज को दिखाया उन्होंने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि केस कुछ है नहीं सजा कैसे हो सकती है सजा का हुकुमनामा फाड़ दिया गया और दूसरा टाइप किया गया और केस छूट गया। मदन भाई साहब बताते है कि जब वह कोर्ट में अन्दर गये तो अचंभे में पड़ गये ऐसा साफ लग रहा था कि कुर्सी पर जज साहब की जगह खुद पूज्य बाबू जी साहब बैठे है और उस दिन उनके साथ–साथ सारे मुकदमें छोड़ दिये गये। सबका भला कर दिया।

ऐसो को उदार जग माहीं,
बिन कारण जो द्रवे दीन पर

राम सरिस कोई नाहीं ।

जो उन पर विश्वास करता है उनकी हर घड़ी की हर क्षण को आप खबर रखते है और इतना ही नहीं स्वप्न में और संकेत से सब कुछ बता देते है बस भरोसा चाहिये।

मदन भाई साहब (बदायूं वाले) ने बताया कि एक बार आप बहुत बीमार थे तकलीफ कुछ ज्यादा हो गयी थी बदायूं के डाक्टर के इलाज से कुछ फायदा नहीं हो रहा था और आपकी दूसरी बेटी की शादी पास थी आप बहुत चिंतित और परेशान थे। रात में पूज्य बाबू जी के दर्शन हुए और उन्होंने साफ साफ निर्देश दिये कि लखनऊ दीन्नू के यहां चले जाओं ठीक हो जाओगे। आपने उसी समय निश्चित कर लिया और अखनऊ चले आये जबकि सब लोग बरेली की राय कर रहे थे क्योंकि वह पास था पर आप लखनऊ आये आते ही आप ठीक होने लगे।

यह उनका दया का उदाहरण है तथा इसी प्रकार एक बार पूज्य बाबू जी का निर्वाण का समय था। जिस दिन आपने महासमाधि लिया उसी दिन 4 बजे शाम को एक मिनट को मदन भाई साहब की आंख झपक गयी तो देखा कि आप आये है और कहा कि तुम भूल गये हम तुम सबको देखने आ गये। उनके इन शब्दों ने इतना असर किया कि आप उसी समय पूज्य भाभी को लेकर गाजियाबाद चल दिये और ठीक उस समय पहुँच गये जब आपको महायात्रा के लिए हम लोग घर से उन्हें (अर्थी) लेकर चले। घर के मोड़ पर ही आप मिल गये और उनका अंतिम दर्शन भी कर लिये और शामिल कारज हुए देखिये पाठक इसे क्या कहेंगे। अपने प्रेमी को खुद खबर कर दी इससे अच्छा उदाहरण क्या हो सकता है कि शरीर छोड़ने के बाद भी ऐसी दया ऐसा प्रेम जो बेमिसाल है।

एक समय की बात है सेवक गाजियाबाद में ही था दोपहर के समय डाक आई जिससे कुछ भाइयों की चिट्ठी मिली एक चिट्ठी बहुत ही सूक्ष्म रूप में लिखी गई थी और पोस्टकार्ड पर थी। आपने 2 या 3 चार बार उस खत को पढ़वा कर सुना। जब मैं दूसरे पत्र को खोलने लगा तो आप बोले रख दो बेटा यही लिखा होगा कि जमीन जायदाद, प्रमोशन वगैरह रख दो। इसके पश्चात आप नहाने चले गये आपके जाने के बाद मैंने लिफाफा खोला मैंने देखा कि सब यही बातें लिखी थी जो आपने बताया था। आपने लौट कर बताया कि बेटे खत लिखने वाले के

ख्याल का इतना असर होता है। यह आपकी एक नसीहत थी कि जो प्रेम लुटा रहा है दीन लुटा रहा है, और दुनियां भी संवार रहा है उससे फिर दुनिया की बातें लिखना बेअदबी है और यह उन्हें दुख देती थी।

आपकी अहैतुकी दया के जितने भी उदाहरण दिये जाये कम हैं क्योंकि हम लोगों का तो जीवन उनके दया और बुजुर्गो के आशीर्वाद से चल रहा है। न हम लोगों में कोई और विशेषता थी जितनी दया बुजुर्गो की, पूज्य ताऊ जी, एवं आपकी रहती है कि कभी कभी ऐसा लगता है कि हममे क्या है जो आप सब इतने मेहरबान है। हम लोग तो पूरी तरह उन लोगों का शुक्राना भी अदा नहीं कर पाते है।

घटना इस प्रकार है आपने मुझसे कहा कि लखनऊ में एक जमीन ले लो मकान बना लो बैसे तो यह घर तुम सबका है ही पर लखनऊ मेन लाइन पर है और पूरब के सत्संगियों का वहां आने जाने में आसानी होगी और बच्चों के पढ़ाई और सेटिलमेन्ट के लिए भी अच्छा रहेगा मैंने उनके कहने के बाद कई जमीनें देखी परन्तु कोई पसंद न आ सकी। हम लोग 85 के भंडारे पर गाजियाबाद गये। ख्याल के खिलाफ आपने पूछा जमीन कोई तलाश की। मैंने कहा अभी कोई ठीक नहीं मिल रही है आपकी उस वख्त नफासत की हालत थी कुछ झुंझलाहट में बोले तुम्हें जमीन ही नहीं मिलती सारी दुनिया को जमीन मिल जाती है। मैं चुप रहा। वहां से लौटने के बाद उनकी ऐसी दया हुई कि बिना किसी प्रयास के एक बहुत पुराने मरीज के जरिये जमीन मिल गई वह भी उसी दर पर जिस पर मैं खरीदना चाहता था इस जमीन का मिलने को मैं तो यहीं मानता हूँ कि यह उनका प्रसाद है। अक्टूबर में भंडारे से लौटा और नवम्बर मे जमीन मिल गयी, दिसम्बर में जमीन को खरीद भी लिया। यद्यपि मैं बलरामपुर अस्पताल में उस वख्त था और जहां काफी व्यस्त रहना पड़ता था परन्तु उसी व्यस्तता के समय में बिना छुट्टी लिये मकान अवाध गति से बनता रहा परन्तु मकान के बनते समय एक समय ऐसा आया कि पैसा बिल्कुल खतम सा हो गया। मैंने हर जगह से पैसा निकाल कर मकान में लगाया पर ऐसा लगने लगा कि मकान बनवाने के काम को रोकना पड़ेगा मैंने आपको खत लिखा आपने आदेशात्मक पत्र लिखा और कहा कि मकान के काम को बंद करने की कोई जरूरत नहीं है ईश्वर इन्तजाम करेगा। उनकी दया से और आशीर्वाद से उसी वख्त

पुलिस की भर्ती निकली और 5, 6 हजार रूपये मिल गये जिससे काम चल गया और फिर लोन मिल गया और मकान पूरा हो गया।

सन् 1986 में आप काफी गम्भीर बीमारी के बाद बहुत कमजोर थे आपके लिये लखनऊ गृह प्रवेश मे आना कतई सम्भव नहीं था और तकलीफ देह भी था मेरी उत्कृष्ट दिली इच्छा थी कि आप तशरीफ लाते परन्तु उनकी तकलीफ सोच कर बहुत जोर न दे पा रहा था। पूज्य सेठ भाई साहब का मैं बहुत दिन से आभारी हूॅ जिन्होंने पूज्य बाबू जी से यहां आने का अनुरोध किया। आपने केवल मेरी इच्छा की खातिर इतनी गरमी जून के महीने में तशरीफ लायें और आशीर्वाद दिया। दूसरे ही दिन आपने पूज्य चाचा जी महाराज की समाधि का प्रोग्राम बनाया और कहा कि दुनियादारी तो हो गई बेटे आये है तो आपको (पूज्य चाचा जी साहब) भी सलाम पेश करते चले और हम सब वहां गये। आपकी बड़ी दया थी और यह आपके सशरीर का अन्तिम दर्शन था समाधि का।

मैं बहुत चाह रहा था कि आप दो चार दिन रुकते क्योंकि थोड़ा आराम कर लेते आप नहीं माने और कहने लगे नहीं बेटे हमारा अब आखिरी समय है हमारा जाना ही मुनासिब है कहीं कुछ हो जायेगा तो लोग यही कह निकलेंगे कि मकान अच्छा नहीं है और तमाम कठिनाइयों में भी रिजर्वेशन हो गया और आप चले गये। यह आपका आशीर्वाद था। आपकी हर भविष्यवाणी सत्य हुई। यहीं सत्संग भी होता है और फतेहगढ़ जाने के लिये (जिस वर्ष मैं इस घर में आया हूॅ उसी वर्ष) से यहां पूरब के सब लोग इकट्ठे हो जाते है और यहां से बस द्वारा समाधियों पर जाते है। इसके अतिरिक्त जो बच्चों के सेटेलमेंट का आपने कहा था वह भी वैसा ही हुआ। मेरा बड़ा पुत्र अतुल यही सी.टी.आर.आई. में साइंटिस्ट के पद पर कार्यरत हो गया है। यह उनका ही आशीर्वाद है आपने कितने पहले यह बात कही थी कि जो बाद में सत्य हुई।

यह घटना इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है कि इस सिलसिले के बुजुर्गो का कश्फ बहुत ही जबरदस्त था। यह बरकत पूज्य बाबू जी में भी बहुत जबरदस्त थी। एक दिन हम लोग गाजियाबाद में थे। पूज्य बाबू जी ने हम लोगों से सुबह ही कहा कि ऐसा लगता है कि कोई शख्स पूज्य लाला जी साहब से सम्बन्धित या उनकी निस्बत वाला जा रहा है। आज सुबह से ही आपकी बहुत जबरदस्त मौजूदगी मालूम हो रही है यह

आपने कई बार दोहराया और शाम को उनके पोते श्री दिनेश जी तशरीफ ले आये। वैसे भी कई बार आप कह उठते थे कि लगता है बनारस से कोई आ रहा है या फला जगह से कोई आ रहा है और वह बिलकुल सच निकलती थी।

ऐसी ही एक घटना की याद मुझे इस प्रसंग में आ रही है। एक बार पूज्य ताऊ जी महाराज पूज्य बाबू जी हरी भाई साहब सेठ भाई साहब मैं तथा एक दो और कोई भाई भोगांव मौलवी साहब के यहां गये। उनके शिष्यों ने बताया कि जनाब बहुत देर से कह रहे थे कि लगता है कि आज मुन्शी जी के कोई लोग आ रहे हैं जिनकी खुशबू यहां तक आ रही है ओर थोड़ी देर में आप लोग पहुँच गये। यह ध्यान देने की चीज है कि इतनी जबरदस्त कश्फ और निस्बत इस सिलसिले में चली आ रही है।

आपके एक बहुत प्रिय और पुराने सत्संगी थे काफी दिनों तक उन्होने आपका सत्संग लाभ उठाया परन्तु किन्ही कारणों से आपने आना छोड़ दिया पूज्य बाबू जी को इसका बड़ा दुख था परन्तु बहुत कहने के बाद भी यह अपने बात पर ही डटे रहे और सिद्धान्त में कोई समझौता न कर सके। ऊपर से देखने से शायद उस समय भाइयों को पूज्य बाबू जी का रवैया कुछ सख्त लगा हो। पर कुछ बरसों बाद आप बहुत बीमार पड़े बहुत निदान करने पर भी कुछ स्वाथ्य लाभ नही हो पा रहा था। पूज्य बाबू जी को उनकी बीमारी की सूचना मिली आपने उनके लिये बिना किसी के कहे गुप्त रूप से दुआ की और प्रसाद में सेब आपको भेजते थे। उस समय सेवक पूज्य बाबू जी से मिलने गाजियाबाद आया था मैंने अपने छोटे भाई बब्बू से पूछा कि पढ़ाई कैसी चल रही है। उसने बताया क्या करें भाई साहब मुझे तो प्रसाद लेके हापुड़ जाना पड़ता है। देखने में यह बात सरल लग सकती है पर कौन ऐसा दयालु होगा जो अपने बेटे की पढ़ाई का हरजा कर के अपने पैसे खर्च कर के दूसरे उस व्यक्ति की इतनी चिन्ता करेगा जो उनके पास आते तक नही थे पर उनके प्रति उनका प्रेम वैसे ही बना रहा था।

दिलदार नगर के डा. एस.एन.राय (गन्ना विभाग) लखनऊ से गोरखपुर जा रहे थे। बस्ती के करीब आपकी कार का बहुत भयंकर एक्सीडेन्ट हुआ। जैसा गाड़ी बहुत क्षतिग्रस्त हो गई। जिस तरह गाड़ी को क्षति पहुँची थी और जैसी दुर्घटना हुई थी उससे तो लगता था कि आपको बहुत चोट लगनी चाहिये थी। पर उस के हिसाब से आपको

कुछ चोट नही आई थी पैर की हडडी टूटी अवश्य थी पर वैसा कुछ नही और जगह बहुत मामुली चोटें थी ईश्वर की बड़ी दया थी। गोरखपुर अस्पताल में पट्टी आदि हो गई थी। आपने बताया की उन्हें पता ही चल पाया कि कैसे इतनी गम्भीर दुघर्टना हुई उन्हें तो लगता था कि किसी ने एक दम उठा कर हटा लिया।

राय साहब ने किसी के समझाने से पूज्य बाबूजी को खत लिखा। सेवक उस समय वहीं था आपने उसमें यह पूछा था कि लोग बताते हैं कि मुझे कम्पनशेसन मिल सकता है जैसा आप कहें। आपको यह बात बिल्कुल अच्छी नही लगी और नागवार गुजरी आपने कहा कि देखो बेटे जिस ईश्वर ने इतनी खैर की दया की और जान वख्श दी उसके शुक्राना में एक शब्द भी नही लिखा और कम्पनशेसन की बात लिखी है उस परमात्मा ने जिसने जान बख्शी उसने तो कोई कम्पनशेसन नहीं मांगा और चुप हो गयें। आपने उनके पत्र का उत्तर दिलवा दिया और कहा ''बेटे यह बेएतकादी लोंगो से मिलने का असर है। इस तरह नसीहत कर दी कि जिन्हें परमात्मा की दया से ज्यादा दुनिया का ख्याल बना रहता है उनसे मिलना जुलना ठीक नहीं उनके ख्याल का ऐसा बुरा असर पड़ता है कि अच्छे आदमी भी राह से भटक जाते है। ईश्वर जिसकी लाज रखे।

यह घटना इस बात की साक्षी है कि आप साये की तरह सब पर दया करते थे हर चीज का ज्ञान था जैसे खुली किताब देख रहे हो सब चीजे इशारों में बताते थे हर घटना मेरे पुत्र अतुल के जीवन की है उसी के शब्दों में लिख रहा हूँ।

''मैं वर्ल्ड क्लीनिकल फारमाकोलोजी में अपना रिसर्च पेपर पढ़ने के लिए 18 जुलाई 1986 को स्टोक होम जो कि स्वीडेन में है, वहां गया था। मुझे वहां से 2 अगस्त को लौटना था, मैं सुबह 10 बजकर 40 मिनट की फ्लाइट पकड़ने के लिए अपने होटल जार्किन से 6.50 बजे पर निकल पड़ा। रास्ते में बहुत तेज बारिस होने लगी। मेरा टेक्सी वाला गाड़ी तेज चला रहा था तभी एक पुलिस वाले ने उसकी गाड़ी रोक दी। मेरे तमाम आग्रह करने के बावजूद पुलिस वाला नहीं माना। काफी देर बाद मेरे उससे बार–बार आग्रह करने एवं एअर टिकट दिखाने पर उसने बड़ी मुश्किल से जाने दिया। टाइम बहुत कम रह गया था वहां से एअर पोर्ट 85 किमी था। अतः मेरी फ्लाइट छूट गयी। मैं बहुत ही परेशान था, क्योंकि मुझे लन्दन से कनेक्टिव फ्लाइट इण्डिया के लिए पकड़नी थी।

मैने एअर लाइन आफिस में जाकर प्रार्थना की तो उन्होंने मुझे दूसरी फ्लाइट से जाने के लिए कहा मेरे लिये इण्डिया की कनेक्टिव फ्लाइट करा दी, मेरी पहले वाली फलाइट जो कि छूट गई थी उसी फलाइट के हिसाब से बब्बू चाचा, पंकज दादा, बेबी जाने के लिए तैयार हुए और परम पूज्य बाबा जी से पूछा की हम लोग अतुल को लेने दिल्ली पोर्ट जा रहे हैं। उन्होंने उन लोगों से कहा कि वह तो कल आयेगा। बब्बू चाचा जी ने प्रोग्राम दिखाते हुए कहा उसका आज ही आने का है, इस पर उन्होंने पुनः कहा कि बेटा रे अतुल कल आयेगा। परन्तु वह तीनों शाम को ही दिल्ली एअर पोर्ट पहुँच गये उधर मैं स्वीडेन से चल कर लंदन आया सुबह जब मैंने न्यूज पेपर देखा तो उसमें थाई एअर वेज जिसमें मैं आने वाला था, वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। और उसमें कोई भी जीवित नहीं बचा था यह खबर जब अनमोल को नेशनल हेरल्ड में मिली तो उसने लन्दन के रियटर एजेन्सी को फोन करके पूछा उसने लिस्ट देखकर बताया कि उस प्लेन मे कोई इण्डियन नही मरा था। लेकिन एक इण्डियन था डा. कुमार ए. जिसने कि फ्लाइट बोर्ड नहीं किया मैं पूज्य बाबा जी के कहने के अनुसार दूसरे दिन ही भारत आ पाया। बब्बू चाचा, पंकज दादा, बेबी ने सारी रात एअर पोर्ट पर ही बिता दी। सुबह 11 बजे मेरी फलाइट दिल्ली पहुँची बब्बू चाचा बहुत गुस्सा थे। मैंने पहुँच कर उनको पूरा वृतान्त सुनाया तो उन्होंने बताया कि पूज्य बाबा जी के बार–बार यह बताने पर कि वह कल आयेगा, फिर भी हम तीनों दिल्ली एअर पोर्ट आ गये थे। जब मैं गाजियाबाद पहुँचा तो पूज्य बाबा जी पूजा कर रहे थे। मैंने जा कर उनके पैर छुए तो उन्होंने बहुत गौर से देखा और कहा कि बेटा तुम्हे ज्यादा तकलीफ तो नही हुई और बहुत सरलता से बोले कि चलो सब ठीक है। और बब्बू चाचा से मुझे प्रसाद देने को कहा। यह मेरे बाबा जी की ऐसी दया थी कि मैं बच गया और विदेश में जहां मैं किसी को जानता भी नही था वहां एक अनभिज्ञ भद्र पुरुष जो एअर वेज के आफीसर्स से मेरे लिये जोर शोर से सिफारिश की जिससे मुझे लन्दन तक तथा वहां से कनेक्टिंग फलाइट भी दिला दी। सोचने की बात यह है कि मेरे बाबा जी की दया ही थी नही तो इतनी दूर परदेश में जहां मैं किसी को जानता नही था और न ही मेरे पास इतने पैसे ही थे कि टिकट ले सकता कौन मेरी मदद करता और क्यों करता। उस दिन मैं अपने बाबा जी को जान पाया कि वह क्या हैं।

एक भाई जो नये नये आये थे वह केवल 2–3 बार पूज्य बाबूजी से मिले थे। यद्यपि आप बहुत जगह घूमे भी थे और कई भाषाओं और साहित्य का अच्छा ज्ञान भी रखते है भक्ति साहित्य व अध्यात्म सम्बन्धी बहुत सी ऊँची ऊँची पुस्तकों का अध्ययन भी किये हुए है सिलसिले की भी बहुत सी पुस्तके परम पूज्य डा. चर्तुभुज सहाय जी द्वारा लिखित भी पढ़े थे। वह पूज्य बाबूजी से मिलने लखीमपुर के एक भाई के प्रेरणा से 15.11.86 को गये उन्हें आप का सानिध्य एक अजीब आनन्द दायक प्रतीक हुआ और वह उनके आर्कषण से बँध से गये थे। मैं उनकी घटना जैसा उन्होंने ने मुझे बताया मैं लिख रहा हूँ।

वे परम सत्य पूज्य बाबूजी से मिलने फरवरी 87 में गये थे आपकी चौथी भेंट थी गाजियाबाद जाने से पहले अनेक बाधायें आयी थी परन्तु भावना वेग के कारण वे सबको पारकर गाजियाबाद पहुँच गये। उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि पूज्य बाबू जी उन्हें अपनी ओर खींच रहे है। 6 बजे सुबह पूज्य बाबू जी के घर पहुंचे और तुरन्त ही आपने उन्हें अन्दर बुलाकर स्नेह से चाय आदि पिलाई तथा खीरी के अन्य सभी भाइयों का हाल पूछा। आपने कहा कि "प्रातः 4 बजे से 8 बजे तक समय भजन के लिये सर्वोत्तम है इस समय सन्त पुरुष आकाश मण्डल मे विचरण करते है और सच्चाई से साधना करने वालों को बड़ी सहायता और आशीर्वाद देते है"। प्रोफेसर साहब ने सन्तमत साधना में पढ़ा था कि सन्त के दोनों भौओं को बीच में देखने से उनके अन्दर से जो सत किरण अमीरस निकलता है उससे साधक को बहुत लाभ होता है। इसके कारण आप बराबर भौहों के बीच एक टक देखते रहें। परन्तु पूज्य बाबू जी आत्मविभोर हो कर ध्यान में मग्न हो गये थे। वे भौहों के बीच देखते रहे उन्हें उससे असीम आनन्द भी मिल रहा था। पूज्य बाबू जी का मौन एवं ध्यान करीब 8 बजे ही टूटा बातों का क्रम जारी रखा। प्रोफेसर साहब ने शुक्ला जी की प्रसंशा में कहा कि वो दो चार जिलों में सबसे अच्छे आदमी है। उसके उत्तर में बाबूजी ने कहा "आप कहते है शुक्ला जी दो चार जिलों मे सबसे अच्छे आदमी है उनसे कह दीजिये कि साधना में भी इसी प्रकार अपना यश बढ़ायें"। और हँस दिये। प्रोफेसर साहब बहुत साफ दिल इन्सान हैं उन्होंने देखा कि पूज्य बाबूजी अकेले है तो अपने मन की बात कह डाली। "बाबूजी मैं भी बहुत दूर से आया हूँ आप भी बहुत वृद्ध है और आपको लोगों से मिलने जुलने में बहुत कष्ट होता है आप ऐसा क्यों न करें कि एक ही बार में मेरा पूरा काम बन जाये।" ये सुन कर आप बहुत देर तक हँसते रहे फिर रुक कर

सारगर्भित बातें बतायी "अगर मैं ऐसा न करता तो आप आज आते कैसे बाबूजी। ज्ञान देना तो एक सेकेन्ड का काम है परन्तु ज्ञान की अधिकारी होना चाहिए। आप जानते है जब ईसा मसीह को सूली दी जा रही थी तब ईसा मसीह सूली देने वालों के लिए भगवान से प्रार्थना कर रहे थे। हे– परमात्मा ये अज्ञानी है इन्हें क्षमा करना परमार्थ में इतना विनम्र होना चाहिए। यदि वे क्रोध प्रदर्शित कर देतें मतलब यदि क्रोध प्रदर्शित कर दे तो सब पटरा सर्वनाश हो जाता। अध्यात्म के लिए इतनी विनम्रता चाहिये कि यदि अपने लड़का भी परमात्मा के ज्ञान का अधिकारी नही है तो उसे भी सन्त कुछ नही देते हैं। सन्त तो देना ही चाहता है देने के लिए तैयार बैठा है कोई उस चीज का कद्र करने वाला मिले तो परन्तु अधिकारी पुरूष दिखाई नही देता है। सन्त तो हर पल सच्चे प्रेमी के लिए तैयार बैठा है। अधिकारी प्रेमी को देखकर उसे बेहद प्रसन्नता होती है।" बातों के सिलसिले में उन्होंने बताया कि वे फतेहगढ़ भी गये थे पर वहां बड़ी भीड़ थी अपने फौरन मुखातिब होकर पूछा कितनी भीड़ थी प्रोफेसर साहब ने कहा करीब एक या डेढ़ हजार आदमी जरूर होगें। पूज्य बाबू जी की मुद्रा गहन हो गयी और वे कहने लगे थे "लाला जी रूहानियत के भण्डार थे वे कुछ और ही चीज थे। दूसरा और उनकी कोई बराबरी नही कर सकता वे बेजोड़ थे। इस सिलसिले में पूज्य लाला जी के समय से कोई चार पांच लाख लोग है आप कुदरती सन्त थे।

पूज्य बाबू जी चुप हो गये और कहने लगे अब मुझे Strain (मेहनत) पड़ता है। प्रोफेसर साहब ने बहुत सरल भाव से पूछ लिया कि बाबू जी आप तो यहां अन्दर बैठे है पूजा तो बाहर हाल में हो रही है तो थकान कैसे हो जाती है। बाबू जी ने उत्तर दिया पूजा बाहर होती है परन्तु में अपनी इच्छाशक्ति के साधक को तवज्जोह देता रहता हूँ और उन्हें ऊपर उठाता रहता हूँ। इतवार को तो बहुत थकान हो जाती है। मेरे दो लड़के एक लखनऊ और दूसरे मेरठ में है बहुत अच्छे निकल गये है अन्यथा आगे सत्संग चलना मुश्किल हो जाता।

पूज्य बाबू जी ने पूज्य लाला जी महाराज के ही लिये कार खरीदी थी। यह उनकी गुरू भक्ति गुरू प्रेम का दर्शन कराने वाली घटना है। इस का पूरा वृतांत पाठक पहले पढ़ चुके हैं। आप कार लाये और उसमें आपने पूज्य लाला जी महाराज, पूज्य जिज्जी (माता जी) तथा कमला बहन को बिठाया था और बड़े खुश हुए थे। इस का जिक्र पूज्य लाला जी साहब ने अपने दस्ते मुबारिक से अपनी पूज्य डायरी में लिखा है। पूज्य लाला जी महाराज के पोते श्री दिनेश जी ने जब फोटो स्टेट

करवा कर आपको डायरी का वह पन्ना भेजा तो आप प्रेम विव्हल हो गये। आंखों में प्रेम के आंसू भर गये कि उनके डायरी में मेरा नाम लिखा है। उसको बार बार पढ़ कर प्रेम से भर जाते थे और उनकी विरह वेदना बढ़ जाती और प्रेम मग्न हो जाते थे।

"श्याम कंज लीलागिरि सोई
सोई प्रेम जाने जन कोई"
"मुर्ती राम मन श्याम समानी
झरि झरि चुवै नयन सो पानी"

आप स्व. अखिलेश भाई साहब के पुत्र विनय का हर तरह से बहुत ख्याल रखते तथा हर संभव चेष्टा यही करते थे कि उसे किसी तरह की तकलीफ भी न हो और वह सच्चे रास्ते पर भी चले।

विनय ने सेवक को बताया था कि एक बार वह गाजियाबाद पू. बाबू जी से मिलने गये। पूज्य बाबू जी ने कहा बेटे सत्संगियों का पैसा अपने पढ़ाई और (जिस्म) खाने में कभी मत लगाना। अक्सर देखने में आता है कि वह पैसा अच्छी कमाई का नहीं होता है और वह लोग इस ख्याल से गुरू दरबार में दे देते है कि वह शुद्ध हो जायेगा पर जिसकी बुनियाद की नियत ही खराब है वह कैसे ठीक हो सकता है। उसी समय 1200/– देते हुए कहा बेटे यह मेरी पेन्शन के रूपये है इससे अपनी परीक्षा फीस जमा कर देना। केवल उपदेश देना तो आप जानते ही नहीं थे जो कुछ करवाना चाहते थे पहले उसे स्वयं कर के दिखा देते थे।

गत सन् 1993 मे जब विनय की भीषण दुर्घटना हुई और वह बत्रा अस्पताल दिल्ली में भर्ती हुये। उसने मुझे बताया कि जब वह सचेत हुआ तो सबसे पहले उसे पूज्य बाबू जी का वही ख्याल बार बार टकराने लगा और ठीक होने पर जो कुछ पैसा उसके पास सत्संगियों का था उससे फतेहगढ़ में लैट्रीन आदि बनाने का निर्णय ले लिया है। सदाचार का यह पाठ आपने विनय को इतने सीधे शब्दों में समझा दिया। इतनी बड़ी बात को इतनी छोटी और सरल भाषा में समझा देना जो कि अंतरमन में उतर जाती थी यह आपकी एक विशेषता थी।

नोटः– यह घटना नरेन्द्र (भैया) ने बताई जो उनके अन्तरयामी होने का प्रमाण देती है। जैसा उसने महसूस किया था वैसा उसने बताया घटना इस प्रकार है। (उसी के शब्दों में)

आपके समाधिस्थ होने के 2 या 3 दिन पहले पूज्य बड़े दोनो भाई साहब देहली (पूज्य जीजी जी के स्वर्गवास हो जाने के कारण) चले गये थे तब पटना के सिविल सर्जन डा. साहब पूज्य बाबू जी को देख

रहे थे। दोपहर का समय था मैं मशहरी पर ही बैठकर आपके हाथ व पैर दबा रहा था दबाते समय ही प्रेम के वश में हो जाने से मेरे मन में यह विचार बहुत जोरों से उठा कि पूज्य बाबू जी की बीमारी ईश्वर मुझे दे दे और उन्हें ठीक कर दे आपने तुरन्त आंखें खोल दी और पूछा क्या बजा है मैंने उन्हें बताया कि साढ़े तीन मेरा ख्याल फिर वहीं बार बार होने लगा। आपने कहा ''उठ जाओ'' परन्तु मैं पैर दबाता रहा कुछ ही क्षणों बाद फिर आपने कहा ''उठ जाओ यहां से'' इस बार आपके कहने का भाव मुझे कुछ फर्क सा लगा मैं तुरन्त उठ गया वहां से तबियत फिर उनके पास जाने को करने लगी। मैं फिर करीब 6–7 बजे जब आपके हाथ दबाने लगा तो मेरी तरफ तुरन्त आंखें खोंलकर ऐसा देखा जो मैं आज तक भूल नहीं पाया हूँ और कहने लगे कि ''वापसी सबकी ..... विचार ठीक नही ...... खुश है ..... सन्त (यह शब्द आप बहुत धीरे धीरे बोल रहे थे पूरा वाक्य समझ नहीं सका आप तो अन्तर्यामी थे) तुरन्त मेरे विचार पढ़ लिये और वो नहीं चाहते थे कोई ऐसा विचार रखे परन्तु प्रेमवश यह विचार प्रबल था तथा ऐसा ही वाक्या रात करीब 10.30 बजे हुआ आपने तुरन्त ही फिर कहा ''उठो जाओं सोओ जाके'' यह उनका प्रेम था।

नोट– इस प्रकार के हजारों उदाहरण हर भाई के पास है। यह आपके दया एवं अन्तर्यामी होने का ज्वलंत उदाहरण है।

अभी तक जो उपरोक्त घटनाओं का वर्णन किया है वह उनके जीवन काल की है परन्तु शरीर छोड़ने के बाद भी आपकी दया हम सब पर बराबर उसी तरह बनी हैं। आपके शरीर छोड़ने के लगभग एक वर्ष बाद कुछ ऐसी विभागीय परेशानियों में फंस गया कि बहुत चाहने पर भी झंझट खत्म नहीं हो रहा था और उसी समय छोटे भाई नरेन्द्र की भी नियुक्ति के सम्बन्ध में भाग दौड़ की वह भी काफी परेशान था उस समय हमारी पूज्य माता जी हमारे पास लखनऊ में कुछ 7–8 दिन के लिए रुकी थीं आपने एक दिन कहा कि ''अभी अभी सपने में तुम्हारे बाबू जी आये थे मैंने कहा कि तुम तो चले गये हमारे दीन्नू और भैया देखो दोनों कितने परेशान हो रहे हैं। पूज्य बाबू जी हँसकर बोले सब ठीक हो जायेगा। दीन्नू को लखनऊ छोड़ना पड़ेगा कुछ काम है भैया का भी सब ठीक हो जायेगा कह कर चले गये। इस प्रकार ही हुआ। मेरे छोटे भाई नरेन्द्र का भी सब काम ठीक हो गया और मेरा भी ट्रान्सफर हो गया परन्तु हमारी माता जी हम सब का साथ छोड़ गयी। मेरा तबादला लखीमपुर खीरी हो गया जहा मैं अधिकतर अकेला रहा और पूजा और सत्संग दोनों के दृष्टि से यह बहुत अच्छा कटा।

डा. एस.एन. राय के आने के बाद यहां सत्संग में कुछ शिथिलता आ गई थी मेरे जाने से वहां पुनः एक लहर पैदा हो गयी। कुछ और भी सत्संगी भाई आने लगे। दुनिया की दृष्टि से भी जगह बड़ी अच्छी साबित हुई और मेरे मकान का उपरी हिस्सा बन गया। यह सब आपकी दया थी।

मैं गाजियाबाद गुरू पूर्णिमा के सत्संग भंडारे में गया हुआ था। यह घटना सन् 1991 की है हाल के कमरे में पूजा हो रही थी। हालत बहुत अच्छी चल रही थी उसी समय देखा की पूज्य बाबू जी आते है और मेरे पुत्र अतुल के माथे पर टीका काढ़ देते है। उसी दिन अतुल का सी.डी.आर.आई. में इन्टरव्यूह सांईटिस्ट के पद हेतु था। इनका सलेक्शन बहुत कठिन था क्योंकि बाहर से उससे बहुत अधिक योग्यता और अनुभव के लोग विदेश से भी आये थे। देहली से जो विशेषज्ञ पैनेल में आई थी उनका स्वयं का भी एक व्यक्ति था। परन्तु आपकी ऐसी दया हुयी कि अतुल जो उम्र अनुभव सभी में कम था उसका ही चयन हो गया। मैं गाजियाबाद से लौट कर सुबह आया तो मैंने अपनी पत्नी से कहा कि अतुल का सलेक्शन हो जाना चाहिए जिस पर आशा ने बताया कि कोई उम्मीद नहीं है अतुल को खुद भी कोई उम्मीद नहीं थी परन्तु करीब 11 बजे दिन को डा. रे का फोन आया जिन्होंने अतुल को इस शुभ समाचार की सूचना दी। गो कि मुझे पूरा विश्वास था कि अतुल का चयन जरूर हो जायेगा क्योंकि मैने बहुत साफ देखा था और पूज्य बाबू जी को बहुत प्रसन्न देखा था। यह उनका आशीर्वाद का ही फल है।

पूज्य सेठ भाई साहब की पुत्री बेबी (नमिता) को किसी दवाई का ऐसा भंयकर रियेक्शन हुआ कि उसकी तबियत बहुत खराब हो गयी। गले की आवाज एक दम चली गयी थी। पूज्य भाई साहब मेरठ में थे जब कुछ समझ नहीं आया तो आल इण्डिया इन्सटीट्यूट दिल्ली में भरती करा दिया गया। तमाम जांच करने पर भी कुछ न निकला। बड़ी परेशानी थी। सभी लोग बड़े परेशान थे। पूज्य भाई साहब भी काफी परेशान थे। बेबी ने सपना देखा कि पूज्य बाबू जी लाला जी साहब के साथ आये हैं और बेबी से कहते है कि कल से तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगी और हाथ पकड़ कर चला दिया। सपना बेबी ने लिख कर पूज्य भाई साहब को बताया और बिल्कुल ऐसा ही हुआ कि वह दूसरे दिन बिल्कुल ठीक हो गई वहां के डाक्टर आदि भी ऐसा सुधार देख कर अचंभित हो गये। यह उन्हीं का आशीर्वाद है।

"काह कमी जाके राम धनी"

पूज्य भाई साहब बुलन्दशहर में पोस्टेड थे उनकी बेटी बेबी की शादी थी। शादी में कुछ ऐसी रौनक थी जिसका बताना मुश्किल है। वातावरण बहुत अच्छा था। दिल में एक अजीब सी खुशी महसूस हो रही थी। शादी बहुत सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुई बरकत इतनी कि जैसे लग रहा था कि हर चीज जितनी खर्च हो रही थी उतनी ही बढ़ रही थी। मेरी पत्नी आशा ने बताया कि स्टोर जहां मिठाई बगैरह थी (उसका चार्ज उसके पास था) उसमें से सब चीजें खुले हाथों बांटी गई थी जब बेबी विदा होने लगी और कार चली गयी तभी हमारी माता जी एक दम बेहोश हो गई। जब वह सचेत हुई तो उन्होंने बताया कि तुम्हारे बाबू जी आये थे और कहने लगे कि चलो बहू जी बेटी अब दूसरे घर की हो गई। आपकी दया और आशीर्वाद है। हम लोगों को तो प्रतिपल बुजुर्गो का ही तो सहारा हैं। उन्होंने दया कर हम लोगों की यह जिम्मेदारी पूरी कर दिया।

यह घटना समस्तीपुर के एक भाई श्री राजकिशोर जी ने बताई कि उनकी पत्नी बहुत अधिक बीमार हो गई। बचने की कोई उम्मीद नहीं रह गई थी। डाक्टर भी निराश से हो गये थे। अस्पताल में भरती थी और बिल्कुल बेहोश थी और हालत बहुत नाजुक थी वह अस्पताल के बाहर बैठे बहुत प्रार्थना कर रहे थे परन्तु कुछ सुधार नहीं हो पाया था। घबराहट में आप बहुत से अपशब्द कहने लगे कि जब मेरी बीबी मर जायेंगी तब आप क्या दया करेंगे। उसी के कुछ क्षणों के बाद एक स्टाफ नर्स ने आकर सूचना दी कि अब मरीज को होश आ गया है। जब वे अन्दर गये तो पत्नी ने बताया कि गुरू जी आये थे और हमारे सर पर हाथ फेरा और कहे कि उठो बेटी परेशान मत होओ और उनकी दया से वह अच्छी हो गयीं। श्री राजकिशोर जी को मन में बड़ा पश्चाताप हुआ कि उन्होंने आपकी दया का भरोसा नहीं किया और ऐसे अपशब्द तक कह डाले वह तो अपने हर सत्संगी प्रेमी भाई को दया करने को तत्पर है कभी तो हम सब में ही है भरोसे की, विश्वास की और प्रेम की वह तो दीन जनों के दुख हरण को तैयार बैठें है।

"दीनन दुःख हरणा नाथ
भक्तन हितकारी ।।"

बनारस के श्री राम नारायण जी कहीं जा रहे थे वे तो पैदल ही थे परन्तु पीछे से एक मारूति कार ने उनको टक्कर दे दिया वह बेहोश

होकर सड़क के एक तरफ गिर गये। सर में हाथ तथा शरीर में कई हिस्सों में चोट तो लगी थी पर जैसी टक्कर हुयी थी वैसे न तो कोई हड्डी टूटी थी न तो कोई बड़ी चोट थी आप बताते है कि बेहोशी की हालत में आपको ऐसा लगा कि वह नहीं पूज्य बाबू जी गिर गये है और उनको चोट लग गयी है यह ख्याल आते ही आपको होश आ गया। आप एकदम उनको उठाने के लिए खड़े होने पर उन्हें यथास्थित का ज्ञान हुआ और हाथ पैर झाड़ पोंछ कर घर आये यह केवल उनकी दया थी जिससे वह बाल–बाल बच गये। नहीं तो मारूति कार की टक्कर लगने पर भी कुछ न होना अपने में एक चमत्कार ही है।

पूज्य बाबू जी महाराज के श्री चरण

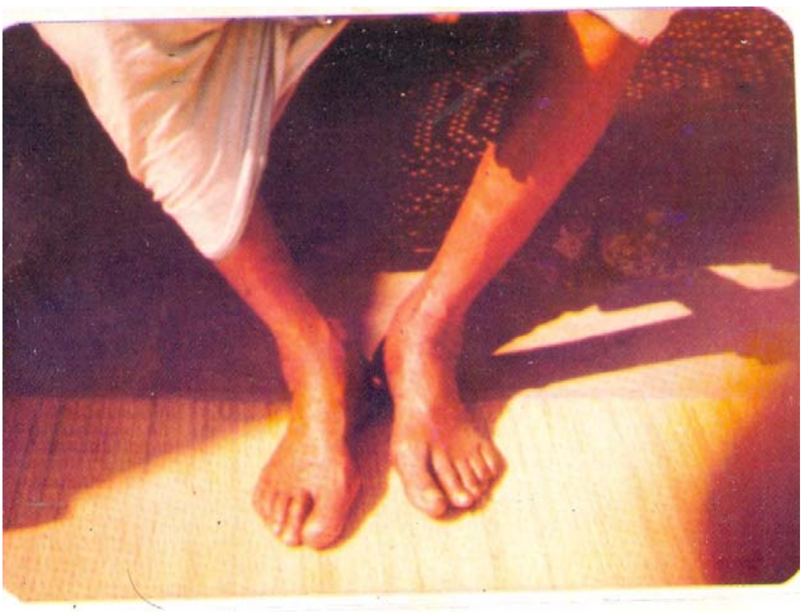

बिन गुरू भव निधि तरा न कोई
यदि विरंच शंकर सम होई।

''समाधि''

परम पूज्य बाबू जी महाराज

7, रामाकृष्ण कालोनी
गाजियाबाद

सोये पड़े हो चैन से, ओढ़े कफन मजार में,
सिजदा किया मैंने आज जो, धीरे से मुस्कुरा दिये?
बिजली तड़प कर गिर पड़ी, मेरा सकूँ जला दिये?
हमारा तुम्हारा फैसला, होगा खुदा के सामने
तुम जब आये सामने मेरे, मेरा ही सर झुका दिये।

महा निर्वाण परम संत पूज्य बाबू जी महाराज

सन् 1981 से बीमारियों का जो सिलसिला चला उससे आपका शरीर बराबर कमजोर होता जा रहा था परंतु बराबर बीमारी और क्षीण होती शारीरिक दशा से आप बिल्कुल परेशान नहीं थे। कई बार हम लोगों को परेशान देखकर सांकेतिक भाषा में यह कहते थे ''सोना जितना तपाओगे उतना ही निखरेगा'' यह बीमारियॉ मेरे लिए ईश्वरीय देन साबित हुई हैं। मैंने उन सालों मे जो परमार्थी अनुभव लिए हैं और जो ईश्वर तथा बुजुर्गों ने सिलसिले के बरकत, अपने ही नहीं वल्कि दूसरे सिलसिले के बुजुर्गों की तथा अवतारों की अति दया रही वे बयान के बाहर है, इन्हीं सालों में मैंने पूज्य लाला जी महाराज के मिशन को ज्यादा से ज्यादा भूले भटके लोगों तक पहुँचाया है। उसी दौरान सत्संगी भाईयों की तादाद भी बड़ी है। दौराने बीमारी मे कुछ ऐसी दया बरसी है कि लोगों को मुझसे दीन व दुनिया के दोनों ही फायदे हुए और एक सेकेण्ड के लिए भी मैंने अपने बुजुर्गों से अलग नही पाया।

आप अकसर कहते थे उनकी वापसी तो 1974 में ही थी पर बुजुर्गों ने दया कर के उनकी उम्र बड़ा दी क्योंकि वह उनसे कुछ काम और कराना चाहते थे यह ख्याल उनको सदा बना रहा और वह अपनी बीमारी अपने गंभीर शारीरिक संकटों से बेपरवाह होकर आने वाले को चाहे वह अधिकारी हो या गैरअधिकारी यही कोशिश करते थे कि खाली न जाए, गंभीर कमजोरी तथा शारीरिक कष्ट के बाद भी आप ने इस दौरान काफी लोगो को दीक्षा दी जब भी पूज्य भाईसाहब और सेवक ने आपसे यह कहा कि थकान हो जायेगी आप आराम करे तो आपने यही उत्तर दिया ''जब इस शरीर को छोड़ना ही है तो जितना ज्यादा से ज्यादा काम हो जाए वही अच्छा है जितना भला हो जाए वही ठीक है।''

आपने सन् 1987 के भंडारे मे पूज्य सेठ भाईसाहब तथा सेवक को बुलाकर कहा कि यह उनका आखिरी भंडारा है लिहाजा वे चाहते हैं कि प्रत्येक सत्संगी भाई बहन उनके बच्चे उनसे अलग–अलग जरूर मिलें ताकि मैं सबको देख लूं और सबको देख मिललूं और सबसे यह भी

साफ साफ कह देना कि कोई यह न कह दे कि मैं इस वख्त सो रहा हूॅ या आराम कर रहा हूॅ जिसकी जब इच्छा हो आकर मिले पर बगैर मिले वापस न जाए भंडारे के तीनों दिन आप लोगों से मिलते रहे थे और उनको आशीर्वाद देते रहे थे।

सन 1985–86 के भंडारों मे विशेष रूप से यही विषय लिया कि मौत कैसे होती है। यह संकेत था पर भाई से सुनकर भी न जान पाए कि आप यह क्यों कह रहे है। इस विषय को बहुत संक्षेप मे समझाया।

मौत कैसे होती है

आत्मा की धार पैंरो की अंगुलियों से निकल कर गुदा चक्र पर आ जाती है उस समय हाथ पैंरो मे जबरदस्त पटकन पड़ती है जब आत्मा गुदा चक्र को छोड़ती है तो या तो टट्टी होना बन्द हो जाती है या बार बार होने लगती है। गुदा चक्र से आत्मा इन्द्री चक्र (मसाने) के मुकाम पर आती है तो पेशाब बन्द हो जाती है या ज्यादा होने लगती है उसके बाद आत्मा नाभी चक्र पर आकर रुकती है पेट फूलने सा लगता है, नाभी से आत्मा हृदय चक्र पर आती है। जब हृदय की गति रूक जाती है पर श्वांस चलता रहता है हृदय चक्र से होकर आत्मा कंठ चक्र पर रूकती है इसी को घर्रा लगना कहते है। कंठ चक्र आत्मा आज्ञा चक्र आकर ठहरती है और नीचे के तमाम हिस्से से जान निकल जाती है। आज्ञा चक्र पर आने से ऑखे पथरा जाती है सब लोग कहते है कि अब कुछ नही रहा इसी को डाक्टरी भाषा मे कहते कि रेफलेक्स खत्म हो गया है। यह मौत स्थूल की है। यही पर लोग मौत की घोषणा कर देते है। यह सब हालते दिखाई पड़ती है स्थूल की मौत के पश्चात् आत्मा सूक्ष्म केन्द्रों से होती हुई जिसकी जैसी स्थिति होती है कारण के केन्द्रों पर पहुॅचती है। जब सूक्ष्म के केन्द्रों को पार करती है तब सूक्ष्म की मौत होती है और आत्मा इच्छाओं और संस्कारों के अनुसार या तो पुनः शरीर धारण करती है या फिर कुछ दिन मृत्युलोक मे रहती है, यह चक्र बराबर चलता रहता है जब तक कि आत्मा कारण के सेन्टरों को पार कर ब्रह्माण्ड में लय नही हो जाती। आपने भंडारे मे तीनों ही दिन करीब–करीब यही समझाया ।

इसी प्रकार आपने अपने वापसी का पूरा संकेत सभी भाइयों को दे दिया था। आप अपने निर्वाण की तिथि तथा दिन सब जानते थे। अकसर कहते थे "मंगल हमारा बहुत कड़ा है" एक अजीब विचित्रता थी कि आप के सब ही काम मंगल को ही हुए। उदाहरणार्थ आपका जन्म, आपकी की दीक्षा, आपकी पूज्य लाला जी द्वारा पूर्ण इजाजत और महा निर्वाण भी मंगल को ही हुआ। आप के जन्म और निर्वाण का समय भी एक ही है। मंगलवार को 11 बजें दिन जन्म मंगलवार 11 बजे दिन को ही निर्वाण भी है।

1987 भंडारे के बाद आप बराबर कमजोरी और थकान महसूस कर रहे थे। 6 दिसंबर 1987 को सेवक को रीवर बैक कालोनी में गाजियाबाद से एक ट्रंककाल द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि पूज्यपाद बाबू जी की तबियत बहुत खराब है और तुरंत जो ट्रेन मिले आ जाये या हवाई जहाज द्वारा आ जाये। हम सब परिवार पंकज (सेवक का भतीजा) शुक्ला जी तथा अन्य दो भाई अविलम्ब उसी समय गाजियाबाद चल दिये। मन में एक अजीब तरह का ख्याल उठने लगा कि पूज्यपाद बाबू जी के दर्शन हो पायेंगे कि नहीं क्योंकि सूचना बड़े गंभीर स्थिति की दी गयी थी पर थोड़ी देर बाद मन स्वतः शांत हो गया कि नही ऐसा नही हो सकता है और परेशानी प्रायः समाप्त सी हो गयी। दोपहर मे दो बजे हम लोग जब गाजियाबाद स्टेशन पर पहुॅचे तो एक बार फिर वही ख्याल क्षण भर को आया फिर मन शांत हो गया। घर पहुॅचने पर वही शांत आकर्षक दर्शन जो हमेशा मिलता था मिला हम लोग आपके कमरे में गये आप बैठे चाय पी रहे थे और कोई तकलीफ नही थी बड़ा संतोष हुआ। सेवक ने पूछा "क्या बाबू जी तबियत आपकी खराब हो गयी थी" आपने फरमाया नही बेटे ऐसी कोई बात नही थी अब समय वापसी का आ गया है। इसीलिए चाहता हॅू कि तुम दोनों भाई जितना ज्यादा से ज्यादा मेरे साथ रह लो अच्छा रहे बेहतर तो यही है कि परिवार के सभी सदस्य कुछ समय मेरे साथ रहले फिर जैसी जिसको सुविधा हो वैसा करे। मैने तो टी0 ओ0 साहब (वाजपेयी जी) से तुम्हे बुलाने को कहा था मालूम होता है कि दूसरे शख्स ने जो खबर दी उसने अपनी तरफ से जल्द से जल्द आने को कह दिया। अच्छा ही हुआ आ गये, हमारे दिमाग से वह ख्याल जाता रहा और बड़ी खुशी हुई। आपके कमरे मे एक चारपाई मेरे लिए भी डाल दी गयी इससे पूर्व एक मशहरी जिस पर आप (पूज्य बाबू

जी) सोया करते थे और एक मशहरी जिस पर पूज्य सेठ भाई साहब सोते थे। अन्य सत्संगी भाई कमरे के बाहर सोते थे। अगर सोते थे तो जमीन पर बिस्तर डाल लिया करते थे।

आप नित्य 3 या 4 बजे के बीच सुबह उठ जाते थे। हम लोगों को भी उठा देते थे और फरमाते थे कि सिलसिले के सभी बुजुर्गों आये हुए हैं तुम लोग भी उठकर बैठ जाओ। 6 बजे करीब कह देते थे कि अब थक गये होंगे सो जाओ।

कमजोरी नित्य बढ़ती जा रही थी परन्तु डायबटीज ब्लड प्रेशर किसी भी बीमारी के चिन्ह नही थे। आपने कुछ दिन पहले हम लोगों से कहा था कि दुनियां मे ऐसे भी बहुत लोग जो लोग अनडायगोनोस्ट चले जाते होगें। उनके कहने का शायद यह अर्थ कि हम लोग परेशान न हो वह ऐसे ही बिना किसी बीमारी के ही जायेगें। ऐसा ही हुआ, इ0 सी0 जी0, एक्सरे, खून की जांच, पेशाब की जांच, सब एक दम सामान्य गो कि हम लोग अपनी दुनियाबी अकल लगाकर (मैं और पूज्य भाई साहब तमाम मशविरा करके) कुछ न कुछ दवाइयाँ उनको देते रहते थे।

दूध आपका बहुत प्रिय आहार था और दूध को सबसे अच्छी डाइट बताते भी थे। 9 या 10 दिसम्बर से आपने दूध पीना बिल्कुल बन्द कर दिया। और कहा छोड़ो सब इसको भी छोड़ों और फिर 29 ता0 तक दूध बिल्कुल नहीं पिया और बहुत कहने पर भी बेटे अब दूध की इच्छा नहीं तुम चाहो तो मौसम्मी का रस दे दो। यद्यपि सन् 1981 से पहले मौसम्मी का रस नही लेते थे क्योंकि आपका गला खराब हो जाता था और खांसी आने लगती थी।

बीमारी की खबर सभी भाइयों मे दूर–दूर तक फैल गई और बराबर सत्संगी भइयों का आना जाना लग गया। जब कोई भाई आता आखें खोलकर देख लेते थे और आशीर्वाद देकर हम लोगों से कहते कि चाय नाश्ते का बन्दोबस्त कर दें आपको इस बात का बहुत ध्यान रहता था कि कोई भाई घर से बगैर खाये न जाये यह आपका ब्रत था।

कटिया में आपके छोटे भाई स्व0 बाबूराम सक्सेना के ज्येष्ठ पुत्र (जिनके घर का नाम हब्बू था) श्याम बिहारी जी का 2 दिसम्बर को अचानक देहान्त हो गया। उनके देहान्त की सूचना हम लोगों ने या सोच कर आपको नहीं सुनाई कि आपकों दुख होगा। परन्तु आपने हम लोगों से अपने एक ख्वाब का जिक्र किया जिसने हम लोगों को हतप्रभ कर दिया।

आपने किन शब्दों का प्रयोग किया था वो तो ठीक–ठीक याद नहीं पर ख्वाब इस तरह बताया था, आज रात को ख्वाब में तुम्हारे बाबू चाचा तथा हब्बू को देखा कि दोनों बहुत साफ सुथरें कपड़े पहने हुये मेरे पास आशीर्वाद लेने आये हैं। मैनें यह भी देखा कि अपने कटिया में बहुत बड़ी कढ़ाई में पूड़ी बनाई जा रही है और बहुत से लोग खाना खा रहे हैं, फिर कुछ चुप रहकर बोले लगता है कि तुम्हारी चाची की मृत्यु हो गई है तो ईश्वर भला करें दोनों आत्माओं को शांति दें। उसी दिन चाचा जी की मृत्यु की खबर आई। हम लोगों के न बताने पर भी आप सब जाने गये थे।

ऐसा ही पूज्य जीजा जी के स्वार्गवास का हुआ। 15 दिसम्बर को आपने कहा सब आये हैं बत्ता (हमारी बड़ी बहन) नहीं आयी हैं उनके यहां सब ठीक हैं। हम लोगों ने आपसे कहा खबर कर दी है आती होंगी। आप कुछ देर बाद बोले आ जाती तो घड़ी टल जाती, 16 दिसंम्बर, 1987 को हमारे पूज्य जीजा जी श्वांस के रोग से पीड़ित हो गये और जी0 बी0 पंत अस्पताल दिल्ली मे भरती हो गये। इसकी खबर देवेन्द्र (उनके बड़े लड़के) ने फोन से दी मेरी पूज्य माताजी, पूज्य भाभी जी, छोटी बहन मेरी पत्नी, अतुल मेरे छोटे भाई लल्ला नन्हू एवं अन्य सभी सदस्य आपको देखने देहली चले गये। जीजाजी की तबियत धीरे धीरे ठीक होने लगी थी और वह पूज्य बाबू जी के दर्शन करने अपने पुत्र वम्मी की नई कार से आने वाले थे पू0 बाबू जी भी यही कह रहे थे। कि "बत्ता किसी परेशानी में हैं उससे कहला दो कि आ जाये" और वह भी आना चाहती थी परन्तु होनहार इतनी बलवान निकली कि 26 दिसम्बर 1987 दिन में 11 बजे उनका देहान्त हो गया सुबह फोन आया था सब चले गये थे केवल हम दो ही भाई रुके थे कि आपके आँख से आँसू लुढ़क गये और दुआ के लिये हाथ उठा लिये। मुंह से धीरे से कहा बड़ा ..... अनरथ हो गया, हम लोग देहान्त की खबर सुनकर पूज्य बाबू जी को डा0 कर्ण (पटना) साहब की देखरेख में छोड़कर देहली चल दिये। हमारा छोटा भाई भैय्या नरेन्द्र वहीं उनके पास रुक गया हम लोगों के जाने के बाद आपने डाक्टर साहब से पूछा कि सेठ दीन्नू कहां गये, आपने कहा वह लोग देहली किसी डाक्टर से आपके बारे में राय करने गये है आपने फिर सिविल सर्जन साहब डा0 कर्ण से कहा कि वे जहां भी हैं वे बड़े परेशान हैं। मेरे सामने बार–बार उनका चेहरा आ जा रहा

है। यह ठीक वहीं समय था जब पू0 जीजा जी का पार्थिव शरीर अंतिम संस्कार के लिये ले जाया जा रहा था।

आपने डा0 कर्ण साहब से कहा मैने सोसाइटी में हीर छोड़ रखा है और मेरे बाद यह दोनों भाई इसको अच्छी तरह संभाल लेंगे। आप सच्चे दिल से ईश्वर का नाम लेते इसके अलावा कुछ नहीं करना बाकी है सब में देख लूँगा एक आधे बातें आपने और कहीं पर डा0 साहब समझ में नही पाये क्योंकि आप बहुत धीरे–धीरे बोल रहे थे। पूज्य भाई साहब और मैं जब वापस आये और जैसे ही कमरे मे घुसे आंखें खोलकर यही कहा कि सब काम ठीक हो गया, हम लोगों खामोश रहे, गो कि हम लोगों ने यही बताया था पर वह तो सर्वज्ञ जाननहार थे सब जानते थे। यह दृष्टांत यहां लिखने का आशय था कि जब निर्वाण के केवल दो दिन बाकी थे इस समय भी आप वातावरण से अनभिज्ञ नहीं थे वरन ही छोटी से छोटी बात का ज्ञान उन्हें था हम लोगों ने यह दुखद घटनायें अल्पज्ञ होने के कारण उन्हें नही बताई थीं कि आपको दुख होगा। उन्होने पूज्य भाई साहब व सेवक को सब बता दिया कि उन्हें सब ज्ञात है वह तो अंतर्यामी थे, सब कुछ जानते थे।

15 दिसम्बर के बाद से आप हर दिन तारीख व समय पूछा करते थे। एक दिन टी0 ओ0 साहब बताते हैं कि जब आपने तारीख पूछी तो उन्होंने आगे की तारीख बता दी। आपने आंखे खोलकर उनकी तरफ देखा और कहां आपने क्या बताया। बाजपेई जी सहम गये और ठीक तारीख बता दी। आप अंतिम समय तक पूरे होश हवाश में थे। आप हर समय आंखें बन्द किये हुये ईश्वर के ध्यान में मगन रहते थे।

24 तारीख को शाम 5 बजे हम दोनों भाई तथा हमारी पूज्य माता जी छोटे पांचो भाई तथा सबके पत्नियां सबके बच्चे कहना शुरू किया। उस समय ऐसी हालत हो गई थी कि हम लोगों का सारा परिवार दुःख से विव्हल हो रहा था सबके आंखों से आसूं जारी हो गये थे और लग रहा था कि हमसे हमारी कोई बहुत प्यारी चीज छीनी जा रही है। आपने कहा कि बेटे समस्त परिवार व सत्संग की जिम्मेदारी तुम लोगों की है। तुम लोगों ने मेरी बड़ी सेवा की है मैंने अपने सब दुनियाबी फर्जयात जितना अच्छा हो सकता था पूरे किये। मैंने जीवन भर परम पूज्य लाला जी महाराज को एक मात्र अपना लक्ष्य मानकर उनके बताये हुये रास्ते पर बराबर खुद चलता रहा और जीवन भर यह भी प्रयास किया उनके मिशन को ऐसे लोगों तक जो (ईश्वरीय ज्ञान) इस चीज के

इच्छुक हों पहुँचाऊं मैं बहुत घूमा और बहुत से सन्तों को देखा पढ़ा मगर मैंने इन दोनों भाइयों (पूज्य लाला जी एवं पूज्य चच्चा जी) जैसे फकीर अब तक नहीं देखे। मैंने तुम सबको समस्त सत्संगी भाइयों, उनके परिवार के लोगों, अपने रिश्तेदार, अपने गांव के लोगों, ख्याली तौर पर परम पूज्य लाला जी महाराज के सुपुर्द कर दिया है और उन्होंने कृपा करके कबूल भी कर लिया है। मुझे पूर्ण विश्रुवास है, कुछ लोग इस जन्म में कुछ लोग आने वाले जन्म में इस रास्ते पर अवश्य चलेंगे और अपने जीवन को सफल बनायेंगे।

तुम्हारे सभी भाई अच्छे हैं। छोटे भैय्या का विशेष ध्यान रखना उससे तुम्हें परमार्थ के काम में मदद मिलेगी। बब्बू से सत्संग की व्यवस्था में बड़ी मदद मिलेगी। तुम्हारी माँ का और मेरा करीब 48 वर्ष का साथ रहा और उन्होंने सभी सत्संगी भाइयों की बहुत सेवा की है। इस बात का बड़ा ध्यान रखना कि उनको किसी प्रकार की तकलीफ न हो। मेरी जिस्मानी व रूहानी औलाद का यह फर्ज है कि उनकी सेवा करें। वे वैसे भी हैं मेरे सुख दुख में 48 वर्षों तक बराबर साथ देती रही है और सत्संग के काम में उनकी सेवा से मुझे बहुत मदद मिली है।

अपने तीसरे पुत्र बसंत जो कि (मशहरी के पायताने) आपके पैर की खड़े थे से आंख खोलकर मुखातिब होकर कहा कि हर परिवार में छोटी बातें होती रहती हैं कोशिश यह करना कि सबसे मिल जुल कर चलो सब छोटे भाइयों से कहा कि मेरे बाद अपने दोनों बड़े भाईयों सेठ, दीन्नू, को मेरी जगह समझना व उनकी बड़ी सेवा करना। तुम सभी लोग नेक हो और मैं तुम सबसे पूरी तरह खुश हूँ।

इसके बाद आप खामोश हो गये और फिर अंत तक सिवाय हम दोनों भाइयों के किसी से कुछ न बोले। सब तरफ से अपने ध्यान को हटाकर परमात्मा में लगा लिया था।

25 दिसम्बर 1987 को पूरे दिन आप ध्यान में मगन रहें जब कोई आता तो आँख खोलकर देख लेते। उस दिन दोपहर में हम लोगों ने आपको धूप मे अशोक के पेड़ वाले गलियारे में लिटा दिया था। बाहर सेवक ने आपके हाथ पैर के नाखून काटे और पूज्य भाई साहब ने दाढ़ी बनाया। कोई आता तो आंख खोलते पुनः ध्यान में मगन हो जाते, इसी समय पूज्य ताऊ जी के द्वितीय पुत्र श्री राधेकृष्ण भटनागर आये और आपके चरण छूये आपने आशीर्वाद दिया और आंखे बन्द कर लीं।

26 दिसम्बर की घटना तो पहले ही लिख चुका हूँ वह मनहूस दिन पूज्य जीजा जी के निधन का था। उस दिन तो आप सब कुछ जान ही रहे थे।

27 दिसम्बर, सन् 1987 को भी लगभग पूरे दिन यही अवस्था रही। आप ध्यान में मगन थे उसी दिन शाम को मित्तल साहब अपने पारिवारिक किन्हीं वैद्य जी को लिवा लाये उन्होंने देखा और दवाई बताई। आपने आंखे खोली और पूज्य भाई साहब से कहा कि इनको फीस दे दो। सब चीजों का आपको होश था मगर किसी क्षण भी अपने प्रियतम से अलग रहना नहीं चाह रहे थे। हर समय ध्यान में मगन। 26 तारीख से सब कुछ खाना बन्द कर दिया था तकलीफ बहुत पूछने पर यही कहते थे जिस्मानी कोई तकलीफ नहीं है और बड़ी मोहब्बत से कभी पूज्य भाई साहब और कभी मेरी ओर देख लेते थे। अभी तक वह नजर नहीं भूल पाया हूं। प्रसंग को लिखते समय लग रहा है कि वे आंखे, वह मोहब्बत भरी आंखे अभी भी हमें देख रहीं है। शायद वो भाई साहब व सेवक को यह बता रहे थे कि जैसे–जैसे वख्त वापिसी का करीब आ रहा है वैसे–वैसे प्रियतम से निकलने की इच्छा तेज होती जा रही है।

28 दिसम्बर 1987 को भी दिन भर ऐसी ही हालत रही कुछ नही खाया। रोजाना की तरह आज भी आपने सुबह पूछा था कौन क्या बजा है रात को हमारे भान्जे (देवेन्द्र वम्मी पप्पू, कुक्की) सब गढ़मुत्तेश्वर में फूल विसर्जित करके वापस गाजियाबाद आये। हम लोगों ने आपको जब बताया तो आँख खोलीं और पूछा तुम्हारे यहां सब ठीक है उसने बड़े जोर देकर कहा कि नाना जी सब ठीक है। आपने सख्त आवाज मे कहा कि झूठ बोलते हो और आंखें बंद कर लीं और कहा कि अपनी मां से कह देना कि कभी गाजियाबाद और कभी दोनों भाइयों के पास चली जाया करेंगी। तबियत बहल जायेगी कोई परेषानी की बात नहीं है।

29.12.1987 आखिर वह बदनसीब जुदाई का दिन आ ही गया जिसका इशारा आप बराबर साल भर से कर रहे थे रोज की तरह आप फिर सुबह चार बजे के करीब उठे और मुझसे पूछा क्या समय है उस समय मैं और पूज्य भाई साहब थे और कोई नहीं था मैंने उन्हें एक गोली दवा की दी और कहा बाबू जी एक गोली खा लीजिये, एक दम सहज भाव से आपने मुँह खोल दिया और मैंने पानी के साथ आपको गोली खिला दी।

दवाई खाते समय आपने पूरी आँख खोल कर फिर एक बार ऐसी दृष्टि डाली जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मैं दवा देने के बाद बाहर आंगन में पेशाब जाने के लिये निकला तो ऊपर छत से मेरे छोटे भाई बब्बू ने पूछा कि भाई साहब क्या बात है, मैंने जवाब दिया सब ठीक है पूज्य बाबू जी को दवा दी है 6 बजे के करीब कुछ ऐसा एहसास हुआ कि आापकी पेशाब रूक गई है। पूज्य भाई साहब ने केथेटर डाल दिया जिससे पेशाब हो गई। पखाना आपको 27 तारीख के बाद से नही हुआ था न ही आप कुछ खा ही रहे थे। परिवार और सत्संग के सब लोग चाय नाश्ते में व्यस्त थे। पूज्य भाई साहब और सेवक गरम पानी से बाबू जी की स्पंजिंग कर रहे थे। सेवक ने जिस्म को साबुन लगाकर अच्छी तरह सफाई की, बिछाने वाली चादरें और तमाम बिस्तरा बदल दिया गया। आपके सारे कपड़े बदल दिये गये। भाई साहब ने दाढ़ी बनाई उसी वक्त कही जरा सा ब्लेड लग गया था और जरा खून निकल आया था। भाई साहब ने बोरोलिन लगाई। कमरे की खूब अच्छी सफाई कर दी गई है और अन्दर कमरे में बत्ती जला दी गई थी। इसी बीच हमारी माता जी ने कई बार हम लोगों को चाय पीने के लिये बुलाया पर हम लोगों ने यह कह दिया कि स्पंन्जिंग के बाद पियेंगे।

यह सब होते होते करीब 11 बजे रहें थे। भाई साहब ने आपके सर में तेल डालकर बहुत अच्छी तरह से बाल काट दिये थे उस समय कमरे में भाई साहब मैं, बसन्त और बब्बू था। बसन्त मशहरी में सर की तरफ खड़े थे बब्बू पैर की तरफ भाई साहब पूज्य बाबू जी के सामने और मैं आपके मशहरी पर ही बैठा हुआ था। मैंने पूज्य भाई साहब से कहा कि दूसरी धोती पहनाई है जरा सा करवट दिलाता हूँ आप नाईसिल पाउडर और छिड़क दें पूज्य भाई साहब अलमारी में से पाउडर लेने के लिये मुड़े और मैंने बाबू जी की गरदन पर एक हाथ और एक हाथ कमर पर रखकर करवट दिलाई थी कि वसन्त ने धबरा कर कहा "भाई साहब देखिये आप ने हम लोगों से...। इतना कहते – कहते उसका गला रूंध गया था। हम लोगों ने जल्दी जल्दी आक्सीजन लगाई पर आप महासमाधि ले चुके थे। सारा घर दर्द मे डूबा हुआ रोता आपके कमरे मे इक्ट्ठा हो गया। उस समय आपके चेहरे पर एक अजब तेज और हल्की सी मुस्कुराहट थी आपका इतना आकर्षित चेहरा सेवक ने कभी जीवित समय मे भी नहीं देखा था इस प्रकार 29.12.1987 दिन मंगलवार 11 बजे

दिन में भीतर वाले कमरे में आपने महा समाधि ले ली। इस तरह जीवन के 87 वर्ष भीषण उतार चढ़ाव के साथ व्यतीत हुये भी अपने लक्ष्य से ऐसे जुड़े रहे कि कभी दूर नहीं हुये। बहुत से रिश्तेदार परिवार में तो सब थे ही तमाम सत्संगी भाई जो वहां मौजूद थे उपको यह शिक्षा दे गये थे कि ''दुनिया के सब काम करते हुये अपने को ईश्वर नाम के साथ जोड़ लो क्योंकि वहीं तुम्हारा लक्ष्य है। दुनियां के काम खूब सोच समझ के आगा पीछा सोच के करों पर परमार्थ के काम में देरी न करो पता नहीं अगली सांस आये या न आये।''

आपका पार्थिव शरीर उसी कमरे में दर्शनार्थ रख दिया गया। सभी भाई हर जगह से खबर पाते ही अपने सदगुरू भगवान के दर्शनों के लिए उमड़ पड़े। यथा सम्भव यह कोशिश की गई कि हर सेन्टर पर खबर भेज दी जाए। जिससें समस्त लोग आपका दर्शन कर सकें। इस कार्य को जगदीश भाई साहब व दुलीचन्द जी ने बड़ी खूबी से अंजाम दिया। रात भर रामायण पाठ होता रहा। ऊँ शान्ति का जाप चलता रहा। तिवारी जी व उनकी पत्नी सुनयना ने सारे सत्संगी भाईयों के बच्चों की तथा और सब की रात भर चाय आदि से सेवा की। बहुत सारे भाई पहुँच गये।

30 दिसम्बर दिन बुधवार सुबह आपके पार्थिव शरीर को नहला धुला कर अंन्तिम संस्कार के लिए तैयार कर लिया गया। हजारों की तदाद में प्रेमी भाई, रिश्तेदार, मोहल्ले के लोग आपके आफिस के लोग (क्योंकि आप यहीं से रिटायर हुए थे) और पब्लिक के लोग खबर पाते ही दर्शन के लिए उमड़ पड़े थे।

आपके पार्थिव शरीर को विमान में सजा कर (जो सत्संगी भाई ने तैयार किया था) हाल में पूज्य लाला जी महाराज की तस्वीर के नीचे जहां आज आपकी समाधि है रखा गया। सारा घर वातावरण

'ऊँ राम श्री राम जय राम जय जय राम'

की गूँज से गूँज उठा सभी लोग बड़ी श्रद्धा से ऑखों में ऑसू भरे आपके अन्तिम दर्शन करके फूल चढ़ा कर बाहर इकटठे हो रहे थे। 11 या साढ़े 11 बजे के करीब उस विमान को बाहर बरामदे में रखना पड़ा क्योंकि भीड़ बहुत हो गई थी।

सड़क तक लोग ही लोग दिखाई पड़ रहे थे सबके नेत्र पूर्ण आंसू आपको श्रद्धाजंलि दे रहे थे, सबसे पहले हमारी माता जी ने आपके चरण स्पर्श कर उन्हें अपना अन्तिम प्रणाम किया और विमान की परिक्रमा

करके चरणों की तरफ बैठ गई। फिर परिवार की सब बहुओं ने, दोनों बहनों ने, सब घर के बच्चों ने, रिश्तेदारों ने और सत्संग परिवार की माताओं, बहनों ने सबने वही क्रम दोहाराया उसके बाद सब भाइयों ने दर्शन किए। भीड़ इतनी थी कि इस कार्यक्रम में तीन बज गये।

आपके पार्थिव शरीर को गढ़ मुक्तेश्वर गंगा जी ले जाया गया। क्योंकि आपने कई बार कहा था कि ''वैसे तो मरने के बाद शरीर को कहीं भी जला दिया जाय मगर अच्छा यही होता है कि गंगा का किनारा मिल जायें''। उनकी इस इच्छा की पूर्ति की गई गाजियाबाद से यह यात्रा तीन या साढ़े तीन बजे आरम्भ हुई। जीपों, मैटाडोर, कारों पर लोग रवाना हो चले। रास्ते में डासना पर कुछ देर के लिए रूके जहां कि छोटे भाई बब्बू के फैक्ट्री के लोगों ने उनके अन्तिम दर्शन किए और वहां से एक फैक्ट्री के बस में सब लोग हम लोगों के साथ हो लिए। साढ़े चार या पांच बजे करीब हम लोग गढ़ मुक्तेश्वर पहुँच गये। और आपके पार्थिव शरीर को गंगा के किनारे चिता बना कर अन्तिम संस्कार पूज्य भाई साहब ने एवम सेवक ने किया। मेरठ से भी बहुत से लोग अस्पताल एवम भाई साहब के स्टाफ के और आफीसर वहां पहुँचे थे इस प्रकार गढ़ मुक्तेश्वर के पुनीत गंगा तट पर आपके अन्तिम संस्कार हुआ। हम लोगों ने गंगा में स्नान किया उनके फूल एवमं पुण्य अस्थियां लेकर वापस गाजियाबाद आ गए। और हिन्दु धर्म के अनुसार दसवां, तेरहीं सम्पन्न की गई। ब्राह्मण दान आदि का जो भी विधान सनातन हिन्दू धर्म में है वह सब विधिवत सम्पन्न किया गया। अनाथों को भोजन दान आदि कराया गया और इसके अतिरिक्त एक भंडारा तेरहीं वाले दिन आयोजित किया गया था। अधिकतर सभी सत्संगी भाई बहन उसमें उपस्थित हुए और उनके लिए कई लाख ऊँ शान्ति का जाप सबने बड़ी श्रद्धा एवम प्रेम से किया। वैसे तो 30 तारीख से ही एक प्रकार से अखण्ड ऊँ शांति जाप चल रहा था।

आपकी समाधि हाल के कमरे में बना दी गई क्योंकि आपने स्वयं ही कहा था समाधि के लिए सबसे उत्तम हाल वाला कमरा है जिसमें इतने दिन आपने अभ्यास किया था और जहां इतने बुजुर्गों ने आपको दर्शन दिए थे या फिर अशोक के पेड़ के नीचे अलग जगह समाधि के पक्ष में आप नहीं थे। क्योंकि कहते थे अलग जगह पर समाधि के देख रेख का इन्तजाम की समस्या बराबर बनी रहती है। दूसरे वहां वातावरण

बनने में समय लगता है। हाल में तो करीब करीब साधना के पूरे पैतींस वर्ष आपने व्यतीत किए थे।

इस प्रकार यह आपके महानिर्वाण और अन्तिम यात्रा का वर्णन मैंने किया तो जरूर है पर उस समय आपके हृदयों की जो दशा थी, जो परम शान्ति का अनुभव था उसको लिखने मे मैं अपने को असमर्थ पा रहा हूँ। वैसे तो उस क्षण की एक एक झलक मेरे मानस पटल पर अंकित है। पूज्य बाबू जी द्वारा कहे गये सब शब्द जीवन्त रूप मे स्मृति में है पर फिर भी वर्णन करने मे कोई शब्द का अदल बदल हो गया हो तो पाठक मुझे क्षमा करेंगे।

इस प्रकार वह महान दिव्य आत्मा अपने चिर समाधि में विलिन हो गयी और वह अपने दिव्य रूप में हम सब प्रेमी भाईयों का पथ प्रदर्शन कर रही है।

''हर ऑख अश्कवार हैं हर दिल है सोगवार
ये कौन आज उठकर जहॉ से चले गये''

विनती

हे, ! परमपिता पूज्य बाबू जी आप ही हमारे मार्ग दर्शक हैं। हे ! पुज्य पुंज ! आप हम पर ऐसी दया करें कि हम आपके बतायें रास्तें पर आपकी दया तले आगे बढ़े तथा बुजुर्गों का नाम रोशन करें।

हे ! सर्वज्ञ ! सर्वहितकारी ! आपकी ऐसी दया हो कि हमसे कभी जाने अनजाने ऐसा कार्य न हो जिससे आपकी तथा सिलसिले की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचे।

आपकी अपार दया असीमित कृपा जो अनवरत हम सब पर हो रही है वह सदा बनी रहे क्योंकि वही हमारी अमूल्य निधि है। जिस तरह आपने जीवन काल तथा ईश्वर में लीन होने के बाद भी आप हमारी निगहबानी कर रहे हैं तथा शक्ति प्रदत्त की है। हे पावन पिता यह चिरपरिचित दिव्य दिग्दर्शन ही हमारा जीवन धन है, यही हमारी दिव्य पूँजी है, यही दिव्य प्रकाश जो हमारे मार्ग को प्रशस्त कर रही है सदा बनी रहे।

आपके पावन चरणों में हम सब का शत–शत प्रणाम जो भाइयों की जिम्मेदारी आपने हम सब पर सौंपी है उसे हम पूरा कर सकें। यह वरदान दें क्योंकि यह भी तो आपके दया के बगैर सम्भव नही है।

हमारे आदि और अंत के आप ही आधार हैं हे प्रभु अंत समय तक आपकी याद बनी रहे यही प्रार्थना है

जीवन स्वरूप भगवन, मस्तक पवित्र कर दो।
पावन पिता कृपा कर, आंखों में ज्योंति भर दो।
हे सत्य रूप स्वामी, हम में भी सत्य भर दो।
हे प्रेम दान दाता, हम में भी प्रेम भर दो।
अब तो पवित्र सिर हो, हे पूज्य पुंज स्वामी
सब अंग शुद्ध कर दो व्यापक विभो नमामि

''

तब्त, दया प्रेरणा गुरूदेव तव साधक हिते समर्पिता।

गृर्हाण इदानि श्रद्धा पुष्पाणि, प्रसीद पूज्य परमपिता।।

''गुरू देव सबका कल्याण करें''

परम पूज्य बाबू जी महाराज का निवास स्थान

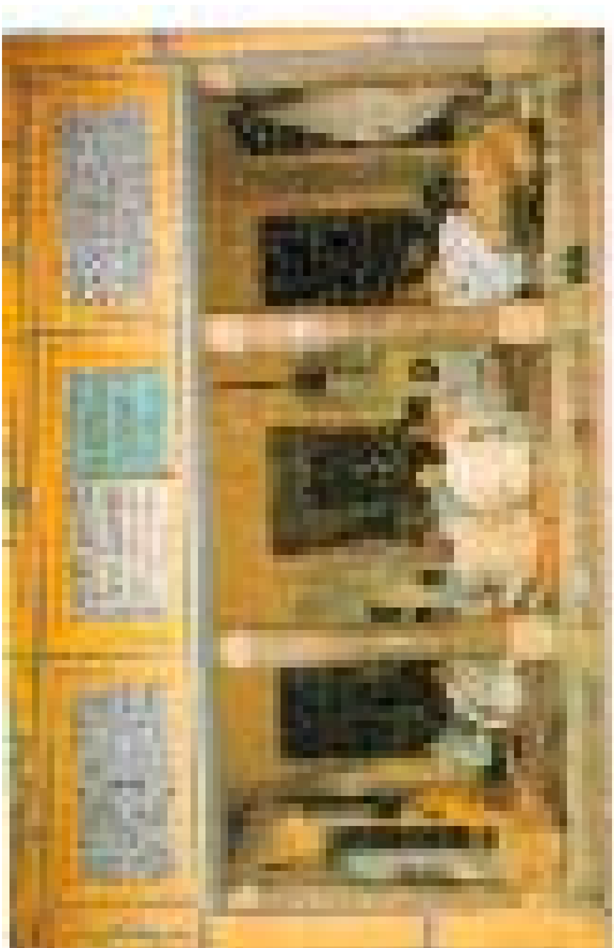

7, रामाकृष्ण कालोनी गाजियाबाद

lkj dh ckr

बिला वजह बात करने से कुव्वेत रूहानी जाये होती है और मन की वृत्ति दुनिया की तरफ रागिब होती है।

हर शख्स को अगर मौका पड़े तो जहां तक हो सके मदद करना चाहिए, लेकिन दुनियाबी हालात को मद्दे नजर रखते हुए शर्त यह भी है कि इस मदद से किसी और का नुकसान नहीं शामिल हो।

हर शख्स पर जब पूरा तर्जुबा न हो जाये अपने राज अशफा (जाहिर) नही करना चाहिए। किसी दूसरे की बात दूसरे से इस ख्याल से कहना कि वह खुश होगा पाप है। किसी के लिए बिना जरूरत अपनी राय कायम करना बुरा है, और खशुसन बुरी राय कायम करना निहायत ही बुरा है बिना पूछे अपनी राय किसी को देना अपने को उसकी निगाह में हकीर (नीचा) करना है।

अपनी गलती अगर हो तो मान लेना चाहिए।

अपनी राय को दूसरे की राय पर तरजीह (वरीयता) देना सूक्ष्म अहंकार है।

किसी शख्स की बात में बिला वजह दखल देना अपने को जलील करना है।

अपने को सबसे बड़ा ज्ञानी समझना सबसे बड़ा अज्ञान है।

परमसंत
डा. श्यामलाल सक्सेना

परमसंत डा0 श्याम लाल जी साहब
की
पारिवारिक – बंशावली

जन्म स्थान – कटिया जिला बदायू

लाला बलदेव प्रसाद

1– लाला हजारीलाल – कोई संतान नहीं

लाला प्यारे लाल–

1) स्व0 डा0 श्याम लाल सक्सेना
2) स्व0 श्री जानकी प्रसाद
3) स्व0 श्री बाबू राम
4) स्व0 श्री गंगादीन सक्सेना
5) स्व0 श्रीमती फूला देवी
6) स्व0 श्रीमती कटोरी देवी
7) स्व0 श्रीमती चन्दा देवी

पू0 डा0 श्यामलाल सक्सेना

1.	डा0 राजेन्द्र कुमार सक्सेना	पंकज सक्सेना पुत्री
2.	डा0 वीरेन्द्र कुमार सक्सेना	डा0 अतुल कुमार अनमोल कुमार
3.	श्री बृजेन्द्र कुमार सक्सेना	पुत्री बृजराज भूषण बृजराज प्रसून
4.	श्री सुरेन्द्र कुमार सक्सेना	संदीप कुमार नितिन कुमार
5.	श्री रवीन्द्र कुमार सक्सेना	तीन पुत्रियां
6.	श्री ज्ञानेन्द्र कुमार सक्सेना	दो पुत्रियां
7.	डा0 नरेन्द्र कुमार सक्सेना अभिनव	एक पुत्री
8.	श्रीमती सरोज सक्सेना	
9.	श्रीमती कुसुम सक्सेना	

2. पू0 श्री जानकी प्रसाद

1.	श्री मदन मोहन लाल सक्सेना	सुभाष चन्द्र रमेश चन्द्र राजेश चन्द्र पप्पू दो पुत्रियां
2.	स्व0 श्री सुरेश चन्द्र	तीन पुत्रियां
3.	श्री दामोदर दास	अनिल पप्पू तीन पुत्रियां
4.	श्रीमती कृष्ण देवी	
5.	श्रीमती कांता देवी	

3. स्व0 श्री बाबू राम जी

1.	स्व0 श्याम बिहारीलाल सक्सेना	चार पुत्रियां
2.	श्री बंगाली बाबू सक्सेना	अनुपम एक पुत्री
3.	श्री सतीश चन्द्र सक्सेना	एक पुत्री
4.	श्रीमती विमला सक्सेना	
5.	श्रीमती रेशमा देवी	
6.	श्रीमती पुष्पा सक्सेना	

4. स्व0 श्री गंगादीन सक्सेना

1.	श्री नरेश चन्द्र सक्सेना	अंकुर तीन पुत्रियां
2.	श्री दिनेश चन्द्र सक्सेना	अरूण सक्सेना अनुराग अनुज एक पुत्री
3.	श्री सुभाष चन्द्र सक्सेना	अखिल एक पुत्री
4.	श्री राकेश चन्द्र सक्सेना	दो पुत्री
5.	श्री अवधेश चन्द्र सक्सेना	एक पुत्री
6.	श्रीमती ऊषा	
7.	श्रीमती बीना	
8.	श्रीमती मीना	